



ENGLISH

English Prose and Writing Skills

SYLLABUS

- UNIT-I** **An Introduction to Indian Writing in English** : Contributions of Sri Aurobindo, Rabindranath Tagore, K.S. Venkataramani, Bhabani Bhattacharya, R.K. Narayan, Mulk Raj Anand, Sarojini Naidu, Kamala Markandaya and Nayantara Sahgal, etc. towards the growth of Indian writing in English.
- UNIT-II** **Elements of Short Story** : Plot, Characterization, Narrative Technique and Structure
Types of Prose and Prose Style : Autobiography, Biography, Memoir; Travelogue; Periodical Essay; Formal Essay; Personal Essay.
- UNIT-III** **Prose Devices** : Theme; Point of View; Sentence Pattern; Imagery; Tone or Mood; Analogy, Anecdote; Antithesis; Aphorism; Diction; Inversion; Humour and Pathos.
- UNIT-IV** **Short Stories** : 1. O' Henry : The Last Leaf; 2. Anton Chekhov : The Lament; 3. Guy de Maupassant : The Diamond Necklace
- UNIT-V** **Short Stories** : 1. M.R. Anand : The Lost Child; 2. R.K. Narayan : Under the Banyan Tree; 3. Ruskin Bond : The Tunnel
- UNIT-VI** **Prose** : 1. Francis Bacon : Of Studies; 2. Charles Lamb : Dream Children; 3. Joseph Addison : Sir Roger at the Church
- UNIT-VII** **Prose** : 1. Virginia Woolf : Professions for Women; 2. A.P.J. Kalam : Patriotism Beyond Politics and Religion (from Our Ignited Minds); 3. Swami Vivekanand : The Conquest of the world by Indian Thought
- UNIT-VIII** **Computer and Writing skills in English** : 1. Power Point Presentation; 2. Letter writing : formal, informal/Letters of Inquiry/Complaints, Grievance Redressal Letters and Right to Information (RTI); 3. Preparing Resumes/CV using Microsoft Word/Letter of Acceptance/Resignation (Job); 4. Online Writing (Blogging, Content Writing, Effective E-mail Writing)

Registered Office
Vidya Lok, Baghpat Road, T.P. Nagar,
Meerut, Uttar Pradesh (NCR) 250 002
Phone : 0121-2513177, 2513277
www.vidyauniversitypress.com

© Publisher

Editing & Writing
Research and Development Cell

Printer
Vidya University Press

CONTENTS

UNIT-I	: An Introduction to Indian Writing in English	...3
UNIT-II	: Elements of Short Story	...56
UNIT-III	: Prose Devices	...77
UNIT-IV	: Short Stories	...89
UNIT-V	: Short Stories	...102
UNIT-VI	: Prose	...117
UNIT-VII	: Prose	...145
UNIT-VIII	: Computer and Writing Skills in English	...170
○	Model Paper	...184

UNIT-I

An Introduction to Indian Writing in English

SECTION-A (VERY SHORT ANSWER TYPE QUESTIONS)

Q.1. Write two names of Tagore's poems and plays.

टैगोर की दो कविताओं और नाटकों के नाम लिखिए।

Ans. *Gitanjali* (1912) and *The Gardener* (1913) are popular poems and *Chitra* (1913) and *The Post Office* (1914) are famous plays written by Rabindra Nath Tagore.

गीतांजलि (1912) और द गार्डनर (1913) लोकप्रिय कविताएँ हैं और चित्रा (1913) और द पोस्ट ऑफिस (1914) रवींद्र नाथ टैगोर द्वारा लिखे गए प्रसिद्ध नाटक हैं।

Q.2. Gandhi is present in the narrative of 1920s. Discuss.

गांधी 1920 के दशक के आख्यान में मौजूद हैं। चर्चा कीजिए।

Ans. Gandhian nationalist phase began in the 1920s. The factor which is common to these novels from K.S. Venkataramani's *Murugan, the Tiller* (1927) to Bhabani Bhattacharya's *So Many Hungers* (1947), Gandhi is present in the fiction of the period both in the flesh and through his ideas, in the spirit which agitate and motivate. He is present also in more hidden ways.

गांधीवादी राष्ट्रवादी चरण 1920 के दशक में शुरू हुआ। के.एस. वेंकटरमाणी के 'मुरुगन, द टिलर' (1927) से लेकर भबानी भट्टाचार्य की 'सो मैनी हंगर्स' (1947) तक इन उपन्यासों में जो कारक सामान्य है, गांधी उस काल के कथा साहित्य में मांस और अपने विचारों दोनों के माध्यम से मौजूद हैं। उस भावना में जो उत्तेजित और प्रेरित करती है। वह और भी छिपे हुए तरीकों से मौजूद है।

Q.3. When was 'Swami and Friends' published?

'स्वामी एण्ड फ्रेंड्स' कब प्रकाशित हुआ था?

Ans. 'Swami and Friends' was published in 1935.

'स्वामी एण्ड फ्रेंड्स' 1935 में प्रकाशित हुई थी।

Q.4. When was 'Gitanjali' published?

'गीतांजलि' कब प्रकाशित हुई थी?

Ans. 'Gitanjali' was published in 1912.

'गीतांजलि' 1912 में प्रकाशित हुई थी।

Note : ExamX में प्रश्नोत्तरों का हिन्दी रूपान्तरण केवल विषय-वस्तु को विद्यार्थियों को भली प्रकार से समझाने के लिए दिया गया है। परीक्षा में विद्यार्थी इस बात का विशेष ध्यान रखें कि प्रश्नों के उत्तर केवल अंग्रेजी भाषा में ही दें।

Q.5. Which novel of R.K. Narayan was filmed in Hindi?

आर०के० नारायण का कौन-सा उपन्यास हिन्दी में फिल्माया गया था?

Ans. R.K. Narayan's 'The Guide' was filmed in Hindi.

आर०के० नारायण की 'द गाइड' को हिन्दी में फिल्माया गया था।

Q.6. Who combines anthropology, history and fiction in his writing?

अपने लेखन में नृविज्ञान, इतिहास और कल्पना को कौन जोड़ता है?

Ans. Mulk Raj Anand combined anthropology, history and fiction in his writing.

मुल्क राज आनंद ने अपने लेखन में नृविज्ञान, इतिहास और कथा साहित्य को मिलाया।

Q.7. Who was Rabindra Nath Tagore?

रवींद्र नाथ टैगोर कौन थे?

Ans. Rabindra Nath Tagore was a poet, playwright, musician, polymath, Ayurveda Resercher and artist. He recast Bengali literature and Indian art in the late 19th and early 20th centuries. In 1913 Tagore was the first non-European to win Nobel Prize in Literature.

रवींद्र नाथ टैगोर एक कवि, नाटककार, संगीतकार, पॉलीमैथ, आयुर्वेद शोधकर्ता और कलाकार थे। उन्होंने 19वीं सदी के अन्त और 20वीं सदी की शुरुआत में बंगाली साहित्य और भारतीय कला का पुनर्निर्माण किया। 1913 में टैगोर साहित्य में नोबेल पुरस्कार जीतने वाले पहले गैर-यूरोपीय थे।

Q.8. Who is known as the Nightingale of India?

भारत की कोकिला के रूप में किसे जाना जाता है?

Ans. Sarojini Naidu is known as the Nightingale of India.

सरोजिनी नायडू को भारत की कोकिला के रूप में जाना जाता है।

Q.9. Explain about the personal life of Sri Aurobindo.

अरविन्दो के व्यक्तिगत जीवन की विवेचना कीजिए।

Ans. Sri Aurobindo (1872-1950) was an Indian philosopher, *yogi*, *guru*, poet and nationalist. He represents a new creative consciousness which seeks to create a more refined instrument to express a new version and experience. He joined the Indian freedom movement for independence from the British Raj and then became a spiritual reformer, introducing his vision on human progress and spiritual evolution. He studied at King's College, Cambridge in England and passed the Indian Civil Service Examination. Then he worked with the Princely state of Baroda and joined nationalist politics in the Indian National Congress. He had to face charges of treason for Alipore Conspiracy. During his stay in the jail, he had mystical and spiritual experiences. After that he moved to Pondicherry (Puducherry) leaving politics for spiritual work.

At Pondicherry (Puducherry), Sri Aurobindo developed Integral Yoga. In 1926, Sri Aurobindo Ashram was founded. He died at the age of 78 at Pondicherry (Puducherry) in French India.

श्री अरविन्दो (1872-1950) एक भारतीय दार्शनिक, योगी, आध्यात्मिक गुरु, कवि और राष्ट्रवादी थे। उनकी साहित्य साधना में मौलिक लेखन का आविर्भाव होता हुआ दिखायी देता है जिसमें नया दृष्टिकोण व अनुभव स्वतः ही स्फूर्त होने लगता है। ब्रिटिश राज की बेड़ियों को काटने के लिए उन्होंने भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया और उसके बाद

आध्यात्मिक सुधार को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया और मानव कल्याण के लिए प्रेरित होकर आत्मिक उन्नति में जीवन लगा दिया। उन्होंने कैम्ब्रिज, इंग्लैण्ड के किंग कॉलेज में अध्ययन किया और इण्डियन सिविल सर्विस की परीक्षा उत्तीर्ण की। उसके बाद उन्होंने बड़ौदा रियासत के साथ कार्य किया और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ जुड़ गए। अलीपुर षड्यन्त्र में राजद्रोह के लिए उन्हें आरोपों का सामना करना पड़ा। कारावास की अवधि में उन्होंने रहस्यमयी व आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त किए। इसी के बाद उन्होंने राजनीति से संन्यास ले लिया और आध्यात्मिक क्रियाकलापों में संलग्न होने के लिए पॉण्डिचेरी (पुदुचेरी) की ओर चल दिए।

पॉण्डिचेरी में श्री अरविन्दो ने समग्र योग विधा का विकास किया। वर्ष 1926 में श्री अरविन्दो आश्रम की आधारशिला रखी गयी। अठहत्तर वर्ष की आयु में फ्रांसीसी भारत के पॉण्डिचेरी (पुदुचेरी) में उनका देहावसान हो गया।

Q.10. Name four major literary works of Aurobindo.

अरविन्दो के चार महत्त्वपूर्ण साहित्यिक कार्यों का नाम बताइए।

Ans. Four major literary works of Aurobindo are :

अरविन्दो के चार महत्त्वपूर्ण साहित्यिक कार्य हैं—

- | | |
|-------------------------------------|------------------------|
| (i) The Life Divine | (ii) Synthesis of Yoga |
| (iii) Savitri : A Legend and Symbol | (iv) The Human Cycle |

Q.11. How can you say that Rabindranath Tagore is not an escapist? Discuss.

आप कैसे कह सकते हैं कि रवीन्द्रनाथ टैगोर पलायनवादी नहीं है? विवेचना कीजिए।

Ans. Tagore talks of renunciation of worldly life show that he cannot be an escapist. He is a mystic and visionary. He accepts the challenge of life. He does not preach asceticism or renunciation. Life is a great gift of God and it should not go waste. He believes in spiritualism, and man can realize God through an attitude of non-attachment, humility and purity of heart. Man cannot attain salvation or Mukti by renunciation of worldly life. His sayings in 'Geetanjali' also proves it : "Deliverance is not for me in renunciation."

टैगोर की सांसारिक जीवन का त्याग करने के लिए कही हुई बातें यह दर्शाती हैं कि वह पलायनवादी कदापि नहीं हो सकते। वे रहस्यवादी हैं और दूरद्रष्टा भी। वह जीवन की चुनौतियों को स्वीकार करते हैं। वह वास्तव में ऐसा कहकर संन्यास का उपदेश नहीं दे रहे होते हैं। जीवन तो परमेश्वर द्वारा प्रदान किया गया एक उपहार है जिसको व्यर्थ नहीं जाने दिया जाना चाहिए। वह अध्यात्म में विश्वास करते हैं और विरक्त होकर विनम्रता व पवित्रता के साथ ईश्वर का सान्निध्य प्राप्त किया जा सकता है। पलायन करके या संसार का त्याग करके मुक्ति या निर्वाण की प्राप्ति नहीं की जा सकती है। 'गीतांजलि' में कही हुई ये बातें यह साबित भी करती हैं—

'संन्यास लेने से मेरी मुक्ति कदापि नहीं होगी।'

Q.12. Tagore is said to be an admirer as well as lover of Nature. Discuss briefly.

टैगोर प्रकृति के उपासक होने के साथ-ही-साथ उसके प्रेमी भी हैं। विवेचना कीजिए।

Ans. Tagore made excursions into the rural Bengal in connection with the administration of land and property, he had an opportunity come in close contact with Nature's beauty. It had a great spell on him. He is a great lover of Nature like Wordsworth and Robert Frost. Thus his love of Nature shows his romanticism. He beautifies and spiritualises Nature. Our Vedic culture treats Nature and God as Prakriti and Purusha. Nature is an aspect of God. So it may be said that Tagore is an admirer as well as lover of nature.

टैगोर जीवन-भर प्रकृति के प्रशंसक और उपासक बने रहे। भूमि और जायदाद के प्रबन्धन के सम्बन्ध में उन्हें बंगाल के ग्रामीण क्षेत्रों में जाना होता था। ऐसी यात्राओं के दौरान उन्हें प्रकृति का सान्निध्य पाने का सौभाग्य मिलता था। प्रकृति की सम्मोहन शक्ति ने उन्हें वशीभूत कर लिया था। वर्ड्सवर्थ और रॉबर्ट फ्रॉस्ट के समान ही वह प्रकृति के परम उपासक हैं। प्रकृति के प्रति उनका यह प्रेम उन्हें रोमांटिक बना देता है। वह प्रकृति को सौन्दर्य से आच्छादित कर देते हैं जहाँ

आध्यात्मिकता का विहान होने लगता है। हमारी वैदिक संस्कृति में प्रकृति व ईश्वर को प्रकृति व पुरुष के रूप में दर्शाया गया है। प्रकृति वास्तव में ईश्वर का ही एक स्वरूप है। अततः ये कहा जा सकता है कि टैगोर प्रकृति उपासक होने के साथ ही प्रकृति प्रेमी भी हैं।

Q.13. Describe the era of 1930s and 1940s of Indian English novel writing.

1930 और 1940 के दशकों में भारतीय उपन्यास लेखन का विवरण दीजिए।

Ans. The novels of this era which Venkataramani found very fertile for his prose creation. His writing played a very important part in imagining and embodying the radical vision of anti-colonial nationalism. He tried his hand at novel writing with varying degrees of commitment, in social and political issues which preoccupied the great age of Indian nationalism. Source can say that the period spanning the 1930s and 1940s was momentous in the history of Indian novel in English.

वर्ष 1930 और 1940 के दशक में भारतीय कथा साहित्य के इतिहास में अपना विशिष्ट महत्त्व रखते हैं जिनकी रचना अंग्रेजी में की गयी। वेंकटरमाणी के लिए यह कालखण्ड काफी उर्वर रहा जिसमें उपन्यास विधा में साहित्य साधना अपने उत्कर्ष पर थी। मौलिक दृष्टि से परतन्त्रता के विपरीत राष्ट्रीयता को प्रश्रय दिया गया जिसमें वेंकटरमाणी के लेखन में विशेष अवदान किया। उन्होंने विभिन्न रूपों में उपन्यास लेखन किया जिनमें सामाजिक व राजनीतिक समस्याओं को दर्शाया गया जो भारतीय राष्ट्रवाद के विशिष्ट युग में पहले से ही विद्यमान थीं।

Q.14. Enumerate five major creations of Venkataramani according to chronological order.

वेंकटरमाणी के पाँच मुख्य कृतियों का काल-क्रमानुसार नाम लिखिए।

Ans. Five major creations of Venkataramani are as follows :

वेंकटरमाणी की पाँच मुख्य कृतियाँ निम्न प्रकार हैं—

- | | |
|-------------------------------|------------------------------|
| (a) Paper Boats (1921) | (b) On the Sand-dunes (1923) |
| (c) Murugan the Tiller (1927) | (d) Renascent India (1929) |
| (e) Kundan the Patriot (1932) | |

Q.15. Enumerate six major novels written by Bhabani Bhattacharya in chronological order.

भवानी भट्टाचार्य द्वारा प्रणीत पाँच प्रमुख उपन्यासों का कालक्रमबद्ध नामोल्लेख कीजिए।

Ans. Below are given names of the six novels, the figure in brackets against each novel is the year of its publication. The names are in chronological order :

नीचे उपन्यासों का नामोल्लेख किया जा रहा है, कोष्ठक में दी गयी संख्या प्रकाशन वर्ष को इंगित करती है। उपन्यासों के नाम कालक्रमानुसार दिए गए हैं—

- | | |
|-----------------------------------|----------------------------------|
| (i) So Many Hungers (1947) | (ii) Music for Mohini (1952) |
| (iii) He Who Rides a Tiger (1954) | (iv) A Goddess Named Gold (1960) |
| (v) Shadow From Ladakh (1966) | (vi) A Dream in Hawaii (1978) |

Q.16. In addition to fiction, what other genres have been published by R.K. Narayan?

आर०के० नारायण द्वारा उपन्यास के अतिरिक्त अन्य किन विधाओं में साहित्य रचना की गयी?

Ans. In addition to fiction, Narayan has also published a fine autobiography 'My Day' (1974) and 'My Dateless Diary' (1964) about his stay as a resident writer in a U.S. University where he

wrote 'The Guide'. He has brought out a collection of legends drawn from the Mahabharata and the Puranas entitled 'God Demons and Others' (1964). He wrote 'Ramayana' in English based on Tamil epic by Kamban. Narayan was a realist fiction writer. He also revived the books like 'Development of Maritime Laws in seventeenth century England'.

उपन्यास विधा के अतिरिक्त नारायण ने आत्मकथा 'My Days' (1974) लिखी और 'My Dateless Diary' (1964) में उन्होंने अमेरिकी विश्वविद्यालय में आवासीय लेखक के रूप में बिताए गए दिनों के बारे में लिखा, वहीं पर उन्होंने 'The Guide' की रचना की थी। महाभारत और पुराणों को आधार बनाकर उन्होंने 'Gods, Demons and Others' (1964) के रूप में पौराणिक कथाओं का एक संग्रह प्रकाशित किया। उन्होंने कम्बन के तमिल महाकाव्य को आधार बनाकर 'Ramayana' को अंग्रेजी में लिखा।

Q.17.R.K. Narayan is considered one of the main writers of social novels. Discuss briefly.

आर०के० नारायण को सामाजिक उपन्यासों के मुख्य लेखकों में से एक माना जाता है। संक्षेप में विवेचना कीजिए।

Ans. R.K. Narayan is known to be a writer of social novels which are comic in tone and accurate in detail. He is eminently successful in showing social issues in 'The Financial Expert', 'The Guide', 'The Man-Eater of Malgudi' and 'The Painter of Signs'. His backgrounds are realistic and photographic in their realism. He describes every event precisely to create a psychological and convincing effect. His limited social life and limited region is a drawback to him. He does not preach any moral in his novels. All his social novels show his charity and grace. His characters are full of life and vitality. He avoids to display false pathos or cheap morals. He is unable to draw dramatic flashes in his novel. Narayan is an Indian writer who can place the Orient into focus for Occidental eyes. Narayan generally writes novels on social issues.

आर०के० नारायण, को सामाजिक उपन्यासों के शिल्पी के तौर पर जाना जाता है जो स्वभावतः हास्यजनक होते हैं और जिनका विवरण यथार्थ होता है। 'The Financial Expert', 'The Guide', 'The Man-Eater of Malgudi' और 'The Painter of Signs' में उन्होंने सामाजिक सरोकार के बिन्दुओं को पूरे कौशल के साथ उजागर किया है। उनके उपन्यासों की पृष्ठभूमि भी यथार्थ होती है जो चित्रांकन में भी वास्तविक लगते हैं। प्रत्येक घटनाक्रम को वह सूक्ष्म रूप से समझते हैं जिससे मनोवैज्ञानिक व स्वीकार्य प्रभाव उत्पन्न होता है। लेकिन उनका सामाजिकता व क्षेत्रीयता का छोटा दायरा उनके उपन्यासों की एक बड़ी कमी है। अपने उपन्यासों में वह किसी नैतिकता का पाठ नहीं पढ़ाते हैं। उनके सभी उपन्यास उनके उदारमना स्वभाव को गौरव प्रदान करते हैं। उनके पात्र जीवन्तता व ओजस्विता से भरपूर होते हैं। वह अवास्तविक दुःख और बेतुके नैतिक मूल्यों से स्वयं को अलग रखते हैं। वह कभी भी नाटकीयता के तत्त्वों को अपने उपन्यास में नहीं पनपने देते हैं। नारायण एक भारतीय साहित्यकार हैं जो पूरब के दृष्टिकोण को सम्यक रूप से पश्चिम के लोगों के बीच प्रस्तुत करते हैं। नारायण अधिकांशतया सामाजिक सरोकारों पर लेखनी चलाते हैं।

Q.18.Do you agree that Narayan was a realist fiction writer. Discuss briefly.

क्या आप इस कथन से सहमत हैं कि नारायण यथार्थ कथा-साहित्य के लेखक थे? संक्षेप में विवेचना कीजिए।

Ans. Narayan published English abridgements of the 'Ramayan' (1972) and Mahabharat' (1978). He became the pioneering Indian writer in English. He reviewed the books. He was a realist fiction writer and avoided political and social commentary in his writing. Narayan's best work 'The Guide' won him the Sahitya Akademi Award in 1961, the first time an award

was given to a work in English. So, I agree with the statement that Narayan was a realistic fiction writer.

नारायण उन्होंने 'रामायण' और 'महाभारत' को सारभूत (संक्षिप्त) रूप में अंग्रेजी में लिखा। अंग्रेजी में लेखन कार्य करने वाले वह विशिष्ट भारतीय लेखक थे। उन्होंने अनेक पुस्तकों की समीक्षा भी की थी। वह यथार्थवादी कथा साहित्यकार थे और राजनीति व समाज के ऊपर उन्होंने कोई टिप्पणी कभी नहीं की। नारायण की सर्वश्रेष्ठ कृति 'The Guide' थी जिसको वर्ष 1961 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया। अंग्रेजी की किसी रचना को यह पुरस्कार पहली बार दिया गया था। अंततः मैं इस बात से सहमत हूँ कि नारायण यथार्थ कथा-साहित्य के लेखक थे।

Q.19. "Mulk Raj Anand is an artist with a mission". Justify the statement.

"मुल्कराज आनन्द एक उद्देश्यपरक कलाकार हैं।" कथन को स्पष्ट कीजिए।

Ans. It may be said that Anand is an artist with a mission. His novels are novels of protest e.g. *Coolie* in which he describes the tragic existence of the Indian masses. *Coolie* is written with a purpose. It is a picture of the very tragedy of common man on earth. Anand does so, so that the conscience of man in real life may be aroused to thinking. If R.K. Narayan is a novelist of moral vision, Anand is a novelist of reformation. *Untouchable* shows the evils of caste-system alongwith remedy for this social evil. Thus, Anand is a missionary artist. This crusading zeal for reformation and the amelioration of the plight of the underdogs has given his novel an extra-literary interest.

यह कहा जा सकता है कि आनन्द एक उद्देश्यपरक कलाकार हैं। उदाहरणार्थ *Coolie* जिसमें उन्होंने भारतीय जनमानस के त्रासदीपूर्ण अस्तित्व का वर्णन किया है। *Coolie* निश्चित उद्देश्य से लिखा गया है। यह दुनिया में आम आदमी की त्रासदी का एक चित्र है। आनन्द ऐसा इसलिए करते हैं जिससे वास्तविक जीवन में भी मनुष्य की आत्मा को सोचने पर मजबूर किया जा सके। यदि आर०के० नारायण नैतिक दर्शन के उपन्यासकार हैं तो आनन्द सुधार के उपन्यासकार हैं। *Untouchable* जाति-प्रथा की बुराइयाँ और इन बुराइयों का समाधान प्रस्तुत करता है। इस प्रकार आनन्द एक उद्देश्यवादी लेखक हैं। दलितों की दुर्दशा में सुधार के लिए उनके संघर्षपूर्ण उत्साह ने उनके उपन्यासों को साहित्य के अतिरिक्त भी रुचिकर बना दिया है।

Q.20. Enumerate some well-known stories of Mulk Raj Anand.

मुल्कराज आनन्द की कुछ प्रसिद्ध लघु कथाओं का नाम लिखिए।

Ans. Main short stories written by Anand are as follows :

आनन्द द्वारा लिखित मुख्य लघु कथाएँ निम्न प्रकार हैं—

- | | |
|-----------------------------------|-----------------------------|
| (i) A Pair of Mustachios | (ii) On the Border |
| (iii) The Cobbler and the Machine | (iv) A Promoter of Quarrels |
| (v) A Dark Night | (vi) A Rumour |
| (vii) Mahadev and Parvati | (viii) The Lost Child |
| (ix) The Parrot in the Cage | (x) The Liar |

Q.21. Enumerate some famous poems written by Sarojini Naidu.

सरोजिनी नायडू द्वारा लिखित कुछ प्रसिद्ध कविताओं के नाम लिखिए।

Ans. Following are some famous poems written by Sarojini Naidu :

सरोजिनी नायडू द्वारा लिखित कुछ प्रसिद्ध कविताएँ निम्न प्रकार हैं—

- | | |
|---------------------------|------------------------|
| (i) The Queen's Rival | (ii) Palanquin Bearers |
| (iii) To My Fairy Fancies | (iv) Awake |

- (v) Pardah Nashin
 (vii) The Bird Sanctuary
 (ix) Songs of Radha
- (vi) If You Call Me
 (viii) Village Song
 (x) Fisherman of Coromandel

Q.22. Depict the love as a powerful force in the poems of Sarojini Naidu?

सरोजिनी नायडू की कविताओं में प्रेम को एक प्रचण्ड शक्ति के रूप में आप निरूपित करें।

Ans. Dull would he be of soul who cannot respond to its irresistible call. Sarojini responded to it at the age of sixteen bypassing all the barriers of caste and creed. 'An Indian Love Song' depicts a Hindu beloved and a Muslim lover, where he speaks thus:

*"Love recks not of feud and bitter follies
 Of strange, comrade or kin
 Alike in his ear sound the temple bells and the cry
 Of the meuzzin."*

In the same way 'If You Call Me' also expresses the force of love. Sarojini Naidu gives full vent to her artistic and lyrical genius in portraying love that is a human desire but she also shows the triumph of divine love over the temptation of human desire.

जो व्यक्ति इसकी अत्यन्त सम्मोहक पुकार पर प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करता है वह एक नीरस आत्मा का स्वामी ही हो सकता है। सरोजिनी ने इस पुकार पर प्रतिक्रिया सोलह वर्ष की आयु में की और सभी प्रकार के जाति व समुदाय के बन्धनों को तिलांजलि दे दी। 'An Indian Love Song' में एक हिन्दू प्रेमिका और मुस्लिम प्रेमी का विवरण है जब वह पुकार कर कहता है—

*"सच्चा प्रेम, पुश्तैनी दुश्मनी की परवाह नहीं करता है
 और अजनबियों, साथियों व परिवारीजनों की बेवकूफियों
 की भी। उसके कानों को मन्दिर की घंटियों और
 अजान की अनुगूँज की आवाज एक समान प्रतीत होती है।"*

इसी प्रकार 'If You Call Me' में भी प्रेम के वेग का प्रदर्शन किया गया है। मानव की सहज इच्छा के रूप में प्रेम को नायडू ने पूरा महत्त्व दिया है और अपनी कलात्मकता व गीतात्मकता से उसे समृद्ध किया है लेकिन इसके साथ ही उन्होंने मानवीय इच्छा के लुभावने स्वरूप पर दिव्य प्रेम को वरीयता दी है।

Q.23. Describe Sarojini's family background.

सरोजिनी की पारिवारिक पृष्ठभूमि का विवरण दीजिए।

Ans. Sarojini Naidu was born on 13th February 1879 at Hyderabad in a Brahmin family of Bengal. The family had migrated from Brahman-gaon, a village in East Bengal (now in Bangladesh). She had six sisters and brothers. She was the eldest daughter of Dr Aghorenath Chattopadhyay and Varadsundari Devi. Aghorenath was a scientist while Varadsundari wrote poetry in Bengali. They were Bengalis who had discarded their Brahminism for the Brahmo Samaj and made a new home in Hyderabad, then under the suzerainty of the Nizams. In 1898, Sarojini married the man she loved, Dr. Govindarajulu Naidu, despite parental resistance. She had four children in quick succession and devoted herself to writing poetry and enjoying a happy domestic life.

सरोजिनी नायडू का जन्म बंगाल के एक ब्राह्मण परिवार में 13 फरवरी 1879 ई० को हैदराबाद में हुआ था। यह ब्राह्मण परिवार पूर्वी बंगाल (अब बांग्लादेश) के ब्राह्मणगाँव नामक ग्राम से यहाँ आया था। उनके छह भाई-बहन थे। वह डॉ०

अधोरनाथ चट्टोपाध्याय और वरदसुन्दरी देवी की सबसे बड़ी पुत्री थीं। अधोरनाथ एक वैज्ञानिक थे जबकि वरदसुन्दरी बंगाली में कविताएँ रचती थीं। वे बंगाली थे और ब्रह्म समाज के प्रभावस्वरूप उन्होंने अपने ब्राह्मण होने को तिलांजलि दे दी थी और हैदराबाद में अपना नया निवास बना लिया था जो उस समय निजाम के अधीन हुआ करता था। अपने माता-पिता के विरोध के बावजूद भी उन्होंने 1898 में डॉ० गोविन्दराजुलु नामक व्यक्ति से विवाह किया जिसे वे प्रेम करती थीं। थोड़े-थोड़े अन्तराल के बाद उनकी चार सन्तानें हुईं और उन्होंने स्वयं को कविता लिखने में लगा दिया और सुखद घरेलू जीवन में व्यस्त हो गयीं।

Q.24. Do you agree that Sarojini Naidu was a good orator? Discuss.

क्या आप इस कथन से सहमत हैं कि सरोजिनी नायडू एक अच्छी वक्ता थीं? विवेचना कीजिए।

Ans. In English and occasionally in Persianised Urdu, Sarojini Naidu's career as an orator has yet to be reviewed as an aspect of her creative use of English rhetoric. She knew all the techniques of rhetoric. Skilled in delivery, with a superb sense of timing and abundant humour, she was as resourceful in her public debates as in her poetry. Her verbal flow carried her audience along even when she was not clear in her argument. She was truly Indian.

सरोजिनी नायडू अंग्रेजी में धाराप्रवाह भाषण देती थीं और यदाकदा पारसी मिश्रित उर्दू में भी वह व्याख्यान देने में समर्थ थीं। वक्ता के रूप में उनकी ओजस्विता का आकलन होना अभी शेष है। उन्हें वाक्पटुता की सभी तकनीकों का ज्ञान था। वह शब्दों के प्रवाह को समझकर समय का निर्धारण उनके बोलने के दौरान करती थीं। हास्य का सही उपयोग भी उनकी शैली में शामिल था। सार्वजनिक मंचों से अपने संभाषण से दर्शकों को उसी प्रकार प्रभावित करने में समर्थ होती थीं जैसा कि वे अपनी कविताओं में प्रभावोत्पादक रहती थीं। उनका शब्द प्रवाह इतना ओजस्वी होता था कि जब वह अपनी विषयवस्तु को ठीक से समझा नहीं पाती थीं तब भी श्रोतागण उनके शब्दों से बँधे रहते थे। वह सच्चे अर्थों में भारतीय थीं।

Q.25. Discuss the early life of Kamala Markandaya.

कमला मार्कण्डेय के प्रारम्भिक जीवन के बारे में विवरण दीजिए।

Ans. Kamala Markandaya was born on 1st January, 1924 into an upper-middle class Brahmin family. She was a native of Mysore state and did her graduation from Madras University. She published several short stories in different magazines of India. She was an Indian novelist and journalist of fine reputation. Kamala was a descendant of diwan Purnaiya and had great fluency in Kannada and Marathi.

कमला मार्कण्डेय का जन्म 1 जनवरी, 1924 को एक उच्च मध्यमवर्गीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। वह मैसूर राज्य की निवासी थीं और उन्होंने मद्रास विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की थी। भारत की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में उनकी लघुकहानियों का प्रकाशन हुआ। वह भारतीय उपन्यासकार थीं और पत्रकारिता में विशेष ख्याति अर्जित की। वह दीवान पुरनय्या की वंश परम्परा से थीं और कन्नड़ व मराठी में उन्हें विशेष दक्षता प्राप्त थी।

Q.26. In what way was Kamala Markandaya the Rachel Carson of India?

कमला मार्कण्डेय किस प्रकार भारत का रशेल कार्सन थीं?

Ans. In all Kamala Markandaya's works, a common theme of social distinctions and the differences between people living in poverty and wealth, as well as the difficulties each class undergoes is prevalent. Markandaya was an evolutionary and a great preceptor of the environment surrounding her. She thinks ahead to environmental and societal problems that globalization and development bring. In many ways she resembled Rachel Carson. Therefore, Kamala was the Carson of India, calling out before we reach a point that is beyond going back.

कमला मार्कण्डेय की सभी कृतियों में सामाजिक प्रभेद और अमीर-गरीब के बीच के अन्तर का कथानक समान रूप से परिव्याप्त दिखायी देता है। सभी वर्गों की परेशानियाँ इनमें दिखाई पड़ती होती हैं। मार्कण्डेय एक क्रांतिकारी लेखिका थीं

जिन्हें अपने आस-पास के वातावरण का बोध सदैव बना रहता था। भूमण्डलीकरण और विकास के कारण जो पर्यावरणीय व सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, उनके बारे में वह पहले से ही समझ लेती हैं। इस रूप में अनेक बार वह रशेल कार्सन के अनुरूप प्रतीत होती हैं। इसीलिए वह भारत की रशेल कार्सन थीं जहाँ वह हमें उस बिन्दु पर पहुँचने से पहले ही सचेत कर देती हैं जहाँ से वापस लौटना सम्भव न रह जाए।

Q.27. Discuss Kamala's life and range of her characters.

कमला के जीवन और उनके पात्रों के वर्ग का विवरण दीजिए।

Ans. Kamala Markandaya was born on 1st January 1924. She was an Indian novelist and journalist. She has established herself as one of the most important Indian novelists writing in English. She was married to an Englishman Bertrand Taylor. Kamala was born in to an upper-middle class family. She was a native of Mysore and was a student of the University of Madras. She settled in Britain, where she died in 2004. Her ten novels present a remarkable range of characters from Rukmini, a poor peasant woman in 'Nectar in a Sieve', through the urban poor of A Handful of Rice', to the highest circles of princely life in 'The Golden Honeycomb.'

कमला मार्कण्डेय 1 जनवरी 1924 को पैदा हुई थीं। वे एक भारतीय उपन्यासकार व पत्रकार थीं। उन्होंने अंग्रेजी विधा से स्वयं को एक सफल उपन्यासकार के रूप में स्थापित कर लिया था। उनका विवाह एक अंग्रेज बर्ट्रेण्ड टेलर से हुआ था। कमला का जन्म एक उच्च मध्यम वर्ग के परिवार में हुआ था। वह मैसूर की मूल निवासी थीं और वह मद्रास विश्वविद्यालय की छात्रा रहीं। वर्ष 2004 में उनका देहावसान हो गया।

उनके दस उपन्यासों में पात्रों के नानाविध रूप दिखायी देते हैं। 'Nectar in a Sieve' में रुक्मिणी एक गरीब देहाती स्त्री है, और 'A Handful of Rice' में एक शहरी गरीब दिखायी देता है, तो 'The Golden Honeycomb' में रजवाड़े की शान-शौकत प्रतिबिम्बित होती है।

Q.28. Give a panorama of the early life of Nayantara Sahgal.

नयनतारा सहगल के प्रारम्भिक जीवन की चित्रावली प्रस्तुत कीजिए।

Ans. Nayantara Sahgal (b.1927) belongs to the most affluent and politically awared family. She is a member of Nehru family, the second of the three daughters born to Jawaharlal Nehru's sister Vijay Lakshmi Pandit. Nayantara Sehgal is an Indian writer who writes in English. She has written novels, autobiographies and other literary genres of great importance. She spent much of her childhood at Anand Bhavan in Prayagraj, which was the ancestral house of the Nehru family in Allahabad. She studied at Poona and later attended Woodstock, a missionary school in Mussoorie.

नयनतारा सहगल (जन्म 1927) एक अत्यन्त प्रतिष्ठित और राजनीतिक रूप से जागरूक परिवार से सम्बन्धित हैं। वह नेहरू परिवार की सदस्या हैं। जवाहरलाल नेहरू की बहन विजयलक्ष्मी पंडित की तीन पुत्रियों में से वह दूसरी हैं। नयनतारा सहगल एक भारतीय लेखिका हैं जो अंग्रेजी में साहित्य साधना करती हैं। उन्होंने उपन्यासों, आत्मकथाओं और साहित्य की अन्य विधाओं में महत्त्वपूर्ण सृजन किया। उनके बचपन का अधिकांश भाग प्रयागराज के आनन्द भवन में व्यतीत हुआ जो कि इलाहाबाद में नेहरू परिवार का पैतृक आवास था। उन्होंने पूना में अध्ययन किया और बाद में मसूरी के मिशनरी स्कूल वुडस्टोक में प्रवेश लिया।

Q.29. Nayantara Sahgal's novels represent the life of rich section and political scenario of India. Discuss.

नयनतारा सहगल के उपन्यास उच्च वर्ग के जीवन और भारत के राजनीतिक परिदृश्य का वर्णन करते हैं। विवेचना कीजिए।

Ans. As Nayantara belongs to a rich family, her novels also present the life of the richest sections of Indian society. In these novels are represented their hypocrisy and shallow values.

Sahgal is also concerned with the great heritage of India in which modern generation feels great pride in it. Sahgal's novels show the great interest in the way this Western-educated novelist has seen the power game in the political scenario at the apex level. Major national events provide the main theme and sometimes the background for her different novels. At different occasions she stayed with her maternal uncle Jawaharlal Nehru and there she gained first-hand knowledge of political activities of the country as well as ups and downs of political leaders.

जैसा कि नयनतारा सहगल एक धनी परिवार से ताल्लुक रखती हैं, उनके उपन्यासों में भी भारतीय समाज के सर्वाधिक सम्पन्न वर्ग को दर्शाया गया है। इन उपन्यासों में इस वर्ग के पाखण्ड व ढोंग और खोखले मानदण्डों का चित्रण किया गया है। इसके साथ ही सहगल भारत की समृद्ध सांस्कृतिक संपदा को भी महत्त्व देती हैं जिसमें आधुनिक संतति, गौरव की अनुभूति महसूस करती हैं। सहगल के उपन्यासों में, राजनीति के शिखर पर जो गतिविधियाँ इस पश्चिमी संस्कृति में शिक्षित नारी ने देखीं, उनको कथानक का रूप दिया। राष्ट्रीय घटनाक्रमों को ही मुख्य कथानक और उपन्यासों की पृष्ठभूमि बनाया गया है। विभिन्न अवसरों पर सहगल अपने मामा जवाहरलाल नेहरू के साथ रहीं और राजनीति के वास्तविक क्रियाकलापों से परिचित हुईं, साथ ही राजनीतिक लोगों के उतार-चढ़ाव देखे।

Q.30. Tagore's creations are mostly influenced by love theme. Discuss.

टैगोर के लेखन ज्यादातर प्रेम विषय से प्रभावित रहते हैं। विवेचना कीजिए।

Ans. Love theme always influences Rabindranath's poetry. There is a wide variety of love, such as love for woman, love for humanity, love for God, love for Nature, love for his country, love for beauty and truth. His is a comprehensive view of life. He is as much a poet of love and passion, as he is a poet of love of God and religion. Although he recognises the physical basis of love, he also emphasises that love transcends into higher level of human values.

For Tagore a thing of beauty is a joy for ever and it has an edifying property. Beauty in all its aspects appeals to him. His poems contain a lot of love, beauty, colour, sights sounds.

प्रेम विषय रवीन्द्रनाथ के काव्य लेखन को हमेशा प्रभावित करता है। प्रेम की अनेक श्रेणियाँ हैं; जैसे—नारी के प्रति प्रेम, मानवता के प्रति प्रेम, ईश्वर के प्रति प्रेम, प्रकृति के प्रेम, राष्ट्र के प्रति प्रेम, सुन्दरता के प्रति प्रेम और सत्य के प्रति प्रेम। जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण काफी व्यापक है। जिस प्रकार प्रेम व संवेगों के कवि हैं उसी रूप में वह ईश्वर व धर्म के भी कवि हैं। यद्यपि वह प्रेम के भौतिक स्वरूप को मान्यता देते हैं तथापि वह मानते हैं कि मानवीय गरिमा की उच्चता के लिए भौतिक स्वरूप से ऊपर उठ जाता है।

सुन्दरता की वस्तु चिरस्थायी सुख देने वाली होती है जिसमें आध्यात्मिकता के उत्थान के तत्त्वों का समावेश हो जाता है। प्रेम के सभी प्रकार उन्हें संबल प्रदान करते हैं। उनकी कविताओं में प्रेम, सुन्दरता, इन्द्रधनुषी आभा व संगीत अद्भुत रूप से परिव्याप्त होते हैं।

Q.31. Do you agree that Gandhian vision is reflected in all over the writings of K.S. Venkataramani. Discuss.

क्या आप सहमत हो कि के.एस. वेंकटरमाणी के लेखन में सर्वत्र गांधी दर्शन की झलक दिखायी देती है? विवेचना कीजिए।

Ans. Yes, I agree because Venkataramani's many novels speak about Mahatma Gandhi and his different movements. He used his writings to make people aware about Indian movements of freedom struggle. His first novel 'Murugan the Tiller' (1927), promotes the cause of Gandhian economics through its dramatisation of a heavily allegorical relationship between two friends. One is materialist Kedari and the other public-spirited Ramu. Kedari comes to a

bad end while the idealist Ramu implements the vision of Gandhi's village-based economy by setting up a rural commune with the newly converted friend.

Kandan, the Patriot also speaks about Gandhi and his ideology.

In 'Jatadharan', the village life is sketched and Gandhian vision is reflected throughout the narrative.

हाँ, मैं सहमत हूँ क्योंकि वेंकटरमाणी के बहुत-से उपन्यासों में महात्मा गांधी और उनके विभिन्न आन्दोलनों का विवरण रहता है। उन्होंने अपने लेखन के द्वारा भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलनों के सम्बन्ध में लोगों को जागरूक करने का कार्य किया। उनका पहला उपन्यास 'Murugan the Tiller' (1927) गांधी के अर्थशास्त्र के कारक को आगे बढ़ाता है, जिसको दो मित्रों के सम्बन्धों की प्रतीक कथा के माध्यम से दर्शाया गया है। केदारी भौतिकवादी है जबकि दूसरा रामू है जो सहकार की भावना से पुरित है। केदारी का अन्त बुरा होता है जबकि आदर्शवादी रामू गांधी के ग्रामीण अर्थव्यवस्था को लागू करते हुए ग्राम समुदाय की स्थापना अपने नये मित्र की सहायता से करता है।

'Kandan the Patriot' में भी गांधी और उनकी विचारधारा को प्रस्तुत किया गया है।

'Jatadharan' में ग्रामीण जीवन को चरितार्थ किया गया है और पूरी कहानी में गांधी दर्शन की झलक दिखायी देती है।

SECTION-B (SHORT ANSWER TYPE) QUESTIONS

Q.1. Do you agree that Aurobindo is not a wide-known poet? Discuss.

क्या आप इस बात से सहमत हैं कि श्री अरविन्दो अधिक प्रख्यात कवि नहीं हैं? विवेचना कीजिए।

Ans. Sri Aurobindo's poetry stands a class apart in Indo-English poetry and offers scope for critical reassessment. George Sampson has referred to Aurobindo as more famous as an exponent of Indian nationalism than as a poet. Sri Aurobindo is not said to be widely-known poet. The reason behind this is that his aim was not to gain success and personal fame, but to express spiritual truth and experience of all kinds in poetry. He tried to use the English tongue for the highest spiritual expression. 'The Life Divine' and 'The Synthesis of Yoga' related only to an individual self-development. In the 'Human Cycle' originally he has indicated how these truths affect the evolution of human society. In 'The Ideal of Human Unity' he has taken the present trend of mankind towards a closer unification and tried to appreciate its tendencies and show what is wanting in them in order that real human unity may be achieved. He extended the application of this very approach to the sphere of international politics in his 'The Ideal of Human Unity'.

Thus it may be said that Sri Aurobindo never bothered to gain any fame.

श्री अरविन्दो का काव्य भारतीय अंग्रेजी कविता में एक पृथक वर्ग का ही प्रतिनिधित्व करता है जिसका पुनः मूल्यांकन व समीक्षा करने की आवश्यकता है। जॉर्ज सेम्सन ने अरविन्दो को कवि की अपेक्षा एक भारतीय राष्ट्रवादी के रूप में अधिक विख्यात माना है।

कवि के रूप में अरविन्दो को अधिक विख्यात नहीं कहा जाता है। इसके पीछे वजह यह रही कि सफलता पाना और व्यक्ति के रूप में ख्याति अर्जित करना उनका ध्येय नहीं रहा, लेकिन आध्यात्मिक सत्य को प्रस्तुत करना और काव्य में सभी तरह के अनुभवों को आत्मसात् करना रहा है। उन्होंने अंग्रेजी जवान का उपयोग आध्यात्मिक अनुभूति को प्रकट करने में किया। 'The Life Divine' और 'The Synthesis of Yoga' का सम्बन्ध प्रत्येक के व्यक्तित्व के विकास से सम्बन्धित रहा। 'Human Cycle' में उन्होंने यह दर्शाया है कि ये सत्य किस प्रकार मानव समाज के विकास को प्रभावित करते हैं। 'The Ideal of Human Unity' में समसामयिक दौर में मानव की प्रवृत्ति को समन्वयवादी स्वरूप में दिखाया है और इस झुकाव को सम्मान दिया है और उनमें क्या अन्य चीजें हों जिससे मानव की एकता को सुदृढ़ता प्रदान की जा सके। उन्होंने

अपने इस उदात्त स्वरूप को विश्व राजनीति के पटल तक विस्तृत कर दिया जो उनकी कृति 'The Ideal of Human Unity' में दिखायी पड़ता है।

इस प्रकार ये कहा जा सकता है कि अरविन्दो ने कभी भी यश पाने की कामना नहीं की।)

Q.2. Is it true that Sri Aurobindo's poetry is more suitable for expression? Explain.

क्या यह सत्य है कि श्री अरविन्दो के लिए अभिव्यक्ति के लिए कविता अधिक अच्छा माध्यम है? विवेचना कीजिए।

Ans. As per my point of view, it is true that for Aurobindo poetry is more suitable for the expression of inner experience than prose. Sometimes he made use of well-established forms, as in the sonnet 'Liberation' (1939):

"My mind, my soul grow larger than all Space
Time founders in that vastness glad and nude:
The body fades, an outline, a dim trace
A memory in the spirit's solitude.

This universe is a vanishing circumstance
In the glory of a white infinity
Beautiful and bare for the Immortal's dance
House-room of my immense felicity.

In the thrilled happy giant void within
Thought lost in night and passion drowned in bliss
Changing into a stillness hyaline,
Obey the edict of the Eternal's peace.

Life's now the Ineffable's dominion
Nature is ended and the spirit alone."

Some of his most interesting material experiments are recreations of Greek and Latin forms in English.

जहाँ तक मेरा मानना है अरविन्दो के लिए अन्तरात्मा के अनुभव की अभिव्यक्ति के लिए गद्य की अपेक्षा पद्य या कविता की भाषा अधिक उपयुक्त व अनुकूल है। कभी-कभी वह इस अभिव्यक्ति के लिए स्थापित प्रकारों का उपयोग करते हैं जैसा कि उन्होंने सॉनेट 'Liberation' में किया है—

"My mind, my soul grow larger than all Space

Nature is ended and the spirit alone."

छन्दों पर उनके कुछ अत्यधिक मनोरंजक अनुप्रयोग वास्तव में यूनानी व लैटिन प्रकारों का अंग्रेजी भाषा में पुनर्निर्माण है।

Q.3. Discuss various aspects of Rabindranath's greatness.

रवीन्द्रनाथ की महानता के विभिन्न पहलुओं का विवरण दीजिए।

Ans. Rabindranath Tagore was the most versatile writer and poet of his time. He contributed a lot to Indo-English literature. He was a great literary artist whose influence on

Indian literature is greater than any other artist. He made his country glorious and dignified, and himself too. His poetry has been compared with the poetry of Wordsworth, Shelley, Keats, Francis Thomson, T.S. Elliot, Edith Sitwell and W.H. Auden. He is incomparable as he is a class by himself. His universality is undeniable. He is a thinker, a humanist, a philosopher and above all a prophet, a mystic and a romanticist. He is no escapist. He meets the grim realities of the world. He has blended romanticism with humanism and realism. His 'Gitanjali' lyrics have many themes. He is a classical, and regarding his refinement of language and his tastes and love for God he is a mystic. The main themes of Rabindranath are Man, God, Nature, Love, Life, Death, Freedom, Childhood, Social evils, Patriotism and Religion. Tagore was the first Non-European to receive a Nobel Prize in literature.

रवीन्द्रनाथ टैगोर अपने समय के सर्वाधिक बहुआयामी लेखक व कवि थे। उनका भारतीय-अंग्रेजी साहित्य के लिए अवर्णनीय योगदान रहा है। वे एक महान साहित्यकार थे जिनका भारतीय साहित्य में अन्य किसी भी लेखक से कहीं अधिक योगदान और प्रभाव है। उन्होंने अपने राष्ट्र को गौरवान्वित किया और स्वयं को भी। उनकी काव्य साधना की तुलना वर्ड्सवर्थ, शैली, कीट्स, फ्रांसिस थॉमसन, टी.एस.एल. इलियट, एडिथ सिटवेल और डब्ल्यू.एच. ओडिन की कविता से की गयी है। उनकी किसी से तुलना नहीं की जा सकती क्योंकि वह स्वयं में ही एक वर्ग हैं। उनकी सर्वव्यापकता से इनकार नहीं किया जा सकता है। वह एक चिन्तक, मानववादी, दार्शनिक और भविष्यवक्ता, रहस्यवादी व रोमांटिक हैं। वह किसी भी रूप में पलायनवादी नहीं हैं। वह विश्व की वास्तविकताओं का सामना करने में समर्थ हैं। उन्होंने रोमांटिक तत्त्वों का समावेश मानवतावाद व यथार्थवाद के साथ किया है। उनकी 'गीतांजलि' के गीतों में अनेक विषय-वस्तुएँ हैं। वह एक शास्त्रीय पुरोधा हैं लेकिन परिमार्जित भाषा व ईश्वर के प्रति प्रेमभाव उन्हें रहस्यवादी बना देता है। रवीन्द्रनाथ की विषय-वस्तुओं में शामिल हैं : मानव, ईश्वर, प्रकृति, प्रेम, जीवन, मृत्यु, स्वतन्त्रता, बाल्यकाल, सामाजिक दोष, राष्ट्रभक्ति और धर्म। साहित्य का नोबेल पुरस्कार पाने वाले टैगोर पहले ऐसे व्यक्ति थे जो यूरोप से नहीं थे।

Q.4. Throw light on post-colonial Indian fiction in the light of Bhabani Bhattacharya.

भवानी भट्टाचार्य का सन्दर्भ ग्रहण करते हुए औपनिवेशिक काल के पश्चात् के भारतीय कथासाहित्य पर प्रकाश डालिए।

Ans. Bhabani Bhattacharya was born at Bhagalpur in Bengal Presidency in 1906. He was a fiction writer of social realities. The nation-centredness of post-colonial new generation of Indian novelists was tempered by a characteristic cosmopolitanism of outlook and experience. Bhabani Bhattacharya spent a substantial and formative period of his life lives in England. His writing is often albeit subtly, underscored by the sense of cultural schizophrenia which has become the hallmark of recent and more self-consciously post-colonial Indian fiction.

In Bhattacharya's 'So Many Hungers' (1947), Gandhi is present in this fiction of post-colonial India both in the flesh and through his ideas, in the spirit. He is present also in more hidden ways. Bhattacharya attributes his negotiations of tradition and modernity.

भवानी भट्टाचार्य का जन्म बंगाल प्रान्त के भागलपुर में सन् 1906 में हुआ था। वे एक उपन्यासकार थे जो सामाजिक वास्तविकताओं में लिखते थे। औपनिवेशिक काल के बाद ही नई पीढ़ी राष्ट्र राज्य की संकल्पना के साथ भारत के उपन्यासकारों में भी पल्लवित हुई जो चरित्र और सोच में सार्वभौमिक स्वरूप से सम्पन्न थी। भवानी भट्टाचार्य ने जीवन का महत्त्वपूर्ण रचनात्मक भाग इंग्लैण्ड में व्यतीत किया। भवानी का लेखन कार्य यद्यपि प्रायः विलक्षण होता है तथापि सांस्कृतिक रूप से विभक्त मानसिकता के कारण विदेशियों ने उनके लेखन को कम करके आँका लेकिन उन्होंने स्वतः ज्ञान से अपनी प्रामाणिकता को सिद्ध कर दिया है।

भट्टाचार्य के उपन्यास 'So Many Hungers' (1947) में औपनिवेशिक काल के बाद के भारत के इस उपन्यास में गांधी की उपस्थिति दिखायी गयी है—जिसमें वे साक्षात् रूप से और विचारों में भी दिखायी देते हैं। इसके साथ ही अनेक स्थलों पर उनकी झलक मिलती है। भट्टाचार्य अपनी परम्परा और आधुनिकता को दर्शाते हैं।

Q.5. Malgudi is the main base of the novels of Narayan. Discuss.

मालगुड़ी, नारायण के उपन्यासों का मुख्य आधार है। विवेचना कीजिए।

Or Throw light upon the Malgudi as the central characters in the novels of R.K. Nayayan.

मालगुड़ी आर०के० नारायण के उपन्यासों का केन्द्रीय पात्र है, पर प्रकाश डालिए।

Ans. Malgudi is considered as real base of Narayan's novels. Malgudi is Narayan's Casterbridge, Malgudi is everywhere. All his ten novels and most of the short stories are set in Malgudi. It is the fictitious town with a river in one side and forests on the other. The educational institutions, offices and markets, all are here as the case in every town of India.

Malgudi becomes the base of novels of Narayan. All things change and pass, but the old landmarks like Sarayu, Hills, Jungles, Groves remain. So the spirit of the place influences the characters and action as does Egden Health in Hardy's 'The Return of the Native'.

Malgudi represents not only the Malgudi town itself but it represents the entire India and Indian way of living. Narayan is able to transform particular region into a symbol of India and Indian life. Narayan gave it such treatment that the reader begins to feel that whatever happens in Malgudi, happens everywhere.

मालगुड़ी को नारायण के उपन्यासों का आधार माना जाता है। मालगुड़ी नारायण का कैस्टरब्रिज है जो सर्वत्र दिखायी देता है। उनके सभी दस उपन्यासों व अधिकांश कहानियों की पृष्ठभूमि मालगुड़ी में दर्शायी गयी है। यह एक काल्पनिक कस्बा है जिसके एक ओर नदी बहती है तो दूसरी ओर वनों की दृश्यावली है। जैसाकि भारत के सभी कस्बों में होता है यहाँ भी शिक्षण संस्थाएँ, कार्यालय और बाजार स्थित हैं।

मालगुड़ी, नारायण के उपन्यासों का आधार बन गया है। सभी वस्तुएँ बदलाव के साथ आती हैं और कुछ अन्तराल के पश्चात् ओझल हो जाती हैं, लेकिन यहाँ के स्थायी चिह्न; यथा—सरयू, पहाड़ियाँ, वन, उपवन यथावत् बने रहते हैं। इसीलिए पात्रों और कथानक पर स्थान विशेष का प्रभाव दिखलाई पड़ता है जैसा कि हार्डी के उपन्यास 'The Return of the Native' में Egden Heath का प्रभाव होता है।

मालगुड़ी में केवल मालगुड़ी कस्बा ही समाहित नहीं है अपितु यह सम्पूर्ण भारत और भारतीय तौर-तरीकों का प्रतिनिधित्व भी करता है। नारायण एक विशेष क्षेत्र को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं जो पूरे भारत में प्रतिबिम्बित करने में सफल रहता है। इसकी प्रस्तुति नारायण द्वारा इस प्रकार की जाती है कि पाठक को अहसास होता है कि मालगुड़ी में जो कुछ घटित हो रहा है वैसा ही सब स्थलों पर होता है।

Q.6. The work of Bhabani Bhattacharya is greatly influenced by Gandhism. Discuss.

भवानी भट्टाचार्य के कृतित्व गांधीवाद से बहुत ज्यादा प्रभावित हैं। विवेचना कीजिए।

Ans. Gandhism has its influence on the work of Bhabani Bhattacharya which is measured not only in terms of its anti-imperial context but also for its impetus to the programme of international reform. The social realism of his fiction seeks its materials, and gains its inspiration from the nationalist mobilization and upliftment of women, workers, untouchables, and peasants.

Bhabani's narrative tends to represent the colonial encounter itself as a shadowy subplot to the larger story of socio-economic transformation. Gandhi continues to be treated as the ethical centre of the purported turning-upside-down of old hierarchies, a distinctly Nehruvian vocabulary gains currency in the novels of this period.

भवानी भट्टाचार्य के कृतित्व में गांधीवाद का प्रभाव उपस्थित रहता है जो साम्राज्यवाद की खिलाफत करते हुए ही दिखायी नहीं देता है अपितु राष्ट्र के आन्तरिक सुधार कार्यक्रम को प्रेरित करने के निमित्त गांधीवाद प्रकट होता है। भवानी भट्टाचार्य के उपन्यास में सामाजिक यथार्थवाद के लिए यह भावभूमि प्रदान करता है और राष्ट्रवादी जागरूकता के साथ ही नारी, मजदूर, अछूतों और कृषक वर्ग के उत्थान को प्रेरित करता है।

भवानी की कृतियों में उपनिवेशवाद का विरोध प्रदर्शित होता है जो मुख्य कहानी की उपकथा के रूप में सामने आता है जहाँ सामाजिक-आर्थिक बदलाव दिखायी देता है। गांधी पूर्णतया नीति विषयक पहलू के केन्द्र में रहते हैं जो पुराने पदानुक्रम को पूरी तरह से बदल देते हैं जहाँ पर नेहरूवाद भवानी भट्टाचार्य के साहित्यिक काल में उभरता हुआ दिखायी देता है।

Q.7. Enumerate the fifteen novels written by Mulk Raj Anand with their years of publication.

मुल्कराज आनन्द द्वारा लिखित पन्द्रह उपन्यासों के नाम एवं उनका प्रकाशन वर्ष लिखिए।

Ans. Following are novels written by Anand :

आनन्द द्वारा लिखित उपन्यास निम्न हैं—

- | | |
|---------------------------------------|---|
| (i) Untouchable (1935) | (ii) Coolie (1936) |
| (iii) Two Leaves and a Bud (1937) | (iv) Lament on the Death of Master of Arts (1939) |
| (v) The Village (1937) | (vi) Across the Black Waters (1940) |
| (vii) The Sword and the Sickle (1942) | (viii) The Big Heart (1945) |
| (ix) Seven Summers (1951) | (x) Private Life of an Indian Prince (1953) |
| (xi) The Old Woman and the Cow (1960) | (xii) The Road (1961) |
| (xiii) The Death of a Hero (1963) | (xiv) Morning Face (1968) |
| (xv) Confession of a Lover (1976) | |

Q.8. Bhabani Bhattacharya's novels are considered as sociological novels. Discuss.

भवानी भट्टाचार्य के उपन्यासों को सामाजिक उपन्यासों में गिना जाता है। विवेचना कीजिए।

Ans. Bhabani Bhattacharya belongs to social realism school of Indo-Anglian literature. He was greatly interested in social issues which prevailed in the Indian society in those days. The stories of his novels abound in social and historical realities. He did yeoman service to Indian English fiction in terms of transmuted native Indian in English. He has brought great credit to the Indian nation by their literary achievements. Bhabani Bhattacharya is greatly interested in social issues and social evils which afflict Indian society. His novels, like those of Mulk Raj Anand, may therefore be described as sociological novels. Bhabani believes that the novel should have a social purpose, his stories abound in social and historical realities, quite often bitter and gruesome, such as the Bengal famine of 1943, the tragedies of freedom struggle and partition, evils of poverty, corruption, ignorance, superstition, exploitation, greed, sexual perversions, etc.

भवानी भट्टाचार्य भारतीय-आंग्ल साहित्य के सामाजिक यथार्थवाद की शाखा का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे मुख्य रूप से उन सामाजिक समस्याओं से सरोकार रखते थे जो उस दौरान भारतीय समाज को पीड़ित किए हुए थीं। उनके उपन्यासों में ऐसे ही सामाजिक और ऐतिहासिक वास्तविकताओं से सम्बन्धित कहानियाँ उनका कथानक बनती थीं। उन्होंने भारतीय स्थानीय भाव-भंगिमाओं को अंग्रेजी का कलेवर देकर निश्चयात्मक रूप से एक महत्वपूर्ण कार्य किया है। अपनी साहित्यिक उपलब्धियों के माध्यम से उन्होंने भारत राष्ट्र को गौरवान्वित किया है। भवानी भट्टाचार्य प्रधानतया सामाजिक मुद्दों और सामाजिक बुराइयों से सरोकार रखते हैं जिन्होंने भारतीय समाज को परेशानी में उलझा रखा है। भवानी भट्टाचार्य के नाटकों को मुल्कराज आनन्द के नाटकों के समान सामाजिक परिवेश के नाटकों में शामिल किया जाता है। भवानी का विश्वास है कि नाटक का कोई सामाजिक ध्येय होना चाहिए, उनकी कहानियाँ सामाजिक-ऐतिहासिक वास्तविकताओं का दृश्यांकन करती हैं जो प्रायः ही मर्मभेदी व भीषण भी होती हैं; जैसे—1943 का बंगाल अकाल, स्वतन्त्रता संग्राम के दुःखद दृश्य, देश का विभाजन, गरीबी की बुराइयाँ, भ्रष्टाचार, अज्ञानता, अन्धविश्वास, उत्पीड़न, लालच, यौन सम्बन्धी विकृत मानसिकता इत्यादि।

Q.9. Realism is one of the main elements in novels of Mulk Raj Anand. Discuss.

मुल्कराज आनन्द के उपन्यासों में यथार्थवाद मुख्य तत्त्वों में से एक है। विवेचना कीजिए।

Or Discuss Mulk Raj Anand as the writer of realism.

मुल्क राज आनन्द एक यथार्थवादी लेखक हैं। विवेचना कीजिए।

Ans. It is true that robust realism is one of the main elements in novels of Mulk Raj Anand. As the formative years of his life were passed in Punjab, he portrays Punjabi characters and Punjabi life with great minuteness and realism. We get in his novels convincing and credible accounts of the social manners, customs, ideas and beliefs, which are characteristic of life in Punjab. Many of his characters are modelled faithfully on people whom he had actually known and met. Thus the character of Bakha in *Untouchable* and that Munoo in *Coolie* are modelled on those of his boyhood playmates. *Coolie* presents a graphic picture of Bombay slums. *Untouchable* begins with a scene of public latrines, scenes of dirty bazars, lanes, alleys of gutters in which the flow of dirty water is obstructed by solid filth and of children easing themselves in front of their houses. Anand's realism is also seen in his portrayal of all aspects of life, even the ugly and the seamy one. He does not eliminate the ugly aspects of human nature from his picture of life.

यह सच है कि शक्तिशाली यथार्थवाद आनन्द के उपन्यासों के मुख्य तत्त्वों में से एक है, क्योंकि आनन्द की किशोरावस्था पंजाब में बीती थी, इसलिए वे पंजाबी चरित्रों और पंजाबी जीवन का अत्यन्त बारीकी व सहजरूपेण चित्रण करते हैं। हमें उनके उपन्यासों में सामाजिक व्यवहार, रीति-रिवाजों, विचारों और विश्वासों का गरिमापूर्ण चित्र मिलता है जो पंजाब के जीवन की विशेषता है। उनके अनेक चरित्र उन व्यक्तियों पर आधारित हैं जिनसे वह वास्तव में मिले और जानते थे। इस प्रकार 'Untouchable' में बक्खा और 'Coolie' में मुन्नु उनकी किशोरावस्था के साथियों पर आधारित है। 'Coolie' में मुम्बई की मलिन बस्तियों का जीवन्त चित्रण है। *Untouchable* सार्वजनिक शौचालय के दृश्य से प्रारम्भ होता है तथा गन्दे बाजारों, गलियों, ऐसे गटरों, जिनमें गन्दे पानी का बहाव केवल ठोस मल द्वारा रुकता है और अपने मकानों के बाहर बच्चों के शौच करने के दृश्यों से परिपूर्ण है। आनन्द का यथार्थवाद उनके द्वारा भद्दे और नकारात्मक पहलुओं के साथ जीवन के सभी पक्षों के चित्रण में देखा जा सकता है। जीवन के चित्रण में वह मानव स्वभाव के विद्रूप पक्षों को भी छोड़ते नहीं हैं। गन्दगी और भद्दापन भी जीवन का उतना ही भाग है जितना कि स्वच्छता, शिष्टता और सुन्दरता का।

Q.10. Romance is the main theme of Sarojini Naidu's poems. Discuss.

रोमांस सरोजिनी नायडू की कविताओं की मुख्य विषयवस्तु है। विवेचना कीजिए।

Ans. Romance is always the base of Sarojini Naidu's poems. In 'The Royal Tombs of Golconda' she silently and seriously ponders over the extinction of the glorious dynasty of

Golconda. There is a feeling of sensuousness and mystery in the whole poem especially when she points out that the beauty of the dead Queens of Golconda is imperishable because it renews every year with the advent of spring:

*"Your beauty awakens with the spring,
To kindle these pomegranate groves."*

Sarojini's love poems are highly imaginative. They sing the song of life. Imagination casts a supernal charm over her love poems. Some of her main love poems are : 'A Rajput Love Song', 'Song of Radha', 'The Path of Tears'.

रोमांस हमेशा से सरोजिनी नायडू की कविताओं का स्तम्भ रहा है। कविता 'The Royal Tombs of Golconda' में वह शान्तिपूर्ण ढंग से गम्भीर होकर गोलकुण्डा के वैभव का चिन्तन करती हैं। पूरी कविता में भावनाओं की संवेदनशीलता और रहस्यपूर्ण आवरण दिखायी देता है, विशेष रूप से ऐसा तब प्रतीत होता है जब वह गोलकुण्डा की रानियों के रूप-लावण्य को रेखांकित करती हैं। उनकी सुन्दरता अनश्वर है क्योंकि यह प्रतिवर्ष वसन्त ऋतु के आगमन के साथ नवीनता धारण कर लेती है—

*"Your beauty awakens with the spring,
To kindle these pomegranate groves."*

सरोजिनी की प्रेम कविताएँ कल्पनाशीलता से भरपूर होती हैं। वे जीवन के संगीत को गुनगुनाती हैं। कल्पनाशीलता के कारण उनकी कविताएँ सौन्दर्य से परिपूर्ण हो जाती हैं। उनकी कुछ मुख्य प्रेम कविताएँ हैं—'A Rajput Love Song', 'Song of Radha', 'The Path of Tears'.

Q.11. How can it be said that Markandaya's bulk of work is symbolic of her own life duality? Discuss.

यह कैसे कहा जा सकता है कि मार्कण्डेय की अधिकांश कृतियाँ अपने जीवन की द्वयात्मकता की प्रतीक हैं? विवेचना कीजिए।

Ans. Markandaya was born and raised Indian and married to a British man. In this way Markandaya feels few many duality in his life. In 'Some Inner Fury', Kamala concentrates on traditional India in early post-colonialism and the struggle to create their own identity, separate from the British. In this story, which is semi-autobiographical. She talks about a young Indian woman Mira, who falls in love with an Englishman named Robert. But in the end she chooses her people over him. Markandaya also emphasizes the inherent dissimilarities among Indians and the English during the post-colonial period. She constantly draws boundaries throughout her writing about the potential fusion of these two very different cultures.

मार्कण्डेय का जन्म व लालन-पालन भारतीय था लेकिन विवाह ब्रिटिश व्यक्ति से हुआ। इस प्रकार उन्होंने कई बार द्वयात्मकता को अपने जीवन में महसूस किया। उपन्यास 'Some Inner Fury' में कमला पारस्परिक भारत पर अपना ध्यान केन्द्रित करती हैं जो उपनिवेशवाद के ठीक बाद का काल था जब लोग अपना स्वयं का अस्तित्व तलाश कर रहे थे और ब्रिटिशों से अलग अपनी अस्मिता गढ़ रहे थे। इस उपन्यास की कहानी अर्ध-आत्मकथात्मक रूप में है। उपन्यासकार, एक भारतीय नवयुवती के बारे में बताती है जिसका नाम मीरा है। वह रॉबर्ट नामक एक अंग्रेज से प्रेम करने लगती है। लेकिन अन्त में वह ब्रिटिश व्यक्ति के सापेक्ष अपने लोगों को महत्त्व देती है। उपनिवेश काल के बाद के दौर में मार्कण्डेय भी भारतीयों व ब्रिटिशों के बीच अन्तर्निहित अन्तर को रेखांकित करती हैं। इन दोनों ही संस्कृतियों के बीच वह लगातार सीमारेखा खींचती हैं जिसमें दो विपरीत संस्कृतियों में ऊर्जावान सम्मिश्रण होता है।

Q.12. Discuss briefly different aspects of personal life of Nayantara Sahgal.

नयनतारा सहगल के व्यक्तिगत जीवन के विभिन्न पहलुओं का संक्षेप में विवेचन कीजिए।

Ans. Nayantara Sahgal (b. 1927) belongs to the most affluent and politically aware family. She is a member of Nehru family, the second of the three daughters born to Jawaharlal Nehru's sister Vijay Lakshmi Pandit. Nayantara Sehgal is an Indian writer who writes in English. She has written novels, autobiographies and other literary genres of great importance. She spent much of her childhood at Anand Bhavan in Prayagraj, which was the ancestral house of the Nehru family in Allahabad. She studied at Poona and later attended Woodstock, a missionary school in Mussoorie.

Nayantara Sahgal's father Ranjit Sitaram Pandit was a barrister from Kathiawad. He was also a classical scholar who had translated Kalhan's epic history 'Rajatarangini' into English from Sanskrit.

She was awarded the 1986 Sahitya Akademi Award for her English novel 'Rich Like Us' (1985). In September 2018, she was elected as a Vice President of PEN International. It can be said that politics is in her blood. Jawaharlal Nehru was her mother's brother. An important political event forms the background for each of her novels. Most of Nayantara Sahgal's characters belong to the affluent upper class of Indian society.

नयनतारा सहगल (जन्म 1927) एक अत्यन्त प्रतिष्ठित और राजनीतिक रूप से जागरूक परिवार से सम्बन्धित हैं। वह नेहरू परिवार की सदस्या हैं। जवाहरलाल नेहरू की बहन विजयलक्ष्मी पंडित की तीन पुत्रियों में से वह दूसरी हैं। नयनतारा सहगल एक भारतीय लेखिका हैं जो अंग्रेजी में साहित्य साधना करती हैं। उन्होंने उपन्यासों, आत्मकथाओं और साहित्य की अन्य विधाओं में महत्वपूर्ण सृजन किया। उनके बचपन का अधिकांश भाग प्रयागराज के आनन्द भवन में व्यतीत हुआ जो कि इलाहाबाद में नेहरू परिवार का पैतृक आवास था। उन्होंने पूना में अध्ययन किया और बाद में मसूरी के मिशनरी स्कूल वुडस्टोक में प्रवेश लिया।

नयनतारा सहगल के पिता रणजीत सीताराम पंडित काठियावाड़ में एक बैरिस्टर थे। वह शास्त्रीय विद्वान थे जिन्होंने कल्हण के ऐतिहासिक महाकाव्य 'राजतरंगिणी' का संस्कृत से अंग्रेजी में अनुवाद किया था।

स्वयं द्वारा रचित अंग्रेजी उपन्यास 'Rich Like Us' (1985) के लिए उन्हें वर्ष 1986 के साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सितम्बर 2018 में वे PEN International की उपाध्यक्ष चुनी गयीं। यह कहना अतिशयोक्ति कदापि नहीं होगा कि राजनीति उनके रग-रग में बसी हुई है। जवाहरलाल नेहरू उनके मामा थे। उनके सभी उपन्यासों की पृष्ठभूमि के रूप में कोई-न-कोई राजनीतिक घटनाक्रम अस्तित्ववान होता है। नयनतारा सहगल के अधिकांश पात्र भारतीय समाज के उच्च वर्ग से सम्बन्धित होते हैं।

Q.13. Write a note on the theme and the plot of Savitri by Sri Aurobindo Ghosh.

श्री अरविन्दो घोष द्वारा रचित सावित्री की विषय-वस्तु पर टिप्पणी लिखिए।

Ans. Savitri is the most comprehensive, integrated, beautiful and perfect cosmic poem ever composed. Its range is vast-from earth to heaven. It illumines every important concern of man. The theme is not merely Satyavan's death; rather it is the suffering, misery and death. Death of Satyavan means defeat of Truth and invasion of darkness. But Savitri armed by the power of her love, struggles with death and secures her husband. The Mother says that everything is there: mysticism, occultism, philosophy, the history of evolution, the history of man, of the gods, of creation, of nature. How the universe was created, why, for what purpose, what destiny? - all is there. All that nobody yet knows. One can find all the answers to all yone's questions there.

The story woven in this epic is based upon the Mahabharata. This is the story—there was a king named Aswapathy. He was the king of Madra. He was childless. In order to have a child he worshipped gods and goddesses for eighteen years. The goddess Savitri became happy with him. She appeared before him out of the sacrificial fire. She declared herself pleased. She said that his desire for having an issue would be satisfied. She bestowed upon him a daughter. As she was a gift of the goddess Savitri, Aswapathy gave her the name of Savitri. She was beautiful like Laxmi. She was of golden colour and she had heavenly beauty.

सावित्री अब तक की सबसे व्यापक, एकीकृत, सुंदर और संपूर्ण ब्रह्मांडीय कविता है। इसका दायरा विशाल है—पृथ्वी से स्वर्ग तक। यह मनुष्य की हर महत्त्वपूर्ण चिंता को उजागर करती है। विषय केवल सत्यवान की मृत्यु नहीं है; बल्कि यह दुःख, विपदा और मृत्यु है। सत्यवान की मृत्यु का अर्थ है—सत्य की पराजय और अंधकार का आक्रमण। लेकिन सावित्री अपने प्रेम की शक्ति से परिपूर्ण होकर मृत्यु से संघर्ष करती है और अपने पति को सुरक्षित करती है। माँ कहती है कि इसमें सब कुछ है—रहस्यवाद, भोगवाद, दर्शन, विकास का इतिहास, मनुष्य का इतिहास, देवताओं का, सृष्टि का, प्रकृति का। ब्रह्मांड की रचना कैसे हुई, क्यों, किस उद्देश्य से, क्या प्रारब्ध सब-कुछ है? वह सब जो अभी तक कोई नहीं जानता। लोग अपने सभी सवालों के जवाब वहाँ पा सकते हैं।

इस महाकाव्य में बुनी गई कहानी महाभारत पर आधारित है। यह कहानी है—अश्वपति नाम का एक राजा था। वह मद्र का राजा था। वह निःसंतान था। संतान प्राप्ति के लिए उन्होंने अठारह वर्ष तक देवी-देवताओं की पूजा की। साथ ही उन्होंने त्याग किए। देवी सावित्री उससे प्रसन्न हो गई। वह यज्ञ की अग्नि में से उनके सामने प्रकट हुई। उसने खुद को प्रसन्न घोषित किया। उसने कहा कि एक बच्चा पाने की उसकी इच्छा पूरी होगी। उसने उसे एक बेटी दी। चूँकि वह देवी सावित्री का उपहार थी, अश्वपति ने उसे सावित्री का नाम दिया। वह लक्ष्मी की तरह सुंदर थी। वह सुनहरे रंग की थी और उसके पास स्वर्गीय सौंदर्य था।

Q.14. Write in brief on Sri Aurobindo's achievements.

श्री अरविन्दो घोष की उपलब्धियों पर संक्षिप्त निबंध लिखिए।

Ans. The Indian culture is rich in heritage and tradition. It was a lifelong history of great men who were born, had walked and breathed their last breath in this country. Sri Aurobindo Ghosh is one of them. Sri Aurobindo was one of the most eminent and learned gurus of his times; he was a spiritualist. He is one of India's most respected and renowned jewels.

Aurobindo Ghosh was a poet, guru, spiritualist and yogi. He was also dedicated to India's freedom from the British Rule; he actively participated in the Indian National Movement. Later in his life, Aurobindo Ghosh dedicated himself to spiritual evolution and became a religious leader herself.

Aurobindo Ghosh was born Bengali family to Krishna Dhun Ghosh and Swaranlata Devi in Calcutta. Though a part of an ardent Bangali family, he grew up in a westernized culture, which his father had instilled in his house. He has his schooling of Loreto house in Darjeeling and for his training to join the ICS, he soon was sent to England.

भारतीय संस्कृति विरासत और परम्परा में समृद्ध है। इसमें उन महापुरुषों का आजीवन इतिहास है जो देश में पैदा हुए और चले और अपनी अंतिम सांस ली। श्री अरविन्दो उनमें से एक हैं। श्री अरविन्दो अपने समय के सबसे प्रतिष्ठित और गुरुओं में से एक थे; वह एक अध्यात्मवादी थे। वह भारत के सबसे सम्मानित और प्रसिद्ध रत्नों में से एक हैं।

श्री अरविन्दो गुरु, अध्यात्मवादी और योगी थे। वह ब्रिटिश शासन से भारत की स्वतंत्रता के लिए भी समर्पित थे। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। बाद में अरविन्दो घोष ने खुद को अध्यात्मिक विकास के लिए समर्पित कर दिया और खुद एक धार्मिक नेता बन गए।

अरविन्दो घोष का जन्म कलकत्ता स्थित बंगाली परिवार में कृष्ण धुन घोष और स्वर्णलता देवी के घर पर हुआ। हालांकि एक उत्साही बंगाली परिवार का हिस्सा होने के बावजूद वह एक पश्चिमी संस्कृति में पले-बढ़े, उनकी स्कूली शिक्षा दार्जिलिंग के लोरेटों हाउस के स्कूल में हुई थी। आई०सी०एस० में शामिल होने के प्रशिक्षण के लिए, उन्हें जल्द ही इंग्लैण्ड भेज दिया गया।

SECTION-C LONG ANSWER TYPE QUESTIONS

Q.1. Throw light on Sri Aurobindo's political, literary and spiritual life.

श्री अरविन्दो के विभिन्न राजनीतिक, साहित्यिक व आध्यात्मिक पहलुओं पर प्रकाश डालिए।

Ans. Aurobindo was an Indian poet born on 15th August 1872. He was the first writer of Indian blood and birth to produce a major literary corpus almost entirely in English. He is an outstanding figure in Indo-Anglian literature. He stayed in England for a period of about fourteen years, which made English his mothertongue for all practical purposes. He came to acquire a complete mastery over the difficult language English as if verily born to that heritage. In Baroda State he taught French for sometime and then became Professor of English and Vice principal.

Aurobindo was barred from the civil services by his inability to horse riding. Aurobindo got a job in the administration of Maharaja of Baroda. He studied deeply Shakespeare, Milton and Tennyson.

It was believed by Aurobindo that no imperial power had ever granted freedom on request, a subject nation had the right to take it by force. The extremist political leader Bipin Chandra Pal asked for his contribution and Aurobindo soon became the Chief editorial writer to the 'Bande Mataram', a daily newspaper. He was no believer in Gandhi's gospel of non-violence.

He filled notebooks with research on the Vedas, the Upanishads, linguistics and other subjects for year (1910-1914). His most of works came out serially in the 'Arya' during 1940s. 'The Life Divine' was the first to appear in it.

Nietzsche and Indian Vedic and Sutra literature have a great, influence on Aurobindo's aphoristic writings. Dayanand Saraswati had ideology of tit for tat against British Raj and Aurobindo was greatly influenced by him and his ideology. In the book 'Early Cultural Writings' he has written a full chapter in his praise and his Vedic ideology. Sri Aurobindo's vision was to tally based on focussed the evolution of human life into a divine life in divine body.

15 अगस्त, 1872 के पैदा हुए अरविन्दो एक भारतीय कवि थे। वह पहले ऐसे लेखक थे जो जन्म व प्रकृति से भारतीय थे और जिन्होंने साहित्यिक ग्रन्थावली का पूर्णतया अंग्रेजी में सृजन किया। भारतीय-आंग्ल साहित्यिक जगत में वह अपना अनुपम योगदान करते हैं। वह लगभग चौदह वर्षों तक इंग्लैण्ड में रहे जिसकी परिणति यह हुई कि व्यावहारिक धरातल पर अंग्रेजी उनके लिए मातृभाषा हो गयी थी। अंग्रेजी जैसी कठिन भाषा पर उन्हें दक्षता प्राप्त हो गयी। बड़ौदा प्रवास के दौरान उन्होंने कुछ समय तक फ्रेंच भाषा का अध्यापन कार्य किया तत्पश्चात् वह अंग्रेजी के प्रोफेसर बन गए और उप-प्रधानाचार्य भी।

घुड़सवारी की व्यावहारिक योग्यता न होने के कारण उन्हें आई०सी०एस० के प्रशिक्षण से रोक दिया गया। इसके बाद उन्हें महाराजा बड़ौदा के प्रशासन में नौकरी प्राप्त हुई। उन्होंने शेक्सपीयर, मिल्टन और टेनिसन का गहन अध्ययन किया।

अरविन्दो का मानना था कि साम्राज्यवादी शक्तियाँ कभी भी याचना करने से स्वतन्त्रता प्रदान नहीं करती हैं, यह तो परतन्त्र राष्ट्र का स्वाधिकार होता है कि वह इसे बलपूर्वक छीन ले। उग्र राजनीति के पुरोधा विपिनचन्द्र पाल ने उनसे सहयोग की

अपील की और इसके प्रत्युत्तर में अरविन्दो ने दैनिक समाचार पत्र 'वन्देमातरम्' का मुख्य सम्पादक बनना स्वीकार कर लिया। उन्होंने गांधी के अहिंसावाद के सिद्धान्त में कभी भी विश्वास नहीं किया।

उन्होंने वेदों, उपनिषदों, भाषाशास्त्र तथा अन्य विषयों पर 4 साल (1910-14) तक शोध किया और उन्हें कॉपियों में लिखा। वर्ष 1940 के बाद के वर्षों में उनकी कृतियाँ धारावाहिक रूप से 'आर्य' पत्रिका में प्रकाशित होती रहीं। 'The Life Divine' उनकी इसमें प्रकाशित होने वाली पहली रचना थी।

नीत्से और भारतीय वैदिक व संस्कृत सूत्र साहित्य का अरविन्दो के सूत्रात्मक के लेखन पर पड़ा प्रभाव था। दयानन्द सरस्वती ब्रिटिश राज के खिलाफ 'जैसे को तैसा' की नीति रखते थे। और अरविन्दो उनसे और उनकी इस नीति से बहुत प्रभावित थे। पुस्तक 'Early Cultural Writings' में उन्होंने दयानन्द सरस्वती की स्तुति व उनके वैदिक विचारों पर पूरा एक अध्याय लिखा है। श्री अरविन्दो के दर्शन का केन्द्रीय भाव है मानव जीवन का दिव्य जीवन में परिवर्तन होना जो दिव्य शरीर में स्थिर हो।

Q.2. Give an introduction of Sri Aurobindo Swami and his mysticism and poetic style.

श्री अरविन्दो घोष का परिचय देते हुए उनके रहस्यवाद और काव्य शैली के बारे में बताइए।

Ans. Introduction : Sri Aurobindo Ghosh is one of the greatest personalities in modern India. He is a multifaceted genius. He was a profound thinker and prolific writer. He was essentially a nationalist, yogi, guru, scholar, philosopher, and above all, great poet. He gained a deep insight into Indian culture and civilization. His creativity and inspiration came from his practice of yoga. He began his public life as a political activist. It was he who pushed the agenda of complete Independence of India from the British rule. He was one of the most distinguished spiritual leaders of India. As a spiritual reformer, he introduced his visions on human progress and spiritual evolution.

Mysticism : Sri Aurobindo was one of the greatest mystics and visionaries of modern history. It may be observed that mysticism is embedded in Sri Aurobindo's poems. He says that man should transcend the conscious level and realize the super conscious level through the medium of yoga. The union with God can transform a person into a worthy human being. Savitri is perhaps the most powerful artistic work in the world for expanding man's mind towards the Absolute. Like the two Indian epics, Ramayana and Mahabharata, Savitri, has a romantic inwardness and an insistent emphasis on the mystical.

Poetic Style : Sri Aurobindo revolutionized the human thought and had tremendous impact on the people all over the world. He evolved a writing style of his own that would be in line with his spiritual thought. Sri Aurobindo is a skillful craftsman in the use of blank verse and felicity in poetic expression. He shows a piercing and instantaneous insight into the heart of his subject. He came under the influence of poetic movements of his time like Decadence and Modernism. Sri Aurobindo's monumental epic, Savitri, reflects the consummation of the many poetic styles.

परिचय—श्री अरविन्दो घोष आधुनिक भारत के महानतम व्यक्तित्वों में से एक हैं। वह बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। वे एक गहन विचारक और विपुल लेखक थे। वे मूलरूप से एक राष्ट्रवादी, योगी, गुरु, विद्वान, दार्शनिक और सबसे बढ़कर महान कवि थे। उन्होंने भारतीय संस्कृति और सभ्यता में गहरी अंतर्दृष्टि प्राप्त की। उनकी रचनात्मकता और प्रेरणा उन्हें योग के अभ्यास से मिली। उन्होंने अपने सार्वजनिक जीवन की शुरुआत एक राजनैतिक कार्यकर्ता के रूप में की थी। ये वही थे

जिन्होंने ब्रिटिश शासनकाल से भारत की पूर्ण स्वतंत्रता के एजेंडे को आगे बढ़ाया। वह भारत के सबसे प्रतिष्ठित आध्यात्मिक नेताओं में से एक थे। एक आध्यात्मिक सुधारक के रूप में उन्होंने मानव प्रगति और आध्यात्मिक विकास पर अपने दृष्टिकोण पेश किए।

रहस्यवाद—श्री अरविन्दो आधुनिक इतिहास के सबसे महान मनीषियों और दूरदर्शी लोगों में से एक थे। यह देखा जा सकता है कि श्री अरविन्द की कविताओं में रहस्यवाद अंतर्निहित है। उनका कहना है कि योग के माध्यम से मनुष्य को चेतन स्तर से ऊपर उठकर परम चेतन स्तर का अनुभव करना चाहिए। ईश्वर के साथ मिलन एक व्यक्ति को एक योग्य इंसान में बदल सकता है। मनुष्य के मन को निरपेक्ष की ओर विस्तारित करने के लिए सावित्री शायद दुनिया की सबसे शक्तिशाली कलात्मक कृति है। दो भारतीय महाकाव्यों, रामायण और महाभारत की तरह, सावित्री में एक रोमांटिक अंतर्मन और एक आग्रहपूर्ण जोर है।

काव्य-शैली—श्री अरविन्दो ने मानव विचार में क्रांति ला दी और दुनियाभर के लोगों पर इसका जबरदस्त प्रभाव पड़ा। उन्होंने अपनी खुद की एक लेखन शैली विकसित की जो उनके आध्यात्मिक विचार के अनुरूप है। श्री अरविन्दो काव्यात्मक अभिव्यक्ति में मुक्त छंद और प्रसन्नता के उपयोग में एक कुशल शिल्पकार हैं। वह अपने विषय में दिल से एक भेदी और तात्कालिक अंतर्दृष्टि दिखाते हैं। वे पतन और आधुनिकतावाद जैसे अपने समय के काव्य आंदोलनों के प्रभाव में आ गए। श्री अरविन्दो का स्मारकीय महाकाव्य, सावित्री, कई काव्य शैलियों के उपयोग को दर्शाता है।

Q.3. Discuss Rabindranath Tagore's role in identifying Indian literature to the world.

भारतीय साहित्य को विश्वजगत में पहचान दिलाने में रबीन्द्रनाथ टैगोर की भूमिका की व्याख्या कीजिए।

Ans. Rabindranath Tagore was the most versatile genius who made a great impact on Indian literature in twentieth century and gained for contemporary India a unique place on the world literary map. The influence of Tagore on literature all over India became possible because of the translations of his original Bengali into English. W.B. Yeats described his influence as, "We have other poets, but none that are his equal. We call this epoch of Rabindranath. No poet seems to me as famous in Europe as he is among us. He is as great in music as in poetry and his songs are sung from the rest of India into Burma wherever Bengali is spoken."

Tagore's poems and plays flowed with a rapidity that was amazing. A.C. Bradley remarks thus: "It looks as though we have at last a great poet among us again." Bhagvad-Gita and the Vedas have a great influence on Rabindranath Tagore's work. We find the influence of the devotional poetry of Kabir, Nanak, Chaitanya, Chandidas, Ram Krishna, etc. on his literary creations. In the 'Religion of Man' he says: "I was born in a family which at that time was earnestly developing monotheistic religion based on the philosophy of the Upanishads." As a mystic, Tagore goes far ahead of Wordsworth and gives it a typical Indian flavour. He believes that divine spirit permeates all objects of Nature as well as the human form. Man can attain self-realisation and God realisation through the renunciation of the senses. As a myth maker, he ranks with Shelley. Imagery in Tagore's poetry is largely derived from Nature. He makes use of imagery to symbolise the yearning of human soul to merge with the Supreme.

रबीन्द्रनाथ टैगोर बहुआयामी प्रतिभा से सम्पन्न साहित्यकार थे जिन्होंने बीसवीं शताब्दी में भारतीय साहित्य पर गहरा प्रभाव डाला और विश्व साहित्य के मानचित्र पर समकालीन भारत को विशिष्ट स्थान दिलाया। पूरे भारत के साहित्य पर टैगोर का प्रभाव, उनके बंगाली साहित्य का अंग्रेजी में अनुवाद करने के कारण सम्भव हो सका। रबीन्द्रनाथ टैगोर के प्रभाव को डब्ल्यू.बी. येट्स ने इस प्रकार निरूपित किया है—“अनेक कवि हुए हैं लेकिन कोई भी उनके समकक्ष नहीं ठहर पाता है।

इस युग को ही हम रवीन्द्रनाथ का युग कहते हैं। मुझे कोई अन्य कवि टैगोर के समान विख्यात नहीं दिखायी देता है, जैसाकि वह यूरोप में हमारे बीच हैं। वह संगीत के क्षेत्र में भी उतनी ही दक्षता रखते हैं जितनी कि काव्य में और उनके गीतों को भारत में तो गाया ही जाता है, साथ ही उनकी अनुगूँज बर्मा के उन क्षेत्रों में भी सुनायी देती है जहाँ बंगाली भाषा बोली जाती है।”

टैगोर की लेखनी से कविताएँ और नाटक तेजी से प्रकट होते चले गए जो आश्चर्यजनक पहलू है। ए०सी० ब्रेडली कहते हैं— “ऐसा आभास होता है कि हमें टैगोर के रूप में पुनः एक कालजयी कवि मिल गया है। टैगोर की कृतियों पर भगवद्गीता व वेदों का प्रभाव है। कबीर, नानक, चैतन्य, चण्डीदास, रामकृष्ण आदि की भावातीत कविताओं का प्रभाव भी उनकी कृतियों में झलकता है। ‘Religion of Man’ में टैगोर स्वयं कहते हैं— “मैंने एक ऐसे परिवार में जन्म लिया था जो उस समय एकेश्वरवाद की ओर सदाशयता के साथ बढ़ रहा था जो उपनिषद् के इस दर्शन पर आधारित था कि ईश्वर एक है।” एक रहस्यवादी के रूप में टैगोर वर्ड्सवर्थ से भी आगे निकल जाते हैं और उसको भारतीयता के रंग से सराबोर कर देते हैं। उनका विश्वास है कि दिव्य आत्मा प्रकृति की सभी चीजों तक फैल जाती है और मानव को भी आच्छादित कर लेती है। इन्द्रियों से अपने मन-मस्तिष्क को हटाकर मानव आत्मबोध प्राप्ति के साथ ही परमेश्वर की अनुभूति को भी प्राप्त करता है। कल्पनाशीलता का सृजन करने में वह शैली के समकक्ष हो जाते हैं। टैगोर की कल्पना प्रकृति से अपना रूप धारण करती है। वह कल्पना का प्रयोग कर ईश तत्त्व के साथ मानव के एकाकार होने की चिर अभिलाषा को मूर्तरूप प्रदान करते हैं।

Q.4. Explain the contribution of Rabindranath Tagore and his family in the Indian Renaissance?

रवीन्द्रनाथ टैगोर और उनके परिवार का भारत के नवजागरण में योगदान की विस्तार से विवेचना कीजिए।

Ans. It is believed that the Indian Renaissance have begun with Raja Ram Mohan Roy and saw its Zenith in Maharishi Dayanand Saraswati. Every sphere of social life benefitted from the impact of their dynamic and enlightened personality. Religion, social reforms, education, public administration and legislation were their primary concerns. Brahmo Samaj was founded by Raja Ram Mohan Roy while Dayanand Saraswati founded Arya Samaj. These religious and social institutions helped India to shake off its shackles of ignorance, backwardness, orthodoxy, superstition and isolation which played this great ancient country for the last so many centuries. Raja Ram Mohan Roy made great efforts to introduce English in Indian educational institutions.

There was great upheaval in religion, social, cultural and political spheres in this age. Bengal was the nerve-centre of all the activities and change. The Brahmo Samaj was the harbinger of social and religious revolution and it became the most powerful and dominant force in the social and religious activities in Bengal. Raja Ram Mohan Roy was the first Indian to visit England despite stiff opposition by the orthodox people. After his death Dwarkanath Tagore, the grandfather of Rabindranath carried on the mission. Those were the times when there was a great chaos.

Raja Ram Mohan Roy and Swami Dayanand proclaimed the oneness of God and discarded idol worship. Bankim Chandra Chatterjee was the hero of literary movement. The national movement was both political and cultural. The western thought was welcomed as a matter of principle.

Simultaneously, many societies and associations were formed with the purpose of advancing their causes. Rabindranath's elder brother Jyotirindranath Tagore founded a secret society called 'Sanjivan Sabha' to train the youth who would work and suffer for the country's political freedom from foreign rule. The members of 'Sabha' had to sign their names in their own blood.

Tagore's brother Satyendranath was the first Indian to enter the coveted Indian Civil Service. The great artists Abanindranath and Gaganendranath were Tagore's nephews. They all contributed to bring Renaissance fast into the Indian soil. Thus, we can say that Tagore and his family contributed a lot in bringing Indian Renaissance .

यह माना जाता है कि भारतीय पुनर्जागरण का काल राजा राम मोहन राय के साथ प्रारम्भ हुआ और महर्षि दयानन्द सरस्वती के दौर में यह अपने उत्कर्ष पर पहुँच गया। इन महापुरुषों के सर्वांगीण व्यक्तित्व ने सामाजिक जीवन के सभी पहलुओं का स्पर्श किया जिससे वे लाभान्वित हुए। धर्म, सामाजिक सुधार, शिक्षा, नागरिक प्रशासन और विधायिका के प्रति इनकी चिन्ता भी थी और अभिरुचि भी। राजा राम मोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना की जबकी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की। इन धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं ने भारत में व्याप्त अज्ञानता, पिछड़ापन, रूढ़िवाद, अन्धविश्वास व अलगाव की बेड़ियों को काटने का श्लाघनीय कार्य किया जिनके कारण यह प्राचीन महान देश शताब्दियों तक पिछड़ा बना रहा था। भारत की शिक्षण संस्थाओं में अंग्रेजी के सम्मिलित होने के लिए राजा राम मोहन राय ने सतत् प्रयास किये।

इस युग में धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक क्षेत्रों में उथल-पुथल का दौर जारी था। बंगाल सभी प्रकार के क्रियाकलापों और बदलाव का केन्द्र बन चुका था। ब्रह्म समाज इन सभी सामाजिक और धार्मिक क्रान्तियों का अग्रदूत बना और यह संस्था बंगाल में अत्यधिक शक्तिशाली रूप में उभरती गयी। पुरातनपन्थी सोच के लोगों द्वारा विरोध करने पर भी इंग्लैण्ड की यात्रा पर राजा राम मोहन राय गए और ऐसा करने वाले वह पहले भारतीय थे। उनकी मृत्यु के बाद उनका कार्यभार द्वारकानाथ टैगोर ने संभाला जो रवीन्द्रनाथ टैगोर के पितामह थे। यह काल अत्यधिक अराजकता का दौर था।

राजा राम मोहन राय और दयानन्द सरस्वती ने एक ईश्वर की अवधारणा पर बल दिया और मूर्तिपूजा का खण्डन किया। बंकिमचन्द्र चटर्जी साहित्यिक आन्दोलन के पुरोधा थे। राष्ट्रीय आन्दोलन में राजनीतिक व सांस्कृतिक दोनों ही तत्त्वों का समावेश था। सिद्धान्त रूप में पश्चिम के राजदर्शन को भारत में स्वीकार किया जाने लगा।

उसी समय समितियों व संगठनों का निर्माण इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए होने लगा। रवीन्द्रनाथ टैगोर के बड़े भाई ज्योतिरिन्द्र नाथ टैगोर ने 'संजीवन सभा' नामक गुप्त संगठन का निर्माण किया। इसमें ऐसे नवयुवकों को शामिल किया जाता था जो विदेशी दासता से राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए कार्य करेंगे। इस संस्था के सदस्यों को अपने खून से अपना नाम लिखना होता था। टैगोर के भाई सत्येन्द्रनाथ पहले ऐसे भारतीय थे जिन्होंने प्रतिष्ठित आई०सी०एस० परीक्षा उत्तीर्ण की। महान कलाकार अभिनन्द्रनाथ और गगनेन्द्रनाथ, ये दोनों टैगोर के भतीजे थे। भारतीय भूमि पर पुनर्जागरण लाने और उसे तीव्र करने में इन सभी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इस प्रकार से हम ये कह सकते हैं कि भारत के नवजागरण को लाने में टैगोर के पूरे परिवार ने बहुत बड़ा योगदान दिया है।

Q.5. R.K. Narayan is a great novelist of Indo-Anglian literature. Do you agree? Explain.

आर०के० नारायण आंग्ल-भारतीय साहित्य के महान उपन्यासकार हैं। क्या आप सहमत हैं? विवेचना कीजिए।

Or Illustrate R.K. Narayan is the greatest novelist.

सिद्ध कीजिए आर०के० नारायण एक महान उपन्यासकार हैं।

Ans. R.K. Narayan was born in Madras in 1906. He started his career as a novelist in 1935 with the publication of his novel 'Swami and Friends'. This novel opened new gates of success for R.K. Narayan. He is a notable figure in the field of Indo-Anglian fiction. He is the father of Regional novel in India. He is the most objective writer among the Indo-Anglian novelist. The objectivity is reflected in the approach to his subject matter. His novels give a picture of life without producing dramatic effects.

Narayan follows the examples of Henry James, Mills and Arnold Bennett in shaping his novels according to logical demands of situation or character. The action of the stories springs

logically from characters. He does not follow poetic justice at all. There is no marriage or happy endings in his novels. He catches the attention of the Reader from the very first page and keeps them occupied till the end of the novel.

Narayan mainly focusses on middle class for his characters, because he himself belonged to middle class society and knew well their tensions, conflicts, stresses and strains in human relationship and all other domestic matters. Since he had his own experience of the life of a particular area and also had experienced stress and strain he feels himself fully competent to portray that life in his novels.

आर०के० नारायण का जन्म मद्रास में सन् 1906 में हुआ था। सन् 1935 में नारायण ने 'Swami and Friends' नामक उपन्यास के प्रकाशन के साथ उपन्यासकार के रूप में अपने कैरियर की शुरुआत की। इस उपन्यास ने उनके लिए सफलता के नये द्वार खोल दिये। आंग्ल-भारतीय कथा-साहित्य के क्षेत्र में आर०के० नारायण का विशिष्ट स्थान है। वह भारत में आँचलिक उपन्यास के जानक माने जाते हैं। आंग्ल-भारतीय उपन्यासकारों में वह सर्वाधिक यथार्थवादी लेखक हैं। उनके कथानक में उनके इस यथार्थवादी स्वरूप को देखा जा सकता है। उनके उपन्यासों में वास्तविकता का चित्रण रहता है, उसमें किसी भी नाटकीय प्रभाव का अभाव रहता है। अपने उपन्यासों में वे परिस्थिति और पात्र की आवश्यकता को देखकर कथानक को आकार प्रदान करते हैं जैसा कि हेनरी जेम्स, मिल और अर्नोल्ड बेनिट की कृतियों में दिखायी देता है। कहानियों का कार्य व्यापार युक्तियुक्त ढंग से स्वतः ही पात्रों के भीतर से प्रस्फुटित होता है। वह आदर्श न्याय की अवधारणा का अनुसरण कदापि नहीं करता है। नारायण की कृतियों में विवाह या सुखद समापन नहीं दिखायी देता है। पहले पृष्ठ से ही वह पाठक को सम्मोहित कर लेता है जो उपन्यास के अन्त तक बना रहता है।

नारायण अपने पात्रों के लिए मुख्यतः मध्य वर्ग पर ध्यान केन्द्रित करते हैं क्योंकि वे स्वयं मध्यवर्ग से सम्बन्धित थे और उनकी परेशानियों, झगड़ों, कष्टों व तनावों से पूरी तरह से परिचित थे जो मानव सम्बन्धों और घरेलू क्रियाकलापों के दौरान उभरते हैं। उन्हें एक विशिष्ट क्षेत्र का अनुभव था और कष्ट व तनावों को भी भोगा था। इसीलिए अपने उपन्यासों में वह इनको वास्तविक रूप में चित्रित कर सके।

Q.6. Mulk Raj Anand's first novel 'Untouchable' is a blow on improper custom. Discuss.

मुल्कराज आनन्द का पहला उपन्यास 'Untouchable' कुरीति पर कुठाराघात है। इसका विवरण दीजिए।

Ans. Anand wrote his first novel 'Untouchable' in 1935. This novel was rejected by as many as nineteen publishers. And finally it was published in 1935 and it proved to be a great success. The theme of this novel is the evil of untouchability in India; and the novel records the experiences of an eighteen-year old sweeper-boy in the course of a single day in the town of Bulandshahr. The sweeper-boy's name is Bakha. His work of keeping the public latrines of the town clean is not only very tedious and laborious but also most degrading because it exposes him to the contempt of the caste Hindus and renders him an untouchable. This novel shows Anand's sympathies with the underlog in India, and his humanitarian and reformist zeal because evidently it was written in him to awaken the conscience of the upper castes in the country.

The novel 'Untouchable' highlights a temple priest's attempt of seduce Bakha's sister Sohini, and the ray of hope which is awakened in Bakha's heart towards the end of the novel when he listens to a speech by Mahatma Gandhi and to a discourse by Iqbal Nath Sarashar, a poet-cum-journalist. The novel employs partly the traditional method of narration but partly also the new technique of the stream of consciousness. *Untouchable* is undoubtedly a success as a novel because it holds the reader's attention from beginning to end.

आनन्द ने अपना पहला उपन्यास 'Untouchable' सन् 1935 में लिखा। यह उपन्यास उन्नीस प्रकाशकों ने अस्वीकार कर दिया और आखिरकार यह सन् 1935 में प्रकाशित हुआ और यह आशातीत रूप से सफल सिद्ध हुआ। इस उपन्यास का विषय भारत में अस्पृश्यता जैसी कुरीति है और उपन्यास में बुलन्दशहर में अठारह वर्षीय स्वीपर लड़के के एक दिन के दौरान अनुभवों का वर्णन है। उसका नाम बक्खा है। शहर के शौचालयों को साफ रखने का उसका काम श्रमसाध्य और थकाऊ ही नहीं है बल्कि पतित भी है क्योंकि यह उसे शहर के हिन्दुओं की घृणा का पात्र ही नहीं बनाता बल्कि अछूत भी बनाता है। उत्साह को प्रदर्शित करता है क्योंकि यह उपन्यास उन्होंने स्पष्ट रूप से देश में उच्च वर्ग के लोगों की आत्म को झकझोरने के लिए लिखा।

उपन्यास 'Untouchable' एक मन्दिर के पुजारी द्वारा बक्खा की बहन सोहनी से बलात्कार का प्रयास और उपन्यास के अन्त में बक्खा के मन में महात्मा गांधी और एक पत्रकार कवि इकबालनाथ सराशर के व्याख्यान द्वारा आशा की किरण जाग्रत होने को प्रमुखता से दर्शाता है। उपन्यास में आंशिक रूप से कथन की पारम्परिक विधि और आंशिक रूप से चेतना के बहाव (स्ट्रीम ऑफ कॉन्शियसनेस) की नई तकनीक का प्रयोग किया गया है। एक उपन्यास के रूप में 'Untouchable' निःसन्देह सफल है क्योंकि प्रारम्भ से अन्त तक यह पाठक के ध्यान को अथवा रुचि को बनाये रखने में सफल रहता है।

Q.7. It is said that humanism is as a main element of Mulk-Raj Anand's novels. Discuss.

यह कहा जाता है कि मानवता मुल्कराज आनन्द के उपन्यासों का एक मुख्य तत्त्व है। विवेचना कीजिए।

Ans. Anand's novels deal with the theme of hunger, poverty, human degradation and social injustice to which the underdogs of society are subject. Humanism may be regarded as Anand's very religion. He appears in his fiction as the champion of suffering humanity. In novel after novel, he has given expression to his compassion for mankind through his sympathetic portrayals of the victims of injustice and persecution. His commitment to humanism constitutes the very foundations on which his novels were built. In his very first novel, namely *Untouchable*, Anand appears as a censor of Hindu society which regards a particular class of human beings as untouchables. Bakha, the sweeper-boy in this novel, has been portrayed with great sympathy so as to arouse in the readers a strong resentment against the caste-system. At the time when Anand wrote 'Untouchability' Mahatma Gandhi already had started his campaign against untouchability. In the novel itself, Mahatma Gandhi's views on untouchability have briefly been incorporated. Bakha represents the entire class of untouchables who had for ages been treated as worse than animals. It is through the humanism of men like Gandhi and Anand that the untouchables have not only become touchables but also, in some ways, risen above the other caste the Hindus. Anyhow, Anand's story of the wretchedness and misery of Bakha's life shows Anand's identification with all mankind, high or low. Munoo in Anand's second novel, *Coolie*, undergoes some terrible experiences, finally appearing before us as a rickshaw-puller. The vicissitudes of Munoo's life are even more moving and poignant than the experiences of Bakha on a certain day. Of course, Anand's humanism is confined to his own country because his novels have a limited range in so far as they deal with the peculiar conditions prevailing in India at the time these novels were written, and also because those conditions have changed greatly since then.

आनन्द के उपन्यास भी भूख, गरीबी, मानवीय पतन और सामाजिक अन्याय के विषय उठाते हैं जिनके समाज में दलित शिकार हैं। मानवता को आनन्द का धर्म माना जा सकता है। अपने उपन्यासों में वह पीड़ित मानवता के मसीहा के रूप में प्रकट होते हैं। उपन्यास के बाद उपन्यास में सामाजिक अन्याय और शोषण के शिकार लोगों के सहानुभूतिपूर्ण चित्रण द्वारा उन्होंने मानवता के प्रति अपनी दया को अभिव्यक्त किया है। मानवतावाद के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ही वह आधार है जिस

पर उनके उपन्यास निर्मित हैं। अपने सबसे पहले उपन्यास 'Untouchable' में ही आनन्द हिन्दू समाज के आलोचक के रूप में प्रकट होते हैं जो समाज के एक वर्ग विशेष को अछूत मानते हैं। इस उपन्यास में एक स्वीपर बक्खा को अत्यन्त सहानुभूति से चित्रित किया गया है, जिससे पाठकों के मन में जाति-प्रथा के प्रति क्रोध जाग्रत हो सके। जिस समय आनन्द ने 'Untouchable' उपन्यास लिखा उस समय महात्मा गांधी अस्पृश्यता (अछूतता) के विरुद्ध अपना आन्दोलन पहले ही प्रारम्भ कर चुके थे। अस्पृश्यता पर महात्मा गांधी के विचारों को उपन्यास में संक्षेप में सम्मिलित भी किया गया है। बक्खा अछूतों के सम्पूर्ण वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जिनके साथ सदियों से पशुओं से भी बुरा व्यवहार होता था। यह महात्मा गांधी और आनन्द जैसे लोगों के मानवतावाद का ही परिणाम है कि अछूत आज न केवल ग्राह्य ही बन गये हैं बल्कि कुछ अर्थों में हिन्दुओं की अन्य जातियों से भी ऊपर उठ गये हैं। फिर भी बक्खा के जीवन के दुःखों की कहानी, निम्न अथवा उच्च, सम्पूर्ण मानवता के प्रति आनन्द की सहानुभूति दर्शाती है। आनन्द के दूसरे उपन्यास 'Coolie' में मुन्नु भयानक अनुभवों से गुजरकर हमारे समक्ष रिक्शाचालक की तरह आता है। मुन्नु के जीवन की घटनाएँ बक्खा के अनुभवों से भी अधिक हृदय विदारक हैं। निःसन्देह आनन्द का मानवतावाद उनके देश तक ही सीमित है क्योंकि उनके उपन्यासों का क्षेत्र अत्यन्त सीमित है क्योंकि वह तत्कालीन भारत की सामाजिक दशा का ही चित्रण करते हैं।

Q.8. Write a note on various aspects of Sarojini Naidu's life.

सरोजिनी नायडू के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर एक लेख लिखिए।

Ans. Sarojini Naidu was born on 13th February 1879 at Hyderabad in a Brahmin family of Bengal. The family had migrated from Brahman-gaon, a village in East Bengal (now in Bangladesh). She had six sisters and brothers.

Sarojini Naidu got her primary education at home. Her parents were her first teachers. Sarojini Naidu was much interested in reading romantic poetry and Shakespearean plays. She matriculated from Madras University at the age of twelve. As a child, she felt madly in love with a non-Brahmin Andhrite doctor, Dr. Muthyala Govindarajulu Naidu. Her parents were not happy with her love so they sent her to England. At Cambridge, she attracted the attention of Sir Edmund Gosse, a poet, critic and biographer.

She worked actively with Mahatma Gandhi in India's freedom movement. Sarojini Naidu was also appointed as a roving ambassador. Sarojini made several appreciable efforts to bring about amity between the Hindus and the Muslims. She also served as a Governor of Uttar Pradesh and this way enlisted herself at the very first woman Governor of any Indian state.

Sarojini Naidu died in harness while in office as UP's Governor on 2nd March, 1949. The entire nation paid a tearful homage to this intellectual lady.

सरोजिनी नायडू का जन्म एक बंगाली परिवार में 13 फरवरी 1879 ई० को हैदराबाद में हुआ था। यह ब्राह्मण परिवार पूर्वी बंगाल (अब बांग्लादेश) के ब्राह्मणगाँव नामक ग्राम से यहाँ आया था। उनके छह भाई-बहन थे।

सरोजिनी नायडू की प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई। उनके माँ-बाप ही उनके प्रथम शिक्षक थे। सरोजिनी नायडू को छायावादी काव्य का पठन-पाठन अच्छा लगता था, और शेक्सपीयर के नाटक उन्हें विशेष प्रिय थे। बारह वर्ष की आयु में उन्होंने मद्रास विश्वविद्यालय से हाईस्कूल उत्तीर्ण किया। किशोरावस्था के प्रारम्भ में ही ब्राह्मणोत्तर चिकित्सक आन्ध्र निवासी डॉ० मुथ्याला गोविंदराजुलु नायडू से उनको गहरा प्रेम हो गया। इस प्रेम-प्रसंग से उनके माता-पिता खुश नहीं थे। इसलिए सरोजिनी को इंग्लैण्ड भेज दिया गया। कैम्ब्रिज में उन्होंने सर एडमन गोसे का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया, जो अपने समय के लब्धप्रतिष्ठ कवि, आलोचक व जीवनी लेखक थे।

भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में उन्होंने महात्मा गांधी के साथ भाग लिया था। सरोजिनी नायडू को घुमन्तू राजदूत नियुक्त किया गया था। हिन्दू और मुसलमानों के मध्य सौहार्द बनाने के लिए उन्होंने काफी अच्छा कार्य किया था। उन्होंने उत्तर

प्रदेश के राज्यपाल पद को भी सुशोभित किया था और इस प्रकार किसी भी भारतीय प्रान्त की प्रथम महिला राज्यपाल होने का गौरव प्राप्त किया।

2 मार्च 1949 ई० को उत्तर प्रदेश के राज्यपाल पद पर आरूढ़ रहते हुए ही उनकी मृत्यु हुई और समस्त राष्ट्र ने अश्रुपूरित नेत्रों से बहुआयामी प्रतिभा से सम्पन्न इस नारी को अन्तिम विदा दी।

Q.9. Discuss about the Kamala Markandaya's personal life.

कमला मार्कण्डेय के व्यक्तिगत जीवन का वर्णन कीजिए।

Or Throw light upon the life of Kamala Markandaya.

कमला मार्कण्डेय के जीवन पर प्रकाश डालिए।

Ans. Kamala Markandaya (1924-2004) was an Indian novelist and journalist. She has established herself as one of the most important Indian novelists writing in English. Kamala was born into an upper middle class family. She was a student of the University of Madras. After India declared its independence Kamala moved to London in 1948.

Kamala Markandaya was fluent in Kannada and Marathi. She became a writer to fulfil her dream. In London she met a native Englishman Bertrand Taylor and married him. They had one daughter Kim Oliver, who currently resides in England. Kamala published the novels. They all deal with post-colonial themes in modern India. She is known for writing about culture clash between Indian urban and rural societies.

After Kamala Markandaya's husband died in 1986, she made frequent trips to India, where she continued to write. On 16 May 2004 she died in London at the age of 80 due to kidney failure. Although she is no longer alive, her voice will always be heard through her novels. She will continue to raise awareness about India and teach others in the West about a culture otherwise largely unfamiliar.

कमला मार्कण्डेय (1924-2004) एक भारतीय उपन्यासकार व पत्रकार थीं। उन्होंने अंग्रेजी विधा से स्वयं को एक सफल उपन्यासकार के रूप में स्थापित कर लिया था। कमला का जन्म एक उच्च मध्यम वर्ग के परिवार में हुआ था। वह मैसूर की मूल निवासी थीं और वह मद्रास विश्वविद्यालय की छात्रा रहीं। भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात् वह 1948 में लन्दन चली गयीं।

कमला मार्कण्डेय को कन्नड़ व मराठी में विशेष योग्यता प्राप्त थी। अपने सपने को साकार करने के लिए उन्होंने लेखन को अपना व्यवसाय बनाया। लन्दन में उनकी मुलाकात एक अंग्रेज से हुई और इस अंग्रेज बट्टेण्ड टेलर से उन्होंने विवाह कर लिया। उनकी एक पुत्री किम ऑलिवर है जो इस समय इंग्लैण्ड में रहती है। कमला ने दस उपन्यासों का सृजन किया। इन सभी का कथानक उपनिवेशवाद के काल के बाद के आधुनिक भारत का है। भारत के शहरी व ग्रामीण सामाजिक ताने-बाने के सांस्कृतिक टकराव को कमला ने बड़ी सूक्ष्मता से उकेरा है।

वर्ष 1986 में कमला मार्कण्डेय के पति का देहान्त हो गया, उसके बाद से वह लगातार भारत की यात्रा करने लगीं और लेखन कार्य में भी संलग्न रहीं। अस्सी वर्ष की आयु में गुर्दों द्वारा कार्य न कर पाने के कारण 16 मई 2004 को उनकी मृत्यु हो गयी। यद्यपि आज वह हमारे सामने जीवित नहीं हैं तथापि उनके उपन्यासों में उनकी आवाज सदैव जीवन्त बनी रहेगी। इसी रूप में वह हमें भारत के बारे में जागरूक करती रहेगी और पश्चिमी जगत में हमारी संस्कृति का प्रसार होता रहेगा जिससे कि वहाँ के अधिकांश लोग अनभिज्ञ ही हैं।

Q.10. Introduce the life of Sarojini Naidu.

सरोजिनी नायडू का जीवन परिचय दीजिए।

Or Throw light upon the life-sketch of Sarojini Naidu.

सरोजिनी नायडू के जीवन-चरित्र पर प्रकाश डालिए।

Ans. Sarojini Naidu (1879-1949) was an Indian political activist and poet. A proponent of civil rights, women's emancipation, and anti-imperialistic ideas, she was an important figure in India's struggle for independence from colonial rule. Naidu's work as a poetess earned her the sobriquet 'the Nightingale of India', or 'Bharat Kokila' by Mahatma Gandhi because of colour, imagery and lyrical quality of her poetry.

Born in a Bengali family in Hyderabad, Naidu was educated in Madras, London and Cambridge. Following her time in England, where she worked as a suffragist, she was drawn to Indian National Congress' movement for India's independence from British rule. She became a part of the Indian nationalist movement and became a follower of Mahatma Gandhi and his idea of Swaraj. She was appointed the President of the Indian National Congress in 1925 and later became the Governor of the United Provinces in 1947, becoming the first woman to hold the office of Governor in the Dominion of India.

Naidu's poetry includes both children's poems and others written on more serious themes including patriotism, romance and tragedy. Published in 1912, "In the Bazaars of Hyderabad" remains one of her most popular poems. She married Govindarajulu Naidu, a general physician, and had five children with him. She died of a cardiac arrest on 2 March, 1949.

सरोजिनी नायडू (1879-1949) एक भारतीय राजनीतिक कार्यकर्ता और कवयित्री थीं। नागरिक अधिकारों, महिलाओं की मुक्ति और साम्राज्यवाद विरोधी विचारों की समर्थक, वह औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व थीं। एक कवयित्री के रूप में नायडू के काम ने उन्हें उनकी कविता के रंग, कल्पना और गीतात्मक गुणवत्ता के कारण महात्मा गाँधी द्वारा 'भारत की कोकिला' या 'भारत कोकिला' नाम दिया गया।

हैदराबाद में एक बंगाली परिवार में जन्मी नायडू की शिक्षा मद्रास, लंदन और कैम्ब्रिज में हुई। इंग्लैंड में अपने समय के बाद, जहाँ उन्होंने एक मताधिकार के रूप में काम किया, वह ब्रिटिश शासन से भारत की स्वतंत्रता के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के आंदोलन की ओर आकर्षित हुई। वह भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन का हिस्सा बन गई और महात्मा गाँधी और उनके स्वराज के विचार की अनुयायी बन गई। उन्हें 1925 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया था और बाद में 1947 में संयुक्त प्रांत की राज्यपाल बनीं, जो भारत के डोमिनियन में राज्यपाल का पद संभालने वाली पहली महिला बनीं।

नायडू की कविता में देशभक्ति, रोमांस और त्रासदी सहित अधिक गंभीर विषयों पर लिखी गई बच्चों की कविताएँ और अन्य शामिल हैं। 1912 में प्रकाशित, "इन द बाजार्स ऑफ हैदराबाद" उनकी सबसे लोकप्रिय कविताओं में से एक है। उन्होंने गोविंदाराजुलु नायडू से शादी की, जो एक सामान्य चिकित्सक थे और उनके साथ उनके पाँच बच्चे थे। 2 मार्च 1949 को हृदय गति रुकने से उनकी मृत्यु हो गई।

Q.11. Explain some stories and poetry by R.N. Tagore.

रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित कहानियाँ और काव्य की व्याख्या कीजिए।

Ans. Stories : Tagore's three-volume Galpaguchchha comprises eighty four stories that reflected upon the author's surroundings, on modern and fashionable ideas, and on mind puzzles. Tagore associated his earliest stories, such as those of the 'Sadhana' period, with an exuberance of vitality and spontaneity; these traits were cultivated by zamindar Tagore's life in Patisar, Shajadpur, Shelaidaha and other villages. Seeing the common and the poor, he examined their lives with a depth and feeling singular in Indian literature up to that point. In "The Fruitseller from Kabul", Tagore speaks in first person as a town dweller and novelist, imputing exotic perquisites to an Afghan seller. He channels the lucubrate list of those mired

in the blase, nidorous, and sudorific morass of subcontinental city life: for distant vistas. "There were autumn, mornings, the time of year when kings of old went forth to conquest; and I, never stirring from my little corner in Calcutta, would let my mind wander over the whole world. At the very name of another country, my heart would go out to it. I would fall to weaving a network of dreams: the mountains, the glens, the forest."

The Golpoguchchho (Bunch of Stories) was written in Tagore's Sabuj Patra period, which lasted from 1914 to 1917 and was named for another of his magazines. These yarns are celebrated fare in Bengali fiction and are commonly used as plot fodder by Bengali film and theatre. The Ray film **Charulata** echoed the controversial Tagore's novella *Nastanirh* (The Broken Nest). In **Atithi**, on which another film was based, the little Brahmin boy Tarapada shares a boat ride with a village zamindar. The boy relates his flight from home and his subsequent wanderings. Taking pity, the elder adopts him; he fixes the boy to marry his own daughter. The night before his wedding, Tarapada runs off again. **Strir Patra** (The Wife's Letter) is an early treatise in female emancipations Mrinal is wife to a Bengali middle class man: prissy, preening, and patriarchal. Travelling alone she writes a letter, which comprehends the story. She details the pettiness of a life spent entreating his viraginous virility; she ultimately gives up married life, proclaiming, *Amio bachbo, Ei bachlum*: "And I shall live. Here, I live."

Haimanti assails Hindu arranged marriage and spotlights their often dismal domesticity, the hypocrisies plaguing the Indian middle classes, and how Haimanti, a young woman, due to her insufferable sensitivity and free spirit, foredid herself. In the last passage, Tagore blasts the remification of Sita's self immolation attempt; she had meant to appease her consort Rama's doubts of her chastity. Musalmani Didi eyes recrudescant Hindu-Muslim tensions and, in many ways, embodies the essence of Tagore's humanism. The somewhat auto referential **Darpaharan** describes a young man who harbours literary ambitions. Though he loves his wife, he wishes to stifle her literary career, deeming it unfeminine. In youth, Tagore likely agreed with him. **Darpaharan** depicts the final humbling of the man as he ultimately acknowledges his wife's talents. As do many other Tagore's stories, **Jibitoo Mrito** equips Bengalis with a ubiquitous epigram : *Kadombini moriya proman korilo she more nai— "Kadombini died, thereby proving that she hadn't."*

Poetry : Tagore's poetic style, which proceeds from a lineage established by 15th and 16th century Vaishnava poet, ranges from classical formalism to the comic, visionary, and ecstatic. He was influenced by the atavistic mysticism of Vyasa and other rishi-authors of the Upanishads, the Bhakti-Sufi mystic Kabir and Ramprasad Sen. Tagore's most innovative and mature poetry embodies his exposure to Bengali rural folk music, which included mystic Baul ballads such as those of the bard Lalou. These, rediscovered and repopularised by Tagore, resemble 19th century Kartabhaja hymns that emphasise inward divinity and rebellion against bourgeois bhadralok-religious and social orthodoxy. During his Shelaidaha years, his poems took on a lyrical voice of the moner manush, the Bauls' "man within the heart" and Tagore's "life force of his deep recesses", or meditating upon the jeevan devata-the demiurge or the "living God within." This figure is connected with divinity through appeal to nature and the emotional interplay of human drawn. Such tools saw use in his Bhanusimha poems chronicling the Radha-Krishna romance, which were repeatedly revised over the course of seventy years.

कहानियाँ—टैगोर के तीन-खंडों में गलपागुच्छा में चौरासी कहानियाँ शामिल हैं जो लेखक के परिवेश, आधुनिक और फ़ैशनेबल विचारों और मन की पहली पर प्रतिबिंबित करती हैं। टैगोर ने अपनी शुरुआती कहानियों को जोड़ा, जैसे कि “साधना” काल की, जीवन शक्ति और सहजता के उत्साह के साथ; इन लक्षणों को पाटीसर, शाजादपुर, शेलैदाहा और अन्य गाँवों में जमींदार टैगोर के जीवन द्वारा विकसित किया गया था। आम लोगों और गरीबों को देखकर उन्होंने भारतीय साहित्य में उस समय के जीवन को गहराई से और विलक्षणता से देखा। “द फ्रूटसेलर फ्रॉम काबुल” में, टैगोर पहले व्यक्ति के रूप में एक शहरवासी और उपन्यासकार के रूप में बोलते हैं जो एक अफगान विक्रेता को विदेशी अनुलाभ देते हैं। वह उन लोगों की आकर्षक वासना को प्रसारित करता है जो उपमहाद्वीप के शहरी जीवन के नीरस, निंदनीय और गंधहीन दलदल में फंस गए हैं—दूर के खाँचों के लिए। शरद ऋतु की सुबह थी, वर्ष का वह समय था जब पुराने राजा विजय के लिए निकले थे; और मैं, कलकत्ता में अपने छोटे से कोने से कभी नहीं हिलता, अपने दिमाग को पूरी दुनिया में घूमने देता। दूसरे देश के नाम पर, दिल उसके पास जाएगा। मैं सपनों का एक नेटवर्क बुनुंगा : पर्वत, घाटियाँ और जंगल।

गोलपोगुच्छो (कहानियों का गुच्छा) टैगोर के सबुज पत्र काल में लिखा गया था, जो 1914 से 1917 तक चला और उनकी अन्य पत्रिकाओं के लिए नामित किया गया था। रे की फिल्म चारुलता ने विवादास्पद टैगोर उपन्यास नस्तानिरह (द ब्रोकेन नेस्ट) को प्रतिध्वनित किया। अतिथि में, जिसे एक और फिल्म में बनाया गया था, छोटा ब्राह्मण लड़का तारापदा एक गाँव के जमींदार के साथ नाव की सवारी करता है। लडका घर से अपनी उड़ान और उसके बाद के भटकने के बारे में बताता है। बड़ा तरस खाकर उसे गोद ले लेता है; वह लड़के को अपनी बेटी से शादी करने के लिए मनाता है। अपनी शादी से एक रात पहले, तारापदा फिर से भाग जाते हैं। स्ट्रूट पात्रा (द वाइफ्स लेटर) महिला मुक्ति का एक प्रारंभिक ग्रंथ है, मृणाल एक बंगाली मध्यम वर्ग के व्यक्ति की पत्नी है—प्रिंसी, प्रीनिंग और पितृसत्तात्मक। अकेले यात्रा करते हुए वह एक पत्र लिखती है, जो कहानी को समझती है। वह अपनी कुंवारी पौरुष की याचना करते हुए बिताए गए जीवन की क्षुद्रता का विवरण देती है; वह अंततः एमियो बाचबो की घोषणा करते हुए विवाहित जीवन छोड़ देती है। एई बाकलम: “और मैं जीवित रहूँगी। यहाँ, मैं रहती हूँ”

हैमंती ने हिन्दू व्यवस्थित शादी पर हमला किया और बताया कि उनकी अक्सर निराशाजनक घरेलुता, भारतीय मध्य वर्गों को त्रस्त करने वाले पाखंड और कैसे एक युवा महिला हैमंती ने अपनी असहनीय संवेदनशीलता और स्वतंत्र भावना के कारण खुद को मना कर दिया। अंतिम भाग में टैगोर ने सीता के आत्मदाह के प्रयास के संशोधन का विस्फोट किया; वह राम की शुद्धता के संदेह को शांत करने के लिए थी। मुसलमानी दीदी की नजर हिन्दू-मुस्लिम तनाव पर है और यह कई मायनों में टैगोर के मानवतावाद के सार का प्रतीक है। कुछ हद तक ऑटो-रेफरेंशियल दरपहरण एक ऐसे युवक का वर्णन करता है जो साहित्यिक महत्वाकांक्षाओं को पनाह देता है। यद्यपि वह अपनी पत्नी से प्रेम करता है, वह उसके साहित्यिक जीवन को स्त्रीलिंग समझकर उसमें बाधा डालना चाहता है। युवावस्था में टैगोर संभवतः उनसे सहमत थे। दरपहरण आदमी की अंतिम विनम्रता को दर्शाता है क्योंकि वह अंततः अपनी पत्नी की प्रतिभा को स्वीकार करता है। कई अन्य टैगोर की कहानियों की तरह, जिबिटो ओ मृतो बंगालियों को एक सर्वव्यापी एपिग्राम से लैस करता है: कादोम्बिनी मोरिया प्रोमन कोरिलो शी मोर नाइ—“कादोम्बिनी की मृत्यु हो गई, जिससे साबित होता है कि वह नहीं थी।”

काव्य—टैगोर की काव्य शैली, जो 15वीं और 16वीं शताब्दी के वैष्णव कवियों द्वारा स्थापित वंश से आगे बढ़ाती है, शास्त्रीय औपचारिकता से लेकर हास्य, दूरदर्शी और परमानंद तक है। वह व्यास के नास्तिक रहस्यवाद और उपनिषदों के अन्य ऋषि-लेखकों, भक्ति-सूफी रहस्यवादी कबीर और रामप्रसाद सेन से प्रभावित थे। टैगोर की सबसे नवीन और परिपक्व कविता बंगाली ग्रामीण लोक संगीत के उनके संपर्क का प्रतीक है, जिसमें रहस्यवादी बाउल गाथागीत शामिल थे। ये टैगोर द्वारा फिर से खोजे गए और फिर से लोकप्रिय हुए, 19वीं सदी के कार्तभजा भजनों से मिलते-जुलते हैं, जो बुर्जुआ भद्रलोक धार्मिक और सामाजिक रूढ़िवादिता के खिलाफ आंतरिक देवत्व और विद्रोह पर जोर देते हैं। दिल और टैगोर की “उनके गहरे अवकाशों की जीवन शक्ति”, या जीवन देवता पर ध्यान-दिमाग या ‘-भीतर जीवित भगवान-यह तथ्य प्रकृति से अपील और मानव नाटक के भावनात्मक अंतःक्रिया के माध्यम से देवत्व से जुड़ा हुआ है। वे अपनी भानुसिंह कविताओं में राधा-कृष्ण रोमांस का वर्णन करते हैं, जिन्हें सत्तर वर्षों के दौरान बार-बार संशोधित किया गया।

Q.12. Write a note on K.S. Venkataramani's early life and different aspects of his writings.

के०एस० वेंकटरमाणी के प्रारम्भिक जीवन और उनके लेखन के विभिन्न पहलुओं पर एक लेख लिखिए।

Ans. Venkataramani was born in 1891 in Kaveripattinam in Tanjore district of Madras Province. He belonged to a rich family as his father Siddanatha Iyer was a big landlord in Tanjore district. Venkataramani's ancestors had served as ministers in the royal court of Maratha Kings of Tanjore.

Venkataramani completed his primary education at the National High School, Mayavaram, while he graduated from the Madras Christian College. He took his law degree from the Presidency College at Madras. Then he settled down in the suburb of Mylapore where he developed himself into a lawyer. In his early career, he apprenticed under the legal giant Sir C.P. Ramaswami Iyer. Throughout his life he campaigned for rural upliftment and wrote many monologues on the subject.

After becoming an acclaimed lawyer he authored many books in English. In his writings, he mainly focussed on Southern India and its rural atmosphere. His stories highlight the grim realities of the South Indian life in a realistic panorama. His writing had many aspects of Indian independence movement. His works 'Murugan the Filler' (1927) and 'The Patriot' (1932) had gained considerable appreciation and he became a subject of a biography by NS. Ramaswami. He also met Paul Brunton during his visit to India and finds mention in his book 'A Search in Secret India'.

At the very young age of sixteen, he gave an eloquent speech protesting the Partition of Bengal when he was only 16 years of age. The speech was published in the magazine 'The Indian Patriot'. At the Madras Christian College, he published a series of sketches on village life which were later published in the form of an anthology 'Jatadharan and Other Stories'. Rabindranath Tagore who inspired him to start a magazine in Tamil and then Venkataramani began to publish a Tamil Weekly titled 'Tamil Ulagu'. Venkataramani's first book was 'Paper Boats'. His first novel was 'Murugan the Tiller'. His work 'Kandan the Patriot' was serialized in 'Swarajya' magazine in 1931 and was published in book form in 1932. Gandhi is a motif in his fictional work. His novel 'Kandan the Patriot' is an earnest narrative about the 1930s Civil Disobedience Movement. His collection of short stories 'Jatadharan and Other Stories' amplifies the Gandhian creed of ahimsa and violent denunciation of modern civilization.

वेंकटरमाणी का जन्म मद्रास प्रान्त के तंजौर जिले के कावेरीपत्तनम में 1891 में हुआ था। वे एक धनवान परिवार से थे, उनके पिता सिद्धनाथ अय्यर तंजौर जिले के बड़े जमींदार थे। वेंकटरमाणी के पूर्वजों ने तंजौर के मराठा राजाओं के दरबार में मन्त्रियों के रूप में अपनी सेवाएँ दी थीं।

वेंकटरमाणी ने अपनी प्राइमरी शिक्षा नेशनल हाईस्कूल, मायावरम से पूरी की थी जबकि स्नातक का कोर्स मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज से पूरा किया। उन्होंने विधि स्नातक की डिग्री प्रेसीडेंसी कॉलेज मद्रास से प्राप्त की। इसके बाद वे माइलापुर के उपनगरीय क्षेत्र में रहने लगे जहाँ से उन्होंने वकालत का अपना व्यवसाय शुरू किया। इस व्यवसाय के शुरूआती दिनों में सी०पी० रामास्वामी अय्यर जैसे विधि विशेषज्ञ के सान्निध्य में उन्होंने प्रशिक्षण प्राप्त किया। जीवनपर्यन्त से ग्रामीणों के उत्थान में लगे रहे और इस विषय पर अनेक एकालापों की रचना की।

एक विख्यात अधिवक्ता के रूप में स्थापित होने के बाद उन्होंने अनेक पुस्तकों की रचना अंग्रेजी में की। उनके लेखनों में उनका ध्यान मूलतः दक्षिण भारत और वहाँ के वातावरण पर रहता था। उनकी कहानियों में दक्षिण भारत के जीवन को वास्तविक रूप में विकट वास्तविकताओं को चरितार्थ होते हुए देखा जा सकता है। उनके लेखन में भारतीय स्वतन्त्रता

आन्दोलन की झलक भी मिलती है। उनकी कृतियों 'Murugan the Tiller' (1927) और 'The Patriot' (1932) ने काफी सराहना पायी और एन०एस० रामास्वामी द्वारा लिखी गयी जीवनी में उनका भी उल्लेख प्राप्त होता है। भारत की यात्रा पर आए पॉल ब्रन्टन की पुस्तक 'A Search in Secret India' में भी उनका उल्लेख किया गया है।

जब वे केवल 16 साल के थे, उन्होंने बंगाल विभाजन के विरोध में एक भावपूर्ण भाषण दिया। मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज में उन्होंने ग्रामीण जीवन पर रेखा-चित्रों की एक शृंखला प्रकाशित की जो बाद में जटाधरन और अन्य कहानियों के संकलन के रूप में प्रकाशित हुए।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने उन्हें तमिल में एक पत्रिका प्रकाशित करने के लिए प्रेरित किया। तब वेंकटरमाणी ने एक तमिल साप्ताहिक 'Tamil Ulagu' का प्रकाशन शुरू किया। वेंकटरमाणी की पहली पुस्तक 'Paper Boats' थी। उनका पहला उपन्यास 'Murugan the Tiller' था। उनकी कृति 'Kandan the Patriot' को धारावाहिक रूप में 'Swarajya' में वर्ष 1931 में प्रकाशित किया गया जिसको पुस्तक रूप में 1932 में प्रकाशित किया गया। कथा साहित्य में गांधी उनका मूल विषय होते हैं। उनका उपन्यास 'Kandan the Patriot' पूरी सदाशयता से 1930 के दशक के सविनय अवज्ञा आन्दोलन का विवरण देता है। लघु कथाओं का उनका संग्रह 'Jatadharan and other Stories' गांधी के अहिंसा सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है और आधुनिक सभ्यता का तिरस्कार दर्शाता है।

Q.13. Write a note on K.S. Venkataramani's contributions to Indian writing in English.

के०एस० वेंकटरमाणी का अंग्रेजी में भारतीय लेखन में योगदान पर एक लेख लिखिए।

Ans. K.S. Venkataramani was born in 1891, he died in 1952. His name gives us hints about his life. 'K' stands for Kaveripatnam, the legendry port town located near the place where the Kaveri river flows into the sea. 'S' stands for Sidhanatha, which was K.S. Venkataramani's father's name.

Venkataramani's family had lived in Kaveri delta region for the last seven generations. He was growing up in Kaveripatnam in a Brahmin family, he learned to love the Indian country side. He studied well at the National High School in Mayavaram. He was already a budding journalist and social critic in his Youth. After high school he moved to Madras and enrolled in Madras Christian College. Venkataramani published sketches and stories at this time in a magazine. These pieces were later gathered in the book **Jatadharan and Other Stories** (1937).

After college, Venkataramani studied law at Presidency College in Madras and became a lawyer.

His earliest books were **Paper Boats** (1921); **Second edition** (1925), and **on the Sand Dunes** (1923). These sketches were works of poetic prose. In 'Paper Boats' certain village folks, such as a neighbour with a career in the civil service, and family members, such as the grand-mother who is the head of an extended family, intrigued him. In Paper Boats' he also contemplates the Indian pilgrim and the beggar.

In '**On the Sand-Dunes**' the author shows that he was wary of industrialism as a panaces, and concerned about a materialistic way of life that puts man on a tread mill.

Venkataramani's great novel '**Kandan The Patriot**' which first appeared as a series in Swarajya the national daily newspaper in 1931, and was then published as a book in 1932. Kandan provided necessary impetus for certain people to become seriously involved in India's freedom movement.

The story of **Kandan** includes characters who are low caste labourers. Nandan, Mukkan, Nallan and Kariyan are all Harijans and agricultural coolies.

Venkataramani wrote about village life in his novel, "**Murugan, The Tiller**" published in 1927. Murugan depicts Gandhian social ideals without particularly taking about specific activities of the political movement.

Venkataramani's work for village uplift should not be underestimated.

के०एस० वेंकटरमाणी का जन्म 1891 में हुआ था। 1952 में उनकी मृत्यु हो गई थी। उनका नाम हमें उनकी जीवन कहानी के बारे में संकेत देता है 'के' का अर्थ कावेरीपट्टम है, जो उस जगह के पास स्थित पौराणिक बंदरगाह शहर है, जहाँ कावेरी नदी सागर में गिरती है। कावेरीपट्टम में वेंकटरमाणी का जन्म हुआ था। 'एस' का अर्थ सिद्धनाथ है, जो के०एस० वेंकटरमाणी के पिता का नाम है। वेंकटरमाणी का परिवार कम से कम सात पीढ़ियों से कावेरी डेल्टा में रहता था। ये कावेरीपट्टम के एक ब्राह्मण परिवार में पढ़े-लिखे थे। उन्होंने भारतीय ग्रामीण इलाकों से प्यार करना सीखा। उन्होंने मायावरम् में नेशनल हाई स्कूल में अध्ययन किया। अपनी युवावस्था से पहले ही वह एक नवोदित पत्रकार और आलोचक बन गये। हाई स्कूल के बाद वे मद्रास चले गये और मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज में दाखिला ले लिया। वेंकटरमाणी ने तब एक पत्रिका में रेखाचित्र और कहानियाँ प्रकाशित की। ये बाद में जटाधरण और अन्य कहानियाँ (1937) पुस्तक में डाली गयीं। कॉलेज के बाद वेंकटरमाणी ने मद्रास के प्रेसीडेंसी कॉलेज से कानून की पढ़ाई की और वकील बन गए।

उनकी शुरुआती किताबें पेपर बोट (1921) दूसरा संस्करण (1925), और ऑन द सैंड-ड्यून्स (1923) थी। ये रेखांकित काव्य गद्य की कृतियाँ थी। 'कागज की नाव' में लोग, जैसे कि सिविल सेवा में करियर बनाने वाले पड़ोसी, परिवार की सदस्यों, जैसे दादी, जो एक बड़े परिवार की मुखिया हैं, ने उन्हें आकर्षित किया। 'कागज की नाव' में वह भारतीय तीर्थयात्री और भिखारी का चिंतन करते हैं।

"ऑन द सैंड ड्यून्स" में लेखक रामबाण के रूप में उद्योगवाद से सावधान था और जीवन के एक भौतिकवादी तरीके से चिंतित था जो मनुष्य को ट्रेडमिल पर रखता है। वेंकटरमाणी का महान उपन्यास 'कंदन द पौट्रियट' जो पहली बार 1931 में राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र स्वराज्य में एक शृंखला के रूप में प्रकाशित हुआ और फिर 1932 में एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुआ, दक्षिण में देशभक्त भारतीयों के लिए बहुत महत्व रखता था। 'कंदन' ने कुछ लोगों को भारत के स्वतन्त्रता आंदोलन में और अधिक गंभीरता से शामिल होने के लिए आवश्यक प्रोत्साहन प्रदान किया। कंदन की कहानी में निम्न जाति के मजदूर पात्र शामिल हैं—नंदन, मुक्कन, नल्लन और करियाँ सभी हरिजन और कृषि कुली हैं।

वेंकटरमाणी ने 1927 में प्रकाशित नॉवल 'मुरगन द टिलर' में ग्रामीण जीवन के बारे में लिखा। मुरगन विशेष रूप से राजनीतिक आंदोलन की विशिष्ट गतिविधियों के बारे में बात किए बिना गाँधीवादी सामाजिक आदर्शों को दर्शाते हैं। ग्राम उत्थान के कार्यों के लिए वेंकटरमाणी के कार्यों को कम नहीं आंका जाना चाहिए।

Q.14. Give the concept of Bhabani Bhattacharya about fiction. Also describe the novel 'So Many Hungers' written by Bhabani Bhattacharya.

उपन्यास के सम्बन्ध में भवानी भट्टाचार्य की अवधारणा की विवेचना कीजिए। भवानी भट्टाचार्य द्वारा प्रणीत उपन्यास 'So Many Hungers' के बारे में भी वर्णन कीजिए।

Ans. It was believed by Bhabani Bhattacharya that art must preach. It should become a vehicle to spread the truth. Art must teach and help to make a developed society. The novel is the instrument to obtain this objective. Art must teach by its interpretations of life. His writing is dedicated towards interpretation of truth. He belongs to the social realism school of Indo-Anglian literature. He had made his creation in literature which exhibit the influence of Rabindranath Tagore and Mahatma Gandhi. Like Prem Chand, the giant figure of Hindi world, he adopted such approach which highlighted the real life of village people.

'So Many Hungers' was written in 1947 and published few months after Independence. It was set in the context of the 1942-1943 Bengal famine and Quit India Movement. This complicated and didactic novel takes its characters through a rigorously Gandhian education. It is, at one level the story of Kajoli, a village girl who righteously rejects the prostitution forced on her by the destitution of her family, to sell newspapers and so also to assume the persona of the Gandhian 'new woman'.

At another level, it deals with the spiritual and political growing-up of Rahoul, a Cambridge-educated astrophysicist who simultaneously discovers the limits of intellectualism and Western civilization. He renounces both in favour of nationalism and village-based economy.

भवानी भट्टाचार्य यह मानते थे कि कला को उपदेशात्मक होना चाहिए। इसको सत्य के उद्बोधन का वाहक होना चाहिए। कला ऐसी हो जो मानव को शिक्षित कर सके और विकसित समाज की प्रतिस्थापना में सहायक हो। उपन्यास इस उद्देश्य की प्राप्ति का साधन है। जीवन की व्याख्या करते हुए कला शिक्षा देने वाली होनी चाहिए। भट्टाचार्य के उपन्यास सत्य को उद्घाटित करते हैं। वह भारतीय-आंग्ल साहित्य के क्षेत्र में सामाजिक यथार्थवाद का प्रतिनिधित्व करते हैं। उन्होंने अपनी रचनावली में रवीन्द्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी के प्रभाव को प्रदर्शित किया है। हिन्दी जगत के विशाल व्यक्तित्व प्रेमचन्द के समान ही भट्टाचार्य ने सादृश्यता प्रकट करते हुए उपन्यास की रचना इस रूप में की जिसने ग्रामीण लोगों के वास्तविक जीवन पर प्रकाश डाला।)

'50 Many Hungers' 1947 में लिखा गया था जिसका प्रकाशन देश की स्वतन्त्रता के कुछ माह बाद हुआ था। इस उपन्यास का कथानक वर्ष 1942-43 के बंगाल के दुर्भिक्ष और भारत छोड़ो आन्दोलन का है। इस जटिल व उपदेशात्मक उपन्यास के पात्रों का चित्रण यथार्थ रूप से गांधी की शिक्षा पर आधारित किया गया। इसका एक कथानक काजोली की कहानी पर आधारित है जो गांव की एक लड़की है, जिसको अपने परिवार की गरीबी के कारण वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर किया जाता है जो न्यायसंगत रूप से ऐसा करने से मना कर देती है। इसके स्थान पर वह समाचार-पत्र विक्रेता बनना पसन्द करती है और इस प्रकार गांधी के 'नई नारी' के पात्र को जीवन्त कर देती है।

दूसरे कथानक में कैम्ब्रिज से अध्ययन कर लौटे राहुल के आध्यात्मिक व राजनीतिक विकास को दर्शाया गया है। राहुल खगोल भौतिकी का वैज्ञानिक है जो बौद्धिकता और पश्चिम की सभ्यता की सीमाओं और लघुता को समझने लगता है। इसीलिए वह इन दोनों का परित्याग करते हुए राष्ट्रीयता व ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था की ओर कार्यशील होने लगता है।

Q.15. Give a life-sketch of Bhabani Bhattacharya.

भवानी भट्टाचार्य का जीवन परिचय दीजिए।

Ans. Bhabani Bhattacharya was born in Bihar to Bengali parents. In 1927 he graduated with a degree in English literature from Patna University. In 1928 Bhattacharya moved to England to continue his studies. His initial intention was to continue studying English literature at King's College, London. However after an acrimonious encounter with one of his professors he decided on a degree in history instead. While studying for his degree at the University of London, Bhattacharya was taught by the political philosopher and author Harold Laski who would be, along with Tagore and Gandhi, a lasting influence on his writing.

During his time in London, Bhattacharya became closely associated with Marxist groups and an active member of the League Against imperialism. While in London, Bhattacharya contributed to a number of journals and news papers. He published in *The Bookman*, *the Manchester Guardian* and *the Spectator*, which at the time they were edited by author of the bestselling *Lives of a Bengal Lancer*, Francis Yeats-Brown, who would become a close friend. Both he and Tagore urged Bhattacharya to use English as a medium of expression for

his fiction, rather than Bengali. In 1930 Bhattacharya translated Tagore's *The Golden Boat* to wide acclaim. He graduated from the University of London with a degree in history in 1931, returning for his PhD, which he received in 1934. From 1932 to 1933 he travelled widely through Europe, including Berlin, Budapest, Warsaw, Paris and Vienna.

Bhattacharya returned to India in December 1934 and settled in Calcutta. He married Salil Mukherji in 1935. In 1949 he moved to Washington as Press Attache for the Indian Embassy. In 1947, *So Many Hungers* was published. *Music for Mohini*, one of his most acclaimed novels, was published in 1952 and *Shadow from Ladakh*, which received the Sahitya Akademi Award (India's highest literary award), in 1966. His novels were translated into twenty-eight languages. In 1969 he left India to become Visiting Professor at the University of Hawaii. In 1972 he moved permanently to the US. He died of a heart attack in 1988.

भवानी भट्टाचार्य का जन्म बिहार में बंगाली माता-पिता के यहाँ हुआ था। 1927 में उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। 1928 में भट्टाचार्य अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए इंग्लैंड चले गए। उनका प्रारंभिक लक्ष्य किंग्स कॉलेज, लंदन में अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन जारी रखना था। हालांकि अपने एक प्रोफेसर के साथ तीखी मुठभेड़ के बाद उन्होंने इसके बजाय इतिहास में डिग्री लेने का फैसला किया। लंदन विश्वविद्यालय में अपनी डिग्री के लिए अध्ययन करते समय, भट्टाचार्य को राजनीतिक दार्शनिक और लेखक हेरोल्ड लास्की ने पढ़ाया था, जो टैगोर और गाँधी के साथ, उनके लेखन पर एक स्थायी प्रभाव रहा।

लंदन में अपने समय के दौरान, भट्टाचार्य मार्क्सवादी समूहों और साम्राज्यवाद के खिलाफ लीग के एक सक्रिय सदस्य के साथ निकटता से जुड़े। लंदन में रहते हुए, भट्टाचार्य ने कई पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में योगदान दिया। जिसे उन्होंने द बुकमैन, मैनचेस्टर गार्जियन एंड द स्पेक्टेटर में प्रकाशित किया, जिसे उस समय बेस्टसेलिंग लाइव्स ऑफ ए बंगाल लांसर, फ्रांसिस येट्स-ब्राउन के लेखक द्वारा संपादित किया गया था, जो एक करीबी दोस्त बन गया। टैगोर ने भट्टाचार्य से आग्रह किया कि वे बंगाली के बजाय अंग्रेजी को अपने कथा साहित्य के लिए अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में इस्तेमाल करें। 1930 में भट्टाचार्य ने व्यापक प्रशंसा पाई जब टैगोर की 'द गोल्डन बोट' का अनुवाद किया। उन्होंने 1931 में इतिहास में डिग्री के साथ लंदन विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की, अपनी पीएचडी के लिए लौट आए, जो उन्होंने 1934 में प्राप्त की। 1932 से 1933 तक उन्होंने बर्लिन, बुडापेस्ट, वारसॉ, पेरिस और वियना सहित यूरोप की व्यापक यात्रा की।

भट्टाचार्य दिसंबर 1934 में भारत लौट आए और कलकत्ता में बस गए। उन्होंने 1935 में सलिल मुखर्जी से शादी की। 1949 में वे भारतीय दूतावास के प्रेस अताशे के रूप में वाशिंगटन चले गए। 1947 में 'सो मेनी हंगर्स' प्रकाशित हुई थी। उनके सबसे प्रशंसित उपन्यासों में से एक 'मोहिनी के लिए संगीत' 1952 में प्रकाशित हुआ था और 'शैडो फ्रॉम लदाख', को 1966 में साहित्य अकादमी पुरस्कार (भारत का सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार) मिला था। उनके उपन्यासों का अट्हाइस भाषाओं में अनुवाद किया गया था। 1969 में उन्होंने हवाई विश्वविद्यालय में विजिटिंग प्रोफेसर बनने के लिए भारत छोड़ दिया। 1972 में वे स्थायी रूप से अमेरिका चले गए। 1988 में दिल का दौरा पड़ने से उनका निधन हो गया।

Q.16. Explain the literary life of R. K. Narayan.

आर०के० नारायण के साहित्यिक जीवन का उल्लेख कीजिए।

Or Throw light upon R.K. Narayan contribution as novelist.

एक उपन्यासकार के रूप में आर०के० नारायण के योगदान पर प्रकाश डालिए।

Ans. Rasipuram Krishnaswami Narayanswami was born in 1906 at Madras (presently Chennai). His father was a school teacher in Mysore. All his brothers and sisters shifted to Mysore along with his parents but he was left behind with his grandmother.

R. K. Narayan was not a brilliant student. He graduated from Maharaja College, Mysore at the age of twenty-four in 1930. He failed in his high school examination as well as in Intermediate examination.

In 1935, R. K. Narayan met a girl named Rajam and fell in love with her. He met her father and asked him to offer Rajam's hand to him. R. K. Narayan's frankness was liked by the girl's father. Thus, R. K. Narayan and Rajam got married and spent a happy married life, though for a short time period. Unfortunately, R. K. Narayan's wife Rajam died after four years of their marriage. R. K. Narayan was left all alone with his daughter Hema.

R. K. Narayan started his career as a novelist in 1935 with the publication of his novel 'Swami and Friends'. This novel opened new gates of success for R. K. Narayan. Graham Greene called this novel 'a book in ten thousand'. After 'Swami and Friends' came 'Bachelor of Arts' (1936); 'The Dark Room' (1938); 'The English Teacher' (1945); 'Mr. Sampath' (1949) and then came 'The Financial Expert' in 1952. Some other novels written by R. K. Narayan are 'Waiting for Mahatma'; 'The Man Eater of Malgudi'; 'The Guide' and 'The Vendor of Sweets'. R. K. Narayan won the 'Sahitya Akademi Award' for 'The Guide' in 1960. This novel attained great popularity as it has been successfully filmed in Hindi. R. K. Narayan's literary output is vast. He has written about a dozen novels and one hundred and fifty-one short stories. R. K. Narayan's novels have been translated into several languages.

All Narayan's characters are quite different to one another in so many ways. His characters may be complex characters and minor characters. His simple characters can easily be seen through Narayan's heroes or the central characters like Swami, Chandra, Krishna, Srinivas and Natraj, come in the first group. All these characters lack self-confidence and determination, and are also unable to assert themselves. They are pitiful, but they are also weak and hesitant.

आर०के० नारायण का जन्म वर्ष 1906 ई० में मद्रास में हुआ था। उनके पिता मैसूर में एक अध्यापक थे। उनके सभी भाई-बहन अपने माता-पिता के साथ मैसूर आ गए थे लेकिन वह अपनी दादी के पास ही रुक गए।

आर०के० नारायण कोई मेधावी छात्र नहीं थे। वर्ष 1930 ई० में चौबीस वर्ष की आयु में उन्होंने महाराजा कॉलेज मैसूर से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। हाईस्कूल व इण्टरमीडिएट की परीक्षा में वे अनुत्तीर्ण हो गए।

वर्ष 1935 ई० में आर०के० नारायण की मुलाकात राजम नामक लड़की से हुई जिससे उन्हें प्रेम हो गया। वे उसके पिता से मिले और विवाह का प्रस्ताव रखा। लड़की के पिता को आर०के० नारायण की निष्कपटता ने प्रभावित किया। इस प्रकार आर०के० नारायण और राजम विवाह सूत्र में बँध गए और सुखद वैवाहिक जीवन जिया। यद्यपि ऐसा थोड़े समय के लिए ही रहा क्योंकि दुर्भाग्यवश आर०के० नारायण की पत्नी का देहान्त विवाह के चार वर्ष पश्चात् ही हो गया। अब आर०के० नारायण पूरी तरह अकेले रह गए, उनकी पुत्री हेमा उनके साथ थी।

वर्ष 1935 ई० में 'स्वामी एण्ड फ्रेंड्स' के प्रकाशन के साथ आर०के० नारायण ने उपन्यासकार के रूप में अपने कैरियर की शुरुआत की। इस उपन्यास ने आर०के० नारायण के लिए सफलता के नए द्वार खोल दिए। ग्राहम ग्रीन ने इस उपन्यास को 'हजारों उपन्यासों के बीच एक उपन्यास' कहकर सम्मानित किया है। 'स्वामी एण्ड फ्रेंड्स' के पश्चात् उनके अनेक उपन्यास प्रकाशित हुए—'बैचलर ऑफ आर्ट्स' (1936), 'दि डार्क रूम' (1938), 'दि इंग्लिश टीचर' (1945), 'मिस्टर सम्पत्' (1949) और 'दि फाइनेशियल एक्सपर्ट' (1952)। आर०के० नारायण द्वारा लिखे गए कुछ अन्य उपन्यास हैं—'वेटिंग फॉर महात्मा', 'दि मैन ईटर ऑफ मालगुडी', 'दि गाइड', 'दि वैण्डर ऑफ स्वीट्स'। वर्ष 1960 ई० में आर०के० नारायण को 'दि गाइड' के लिए साहित्य अकादमी के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस उपन्यास को आशातीत लोकप्रियता हासिल हुई और इस पर हिन्दी में सफल फिल्म का भी निर्माण किया गया। आर०के० नारायण का साहित्यिक उत्पादन विस्तृत है। उन्होंने लगभग एक दर्जन उपन्यास और एक सौ इक्यावन छोटी कहानियाँ लिखी हैं। आर०के० नारायण के उपन्यासों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद किया गया है।

नारायण के सभी पात्र बहुत-से तरीकों में एक-दूसरे से बहुत भिन्न हैं। उनके पात्र जटिल अथवा लघु पात्र हैं। उसके सीधे-सादे पात्र नारायण के नायकों के जरिए देखे जा सकते हैं अथवा केन्द्रीय पात्रों के जरिए जैसे स्वामी, चन्द्रन, कृष्णा, श्रीनिवास और नटराज जो प्रथम गुण में आते हैं। इन सभी पात्रों में आत्म-विश्वास और संकल्प की कमी होती है और स्वयं दृढ़ता से कहने में भी असमर्थ होते हैं। वे दयनीय होते हैं लेकिन वे कमजोर तथा झिझक वाले भी होते हैं।

Q.17. Explain about R.K. Narayan's descriptive art.

आर०के० नारायण की वर्णनात्मक कला के बारे में विवरण कीजिए।

Ans. R.K. Narayan makes use of very effective, precise and apt similes in his prose. He seldom uses figures of speech in his prose. In his novel 'The Guide' he has used a simile—'Pocket like the soared'. His prose style bears several remarkable and exclusive features. In the words of Rajeev Tara Nath :

"Though Narayan does exploit this resemblance mainly in bold and ingenious prose which he frequently uses and to some extent in the creation of the milieu and character. It would be mistake to conclude that Narayan's work precludes the mixed areas of expedience, attitude and character."

R.K. Narayan's immaturity in the art of narration is clearly displayed in his early novels. The incidents in the story are arranged loosely. These early novels by R.K. Narayan do not possess any grandeur in his style of writing and his workmanship as a master novelist. But in his later novels, he seems to be a nature artist. He has made a very brilliant selection of words in those novels. Narayan's later novels reveal his grand and refined style. His prose exhibits the true spirit of the age in which he breathed.

Graham Greene is impressed by Narayan and writes :

"Mr. Narayan's light vivid style, with its sense of time passing of the unrealized beauty of human relationship so often recalls Tarkington."

R.K. Narayan is indeed superb in his art of description for through this he makes every particular scene in his novel turn realistic and living. His descriptions appear to be suggestive and apt at clear every step. His descriptive prose clearly shows that R.K. Narayan gave prominence to feelings and emotions. Narayan's prose style is simple. It is devoid of any sort of affectations. It is clear, exact, precise and original.

Any rhetoric, or ornamentation or affectation is not used by Narayan in his prose. Narayan shows perfect ease and comfort in case of the language. His words and phrases have apt and suggestive meanings. Narayan's English bears the flavour of Indian speech and life. His language is pure and clear in tone. Narayan's language very beautifully depicts the Indian life and living.

In the words of William Walsh :

"Narayan's art aims at an intricate alliance of the serious and the comic flow in and out of one another throughout in an intricate, inseparable alliance."

R.K. Narayan अपनी गद्य में बहुत प्रभावी, संक्षिप्त और उपयुक्त उपमाओं का प्रयोग करते हैं। अपनी गद्य में वह कभी-कभार अलंकारों का प्रयोग करते हैं। अपने उपन्यास 'The Guide' में उन्होंने एक उपमालंकार का प्रयोग किया है—'Pocket like the soared'। उनकी गद्य-शैली में बहुत से उल्लेखनीय और विशिष्ट गुण हैं। राजीव तारानाथ के शब्दों में—“यद्यपि नारायण इस समरूपता का मुख्य रूप से अपनी निर्भीक एवं प्रतिभाजन्य गद्य में सन्दोहन करते हैं

जिसका वह अक्सर प्रयोग करते हैं, तथा कुछ हद तक पात्र और सामाजिक वातावरण के सर्जन में। यह निष्कर्ष निकालना गलत होगा कि नारायण का लेखकीय कार्य उपयुक्तता, रवैया तथा पात्र के मिश्रित क्षेत्रों को असम्भव बना देता है।”

R.K. Narayan के प्रारम्भिक उपन्यास आख्यान की कला में उनकी परिपक्वता दर्शाते हैं। कहानी में घटनाएँ ढीले-ढाले तरीके से रखी गई हैं। उनके प्रारम्भिक उपन्यासों में एक अधिकाधिक उपन्यासकार के रूप में लेखन तथा कार्यकुशलता की उनकी शैली में कोई गौरव नहीं है। लेकिन उनके बाद वाले उपन्यासों में वह एक परिपक्व कलाकार दिखाई पड़ते हैं। उन उपन्यासों में उन्होंने शब्दों का बहुत ही शानदार चुनाव किया है। नारायण के बाद वाले उपन्यास उनकी शानदार और परिष्कृत शैली को सामने लाते हैं। उनकी गद्य उस युग की सच्ची स्पिरिट (भाव) को दर्शाती है जिसमें उन्होंने साँस ली।

Graham Greene नारायण से प्रभावित होकर लिखते हैं—“नारायण की हल्की-फुल्की जीवन्त शैली, मानवीय सम्बन्धों के अप्राप्त सौन्दर्य के समय-व्यतीत करने के बोध के साथ टार्किगटन की याद दिलाती है।”

R.K. Narayan वास्तव में वर्णन करने की अपनी कला में श्रेष्ठ हैं, क्योंकि इसके जरिए अपने उपन्यासों में वह प्रत्येक विशिष्ट दृश्य को वास्तविक और जीवित दृश्य में बदल देते हैं। उनके वर्णन प्रत्येक कदम पर सुझाव देते हुए और अनुकूल लगते हैं। उनका वर्णनात्मक गद्य स्पष्ट दर्शाता है कि नारायण ने अनुभूतियों और भावों को अधिक महत्त्व दिया। उनके गद्य की शैली सीधी-सरल है। इसमें किसी प्रकार की कृत्रिमता नहीं है। यह स्पष्ट, यथातथ्य, संक्षिप्त और मौलिक है। अपने गद्य में नारायण किसी प्रकार की वाक्पटुता या अलंकरण या कृत्रिमता का प्रयोग नहीं करते हैं। भाषा के मामले में नारायण पूर्ण आराम और चैन दिखाते हैं। उनके शब्दों और वाक्यांशों के उपयुक्त और सुझाव देने वाले अर्थ हैं। नारायण की अंग्रेजी भारतीय भाषा और जीवन की खुशबू रखती है। उनकी भाषा लहजे में विशुद्ध और स्पष्ट है। उनकी भाषा बड़ी सुन्दरता के साथ भारतीय जीवन और रहन-सहन को चित्रित करती है।

William Walsh के शब्दों में—

“नारायण की कला, एक जटिल तथा अलगाव गठबन्धन में पूरे समय एक-दूसरे में अन्तः और बाह्य रूप में गम्भीर और विनोदी बहाव के जटिल गठबन्धन की ओर लक्ष्य करती है।”

Q.18. What do you know about Narayan's craft of fiction? Discuss.

नारायण के उपन्यास कौशल के बारे में आप क्या जानते हैं? विवरण दीजिए।

Or Write an essay on the technique of crafts in R.K. Narayan's fiction.

आर०के० नारायण के उपन्यास कौशल तकनीक पर एक निबन्ध लिखिए।

Ans. R.K. Narayan is the most artistic creator of Indian writers. His sole aim being to give aesthetic satisfaction, and not to use his art as a medium of propaganda or to serve some social purpose. He is a pure and simple writer with no pretension to be known as a crusader scholar or idealist missionary. Narayan himself remarks: “The outstanding characteristic of good writing is readability.”

He started his career as a novelist with his famous novel ‘Swami and Friends’. It got much popularity. R.K. Narayan achieved recognition and acceptance with his very first publication.

Narayan's novels and stories are comedies, free of all rancour, anger and bitterness. His humour is all pervasive and most varied. We come across with humour of all kinds, situational humour, humour of characterization, and humour with ironical understanding. Margayya is a comic figure in ‘The Financial Expert’.

Narayan's fiction proceeds by revealing the manifold contradictory nature of personality and existence. We see, the same people from different points of view and therefore see the differences in them, the contrary, co-existing layers of being. No one of these identities is in any bleakly orthodox way the true one, since all are equally true and equally illusory.

There is no doubt that Narayan's art of characterization is fine and remarkable. His characters are all realistic and lifelike. Raju, Natraj, Mr. Sampath and Margayya, be compared well with the heroes of even the greatest novelists of world fame. He has created a marvellous picture-gallery of characters. It is also said that Narayan's characters are based on the psychological treatment and all his characters are realistic and lifelike.

Narayan is known to be a writer of characters. Narayan himself was the native of Southern India. He, therefore, can recognize the habits, hobbies, likes, dislikes, greatnesses and weaknesses, etc. of his characters. His family was not rich or poor *i.e.* he belonged to a middle class family. His canvas is limited and is never over-crowded. So, he selects his characters from the middle class family. Narayan remains inside his vision of characters.

The characters portrayed by Narayan are judged with reference to what they speak and do. Narayan's mastery in dialogue is remarkable. We have the conversation between Raju and the villager Velan who takes him for a holy man, who has come to inhabit the deserted temple. However, Narayan is not averse, to direct characterization, that is to say, presenting a character sketch either in the author's words or through the words of other characters. Narayan's realism is selective. Narayan keeps very close to surface reality, for his aim is to reveal the tragicomedy implicit in ordinary life. His problem is to give the reader, a picture that strikes him as typical of everyday reality. For this, he depends on selection. He, therefore, excludes from his pictures such aspects of reality as are not susceptible to comic treatment. His picture of life is always true to facts, but to those facts only at which a reasonable being can be expected to smile.

R.K Narayan has a perfect knowledge of English. A pure and limpid English is used by Narayan which is easy and natural in its run and tone, but always an evolved and conscious medium, without the exciting, physical energy, sometimes adventitiously injected that marks the writing of the west Indians. Narayan's English in its structure and address is a moderate, traditional instrument but one abstracted from the context in which it was generated, the history, the social condition, the weather, the racial memory and transferred to a wholly different setting, the brutal beat and lowering vultures, flocks of brilliant glittering parrots, jackals rippling over the rubbish dumps, an utter shining clarity of light and the deadly grey of an appalling poverty. It is clear of the palpable suggestiveness, the foggy taste, the complex tang, running through every phase of our own English. Instead, it has a strange degree of translucence. Narayan's language is beautifully adapted to communicate a different way Indian sensibility.

नारायण भारतीय लेखकों में सबसे अधिक कलात्मक सृजनकर्ता हैं। उनका एक ही उद्देश्य है—सौन्दर्यात्मक सन्तुष्टि देना तथा अपनी कला को प्रचार के माध्यम अथवा किसी सामाजिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रयोग नहीं करना। वह एक विशुद्ध और सरल लेखक हैं जिन्हें बिना किसी आडम्बर के जिहादी विद्वान् अथवा आदर्शवादी मिशनरी के रूप में जाना जाए।

नारायण स्वयं टिप्पणी करते हैं—“अच्छे लेखन की महत्त्वपूर्ण विशेषता सुपाद्यता है।”

अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'Swami And Friends' से उन्होंने एक उपन्यासकार के रूप में अपने कैरियर की शुरुआत की। इसे बहुत लोकप्रियता मिली। R.K. Narayan ने अपने पहले ही प्रकाशन से मान्यता तथा स्वीकार्यता प्राप्त की।

नारायण के उपन्यास और कहानियाँ हास्य से भरपूर हैं जो सभी प्रकार के विद्वेष, क्रोध और कटुता से मुक्त हैं। उनका हास्य पूर्ण रूप से व्यापक और विचित्र है। हम सभी प्रकार के हास्य के सम्पर्क में आते हैं—परिस्थितिजन्य हास्य, चरित्र-चित्रण का हास्य तथा विडम्बनात्मक समझ के साथ हास्य। 'The Financial Expert' में मर्गेय्या एक विनोदी पात्र है।

व्यक्तित्व और अस्तित्व की बहुविध विरोधाभासी प्रकृति को प्रकट करके नारायण का उपन्यास आगे बढ़ता है। हम भिन्न दृष्टिकोणों से एक जैसे ही लोगों को देखते हैं, इसलिए हम उनमें अन्तर, विरोधाभास, अस्तित्व की सह-अस्तित्व वाली पतें देखते हैं। इन पहचानों में से कोई भी कठोर रूढ़िवादी तरीके से सच्चा नहीं है क्योंकि सभी समान रूप से सच्चे और समान रूप से भ्रान्तिकारी हैं। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि नारायण की चरित्र-चित्रण की कला सुन्दर और उल्लेखनीय है। उसके सभी पात्र यथार्थवादी और जीवन्त हैं। राजू, नटराज, मि० सम्पत और मर्गेय्या की विश्व प्रसिद्ध महान् उपन्यासकारों के नायकों के साथ भी तुलना की जा सकती है। उन्होंने पात्रों की शानदार चित्रशाला का चित्रण किया है। यह भी कहा जाता है कि नारायण के पात्र मनोवैज्ञानिक निरूपण पर आधारित हैं और उनके सभी पात्र यथार्थवादी और जीवन्त हैं।

नारायण पात्रों के लेखक के रूप में जाने जाते हैं। नारायण स्वयं दक्षिण भारत के निवासी थे। इसलिए वह अपने पात्रों की आदतों, रुचियों, पसन्द, नापसन्द, अच्छाइयों, कमजोरियों इत्यादि को पहचान सकते हैं। उनका परिवार धनी या निर्धन नहीं था, अर्थात् वह मध्यमवर्गीय परिवार के थे। उनका पटल सीमित है और कभी भी उसमें ज्यादा पात्र नहीं होते। इसलिए वह मध्यमवर्गीय परिवार से अपने पात्रों को चुनते हैं। नारायण पात्रों के अपने दृष्टिकोण के अंदर ही सीमित रहते हैं।

नारायण द्वारा चित्रित पात्रों का निर्णय उनके बोलने और करने के प्रसंग से किया जाता है। संवाद में नारायण का अधिकार उल्लेखनीय है। हम राजू और ग्रामीण विलेन के बीच बातचीत देखते हैं जो उसे एक साधु समझ लेता है जो उस वीरान मन्दिर को बसाने आया है। तो भी, नारायण सीधे चरित्र-चित्रण के विरुद्ध नहीं हैं, अर्थात् या तो लेखक के शब्दों में या दूसरे पात्रों के शब्दों के जरिए प्रस्तुत करना।

नारायण का यथार्थवाद चयनित है। वह सतही वास्तविकता के बहुत करीब होते हैं क्योंकि उनका उद्देश्य साधारण जीवन में अन्तर्निहित त्रासदी-कॉमेडी को सामने लाना है। उनकी समस्या पाठक को ऐसी तस्वीर देने की है जो उस पर प्रतिदिन की वास्तविकता के विशिष्ट रूप में, चोट करती है। इसके लिए वह चुनाव पर निर्भर रहते हैं। इसलिए वह वास्तविकता के ऐसे पहलुओं को अपनी तस्वीरों से निकाल देते हैं जो विनोदी निरूपण के लिए संवेदी नहीं हैं। उनकी जीवन की तस्वीर हमेशा तथ्यों के प्रति सच्ची रहती है लेकिन केवल उन तथ्यों की ओर जिसमें एक विवेकशील प्राणी से मुस्काने की आशा की जा सकती है।

R.K. Narayan अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान रखते हैं। नारायण एक विशुद्ध और साफ-सुथरी अंग्रेजी का प्रयोग करते हैं जो अपने प्रवाह तथा लहजे में सरल और स्वाभाविक है, लेकिन जो हमेशा एक विकसित और चेतनायुक्त माध्यम रही है, शारीरिक ऊर्जा के बिना उत्तेजित किए जो कभी-कभी आकस्मिक रूप से समाहित होकर पाश्चात्य भारतीयों के लेखन को चिन्हित करती है। नारायण की अंग्रेजी अपनी संरचना तथा सम्बोधन में एक नरम पारम्परिक साधन है बल्कि सन्दर्भ से अलग एक सारांश है जिसमें यह उत्पन्न हुआ था, इतिहास, सामाजिक स्थिति, मौसम, जातीय-स्मृति और पूरी तरह भिन्न सैटिंग की ओर स्थानान्तरित हुआ, पाशविक आघात और प्यारे गिद्ध, शानदार चमक-दमक वाले तोतों के समूह, कूड़े-करकट के ढेरों पर धमा-चौकड़ी करते सियार, प्रकाश की पूर्ण चमकीली स्पष्टता और घोर-गरीबी का भयानक उदास चेहरा। यह सुस्पष्ट सांकेतिकता, अस्पष्ट रुचि, जटिल गन्ध जो हमारी अंग्रेजी के प्रत्येक चरण में से गुजर रही है, इनसे बेदाग है। अलावा इसके, इसमें पारभासिकता का स्तर अजीब है। एक भिन्न भारतीय संवेदनशीलता को सम्प्रेषित करने के लिए नारायण की भाषा सुन्दरतापूर्वक अनुकूलित है।

Q.19. Throw light on various aspects of Mulk Raj Anand's life.

मुल्कराज आनन्द के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालिए।

Ans. Mulk Raj Anand was born on 12 December 1905 in Peshawar. He was an Indian writer in English. He was known for his description of the lives of the lower castes and poorer castes in Indian society. Anand was one of the pioneers of Indo-Anglian fiction. He graduated with honors from Khalsa College, Amritsar in 1924. Anand belonged to an ordinary Hindu family which financially and very well off. The first break in Anand's life came when he received a scholarship to do research in philosophy in London in 1925, just after his graduation. He went to England and studied at University College London and Cambridge University. He completed

his Ph.D. in 1929. Mulk Raj Anand also studied and later lectured at League of Nations School of Intellectual Cooperation in Geneva. Between 1932 and 1945 he lectured occasionally at Workers Educational Association in London. In the 1930s and 1940s Mulk Raj Anand spent his time in London and India. He joined the struggle for independence, but also fought with the Republicans in the Spanish Civil War. After the War, Anand returned permanently to India and settled in Bombay.

Anand's first novel 'Untouchable' was rejected by as many as nineteen publishers of England. At last it was published by an English firm in 1935. Then came four other novels from his pen in quick succession. These were *Coolie* (1936), *Two Leaves and a Bud* (1937), *The Village* (1939) and *Across the Black Waters* (1940). During this period Anand also participated in certain political movements.

In 1939, Anand married Kathleen Gelder, an actress, in London, after his affair with Miss Irene (the daughter of a professor of his) had come to nothing. However, just ten years later, in 1948, he divorced Kathleen. During these years Anand had continued his literary writing. In 1939-42 he wrote a trilogy. The first two novels of this trilogy were '*The Village*' and '*Across the Black Waters*' and had been published in 1939 and 1940 respectively while the third, *The Sword and the Sickle*, appeared in 1942. He also published in 1944 a collection of short stories entitled '*The Barber's Trade Union and Other Stories*'. In 1945, came '*The Big Heart*' and '*Seven Summers*' in 1951.

And just after that, he was awarded the International Peace Prize of the World Peace Council for promoting peace among the nations through his literary works in 1952. In the same year he also visited China as a member of an Indian delegation.

At the age of 99, Mulk Raj Anand died on 28 September 2004.

मुल्कराज आनन्द का जन्म 12 दिसम्बर 1905 को पेशावर में हुआ था। वे एक भारतीय-अंग्रेजी लेखक थे। वे निम्न एवं गरीब श्रेणी के जीवन विवेचन लेखन के लिए जाने जाते हैं। आनन्द भारतीय-अंग्रेजी उपन्यास लेखन में अग्रणी थे। उन्होंने खालसा कॉलेज, अमृतसर से 1924 में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। आनन्द एक साधारण हिन्दू परिवार से सम्बन्धित थे जो आर्थिक रूप से अधिक सम्पन्न नहीं था। अपनी स्नातक की पढ़ाई के बाद आनन्द ने स्कॉलरशिप प्राप्त की जिसके द्वारा वे 1925 में दर्शनशास्त्र में शोध करने के लिए लन्दन गए और यूनिवर्सिटी कॉलेज लन्दन और कैंब्रिज विश्वविद्यालय में अध्ययन किया। उन्होंने अपनी पी-एच०डी० 1929 में पूर्ण की।

इसके बाद मुल्कराज आनन्द ने जेनेवा स्थित League of Nations School of Intellectual Cooperation में अध्ययन और तत्पश्चात् अध्यापन कार्य किया। वर्ष 1932 से 1945 के मध्य उन्होंने Workers Educational Association, लन्दन में व्याख्यान दिए। 1930 व 1940 के दशकों में उनका समय लन्दन और भारत दोनों देशों में व्यतीत हुआ। उन्होंने भारत की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष किया और स्पेन के गृहयुद्ध के दौरान रिपब्लिकनों का साथ दिया। वहाँ के गृहयुद्ध के बाद आनन्द स्थायी रूप से भारत लौट आए और बम्बई में जाकर बस गए।

आनन्द का प्रथम उपन्यास 'Untouchable' इंग्लैण्ड के उन्नीस प्रकाशकों ने अस्वीकार कर दिया। आखिरकार इसे एक अंग्रेजी कंपनी ने 1935 में प्रकाशित किया। इसके बाद आनन्द की कलम से चार उपन्यास आये जो थे—*Coolie* (1936), *Two Leaves and a Bud* (1937), *The Village* (1939) और *Across the Black Waters* (1940)। इसी समयावधि में आनन्द ने कुछ राजनीतिक आन्दोलनों में भी भाग लिया।

1939 में आनन्द ने कैथलीन गेल्डर जो कि लन्दन की एक अभिनेत्री थी, से विवाह कर लिया किन्तु दस वर्ष पश्चात् 1948 में उनका तलाक हो गया। उनका Miss Irene (उनके प्रोफेसर की पुत्री) नाम की महिला से भी प्रेम सम्बन्ध रहे। आनन्द ने अपना साहित्यिक लेखन जारी रखा और 1939 से 1942 तक एक त्रयी (trilogy) की रचना की। प्रथम दो

उपन्यास इस trilogy के थे—‘The Village’ एवं ‘Across the Black Waters’ 1939 जो 1940 में प्रकाशित हुए तथा तीसरा, ‘The Sword and the Sickle’ जो कि 1942 में लिखा गया था। 1944 में उनका एक कहानियों का संग्रह भी प्रकाशित हुआ जिसका शीर्षक है—‘The Barber’s Trade Union and Other Stories’। वर्ष 1945 में ‘The Big Heart’ प्रकाशित हुआ और 1951 में ‘Seven Summers’। उसके तुरन्त बाद वर्ष 1952 में मुल्कराज आनन्द को World Peace Council का International Peace Prize मिला जो उनके साहित्यिक क्रियाकलापों के लिए दिया गया था जिसके द्वारा उन्होंने राष्ट्रों के मध्य शान्ति का सन्देश फैलाया था। उसी वर्ष भारतीय प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य के रूप में उन्होंने चीन की यात्रा भी की।

निन्यानवे वर्ष की परिपक्व आयु में मुल्कराज आनन्द का देहावसान 28 सितम्बर 2004 को हो गया।

Q.20. Write a note on Mulk Raj Anand and his literary contribution.

मुल्कराज आनन्द के जीवन और उनके साहित्यिक योगदान पर टिप्पणी लिखिए।

Ans. Mulk Raj Anand (12 December 1905-28 September 2004) was an Indian writer in English, notable for his portrayal of the lives of the poor castes in traditional Indian society. One of the pioneers of Anglo-Indian fiction, he, along with R.K. Narayan, Ahmed Ali and Raja Rao, was one of the first India based English writer to achieve international readership. Anand is praised for his novels and short stories, which have achieved the status of classics of modern Indian English literature. He is known for his perceptive insight into the lives of the oppressed and his analysis of poverty, exploitation and misfortune. He became known for his protest novel ‘Untouchable’ (1935), followed by other works on the Indian poor, such as ‘Coolie’ (1936) and ‘Two Leaves and a Bud’ (1937). He is also known for being one of the first writers to incorporate Punjabi and Hindustani idioms into English, and was the recipient of the civilian honour of Padma Bhushan.

Born in Peshawar, Anand attended Khalsa College in Amritsar and graduated with honours in 1924 before moving to England. Working in a restaurant to support himself, he attended University College London as an undergraduate and later studied at the University of Cambridge, earning a Ph.D in philosophy in 1929 with a dissertation on Bertrand Russell and English Empiricists has received the title of Ph.D. During this time he befriended members of the Bloomsbury Group. He was also in Geneva and delivered lectures in the International Committee of the League of Nations of Intellectual Cooperation.

Anand married English actress and communist Kathleen van Gelder in 1938; They had a daughter, Sushila, before getting divorced in 1948.

The literary career of Mulk Raj Anand began with a family tragedy created by the rigidity of India’s caste system. Her first prose essay was a reaction to the suicide of an aunt ostracized by her family for sharing a meal with a Muslim woman. His first novel, Untouchable, published in 1935, is a chilling revelation of the life of the untouchable caste of India. The novel follows one day in the life of the toilet-cleaner Bakha, who accidentally collides with a member of an upper caste, triggering a series of humiliations. While talking with a Christian missionary, listening to a speech by Mahatma Gandhi about untouchability and a conversation between two educated Indians, Bakha searches for a rescue for the tragedy of that fate, but by the end of the book Anand becomes suggestive. That it is technology, in the form of the newly introduced flush toilet, that could be the saviour by eliminating the caste need for toilet cleaners.

The Untouchable, which captures the local inventiveness of Punjabi and Hindi idioms in English, was widely acclaimed and Anand won his reputation as the Charles Dickens of India.

The introduction to the novel was written by his friend E.M. Forster, from whom he had written T.S. Eliot's magazine Criterion.

Anand was active in the Indian independence movement. While in London, he tried to make a living as a novelist and journalist, India's future Defense Minister V.K. wrote propaganda on behalf of the Indian cause with Krishna Menon. At the same time, he supported leftist causes elsewhere around the world, travelling to Spain to volunteer in the Spanish Civil War, although his role in the conflict was more journalistic than military. He spent his time during World War II, working as a screenwriter for the BBC in London, where he became friend with George Orwell. Orwell's review of Anand's 1942 novel *The Sword and the Sickle* hints at the importance of its publication : "Although Mr. Anand's novel would still be interesting on its own merits if it had been written by an Englishman, it would have been remembered. It is impossible to read it without remembering it." In a few pages it is also a cultural curiosity. Indian literature is a strange phenomenon, and its impact on the post-war world will make an impact. He was also a friend of Picasso and in his camera collection there were pictures of Picasso.

मुल्कराज आनंद (12 दिसम्बर 1905-28 सितम्बर 2004) अंग्रेजी में एक भारतीय लेखक थे, जो पारंपरिक भारतीय समाज में गरीब जातियों के जीवन के चित्रण के लिए उल्लेखनीय थे। एंग्लो-इंडियन फिक्शन के अग्रदूतों में से एक, वह, आर०के० नारायण, अहमद अली और राजा राव के साथ, अंतर्राष्ट्रीय पाठक संख्या हासिल करने वाले अंग्रेजी के पहले भारत आधारित लेखकों में से एक थे। आनंद को उनके उपन्यासों और लघु कथाओं के लिए सराहा जाता है, जिन्होंने आधुनिक भारतीय अंग्रेजी साहित्य के क्लासिक्स का दर्जा हासिल कर लिया है। वे उत्पीड़ितों के जीवन में अपनी बोधगम्य अंतर्दृष्टि और दरिद्रता, शोषण और दुर्भाग्य के विश्लेषण के लिए जाने जाते हैं। वह अपने विरोध उपन्यास "Untouchable" (1935) के लिए जाने गए, इसके बाद, उन्हें भारतीय गरीबों पर अन्य कार्यों जैसे "कुली" (1936) और "टू लीक्स एंड ए बड" (1937) के लिए जाना गया। उन्हें पंजाबी और हिन्दुस्तानी मुहावरों को अंग्रेजी में शामिल करने वाले पहले लेखकों में से एक होने के लिए भी जाना जाता है, और वे पद्म भूषण के नागरिक सम्मान के प्राप्तकर्ता थे। पेशावर में जन्मे आनंद ने अमृतसर के खालसा कॉलेज में पढ़ाई की और इंग्लैंड जाने से पहले 1924 में सम्मान के साथ स्नातक किया। खुद को सहारा देने के लिए एक रेस्तरा में काम करते हुए, उन्होंने यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन में एक स्नातक के रूप में पढ़ाई की और बाद में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में अध्ययन किया, 1929 में बर्टेंड रसेल और अंग्रेजी अनुभववादियों पर एक शोध प्रबंध के साथ दर्शनशास्त्र में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। इस दौरान उन्होंने ब्लूम्सबरी ग्रुप के सदस्यों के साथ दोस्ती की। उन्होंने जिनेवा में देने मे, बौद्धिक सहयोग पर राष्ट्र संघ की अंतर्राष्ट्रीय समिति में व्याख्यान दिया।

आनंद ने 1938 में अंग्रेजी अभिनेत्री और कम्युनिस्ट कैथलीन वैन गेल्डर से शादी की; 1948 में तलाक लेने से पहले उनकी एक बेटी सुशीला थी।

मुल्कराज आनंद का साहित्यिक जीवन भारत की जाति व्यवस्था की कठोरता से उत्पन्न एक पारिवारिक त्रासदी से शुरू हुआ था। उनका पहला गद्य निबंध एक मुस्लिम महिला के साथ भोजन साझा करने के लिए अपने परिवार द्वारा बहिष्कृत एक चाची की आत्महत्या की प्रतिक्रिया थी। उनका पहला उपन्यास, "The Untouchable", 1935 में प्रकाशित हुआ, भारत की अस्पृश्य जाति के जीवन का यह एक द्रुतशीतन खुलासा है। उपन्यास शौचालय-क्लीनर बाखा के जीवन के एक दिन का अनुसरण करता है, जो गलती से एक उच्च जाति के सदस्य से टकरा जाता है, जिससे अपमान की एक शृंखला शुरू हो जाती है। एक ईसाई मिशनरी के साथ बात करते हुए, महात्मा गाँधी द्वारा अस्पृश्यता के बारे में एक भाषण और दो शिक्षित भारतीयों के बीच बातचीत को सुनकर, बाखा उस भाग्य की त्रासदी से बचाव की खोज करता है, लेकिन पुस्तक के अंत तक आनंद का सुझाव है कि यह तकनीक है, नए पेश किए गए फ्लश शौचालय के रूप में, जो शौचालय-क्लीनर की आवश्यकता को समाप्त करके उसका उद्धारकर्ता हो सकता है।

Untouchable, जो अंग्रेजी में पंजाबी और हिन्दी मुहावरों की स्थानीय आविष्कारशीलता को पकड़ता है, व्यापक रूप से प्रशंसित था, और आनंद ने भारत के चार्ल्स डिकेंस के रूप में अपनी प्रतिष्ठा पाई। उपन्यास का परिचय उनके मित्र ई०एम० फोरस्टर द्वारा लिखा गया था, जिनसे वे टी०एस० एलियट की पत्रिका *criticon* पर काम करते हुए मिले थे।

आनंद भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय थे। लंदन में रहते हुए, उन्होंने एक उपन्यासकार और पत्रकार के रूप में जीवनयापन करने की कोशिश करते हुए, भारत के भविष्य के रक्षा मंत्री वी०के० कृष्ण मेनन के साथ भारतीय सन्दर्भ की ओर से प्रचार लिखा। उसी समय, उन्होंने दुनियाभर में कहीं और वामपंथी कारणों का समर्थन किया, स्पेन के गृहयुद्ध में स्वयंसेवक के रूप में स्पेन की यात्रा की, हालांकि संघर्ष में उनकी भूमिका सेना की तुलना में अधिक पत्रकारिता थी। उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान लंदन में बीबीसी के लिए एक पटकथा लेखक के रूप में काम करते हुए समय बिताया, जहाँ वे जॉर्ज ऑरवेल के मित्र बन गए। आनंद के 1942 के उपन्यास 'द स्वॉर्ड एंड द सिकल' की ऑरवेल द्वारा की गयी समीक्षा इसके प्रकाशन के महत्त्व पर संकेत देती है—

“हालांकि श्री आनंद का उपन्यास अभी भी अपने गुणों के आधार पर दिलचस्प होगा यदि इसे एक अंग्रेज ने लिखा होता, तो इसे याद किए बिना पढ़ना असंभव है।” कुछ पन्नों में यह एक सांस्कृतिक जिज्ञासा भी है। एक अंग्रेजी भाषा के भारतीय साहित्य का विकास एक अजीब घटना है, और युद्ध के बाद की दुनिया पर इसका प्रभाव पड़ेगा। वे पिकासो के मित्र भी थे उनके व्यक्तिगत कला संग्रह में पिकासो के चित्र थे।

Q.21. The poetic works of Sarojini Naidu was predominant by the theme of love.

Discuss.

सरोजिनी नायडू की काव्यात्मक रचनाओं में प्रेम के विचार की प्रधानता थी। विवेचना कीजिए।

Ans. Sarojini's work has predominance of the theme of love. It is her major theme and love lyrics form an important segment of her corpus. They are also larger in number than her poems on other themes. Out of 184 poems of hers, 66 are love lyrics. Thus more than one-third of the total poems are devoted to a lyrical presentation of love and its aftermath or consequence. Some of Sarojini's most popular and stimulating love lyrics are 'Ecstasy', 'Song of Radha : 'The Milk Maid', 'A Persian Love Song', 'Devotion', 'Humayun to Zobeida', etc. Her best love poems are contained in 'The Peacock Lute'. A critic says about her creation thus: "I know of no poetical sequence in English of such sustained passion, as of Sarojini, addressed by a woman to a man."

Sarojini Naidu is the main poetess of this genre in twentieth century. She was a versatile and dynamic genius. She composed sweet and melodious songs which are superb in the entire range of Indian English poetry. Her poems show a colourful album of Indianness.

In English, Sarojini has achieved a great fame in twentieth century. In political arena as well, she gained grand fame. She had consistently built a reputation as an anatomist of love-sick psyche. One can feel the bliss and ecstasy of love in her poem :

"Come mine eyes, O my love!

Mine eyes that are weary of bliss."

Sarojini love lyrics are direct, sensuous and romantic. Her influence is seen in many further creations in the field of Indo-Anglian writing. Her poetic talent is seen in many of her poems which have intensity of the love experience. As a poet Sarojini Naidu is sensuous, romantic and lyrical. In her selfless love for nature, in her response to sensations of many kinds, in her glow of imagination and emotion Sarojini is a true Romantic. She delights in romantic picture of life, be it love, Nature or the scenes of common life in India. Sarojini is a singing bird belonging to the flock of Elizabethan poets. In the very beginning of her poetical career Sarojini found a place in the international circle as a English composer of love lyrics. Edmund

Gosse and Arthur Symons sponsored her. But it is as an Indo-Anglian poet that she will be remembered. She built a popular image of English poetry written by Indians. Music is the soul of her poetry. The desire for beauty made her a poetess and there is beauty in her verse. Her poems are drenched in Indian myths and legends full of love and hilarity.

अपनी काव्यात्मक कृतियों में सरोजिनी ने प्रेम के प्रसंग को प्रधानता से अपनाया है। यह उनकी कविताओं का प्रमुख कथानक होता है और प्रेम के गीत उनकी कविताओं के ढाँचे को तैयार करते हैं। अन्य प्रकार की कविताओं के सापेक्ष इस प्रकार की कविताओं की संख्या भी सर्वाधिक है। सरोजिनी की एक सौ चौरासी कविताओं में से छियासठ कविताएँ प्रेम सम्बन्धी कथानक पर आधारित हैं। इस प्रकार कुल कविताओं में से एक-तिहाई प्रेम तत्त्व को दर्शाने के लिए समर्पित की गयी हैं जिनमें प्रेम और उनसे उपजे परिणाम को बताया गया है। सरोजिनी के कुछ सर्वाधिक प्रसिद्ध और प्रफुल्लित करने वाले प्रेमगीतों में 'Ecstasy', 'Song of Radha : The Milk Maid', 'A Persian Love Song', 'Devotion', 'Humayun to Zobeida' आदि सम्मिलित हैं। 'The Peacock Lute' में उनके सर्वाधिक स्फूर्त प्रेमगीतों को संकलित किया गया है। उनके सृजन के सम्बन्ध में एक समीक्षक ने इस प्रकार समीक्षा की है—“मैं किसी अन्य क्रमागत कविताओं की आवली में अंग्रेजी में नहीं जानता जिसमें सरोजिनी के समान स्थायी भावातिरेक का उन्मेष होता है। जब कोई नारी किसी पुरुष से प्रणय निवेदन कर रही हो।”

बीसवीं शताब्दी में इस विधा के अन्तर्गत सरोजिनी नायडू प्रमुख कवयित्री रही हैं। वे बहुमुखी प्रतिभा की धनी ऊर्जावान नारी थीं। उन्होंने सुमधुर गानों की रचना की जो भारतीय-आंग्ल के काव्यात्मक क्षेत्र में अपनी विशिष्टता रखते हैं। उनकी कविताओं में भारतीयता को इन्द्रधनुषी रंगों में दर्शाया गया है।

बीसवीं शताब्दी की सभी भारतीय अंग्रेजी कवयित्रियों में सरोजिनी ने सर्वाधिक ख्याति अर्जित की है। राजनीतिक पटल पर भी उन्होंने अपार यश की प्राप्ति की। प्रेम दीवाने मन की संरचना को समझने वाले के रूप में उनको धीरे-धीरे लेकिन क्रमबद्ध रूप में ख्याति प्राप्त होने लगी। उनकी कविताओं में किसी भी पाठक को भाव-विभोर कर देने वाले प्रेम के स्वर्गिक आनन्द की गहन अनुभूति होने लगती है—

"Come mine eyes, O my love!

Mine eyes that are weary of bliss."

सरोजिनी के प्रेमगीत प्रभावोत्पादक, संवेदनशील और कल्पनाशील होते हैं। उनका प्रभाव बाद के भारतीय-आंग्ल साहित्य की कृतियों में स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ता है। उनका काव्य-कौशल उनकी अनेक कविताओं में झलकता है जो उनके स्वयं द्वारा अनुभूत प्रेमाख्यानों से समृद्ध हुआ है। एक कवि के रूप में सरोजिनी नायडू संवेदनशील, रोमांटिक व गीतात्मक हैं। प्रकृति के प्रति अपने निष्कपट प्रेम, विभिन्न प्रकार की भावनाओं, कल्पना की चकाचौंध व मनोभावों के आधार पर सरोजिनी वास्तविक अर्थ में एक रोमांटिक कवयित्री हैं। वह जीवन के रोमानी स्वरूप में आह्लादित हो जाती हैं, चाहे वो प्रेम तत्व हो, प्रकृति की निराली छटा हो या फिर भारत का सामान्य जनजीवन हो। सरोजिनी एक गाती हुई चिड़िया हैं जो ऐलिजाबेथ कवियों की मण्डली से सम्बन्ध रखती हैं। राजनीति में प्रवेश के प्रारम्भिक दौर में ही सरोजिनी प्रेमगीतों की कवयित्री के रूप में स्वयं को अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर स्थापित कर चुकी थीं। एडमण्ड गोसे और आर्थर साइमंस ने उनको आगे बढ़ने में सहायता की। लेकिन उन्हें भारतीय-आंग्ल कवि के रूप में विशेष रूप से स्मरण किया जाएगा। भारतीयों द्वारा रचित अंग्रेजी काव्यधारा की वे प्रमुख हस्ताक्षर बन गयीं। संगीत उनके काव्य का प्रधान पक्ष है। सुषमा का उपासक होने के कारण वह कवयित्री के ढाँचे में ढल गयीं। उनकी कविता की पंक्तियों में सुन्दरता झलकती है। उनकी कविता के कथानक भारतीय कल्पित कथाओं व पौराणिक आख्यानों को दर्शाते हैं जो प्रेम व प्रफुल्लता से परिपूर्ण होते हैं।

Q.22. Explain about of mastery of Kamala Markandaya over English language.

कमला मार्कण्डेय का अंग्रेजी भाषा पर पूरा प्रभुत्व होने का विवरण कीजिए।

Ans. Kamala Markandaya as a novelist undoubtedly has a mastery over English language. She writes like an English novelist because he has good affiliations with England. Her remarkable handling of the English language has won her critical applause.

Her another most striking features as a woman novelist is her portrayal of women in relation to the historical, cultural, political and sociological environment of a changing India. Woman characters prominently figure in her novels. The woman consciousness being central to her fiction, is but natural that woman characters should loom large in novel after novel. Kamala Markandaya is alienated from the Indo-Anglian tradition. She tries to write like an English writer. Her use of the English language differentiates and alienates her from other Indo-Anglian writers. Like other Indo-Anglian novelists, she uses the English language and yet her language is not contaminated of 'Indianism'. The vision that she enshrines in her novels through the English language is typically Indian but the medium is English.

The 'Times Literary Supplement' writes that "Miss Markandaya writes with a fresh and precise understanding of our language which lends her everyday events a beauty and significance not easily forgotten". The significant critical observation stands justified by the singular prose of 'Nectar in a Sieve' in which the novelist has described Indian life of rural areas with a variety of characters. Kamala Markandaya describes rustic life with faithful realism. This shows her mastery over the English language. The language in 'Nectar in a Sieve' is characterized by fluidity, smoothness and the purity of running water.

Because of her strong grip on story element, she get success in making her novels enjoyable. Though they are simple novels, there is something to engage the attention of reader. 'Nectar in a Sieve' is very readable not only in terms of its theme but also in terms of the story from which the theme is to be wrenched. The narrative of the novel is gripping which shows the novelist's mastery over English language. She has full command over the language in which she writes her novel. Her language has richness of colour and texture which lends a poetic touch to her description. Her language is very readable and full of ease and smoothness. But as an Indian writer in English her language seems to be artificial. In the mouth of her rural characters the use of king's English, is a product of public schools, looks unrealistic and artificial. Hence, it may be said that she has a mastery over English language.

उपन्यासकार के रूप में कमला मार्कण्डेय ने अंग्रेजी भाषा पर पूरा प्रभुत्व प्राप्त किया है। वह एक अंग्रेज उपन्यासकार की तरह लिखती, इंग्लैण्ड से उनका अच्छा सम्पर्क रहा है। अंग्रेजी भाषा पर उनका विशेष अधिकार होने के कारण समीक्षकों ने भी उनकी प्रशंसा की है।

एक स्त्री उपन्यासकार के रूप में कमला मार्कण्डेय का एक आकर्षक गुण है। ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक व सामाजिक रूप से बदलते हुए भारत के साथ स्त्री पात्रों को चित्रित करना। स्त्री पात्रों को बहुसंख्यक रूप में उनके उपन्यासों में देखा जा सकता है। उनके कथासाहित्य में स्त्री चेतना, केन्द्रीय रूप से विद्यमान रहती है लेकिन ऐसा किया जाना सर्वथा स्वाभाविक होता है जो उनके उपन्यासों में लगातार दिखायी देता है। कमला मार्कण्डेय भारतीय-आंग्ल परम्परा से पृथक हो जाती हैं, वह एक अंग्रेज लेखक के रूप में लिखना चाहती हैं। उनकी अंग्रेजी उन्हें अंग्रेजी के अन्य भारतीय लेखकों से पृथक कर देती है। अन्य भारतीय लेखकों के समान ही वह अंग्रेजी भाषा का प्रयोग साहित्य में करती हैं तथापि उनकी अंग्रेजी 'भारतीयता' से दूषित नहीं होती है। अपने उपन्यासों में जो चित्रावली वह अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत करती हैं वह विशिष्ट भारतीयता का द्योतक होता है लेकिन माध्यम की भाषा अंग्रेजी ही होती है।

पत्रिका 'Times Literary Supplement' में मार्कण्डेय को इस प्रकार उद्धृत किया गया है—“मिस मार्कण्डेय अभिनव रूप में सुस्पष्टता के साथ हमारी भाषा को समझते हुए लेखनकार्य करती हैं जिसके कारण दिन-प्रतिदिन के घटनाक्रम उनके लेखन में सुन्दर व महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं जिन्हें सरलता से भुलाया नहीं जा सकता है।” यह समीक्षा पूरी तरह से सत्य सिद्ध हो जाती है जब हम 'Nectar in a Sieve' की विशिष्ट गद्य शैली को देखते हैं जिसमें उपन्यासकार ने ग्रामीण क्षेत्रों के भारतीय जनजीवन को नानाविध पात्रों का समायोजन कर दर्शाया है। कमला मार्कण्डेय ने पूरी सदाशयता के

साथ ग्रामीण जीवन की झलक यथार्थ रूप में दिखायी है। इस स्वरूप में हम अंग्रेजी के उनके कौशल से परिचित हो जाते हैं। उपन्यास 'Nectar in a Sieve' का चित्रण भाषा की वाक्पटुता, मृदुलता और बहते हुए नीर की शुद्धता के साथ किया गया है।

कहानी तत्त्व पर पूरी पकड़ होने की वजह से वह उपन्यासों को मनोरंजक बनाने में सफल होती थीं। यद्यपि ये सामान्य घटनाक्रम की विषयवस्तु पर आधारित होते हैं तथापि उनमें कुछ ऐसा रहता है जो पाठक को सहज रूप से ही आकर्षित कर लेता है। 'Nectar in a Sieve' न केवल विषयवस्तु के परिप्रेक्ष्य में पठनीय है अपितु कहानी भी उल्लेखनीय है जहाँ से प्रतिपाद्य विषय में परिवर्तन लक्षित होता है। उपन्यास का आख्यान मन्त्रमुग्ध करने वाला है जो उपन्यासकार की अंग्रेजी भाषा पर नियन्त्रण को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। अपने उपन्यास को वह जिस भाषा में लिखती हैं उसको वह पूरी दक्षता के साथ समझती हैं। उनकी भाषा, स्वरूप में बहुआयामी संरचना से समृद्ध होती है जिस कारण उनका विवरण काव्यात्मक स्पर्श की अनुभूति कराने लगता है। इनकी भाषा अत्यधिक पठनीय व ग्राह्य होती है। यह सरलता व स्पष्टता से सम्पन्न है। लेकिन अंग्रेजी में एक भारतीय लेखिका के रूप में उनकी भाषा कृत्रिमता का स्पर्श करने लगती है। उनके ग्रामीण पात्रों के मुख से इंग्लैण्ड के स्कूलों की विशिष्ट अंग्रेजी शैली को सुनकर अवास्तविकता व कृत्रिमता का बोध होने लगता है। अतः यह कहा जा सकता है कि मार्कण्डेय का अंग्रेजी भाषा पर पूरा प्रभुत्व है।

Q.23. Give the features of Kamala Markandaya's writings.

कमला मार्कण्डेय के लेखन की विशेषताएँ बताइए।

Or Throw light upon the salient characteristics of Markandaya's writings.

मार्कण्डेय के लेखन की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

Ans. Kamala Markandaya (1924-2004) was brought up in South India, but her works do not confine to provincial characters and themes. Kamala's writing explores a multitude of issues and the choices of themes exhibit her potential to approach the subject with appreciable maturity and good organisation. Her works are a realistic delineation of the double pulls that the Indian woman is subjected to, between her desire to assert herself as an individual and her duty in the capacity of a daughter, wife and mother. She also points out how the socio-economic conditions affect the women most. 'Nectar in a Sieve' (1954) is her first novel, which delineates the tragic outcomes of penury, natural calamities and intruding modernization with its horrendous aftermaths. It is a well constructed novel on the classical mode on the theme of hunger and starvation. 'Some Inner Fury' (1955) and 'Possession' (1963) 'The Golden Honeycomb' (1977) are her popular novels, wherein she gives a clear and economical account of the life style of the peasants, the middle classes and the aristocracy and also focuses on the conflicting East-West relations. Kamala's ability to depict her social observations comes to the force in 'A Handful of Rice' (1966). In 'Pleasure City' (1982), Kamala concentrates on the intrusion of modernity in a traditional world and its consequences. The routine life of the fisher folk with its simplicity and awareness of the complexity of unknown dangers in the sea and the like are portrayed vividly by Kamala. The characterization in the novel is a testimony to Kamala's caliber to each characters realistically and humorously.

कमला मार्कण्डेय (1924-2004) का पालन-पोषण दक्षिण में हुआ, लेकिन उनकी रचनाएँ प्रांतीय पात्रों और विषयों तक सीमित नहीं हैं। कमला का लेखन कई मुद्दों की पड़ताल करता है और विषयों के विकल्प प्रशंसनीय परिपक्वता और अच्छे संगठन के साथ विषय तक पहुँचने की उनकी क्षमता को प्रदर्शित करता है। एक व्यक्ति के रूप में खुद को मुखर करने की उनकी इच्छा और एक बेटी, पत्नी और माँ के रूप में उनके कर्तव्य के बीच, उनकी कृतियाँ भारतीय महिलाओं के दोहरे खिंचाव का एक यथार्थवादी चित्रण है। वह यह भी बताती है कि सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ महिलाओं को सबसे अधिक प्रभावित करती हैं।

‘नेक्टर इन द सीव’ (1954) उनका पहला उपन्यास है, जो गरीबी, प्राकृतिक आपदाओं और इसके भयावह परिणामों के साथ घुसपैठ के आधुनिकीकरण के दुखद परिणामों को चित्रित करता है। यह भूख और भुखमरी के विषय पर शास्त्रीय विधा पर एक अच्छी तरह से निर्मित उपन्यास है। ‘सम इनर फ्यूरी’ (1955), ‘पजेशन’ (1963) और ‘द गोल्डन हनीकॉम्ब’ (1977) उनके लोकप्रिय उपन्यास हैं, जिसमें वह किसानों, मध्यम वर्गों और अभिजात वर्ग की जीवन-शैली का एक स्पष्ट आर्थिक लेखा-जोखा और परस्पर विरोधी पूर्व-पश्चिम संबंधों पर भी ध्यान केंद्रित करती है। कमला की सामाजिक टिप्पणियों को चित्रित करने की क्षमता ‘ए हैंडफुल ऑफ राइस’ (1966) में बलवती है। ‘प्लेजर सिटी’ (1982) में, कमला एक पारंपरिक दुनिया में आधुनिकता की घुसपैठ और उसके परिणामों पर ध्यान केंद्रित करती है। मछुआरे के नियमित जीवन की सादगी और समुद्र में अज्ञात खतरों की जटिलता के बारे में जागरूकता और इस तरह के अन्य लोगों को कमला द्वारा स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया है। उपन्यास में चरित्र-चित्रण वास्तविक और विनोदी रूप से पात्रों को उकेरने की कमला की क्षमता का प्रमाण है।

Q.24. What do you know about Nayantara Sahgal's life and her work in literary field?

नयनतारा के जीवन एवं उनके साहित्यिक क्षेत्र के बारे में आप क्या जानते हैं?

Ans. As Nayantara Sahgal, in her childhood days, spent much of her time at Anand Bhavan in Allahabad, so she is the one woman novelist in whose fiction the personal and political elements have been less segregated. It is the ancestral home of the Nehrus. Sahgal is the second of the three daughters of Vijay Lakshmi Pandit (Nehru's sister) and R.S. Pandit (a Sanskrit scholar and lawyer). She studied in missionary schools in India, and Wellesley College, Massachusetts, where she received a B.A. in history. After her return to India in 1947 she stayed for some time with Nehru in Delhi. Her novels reveal a close acquaintance with the political elite. Two years later she married Gautam Sahgal, a businessman, and had three children. The marriage broke up when she met E.N. Mangat Rai, a civil servant. ‘Relationship’ (1994) is a selection of their letters, and reveals something of the pressures brought to bear on a couple floating the middle-class conventions of the time.

Sahgal's novels have a political background or political ambience. She has a very strong emotional as intellectual attachment to her roots. She gave up the struggle to be an atheist. She sees herself both novelist and journalist. This concern with the way power is used in the public sphere is typically combined by Sahgal with an exploration of the fate of women within the domestic sphere. Nayantara Sahgal's novels present the life of the richest sections of Indian society, their hypocrisy and shallow values. At the same time, Sahgal is concerned with the Indian heritage and its value for the educated Indian. Her first novel ‘A Time to Be Happy’ (1958), appeared after two books of autobiography. Sanad, the protagonist and narrator, articulates the problem of identity facing the English educated elite in words that echo Nehru's ‘Autobiography’ (1936): “I do not belong entirely to India. I can't. My education, my upbringing, and my sense of values have all combined to make me unIndian. Of course, there can be no question of my belonging to any other country.”

‘Rich Like Us’ (1985) is set during the emergency, but it also includes a treatment of sati as a trope for the entrapment of women in conventional marriages. The novel won the Sinclair Prize for fiction and the Sahitya Akademi Award Sahgal plots the Emergency against a slow erosion of Values among both civil servants and people at large after Independence, a process

she traces even further back in two more recent novels, 'Plans for Departure' (1986) and 'Mistaken Identity' (1988), dealing with the Raj and the Independent Movement.

In September 2018, she was elected as a vice-president of PEN International. Politics is in her blood. An important political event forms the background of each of her novels. Most of her characters belong to the affluent upper class of Indian society.

जैसा कि नयनतारा सहगल अपने बाल्यावस्था के दिनों में अधिकांश समय इलाहाबाद के आनन्द भवन में बिताया, तो वे ऐसी महिला उपन्यासकार हैं जिनके कथासाहित्य में निजता और राजनीतिक तत्वों के बीच अलगाव कम दिखायी देता है। यह भवन नेहरू घराने का पैतृक आवास रहा है। विजयलक्ष्मी पंडित (नेहरू जी की बहन) और आर०एस० पंडित (संस्कृत के विद्वान व अधिवक्ता) की तीन पुत्रियों में सहगल दूसरी पुत्री थीं। भारत के मिशनरी स्कूलों में उन्होंने अध्ययन किया और अमेरिका के वेलेजली कॉलेज, मेसाचुसेट्स से उन्होंने इतिहास में बी०ए० की डिग्री प्राप्त की। वर्ष 1947 में वह भारत लौट आयीं और नेहरू जी के नई दिल्ली आवास में कुछ समय के लिए रहीं। उनके उपन्यासों से प्रकट होता है कि वे राजनीतिक क्षेत्र के विशिष्ट वर्ग के लोगों से सुपरिचित थीं। दो वर्ष पश्चात् उन्होंने गौतम सहगल से विवाह किया जो एक व्यवसायी थे। इनके तीन सन्तानें हुईं। लेकिन इस विवाह का सम्बन्ध-विच्छेद हो गया जब नयनतारा की मुलाकात ई०एन० मंगतराम नामक सिविल सेवा के अधिकारी से हुई। 'Relationship' (1994) में उनके बीच पत्र व्यवहार का विवरण निहित है। इस पुस्तक में उस दबाव की झलक मिलती है जो समसामयिक दौर में मध्यम वर्ग के दम्पति को झेलना पड़ता है।

नयनतारा के उपन्यासों के कथानक प्रायः राजनैतिक पृष्ठभूमि या राजनैतिक वातावरण से आच्छादित रहते हैं। वह अपने परिवेश से गहराई से भावात्मक और बौद्धिक रूप से जुड़ी हुई हैं। उन्होंने स्वयं को अनीश्वरवादी बताया है। नास्तिकता या अनीश्वरवाद उनके परिवार का सिद्धान्त रहा है लेकिन वह आशावाद के संबल के साथ आगे बढ़ने में विश्वास करती हैं। वह स्वयं को उपन्यासकार और पत्रकार के रूप में देखती हैं। सार्वजनिक क्षेत्र में शक्ति के प्रयोग के साथ ही सहगल ने इसमें स्त्रियों के भाग्य को विषय बनाया है जो घरेलू फलक पर उनके जीवन का लेखा-जोखा होता है। नयनतारा सहगल के उपन्यासों में भारतीय समाज के सर्वाधिक उच्च वर्ग के जीवन, उनके आडम्बर व दिखावे और उनकी मान्यताओं को दर्शाया गया है। इसके साथ ही सहगल भारत की परम्पराओं और उनके महत्त्व से भी वास्ता रखती हैं जो शिक्षित भारतीयों के लिए आवश्यक है। उनका पहला उपन्यास 'A Time to Be Happy' (1958) उनकी दो आत्मकथाओं के बाद प्रकाशित हुआ। कहानी का नायक एवं सूत्रधार सनद है जो अंग्रेजी माहौल में पढ़े-लिखे और पले उच्च वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो नेहरू जी की 'Autobiography' (1936) के शब्दों की अनुगूँज में कहता है—“मैं पूरी तरह से भारत का हूँ, ऐसा नहीं है। मेरी परवरिश और मानसिक सोच ने मुझे एक अभारतीय बना दिया है, तथापि यह प्रश्न ही बेमानी है कि मैं किसी अन्य देश का निवासी हूँ।” उपन्यास 'Rich Like Us' (1985) का ताना-बाना आपातकाल के दौरान का है लेकिन इसके साथ ही इसमें सती के प्रति बरताव का भी विवेचन है जिसका लाक्षणिक रूप से इस तथ्य के लिए उपयोग किया गया है कि स्त्रियों को परम्परागत विवाह संस्था के माध्यम से किस प्रकार पुरुष के जाल में फँसाया जाता है। इस उपन्यास को सिनक्लेयर पुरस्कार और साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सहगल ने आपातकाल को नैतिक मूल्यों के शनैः शनैः क्षरण के रूप में कथानक में शामिल किया है। यह सिविल सेवा के सरकारी कर्मचारियों और जनता दोनों में ही समान रूप से दिखाया गया है जो स्वतन्त्रता के बाद परिलक्षित होता है। ऐसा ही विवरण सहगल ने अपने अन्य दो उपन्यासों 'Plans for Departure' (1986) और 'Mistaken Identity' (1988) में दिखाया है जिनका कथानक ब्रिटिश राज और स्वतन्त्रता के लिए आन्दोलन है। नयनतारा सहगल के स्वावलम्बी लहजे और उनकी माँ के भी इसी प्रकार के बरताव के कारण उनकी अपनी ममेरी बहन इन्दिरा गांधी से अनबन हो गयी, जब इन्दिरा 1960 और 1970 के दशकों में अपने पद पर भयंकर रूप से स्वेच्छाचारी व निरंकुश हो गयी थीं। इन्दिरा गांधी जब जनवरी 1980 में पुनः सत्ता में आयीं तो सत्ता में आने के कुछ दिनों बाद ही उन्होंने नयनतारा के इटली में भारत की राजदूत की नियुक्ति को निरस्त कर दिया। लेकिन नयनतारा किसी भी प्रकार से भयाक्रान्त नहीं हुईं और उन्होंने निडर होकर इन्दिरा के सत्ता का केन्द्र बनने के बारे में मर्मभेदी कटु सत्य लिखा जो 1982 में प्रकाशित हुआ।

Q.25. Who is Nayantara Sahgal? Give an introduction of her life.

नयनतारा सहगल कौन हैं? उनके जीवन का परिचय दीजिए।

Ans. Nayantara Sahgal (1927) is another popular woman novelist who dominated the Post-Independence scenario of an Indian novel in English. She dealt with issues concerning women that later became major issues in the feminist movement launched in the sixties. With delicate sensitivity, she exposes the prejudices faced by woman in a male dominated society. Sahgal has a limited world of feminist Id.

Sahgal's father Ranjit Sitaram Pandit was a barrister from Kathiawad. Pandit was also a classical scholar who had translated Kalhana's epic history Rajatarangini into English from Sanskrit. He was arrested for his support of Indian independence and died in Lucknow prison jail in 1944.

Sahgal's mother, Vijayalakshmi Pandit, was the daughter of Motilal Nehru and sister of India's first prime minister, Jawaharlal Nehru. Vijayalakshmi had been active in the Indian freedom struggle, had been to jail for this cause and in 1946, was part of the first team representing newly formed India that went to the newly formed United Nations, along with M.C. Chagla. After India achieved independence, Vijayalakshmi Pandit served as a member of India's Constituent Assembly, the governor of several Indian states, and as India's ambassador to the Soviet Union, the United States, Mexico, the Court of St. James, Ireland and the United nations.

Sahgal has been married twice, first to Gautam Sahgal and later to E.N. Mangat Rai, a Punjabi Christian who was an Indian Civil Service officer. Though part of the Nehru family, Sahgal developed a reputation for maintaining her independent critical sense. Her independent tone, and her mother's led to falling out with her cousin Indira Gandhi during the most autocratic phases of the latter's time in office in the late 1960s and throughout the 1970s. Gandhi cancelled Sahgal's scheduled appointment as India's Ambassador to Italy within days of her return to power. Gita Sahgal is her daughter.

नयनतारा सहगल (1927) एक अन्य लोकप्रिय महिला उपन्यासकार हैं, जिन्होंने अंग्रेजी में एक भारतीय उपन्यास के स्वतंत्रता के बाद के परिदृश्य पर अपना दबदबा कायम रखा। उन्होंने महिलाओं से संबंधित मुद्दों का निपटारा किया जो बाद में साठ के दशक में शुरू किए गए नारीवादी आंदोलन में प्रमुख मुद्दे बन गए। नाजुक संवेदनशीलता के साथ, वह पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं द्वारा सामना किए जाने वाले पूर्वाग्रहों को उजागर करती हैं। सहगल के पास नारीवाद की सीमित दुनिया है।

सहगल के पिता रंजीत सीताराम पंडित काठियावाड़ के बैरिस्टर थे। पंडित एक शास्त्रीय विद्वान भी थे, जिन्होंने कल्हण के महाकाव्य इतिहास राजतरंगिणी का संस्कृत से अंग्रेजी में अनुवाद किया था। उन्हें भारतीय स्वतंत्रता के समर्थन के लिए गिरफ्तार किया गया था और 1944 में लखनऊ जेल में उनकी मृत्यु हो गई।

सहगल की माँ, विजयालक्ष्मी पंडित, मोतीलाल नेहरू की बेटी और भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की बहन थीं। विजयालक्ष्मी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय थीं, इस कारण से वह जेल गई थीं और 1946 में, नवगठित भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली पहली टीम का हिस्सा थीं, जो एम०सी० छागला के साथ तत्कालीन नवगठित संयुक्त राष्ट्र में गई थी। भारत के स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद, विजयालक्ष्मी पंडित ने भारत की संविधान सभा के सदस्य, कई भारतीय राज्यों के राज्यपाल, और सोवियत संघ, संयुक्त राज्य अमेरिका, मैक्सिको, सेंट जेम्स, आयरलैंड के न्यायालय में भारत के राजदूत के रूप में कार्य किया।

सहगल ने दो बार शादी की, पहले गौतम सहगल से और बाद में ई०एन० मंगत राय, एक पंजाबी ईसाई से जो एक भारतीय सिविल सेवा अधिकारी थे। हालांकि नेहरू परिवार का हिस्सा, सहगल ने अपनी स्वतंत्र आलोचनात्मक भावना को बनाए

रखने के लिए एक प्रतिष्ठा विकसित की। उनके स्वतंत्र स्वर और उनकी माँ की वजह से, 1960 के दशक के अंत में और पूरे 1970 के दशक में इंदिरा गांधी के कार्यालय के सबसे निरंकुश चरणों के दौरान उनकी चचेरी बहन इंदिरा गांधी के साथ उनका मतभेद हो गया। गांधी ने सत्ता में वापसी के कुछ दिनों के भीतर इटली में भारत के राजदूत के रूप में सहगल की निर्धारित नियुक्ति को रद्द कर दिया। गीता सहगल उनकी बेटी हैं।

Q.26. Write a note on the development of Indian writing in English. (2021)

भारत में अंग्रेजी लेखन पर एक लेख लिखिए।

Ans. Indian English Literature refers to that body of work by writers from India, who write in the English language and whose native or co-native language could be one of the numerous regional and indigenous languages of India. English literature in India is also linked with the works of writers of the Indian diaspora born in India but residing elsewhere.

A pioneer of this literature was Raja Rammohan Roy whose prose works is noteworthy. There were poets who are considered the first of the Indian English poets : Henry Vivian Derozio, Michael Madhusudan Dutt, Aru and Toru Dutt, and Manmohan Ghose. Indian literature in English actually dates back to the 1830s to Kashiprasad Ghosh, who is considered the first Indian poet in English.

Sohee Chunder Dutt was the first writer of fiction. In the beginning, political writing in the novel or essay format dominated as can be seen in Raja Rammohan Roy's works. An outstanding Indian writer in English was Aurobindo Ghose whose poetic magnum opus was the epic 'Savitri'. In prose, his most effective work is 'The Life Divine' that outlines his metaphysics in a rich language.

Some of Rabindranath Tagore's works were originally written in English such as 'Sadhana', 'Personality' and 'The Religion of Man'. Yet another Indian writer in English was Sarojini Naidu, The Nightingale of India, who rendered familiar things with an essence of colour and romance. 'The Golden Threshold', 'The Bird of Time' and 'The Broken Wing' are her important works. Jawaharlal Nehru's famous prose works are 'The Discovery of India' and 'Glimpses of World History'.

In the genre of novel, three early writers made a mark. Mulk Raj Anand's 'Coolie', 'Untouchable', 'The Big Heart' and other novels are about the underprivileged in India. R.K. Narayan became famous for creating the imaginary 'Malgudi' as the locale for most of his novels. He has a humorous manner and an eye for the comic in the world around him. His works include 'Swami and his Friends', 'The Dark Room', 'The Guide', 'Waiting for the Mahatma' and 'The Man Eater of Malgudi'.

Raja Rao is a good short story writer and has written only four but significant novels like 'Kanthapura', 'The Serpent and the Rope', and 'The Cat and Shakespeare'. Besides the legendary and hugely venerated Indian English Literary personalities like Rabindranath Tagore or R.K. Narayan, later novelists like Kamala Markandaya ('Nectar in a Sieve', 'Some Inner Fury', 'A silence of Desire', 'Two Virgins'), Manohar Mulgaonkar ('Kistant Drum', 'Combat of Shadows', 'The Princess', 'A Bend in the Ganges' and 'The Devil's Wind'), Anita Desai ('Clear Light of Day', 'The Accompanist', 'Fire on the Mountain', 'Games at Twilight') and Nayantara Sehgal, have ceaselessly captured the spirit of an independent India struggling to break away from the British and establish a distinct identity. Khushwant Singh ('Train to

Pakistan'), Bhabani Bhattacharya (*So Many Hungers, He Who Rides Tiger, Music for Mohini*) are other Indian novelists famous for their writing in English.

भारतीय अंग्रेजी साहित्य भारतीय लेखकों के उस कार्य को इंगित करता है जो अंग्रेजी भाषा में लिखा गया है और जिनकी देशी व सह-देशी भाषा भारत की असंख्य क्षेत्रीय में से एक हो सकती थी। भारत में अंग्रेजी साहित्य उन प्रवासी भारतीयों के कार्य से भी जुड़ा हो सकता है जिनका जन्म भारत में हुआ परन्तु वे कहीं और रह रहे हों।

इस साहित्य के अगुआ राजा राममोहन राय थे जिनका गद्य कार्य उल्लेखनीय है। हेनरी विवियन डेरोजियो, माइकेल मधुसूदन दत्त, अरू और तोरू दत्त और मनमोहन घोष आदि को प्रथम भारतीय अंग्रेजी कवि माना जाता है। अंग्रेजी में भारतीय साहित्य की वास्तविक तिथि 1830 के दशक में काशीप्रसाद घोष से कही जाती है तथा उन्हें अंग्रेजी में प्रथम भारतीय कवि माना जाता है।

उपन्यास के प्रथम लेखक सोची चंदर दत्त थे। आरम्भ में उपन्यास व निबन्ध प्रारूप में राजनीतिक लेखन का प्रभुत्व था जैसा कि राजा राममोहन राय के कार्यों में देखा जा सकता है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के कार्यों में से कुछ जैसे कि *Sadhana, Personality* और *The Religion of Man* मौलिक रूप से अंग्रेजी में लिखे गये थे। अंग्रेजी में एक अन्य भारतीय लेखक भारत की कोकिला सरोजिनी नायडू थीं जिन्होंने आम वस्तुओं को रंग व प्रेम के पुट से भर दिया। उनके कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य *The Golden Threshold, The Bird of Time* और *The Broken Wing* हैं।

उपन्यास के प्रारूप में आरम्भ के तीन लेखक महत्त्वपूर्ण हैं। मुल्कराज आनंद के *Coolie, The Untouchable, The Big Heart* और दूसरे उपन्यास भारत के वंचितों के बारे में हैं। आर०के० नारायण काल्पनिक मालगुड़ी को अपने अधिकांश उपन्यासों का स्थान बनाने के लिए प्रसिद्ध हुए। उनका स्वभाव मजाकिया है जो अपने चारों ओर हँसी के तत्त्व ढूँढ़ता है। उनके कार्यों में *Swami and His Friends, The Dark Room, The Guide, Waiting for the Mahatma* और *The Man Eater of Malgudi* सम्मिलित हैं।

राजा राव अच्छे लघु कथा लेखक हैं जिन्होंने केवल चार उपन्यास लिखे लेकिन इनमें *Kanthapura, The Serpent and the Rope* और *The Cat and and Shakespeare* उपन्यास महत्त्वपूर्ण हैं। रवीन्द्रनाथ टैगोर और आर०के० नारायण जैसे प्रसिद्ध और सम्मानित भारतीय अंग्रेजी लेखकों के अलावा कमला मार्कण्डेय (*Nectar in a Sieve, Some Inner Furgy, A Silence of Desire, Two Virgins*), मनोहर मूलगाँवकर (*Distant Drums, Combat of Shadows, The Princess, A Bench in the Ganges and The Devil's Wind*), अनीता देसाई (*Clear Light of Day, The Accompanist, Fire on the Mountain, Games at Twilight*) और नयनतारा सहगल ने स्वतन्त्र भारत, जो अपने ब्रिटिश काल के इतिहास से छुटकारा पाने को छटपटा रहा है, की आत्मा को निरन्तर उकेरा है। खुशवंत सिंह (*Train to Pakistan*), भवानी भट्टाचार्य (*So Many Hungers, He Who Rides Tiger, Music for Mohini*) दूसरे भारतीय उपन्यास लेखक हैं जो अपने अंग्रेजी में लेखन के लिए प्रसिद्ध हैं।



UNIT-II

Elements of Short Story

SECTION-A (VERY SHORT ANSWER TYPE) QUESTIONS

Q.1. What is a plot in short story?

लघुकथा में कथानक क्या है?

Ans. The plot is arguably, the most important element of a story. It is literally the sequence of events and in that sequence, we learn more about the characters, the setting and the moral of the story.

कथानक यकीनन, कहानी का सबसे महत्त्वपूर्ण तत्व है। वह वस्तुतः घटनाओं का क्रम है और उस क्रम में, हम कहानी के पात्रों, सेटिंग और नैतिकता के बारे में अधिक सीखते हैं।

Q.2. What is characterization?

चरित्र चित्रण क्या है?

Ans. Characterization deals with how the characters in the story are described. In short stories there are usually fewer characters compared to a novel. They usually focus on one central character or protagonist.

चरित्र चित्रण इस बात से सम्बन्धित है कि कहानी में पात्रों का वर्णन कैसे किया जाता है। लघुकथाओं में आमतौर पर उपन्यास की तुलना में कम पात्र होते हैं। वे आमतौर पर एक केन्द्रीय चरित्र या नायक पर ध्यान केन्द्रित करते हैं।

Q.3. What is an autobiography?

आत्मकथा क्या है?

Ans. An autobiography is a biography in which the author writes about his or her own life. It is a self-written account of one's own life. The word comes from the Greek term 'auto' (meaning 'self'), 'bio' (meaning 'life') and 'graphy' (meaning 'write').

आत्मकथा एक जीवनी है जिसमें लेखक अपने जीवन के बारे में लिखता है। यह स्वयं के जीवन का एक स्व-लिखित लेखा है। यह शब्द ग्रीक शब्द 'ऑटो' (जिसका अर्थ है 'स्व'), 'बायो' (अर्थ 'जीवन') और 'ग्राफी' (जिसका अर्थ है 'लिखना') से आया है।

Q.4. What is a biography?

एक जीवनी क्या है?

Ans. A biography is a story written about someone's life. An example of biography is a book about the story of President Obama's life.

एक जीवनी किसी के जीवन के बारे में लिखी गई कहानी है। जीवनी का एक उदाहरण राष्ट्रपति ओबामा के जीवन की कहानी के बारे में एक किताब है।

Q.5. What does a memoir mean?

एक संस्मरण का क्या अर्थ है?

Ans. A memoir is an official note or report. It is also called memorandum.

एक संस्मरण एक आधिकारिक नोट या रिपोर्ट है। इसे ज्ञापन भी कहते हैं।

Q.6. What do you mean by a personal essay?

व्यक्तिगत निबंध से आप क्या समझते हैं?

Ans. A personal essay is a short work of autobiographical notification characterized by a sense of intimacy and a conversational manner.

एक व्यक्तिगत निबंध आत्मकथात्मक अधिसूचना का एक छोटा काम है जो अंतरंगता की भावना और बातचीत के तरीके की विशेषता है।

Q.7. Describe characterisation as an element of story.

कहानी के एक तत्त्व के रूप में चरित्र-चित्रण का विवरण दीजिए।

Ans. Characterisation is often listed as one of the fundamental elements of fiction. A character is a participant in the short story, and is usually a person, but may be any personal identity, or entity whose existence originates from a fictional work or performance.

कल्पित कथासाहित्य व लघुकथा में चरित्र-चित्रण को मूल तत्त्वों में शामिल किया जाता है। पात्र ही लघु कहानी का हिस्सा होते हैं। इनके क्रियाकलापों से कहानी आगे बढ़ती है। प्रायः पात्र वास्तविक मानव होते हैं। लेकिन अन्य मानव से विरत प्राणी या वस्तु भी कभी-कभी कहानी के अन्तर्गत पात्र बन जाते हैं जो मनगढ़ंत कार्य से उत्पन्न होते हैं या कार्य-व्यापार की परिणति से ऐसा हो सकता है।)

Q.8. Describe the semi-story and non-realistic story.

अर्धकथा और अवास्तविक कथा का विवरण दीजिए।

Ans. Semi-fictional story implements a great deal of non-fiction. For example, a fictional depiction based on a true story or a fictionalized account, or a reconstructed biography. Even when the author claims the story is true, there may be significant additions and subtractions from the true story to make it more suitable for story telling.

Non-realistic story is that in which the story's events could not happen in real life. A good deal of fiction books are like this, as *Alice in Wonderland*, *Harry Potter* and *The Lord of the Rings*.

अर्ध काल्पनिक साहित्य ऐसी गल्प कथा है जो काल्पनिकता से विरत होती है। उदाहरण के लिए, किसी सच्चे घटनाक्रम पर कोई कहानी गढ़ी जा सकती है या किसी जीवनी को उपन्यास का स्वरूप दिया जा सकता है तो यह semi-fiction कहलाती है। यद्यपि लेखक इस रचना में दावा कर सकता है कि कथानक वास्तविक आख्यान पर आधारित है तो भी इसमें कहानी की आवश्यकता को देखकर कुछ घटाया या बढ़ाया जा सकता है, जिसका वास्तविकता से कुछ भी लेना-देना न हो। अवास्तविक कथा के अन्तर्गत ऐसी कथाएँ व उपन्यास की कहानी शामिल होती हैं जो वास्तविक संसार में घटित नहीं हो सकती हैं। 'Alice in Wonderland' (एलिस जादूगरी में), 'Harry Potter' तथा 'Lord of the Rings' इसी प्रकार की अवास्तविक कथा संसार से सम्बन्धित कहानियाँ हैं।

Q.9. Describe the plot as an element of story.

कहानी के एक तत्त्व के रूप में कथानक का विवरण दीजिए।

Ans. It is the storyline and is often listed as one of the fundamental elements of fiction or a story. Plot is what the characters did, said and thought. There are a great variety of plot forms.

Some plots are designed to achieve tragic effects, while others to achieve the effect of comedy, romance or satire.

कथानक के अन्तर्गत कहानी का सिलसिलेवार विवरण होता है तथा इसको प्रायः उपन्यास या कथासाहित्य का सर्वप्रथम तत्त्व माना जाता है। पात्रों द्वारा जो किया गया, जो कहा गया और जो सोचा गया, वह सब कथानक में समाहित है। कथानकों के स्वरूप नानाविध रूपों में हो सकते हैं। कुछ कथानक कारुणिक दृश्य उपस्थित करना चाहते हैं तो अन्य सुखानुभूति से पाठकों को सराबोर कर देना चाहते हैं। अन्य प्रकार की कथावस्तु भी हो सकती है जिनकी व्युत्पत्ति के रूप में पाठकों के सामने सुखान्तिका, रोमांस या व्यंग्य का आविर्भाव हो सकता है।

Q.10. Describe various elements of story.

कहानी के विभिन्न तत्त्वों की विवेचना कीजिए।

Ans. Mainly story has three main elements of plotting, character and setting. For others they include theme, character, conflict, setting, style and so on. According to Evanovich contained within the framework of a story, major story elements of characters, action and conflict.

मुख्यतः कहानी के कथानक, पात्र व मंचसज्जा-तीन प्रमुख तत्त्व होते हैं। अन्य विद्वानों का अभिमत है कि इस सूची में प्रतिपाद्य विषय, चरित्र, द्वन्द्व स्थल या रंगमंच सज्जा, रंगढंग और अन्य शामिल हैं। इवानोविच के अनुसार कहानी के परिमण्डल में जिन प्रमुख तत्त्वों को शामिल किया जाना चाहिए वे पात्रों का चित्रण, कार्य-व्यापार और द्वन्द्व हैं।

Q.11. Explain spiritual autobiography.

आध्यात्मिक आत्मकथा के बारे में विवेचना कीजिए।

Ans. It is an account of an author's struggle or journey towards God. It is followed by conversion i.e., a religious conversion which is often interrupted by moments of regression. The author re-frames his life as a demonstration of divine intention through encounters with the Divine. The earliest example of a spiritual autobiography is Augustine's 'Confessions'.

यह लेखक का ईश्वर का सान्निध्य प्राप्त करने का या उस ओर अग्रसर होने का ब्यौरा है। आध्यात्मिक आत्मकथा जो संवाद है, एक धार्मिक संवाद जिसमें अनेक व्यवधान आते रहते हैं। लेखक अपने जीवन को पुनः ढाँचे में ढालता है और ईश्वर के साथ दिव्यता की अनुभूति प्राप्त करता है। ऑगस्टीन की कृति 'Confessions' प्रारम्भिक आध्यात्मिक आत्मकथा का उदाहरण है।

Q.12. Enumerate some well-known autobiographies.

कुछ प्रसिद्ध आत्मकथाओं के नाम लिखिए।

Ans. Some well-known autobiographies, which influenced millions and millions people throughout the world are 'Mein Kampf' by Adolf Hitler, 'My Experiments with Truth' by Mahatma Gandhi, 'An Autobiography' by Jawaharlal Nehru. Benjamin Franklin and Sir Winston Churchill also wrote autobiographies, which are read with pride in literary circles.

कुछ कालजयी आत्मकथाएँ जिन्होंने लाखों-लाख लोगों के जीवन को अनुप्राणित कर आलोड़ित कर दिया हैं—Mein Kampf (मीन कैम्फ = मेरा संघर्ष), जिसकी रचना एडोल्फ हिटलर ने की, My Experiments with Truth (सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा), इसको गांधी जी ने लिखा, An Autobiography जवाहरलाल नेहरू ने लिखी। बैजामिन फ्रैंकलिन तथा सर विंस्टन चर्चिल ने भी आत्मकथाएँ लिखीं जिनकी सराहना की गई और साहित्यिक जगत् में गर्व के साथ उनको पढ़ा जाता है।

Q.13. Discuss the writing of biographies by Roman Catholic Church, monks and priests?

रोमन कैथोलिक चर्च, पादरी व पुरोहितों द्वारा जीवनी लेखन के बारे में विवेचना कीजिए।

Ans. Between 5th century and 15th century, there was a decline in awareness of the classical culture in Europe. During this time, the only repositories of knowledge and records of the early history in Europe were those of the Roman Catholic Church, hermits, monks and priests, who used this historic period to write biographies. Their subjects were usually restricted to the church fathers, martyrs, popes and saints. Their works were meant to be inspirational to the people and vehicles for conversion to Christianity.

पाँचवीं शताब्दी से पन्द्रहवीं शताब्दी के बीच के दौरान यूनानी व रोमन संस्कृति से अनुप्राणित यूरोप में ज्ञान का पतन होने लगा था। इस अँधेरे युग में ज्ञान के भण्डार और यूरोपीय इतिहास को सँजोए रखने के उपागमों के रूप में रोमन कैथोलिक चर्च, पादरी और पुरोहित ही थे जिन्होंने इस ऐतिहासिक कालखण्ड में जीवनियों को लिखा। उनकी जीवनियों के विषय प्रायः गिरजाघरों के अधिष्ठाताओं, प्राणोत्सर्ग करने वाले लोगों, पोप और सन्तों के चरित्र हुआ करते थे। इन जीवनियों का उद्देश्य लोगों को प्रेरित करना और उन्हें ईसाई धर्म में दीक्षित करना होता था।

Q.14. What do you mean by 'travelogue'?

'Travelogue' से आप क्या समझते हैं?

Ans. Travelogue is a travel writing of literary value. Travel literature typically records the experiences of an author touring a place for the pleasure of travel. Travelogue is an individual work, a work of an author and traveller of great meritorious and literary abilities. Travel literature may be cross-cultured or transnational in focus, or may involve travel to different regions within the same country. Accounts of spaceflight may also be considered travel literature.

Travelogue वह यात्रा वृत्तान्त होता है जिसका साहित्यिक रूप में भी महत्त्व होता है। यात्रा सम्बन्धी साहित्य लेखक के अपने अनुभव पर आधारित उन यात्राओं का विवरण होता है जो उसने मनोरंजन के निमित्त की थीं। यह निजी कथा वृत्तान्त होता है जो लेखक व यात्री द्वारा सम्पन्न की जाती है और ऐसा यात्री साहसिकता व साहित्यिक योग्यताओं से सुसम्पन्न रहता है। इसका विवरण नानाविध संस्कृतियों का संगम हो सकता है, साथ ही अनेक राष्ट्रीयताओं के रंगों से भी सराबोर रह सकता है, एक ही देश के अलग-अलग क्षेत्रों की यात्राओं का विवरण भी इसमें समाहित हो सकता है। अन्तरिक्ष की सुदूर उड़ान को भी अब यात्रावृत्तान्त के घेरे में समेट लिया गया है।

Q.15. Discuss some characteristics of travelogue.

यात्रावृत्तान्त की कुछ विशिष्टताओं को बताइए।

Ans. Travelogue is a truthful account of an individual's experiences of travelling. Thoughts, feelings and reflections are important parts of our experience of travel. Therefore descriptions of a traveller's inner world are not out of place in the travelogue. Likewise, notes and observations on history, society, and culture are also common features of travelogues, as we certainly learn about the world when we travel.

यात्रावृत्तान्त किसी व्यक्ति की यात्रा के दौरान हुए अनुभवों का वास्तविक व सत्य पर आधारित वृत्तान्त है। यात्रा के दौरान हमें विचारों, अनुभवों और प्रतिक्रियाओं के रूप में अनेक अनुभूतियों की प्राप्ति होती है। इस रूप में यात्री के अन्तर्मन में व्याप्त विचार, शब्दों में प्रकट होने लगते हैं जो लेखन के स्वरूप में यात्रावृत्तान्त का आकार ले लेते हैं। इसी प्रकार से इतिहास, समाज और संस्कृति का अवलोकन और उनका लेखन भी यात्रावृत्तान्त के सामान्य गुण हैं क्योंकि यात्रा के समय हमें विश्व की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।

Q.16. Why is the periodical essay treated as 'social essay'?

नियतकालीन निबन्ध को सामाजिक निबन्ध के रूप में क्यों देखा जाता है?

Ans. The periodical essay aimed at improving the manners and morals of the people and hence, it is also termed as the social essay. It was the peculiar product of the eighteenth century. It was called 'periodical' because it was not published in book form like other types of essays, as the essays of Bacon, but it was published in journals and magazines which appeared periodically. It has an inherent social purpose.

लोगों के चाल-चलन व आचरण में सुधार लाना इस निबन्ध शैली का ध्येय था, इसलिए इस प्रकार के निबन्ध को सामाजिक निबन्ध कहा गया है। अठारहवीं शताब्दी में नियतकालिक निबन्ध एक विशिष्ट निबन्ध शैली के रूप में उभरा था। इसको नियतकालिक इसलिए कहा गया क्योंकि इसका प्रकाशन पुस्तक रूप में नहीं किया जाता था जैसा कि बेकन के निबन्धों में किया गया था अपितु इसको पत्रिका में धारावाहिक रूप में प्रकाशित किया जाता था। इस प्रकार के निबन्ध का एक निश्चित सामाजिक उद्देश्य होता था।

Q.17. Discuss the causes which contributed to the rise of the periodical essay.

उन कारकों का विवरण दीजिए जिन्होंने नियतकालिक निबन्ध के विकास में योगदान किया।

Ans. The increasing interest in the political affairs, the establishment of clubs and coffee houses, and the new printing houses contributed to the development of prose in the eighteenth century. Daniel Defoe, Jonathan Swift, Sir Richard Steele and Joseph Addison are the four great writers of the periodical essay in the age of Pope.

राजनीतिक क्रियाकलापों में लोगों की सक्रियता, क्लबों और कॉफी हाउसों की बड़े स्तर पर स्थापना और नए मुद्रणालयों का आविर्भाव, ऐसे कुछ कारण थे जिन्होंने अठारहवीं शताब्दी में गद्य के विकास में सहयोग किया। डेनियल डेफो, जोनाथन स्विफ्ट, सर रिचर्ड स्टील और जोसफ एडिसन पोप काल के चार बड़े लेखक हुए जिन्होंने नियतकालिक निबन्ध के क्षेत्र में लेखन कार्य किया।

Q.18. What do the formal essays typically contain?

विशेष रूप से औपचारिक निबन्धों में क्या अन्तर्विष्ट होता है?

Ans. The formal essays typically contain an introductory paragraph that acquaints the reader with the thesis statement, followed by several paragraphs of evidence that support the writer's argument. The essay typically ends with a conclusion that restates the thesis and reiterates the main points of the essay.

विशेष रूप से औपचारिक निबन्ध में एक परिचयात्मक अनुच्छेद होता है जो निबन्ध की विषयवस्तु से पाठक को परिचित कराता है। इसके बाद अनेक अन्य अनुच्छेद होते हैं जो लेखक के पक्ष को सशक्त करते हैं। इस प्रकार के निबन्ध का समापन उपसंहार से किया जाता है जो विषय सामग्री की पुनरावृत्ति करता है और मुख्य बिन्दुओं का एक बार पुनः दोहराव करता है।

Q.19. What are the features of a good personal essay?

एक अच्छे व्यक्तिगत निबन्ध की क्या विशेषताएँ होती हैं?

Ans. The main features of a good personal essay are an introductory paragraph, body paragraph, and a conclusion. The standard length is about five paragraphs, but personal essays can be longer or shorter, as long as they contain all three basic sections.

एक अच्छे व्यक्तिगत निबन्ध की विशेषताएँ हैं—एक परिचयात्मक अनुच्छेद, मध्य भाग और उपसंहार। इसमें लगभग पाँच अनुच्छेदों का होना ठीक रहता है। लेकिन व्यक्तिगत निबन्ध अधिक विस्तृत या छोटे भी हो सकते हैं जिनमें तीनों भागों का समायोजन होना चाहिए।

Q.20. What topics can be covered as the subject-matter of personal essay?

व्यक्तिगत निबन्ध में किस प्रकार के विषयों को विषयवस्तु के रूप में शामिल किया जा सकता है?

Ans. A variety of different subject-matters can be covered by personal essays. They could be about the first time you failed a test in an entrance examination, as estranged family member, a moral turning point encountered during adolescence, a war experience overseas, a survival of abuse, or a professor that changed the way you feel about literature. Any moment in your life that sparked growth or changed you in some way can be written about in a personal essay and enriched by your personal opinion.

व्यक्तिगत निबन्ध के विषय के रूप में विभिन्न विषयवस्तुओं को शामिल किया जा सकता है। प्रवेश परीक्षा में असफलता, उदासीन पारिवारिक सदस्य, किशोरावस्था में जीवन के बदलाव का बिन्दु, विदेश में युद्ध का अनुभव, अपशब्दों का अस्तित्व, प्राध्यापक जिसने साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत की, जैसे विषय इस निबन्ध की विषयवस्तु हो सकते हैं। अपने जीवन का कोई भी भावुक या बदलाव का क्षण व्यक्तिगत निबन्ध में लिया जा सकता है और अपनी व्यक्तिगत राय से निबन्ध को श्रेष्ठ बनाया जा सकता है।

SECTION-B (SHORT ANSWER TYPE QUESTIONS)

Q.1. Explain briefly about 'fictional autobiography'.

'कल्पित आत्मकथा' के बारे में संक्षिप्त विवेचना कीजिए।

Ans. It signifies novels about a fictional character written as though the character were writing his own autobiography, meaning that the character is the first-person narrator and that the novel addresses both internal and external experiences of the character. The term may also apply to works of fiction purporting to be autobiographies of real characters, as Robert Nye's "Memoirs of Lord Byron".

Daniel Defoe's 'Moll Flanders' is an early example. Charles Dickens's 'David Copperfield' is another such classic, and J.D. Salinger's "The Catcher in the Rye" is a well-known modern example of fictional autobiography. Charlotte Bronte's "Jane Eyre" is yet another example of fictional autobiography.

इसका आशय उन उपन्यासों से है जो कल्पित पात्र के बारे में होते हैं जहाँ लगता है कि मानों पात्र स्वयं अपनी आत्मकथा का प्रणयन कर रहा है अर्थात् पात्र उत्तम पुरुष में वाचन कर रहा होता है और उपन्यास में आन्तरिक और बाह्य दोनों रूपों में पात्र के अनुभवों का समावेश रहता है। इस शब्दावली का प्रयोग ऐसी कृतियों के लिए भी किया जा सकता है जो वास्तविक पात्रों की आत्मकथा प्रतीत होती हों जैसा कि रॉबर्ट नई की कृति 'Memoirs of Lord Byron' से आभास मिलता है।

डेनियल डैफो की कृति 'Moll Flanders' इस प्रकार की रचना का प्रारम्भिक उदाहरण है। चार्ल्स डिकन्स की कृति 'David Copperfield' इसी प्रकार का शास्त्रीय उदाहरण है। जे० डी० सेलिंगर की कृति 'The Catcher in the Rye' कल्पित आत्मकथा का आधुनिक उदाहरण है। शरलट ब्रोंटे की 'Jane Eyre' भी कल्पित आत्मकथा का उदाहरण है।

Q.2. Describe any three famous narrative techniques.

तीन प्रसिद्ध आख्यान तकनीकों का विवरण दीजिए।

Ans. The three major techniques are described herewith :

1. **In medias res** : The story begins in the middle of a sequence of events in this narrative technique. It is a specific form of narrative hook.
2. **Framing device** : The use of framing device allows from stories to exist. It is a single action, scene, event, setting, or any element of significance at the beginning and end of a work.

- 3. Flashforward technique :** This technique is also called prolepsis, a scene that temporarily jumps the narrative forward in time. Flashforward often represents events expected, projected, or imagined to occur in the future. They may also reveal significant parts of the story that have not yet occurred, but soon will in greater detail.

तीन तकनीकों का विवरण निम्नवत् है—

- 1. In medias res :** इस आख्यान तकनीक में कहानी का जन्म कुछ विशिष्ट घटनाओं के बीच में होता है। यह आख्यान को उत्तेजित करने की एक विशिष्ट तकनीक है।
- 2. Framing अयुक्ति :** इस तकनीक के द्वारा कहानी के अस्तित्व को बनाए रखा जाता है। यह स्वयं में एक पूर्ण कार्यव्यापार, दृश्य, घटना, रंगमंच सज्जा या अन्य कोई महत्त्वपूर्ण तत्व हो सकता है जो कहानी के प्रारम्भ या अन्त में दिखायी देता है।
- 3. Flashforward तकनीक :** इस तकनीक को पूर्वानुमान तकनीक भी कहा जाता है। इसमें कोई दृश्य अचानक ही कहानी में प्रकट होकर स्वरूप में बदलाव ला देता है। यह तकनीक भविष्य में होने वाले या अपेक्षित घटनाक्रम का आभास करा देती है। इसमें कहानी के महत्त्वपूर्ण चरण को प्रकट कर दिया जाता है जो अब तक घटित नहीं हुआ है लेकिन शीघ्र ही भविष्य में पूरी, शक्ति से प्रकट होने वाला है।

Q.3. Describe the beginning of biographies in England and America.

इंग्लैण्ड और अमेरिका में जीवनों की शुरुआत का विवरण दीजिए।

Ans. In the case of England, biographies began appearing during the reign of Henry the Eighth. John Foxe wrote 'Actes and Monuments' in 1563. This work is also known as 'Foxe's Book of Martyrs'. It was the first book as dictionary of the biography in Europe. Then came 'The History of the Worthies of England' in 1662. A notable early collection of biographies of eminent men and women in the United Kingdom was 'Biographia Britannica' (1747-1766).

The American biography followed the English model, incorporating Thomas Carlyle's view that biography was a part of history. Carlyle asserted that the lives of great human beings were essential to understand society and its institutions. While the historical impulse would remain a strong element in early American biography, American writers carved out a distinct approach. What emerged was a rather didactic form of biography, which sought to shape the individual character of a reader in the process of defining national character.

इंग्लैण्ड में हेनरी अष्टम के शासन के दौरान जीवनों को लिखने का प्रचलन होने लगा था। जॉन फॉक्स ने 'Actes and Monuments' वर्ष 1563 में लिखी। इस पुस्तक का एक अन्य शीर्षक 'Foxe's Book of Martyrs' भी है। यूरोप में जीवनी के शब्दकोश के रूप में यह पहली पुस्तक है। इसके बाद वर्ष 1662 में The History of the Worthies of England पुस्तक का प्रकाशन हुआ। ब्रिटेन में लब्धप्रतिष्ठ स्त्री व पुरुषों का एक प्रारम्भिक उल्लेखनीय जीवनी संग्रह 'Biographia Britannica' (1747-1766) का प्रकाशन हुआ।

अमेरिका के जीवनी लेखकों ने अंग्रेजों की परम्परा का निर्वहन किया जिसमें थॉमस कार्लाइल के विचारों को अंगीकार किया गया कि जीवनी भी इतिहास का ही एक भाग है। कार्लाइल का अभिमत था कि महान व्यक्तियों की जीवनी के द्वारा समाज और उसकी संस्थाओं को समझने का सही माध्यम है। प्रारम्भिक अमेरिकी जीवनों के लेखन में ऐतिहासिकता तीव्रता के साथ उभरी, लेकिन बाद में अमेरिकियों ने अंग्रेजी परम्परा को तिलांजलि दे दी। इसके बाद जो परम्परा अस्तित्व में आयी उसमें जीवनी का शिक्षात्मक स्वरूप उभर कर सामने आया जिसके राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण करने के निमित्त पाठक के चरित्र को विशिष्ट आकार में सँवारा गया।

Q.4. Write an introductory note on memoir.

Memoir अर्थात् संस्मरण पर एक परिचयात्मक लेख लिखिए।

Ans. The word 'Memoir' has been derived from 'memoria', a Latin word meaning memory, which is a sketch or record of events from personal knowledge. There are two things which are uncommon to other devices. Firstly, the record is not kept systematically and secondly, it may not take into account the chronological sequence of events.

It is a record of events, written from personal knowledge or special sources of information. Factually it is a short biographical sketch, which includes a scientific record of personal investigation on a subject.

Historically memoir has been defined as a subcategory of biography or autobiography. In the late twentieth century, the genre is differentiated in form, presenting a narrowed focus.

A *biography* or *autobiography* speaks about the story of a life while a memoir often tells the story of a particular event or time. This may include touchstone moments and turning points from the author's life. The author of a memoir is called as memoirist or memorialist.

'Memoir' शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन शब्द *memoria* से हुई है जिसका आशय है—स्मृति या याददाश्त। यह निजी जानकारी के आधार पर घटनाक्रमों का रेखाचित्र या विवरण होता है। इसमें अन्य विधाओं से हटकर दो गुण अलग प्रकार के होते हैं। पहला, घटनाक्रम का विवरण सुव्यवस्थित नहीं होता है, दूसरा इसमें काल क्रमानुसार तथ्यों का संकलन करना आवश्यक नहीं होता है।

यह एक प्रकार का संस्मरण है जिसमें तमाम घटनाक्रम दर्ज रहते हैं, इसमें संस्मरण-लेखक की निजी जानकारी और विशिष्ट स्रोतों से प्राप्त विवरण रहता है। वास्तव में यह एक लघु जीवनी का खाका ही होता है, जिसमें निजी रूप में देखी-भाली विषयवस्तु का वास्तविक चित्रांकन किया जाता है।

ऐतिहासिक रूप से संस्मरण को जीवनी या आत्मकथा का ही उपभाग माना जाता रहा लेकिन बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इस विधा के स्वरूप में बदलाव किया गया जिसमें छोटे फलक पर प्रकाश डाला जाता है।

किसी जीवनी या आत्मकथा में जीवन की कहानी को विस्तार से बताया जाता है जबकि संस्मरण प्रायः किसी विशिष्ट घटनाक्रम या कालखण्ड की कहानी का उद्बोधन करता है। इसमें मार्मिक क्षणों और जीवन के बदलाव वाले समय को लेखक स्वयं निरूपित करता है।

Q.5. Discuss some of the major early memoirs.

कुछ प्रसिद्ध प्रारम्भिक संस्मरणों का विवरण दीजिए।

Ans. In the ancient times, Julius Caesar wrote 'Commentarii de Bello Gallico' (Commentaries on the Gallic Wars). In this work Caesar describes the battle that took place during the nine years that he spent fighting local armies in the Gallic Wars. His second memoir 'Commentarii de Bello Civili' (Commentaries on the Civil War) is an account of the events that took place between 49 and 48 BC in the civil war against Gnaeus Pompeius and the Senate.

The noted Libanius, teacher of rhetoric who lived between AD 314 and 394, framed his life memoir as one of his literary orations. This kind of memoir refers to the idea in ancient Greece and Rome, that memoirs were like 'memos', or pieces of unfinished and unpublished writing, which a writer might use as a memory aid to make a more finished document later on.

प्राचीन काल में जूलियस सीजर ने 'Commentaries on the Gallic Wars' लिखी थी। इस संस्मरण में सीजर ने नौ वर्ष तक चले युद्ध का विवरण दिया है। इस गैलिक युद्ध में उसे स्थानीय सैन्य टुकड़ियों से संघर्षरत होना पड़ा था। उसका दूसरा

संस्मरण 'Commentaries on the Civil War' उन घटनाओं का विवरण है जो 49 से 48 ईसा पूर्व में घटित हुई थी जब नियस पोम्पियस और सीनेट के खिलाफ गृहयुद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। लिबेनियस जो अलंकारशास्त्री था और 314 से 394 ईस्वी तक उसका जीवन रहा, उसने अपने जीवन पर संस्मरण लिखा जो उसकी एक अद्वितीय कृति मानी गयी है। इस प्रकार के अन्य अनेक संस्मरणों को प्राचीन यूनान और रोम में लिखा गया। ये Memos के रूप में अपरिष्कृत भाषा में लिखे गए और अप्रकाशित रूप में होते थे। इस प्रकार के लेखन का उपयोग लेखक द्वारा अपनी स्मृति को ताजा करने के लिए किया जाता था जिसकी सहायता से बाद में परिष्कृत विवरण तैयार किया जा सकता था।

Q.6. Discuss about various travelogue writers.

यात्रावृत्तान्त के लेखकों के बारे में विवरण दीजिए।

Ans. A famous Arab traveller Ibn Batutta, from Morvcco (1304-1377) recorded his travel across the known world in detail. The travel genre was a fairly common genre in medieval Arabic literature. Other later examples of travel literature include of the Grand Tour Aristocrats, clergy and others with money and leisure time travelled Europe to learn about the art and architecture of its past. Robert Louis Stevenson (1850-1894) was a pioneer in tourism literature. Captain James Cook's diaries (1784) were the equivalent of today's best sellers.

Travel literature often intersects with essay writing, as in V.S. Naipaul's India : A Wounded Civilization, where a trip becomes the occasion for extended observations on a nation and people. Travel and nature writing merge in many works. Charles Darwin wrote his famous account of the journey of Beagle, the voyages in the Pacific, at the intersection of science, natural history and travel. Travelogue writing also occurs when an author, famous in another field, travels and writes about his or her experiences, such writers include Samuel Johnson, Charles Dickens, R.L. Stevenson, Hilaire Belloc, D.H. Lawrence, etc.

मोरक्को के मशहूर अरब यात्री इब्नबतूता (1304-1377), ने निकट और सुदूर पूरब की यात्राओं का विवरण दिया है। मध्यकाल का वह सर्वाधिक ख्यातिप्राप्त यायावरी लेखक था। इसके बाद के काल में नियोजित यात्राओं का विवरण मिलता है, जिसमें पादरी वर्ग की शिरकत भी थी। इसमें तमाम धनाढ्य और समय वाले लोग शामिल थे जो यूरोप की यात्राओं पर निकल पड़ते थे और पुरातनकालीन कला और भवन निर्माण का अवलोकन किया करते थे। रॉबर्ट लुई स्टीवेंसन (1850-1894) ने इस क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त कर ली थी। कैप्टन जैम्स कुक की डायरियाँ (1784) भी वर्तमान में सर्वाधिक बिक्री वाले साहित्य के समान थीं।

यायावरी साहित्य कभी-कभार निबन्ध विधा की झलक भी देने लगता है, जैसा कि वी०एस० नयपॉल की रचना India: A Wounded Civilization (भारत : एक आहत सभ्यता) से प्रकट होता है जहाँ यात्रा विवरण पूरी तरह से राष्ट्र और उसकी प्रजा को समर्पित हो जाता है। अनेक रचनाओं में यात्रा और प्रकृति का मेल हो जाता है। चार्ल्स डार्विन ने अपना Beagle यात्रा के संस्मरणों को लिखा जो उसने प्रशान्त महासागर के लिए की थी। इस वृत्तान्त में विज्ञान, प्राकृतिक इतिहास व यात्रा सबकुछ एक साथ गुंथे हुए दिखाई देते हैं। Travelogue के अन्तर्गत किसी विशेष क्षेत्र में ख्यातिनाम व्यक्ति की यात्राओं का भी वृत्तान्त हो सकता है, जब ऐसा व्यक्ति अपने अनुभवों का संकलन करता है। ऐसे लेखकों में शामिल हैं—सैमुअल जॉनसन, चार्ल्स डिकिंस, आर०एल० स्टीवेंसन, हिलेरी बैलॉक, डी०एच० लॉरेस आदि।

Q.7. What do you know about the term 'essay' in English literature?

अंग्रेजी साहित्य में निबन्ध के बारे में आप क्या जानते हैं?

Ans. The term 'essay' has been derived from the French word 'essayer' meaning to try. Originally, French essayist Montaigne used the form as a means to express his views on a given

topic. The emphasis in his writings lay centred on subjectivity. He called his pieces of prose rose literature as 'Essai' meaning an attempt. About the specification of the subject of composition he used to say: "I am myself the subject of my book." William Hudson says: "The true essay is essentially personal. It belongs to the literature of self-expression. Treatise and dissertation may be objective, but the essay is subjective." Essay is a literary composition which is shorter than a treatise. The literal meaning of the word is 'a trial' or 'an attempt'.

शब्द essay की व्युत्पत्ति फ्रेंच भाषा के शब्द essayer से हुई है, जिसका अर्थ प्रयास करना होता है। सबसे पहले फ्रांसीसी निबन्धकार मोटेन ने किसी निश्चित विषय पर अपने विचारों को प्रकट करने के लिए इस विधा को अपनाया था। उसके लेखों में स्थूलता को विशिष्टता प्रदान की गई थी। उसने अपनी गद्य की इस साहित्यिक विधा को 'Essai' नाम दिया, जिसका अर्थ प्रयास करना था। इस विधा की विषयवस्तु के सम्बन्ध में वह कहा करता था—'I am myself the subject of my book'. (अपने द्वारा रचित पुस्तक की विषयवस्तु मैं स्वयं हूँ)। विलियम हडसन का कथन है—'वास्तविक essay में लेखक के व्यक्तित्व की झलक दिखाई पड़ती है। यह स्वयं को अभिव्यक्त करने का साहित्य है, treatise और dissertation की रचना यथार्थवादी हो सकती है, लेकिन essay को तो आत्मपरक ही होना चाहिए। निबन्ध एक साहित्यिक रचना है जो विस्तृत लेख से छोटा होता है। शाब्दिक रूप में इसका अर्थ कोशिश या प्रयास होता है।

Q.8. Describe the various aspects of periodical essays.

नियतकालिक निबन्धों के विभिन्न पहलुओं का विवरण दीजिए।

Ans. The term 'periodical essays' may be applied to any group of essays that appear serially. Charles Dickens once referred to himself as a periodical essayist. Various twenty-first century columnists whose syndicated work appears with some frequency might be given this designation. The term 'periodical essay' appears to have been first used by George Colman the Elder and Bonnell Thornton in their magazine 'Connoisseur' (1754-56).

The confluence of three separate cultural developments appears to have caused the emergence of periodical essay early in the eighteenth century. The first of these was the rise of publications that conveyed news, commentary and political propaganda. Second cause was governmental licensing control over publishing had been allowed to lapse, and lastly, at the beginning of eighteenth century a variety of publications were serving a wide reading audience.

शब्दावली 'periodical essays' या 'नियतकालिक निबन्धों' का प्रयोग उन निबन्ध समूहों के लिए किया जा सकता है जो धारावाहिक रूप में प्रकाशित किए जाते हैं। एक बार चार्ल्स डिकन्स ने स्वयं को धारावाहिक निबन्धकार कहा था। इक्कीसवीं शताब्दी के अनेक स्तम्भकार लेखक जो व्यावसायिक रूप से धारावाहिक स्वरूप में अपने लेखों का प्रकाशन कराते हैं उनको इस श्रेणी में समाहित किया जा सकता है। Periodical essay की शब्दावली का प्रयोग सर्वप्रथम जॉर्ज कोलमैन द ऐल्डर और बोनेल थॉर्न्टन ने अपनी पत्रिका 'Connoisseur' में 1754 से 1756 के बीच किया था।

अठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में नियतकालिक निबन्ध के सांस्कृतिक विकास में तीन पृथक-पृथक कारकों का योगदान रहा जिनका आपस में सम्मिलन हो गया। इनमें पहला कारक प्रकाशन क्षेत्र का उत्थान था, जिस कारण समाचार, टीका-टिप्पणी व राजनीतिक प्रचार का विस्तार हो सका। दूसरा कारक था सरकार द्वारा प्रकाशन से लाइसेन्स नियमावली को समाप्त करना और अन्त में अठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दौर में विभिन्न प्रकाशनों ने पाठकों की संख्या में बढ़ोतरी करने का कार्य किया।

Q.9. What is meant by formal essay? Discuss.

औपचारिक निबन्ध का क्या तात्पर्य है? विवेचना कीजिए।

Ans. The formal essay is a well-ordered kind of composition. In its own way it is as much a work of art as a picture is. Like a picture it must have unity of design, proportion of parts, and

consistency of colouring. Mostly narrative and descriptive type of essays are included in this genre. But essays of expository and argumentative nature are generally excluded from this species.

A formal essay is a piece of writing that informs or persuades its audience. There are other kinds of essays. For example, the narrative essay relays a story with a moral or lesson. The personal essay illustrates the writer's opinion on a topic. A formal essay is more objective than the narrative or personal essay because it is usually based on provable facts and examples.

A formal essay is commonly a piece of non-fiction writing that states a thesis and provides evidence to back it up. This type of essay is assigned to high school and college students in language arts classes as part of their writing education.

औपचारिक निबन्ध सुव्यवस्थित प्रकार की रचना होती है। यह उतनी ही कला का कार्य होता है जितनी कला की आवश्यकता किसी चित्र का आलेख बनाने में होती है। चित्र के समान ही इस विधा में अभिकल्पना की एकरूपता होनी चाहिए, अंगों में सामंजस्य (अनुपात) होना चाहिए और रंगों की समरूपता व नियमितता होनी चाहिए। अधिकांशतः विवरणात्मक व वर्णनात्मक प्रकार के निबन्धों को इस श्रेणी में रखा जाता है। लेकिन व्याख्यात्मक निबन्धों व तार्किक एवं युक्तियुक्त विषयों से सम्पन्न निबन्धों को प्रायः इस श्रेणी से बाहर ही रखा जाता है।

औपचारिक निबन्ध किसी निबन्ध का ऐसा प्रकार है जो पाठक को किसी विषय की सूचना देता है या अवगत कराता है। अन्य प्रकार के भी निबन्ध होते हैं। उदाहरण के लिए विवरणात्मक निबन्ध किसी कहानी का विवरण देता है जिसमें कोई नैतिकता या शिक्षा होती है। व्यक्तिगत निबन्ध में लेखक किसी विषय पर अपनी निजी राय व्यक्त करता है। औपचारिक निबन्ध विवरणात्मक या निजी निबन्ध के सापेक्ष, अधिक वस्तुनिष्ठ होता है क्योंकि यह प्रायः प्रमाणित करने योग्य तथ्यों व उदाहरणों पर आधारित होता है।

औपचारिक निबन्ध प्रायः कथासाहित्य से अलग प्रकार का लेखन होता है जिसमें किसी विषय या धारणा के बारे में बताया जाता है और उसके समर्थन में प्रमाण दिए जाते हैं। इसी प्रकार के निबन्ध को हाईस्कूल और कॉलेज के छात्रों को भाषा के अन्तर्गत लेखन कार्य के रूप में करने को दिया जाता है। औपचारिक निबन्धों का आकार भिन्न-भिन्न हो सकता है।

Q.10. Discuss about the format required for a formal essay?

औपचारिक निबन्ध में आवश्यक प्रारूप की विवेचना कीजिए।

Ans. A formal essay contains an introduction, body paragraphs, and a conclusion. The introduction is the first paragraph of a formal essay. It may have three things. The first item is the hook, the part that grabs reader's attention. Statistics, quotations from famous people or strong questions are included in the device of hook. After the hook, we should have two or three sentences of background information on our topic. Our introduction paragraph should end with the thesis statement, which is the main idea of our essay. After this follows the body part, which consists of many paragraphs. The essay ends with a concluding sentence or concluding paragraph.

औपचारिक निबन्ध में परिचय, मुख्यभाग और उपसंहार शामिल होते हैं। किसी भी औपचारिक निबन्ध का पहला अनुच्छेद, परिचय का होता है। इसमें तीन तथ्यों का समावेश रहता है। पहले तथ्य के रूप में hook (गिरफ्त में लेना) होता है जो पाठक का ध्यान आकर्षित करता है। सांख्यिकीय आँकड़े, प्रसिद्ध व्यक्ति का कोई उद्धरण या कोई जीवन्त प्रश्न, इस विधा में शामिल हैं। Hook के बाद दो या तीन वाक्यों में, निबन्ध की पृष्ठभूमि का उल्लेख रहता है। परिचय के अन्तिम भाग में निबन्ध की धारणा सम्बन्धी कथन होना चाहिए जो हमारे निबन्ध का वर्ण्य विषय है।

इसके बाद मुख्य विषय का समावेश किया जाता है जो body part के रूप में जाना जाता है। इसमें अनेक अनुच्छेद होते हैं। यही निबन्ध का मुख्य भाग होता है। अन्त में निबन्ध की समाप्ति उपसंहार से की जाती है जिसमें निबन्ध का समापन एक वाक्य या एक अनुच्छेद में किया जा सकता है।

Q.11. What is personal essay? Discuss.

व्यक्तिगत निबन्ध क्या है? विवेचना कीजिए।

Ans. The genre of essay is commonly used by diplomats and shatesmen to elaborate their personal view.

A personal essay is a piece of writing that serves to describe an important lesson gathered from a writer's life experiences. The essay often describes a significant event from a first-person perspective, and can be done in various writing styles, like a formal essay or as creative non-fiction. Personal essays usually have a conversational tone that creates a connection with the reader. This type of essay can be inspiring and uplifting.

निबन्ध की इस विधा का प्रयोग अधिकांशतः राजनयिकों व राजनेताओं द्वारा अपनी व्यक्तिगत विचारधारा को बड़े पैमाने पर विस्तार देने के लिए किया जाता है।

व्यक्तिगत निबन्ध लेखन का ऐसा भाग है जो लेखक के जीवन के अनुभवों का विवरण प्रस्तुत करता है। इस प्रकार के निबन्ध में उत्तम पुरुष में प्रायः किसी महत्वपूर्ण घटनाक्रम का सुनियोजित रूप से वर्णन किया जाता है। औपचारिक निबन्ध या अकथनात्मक सृजन की भाँति कई प्रकार की शैलियों में भी इसका वर्णन कर सकते हैं। इस प्रकार के निबन्ध को परम्परागत शैली में लिखा जाता है जो स्वयं को पाठक से एकाकार कर लेता है। इस प्रकार का निबन्ध प्रेरणास्पद हो सकता है, साथ ही जीवन को उच्च आयामों का स्पर्श कराने वाला भी।

SECTION-C LONG ANSWER TYPE QUESTIONS

Q.1. How many elements do you find in a short story device of literature? Elaborate each of them.

साहित्य की विधा लघुकथा में कितने तत्त्वों का समावेश रहता है? सभी का विस्तृत विवरण दीजिए।

Or What are the elements of a short story?

(2021)

लघुकथा के क्या तत्त्व हैं?

Ans. Following are the main elements of a short sotry :

- 1. Characterisation :** It is often listed as one of the fundamental elements of fiction. A character is a participant in the short story, and is usually a person, but may be any personal identity, or entity whose existence originates from a fictional work or performance.

It is the information the author gives the reader about the characters who are mentioned direct or indirect in the narration of the story.

Characters are of four following types :

- (i) Static :** These type of characters are often stereotypes, have one or two characteristics that never change that are emphasized *e.g.*, brilliant detective, drunk, scrounger, cruel stepmother, etc.
- (ii) Flat Characters :** These are the personalities that are presented only briefly and not in depth.
- (iii) Dynamic :** Many-sided personalities that change, for better or worse, by the end of the story are called dynamic characters.
- (iv) Rounded Characters :** These are many-sided and complex personalities that you would expect of actual human beings.

2. **Setting** : It is the time and location in which a story takes place. For some stories the setting is very important while for others it is not. Setting is done according to:
- (i) **Place** : Where is the action of the story taking place?
 - (ii) **Time** : When is the story taking place? (historical period, time of day, year, etc.)
 - (iii) **Mood or atmosphere** : What feeling is created at the beginning of the story? Is it bright and cheerful or dark and frightening?
 - (iv) **Weather conditions** : Is it rainy, sunny, stormy, etc?
3. **Plot** : It is the storyline and is often listed as one of the fundamental elements of fiction. Plot is what the characters did, said and thought. There are a great variety of plot forms. Some plots are designed to achieve tragic effects, while others to achieve the effect of comedy, romance or satire. It is the sequence of events in a story or play. It is beginning, middle and end. Short story generally has only plot with one setting. Plot has five parts as follows :
- (i) **Introduction** : The beginning of the story where the characters and the setting is revealed.
 - (ii) **Rising Action** : This is where the events in the story become complicated and the conflict in the story is revealed (events between the introduction and climax).
 - (iii) **Climax/Turning Point** : This is the highest point of interest and the turning point of the story. The reader wonders what will happen next; will the conflict be resolved or not?
 - (iv) **Falling Action** : The events and complications begin to resolve themselves. The reader knows what has happened next and if the conflict was resolved or not (events between climax and denouement).
 - (v) **Resolution/Denouement** : This is the final outcome of untangling of events in the story.
4. **Conflict** : It is the opposition of forces which ties one incident to another and makes the plot move further. In short story there may be only one central struggle. The protagonist very suffer external conflict or interconflict. First one is with a force outside while in second one the person struggles within self.

Following are the major types of conflicts :

- (i) **Human vs. Machine** : It places a character against robot forces with artificial intelligence. *I, Robot* (the film) and the *Terminator* series are good examples of this conflict.
- (ii) **Human vs. Self (psychological)** : The leading character struggles with himself/herself; with his/her own soul, ideas of right or wrong, physical limitations, choices, etc.
- (iii) **Human vs. Human (physical)** : The leading character struggle with his physical strength against other men, forces of nature, or animals.
- (iv) **Human vs. Nature** : The leading character struggles the forces of nature.
- (v) **Human vs. Society (social)** : The leading character struggles against ideas, practices, or customs of other people.

- (vi) **Human vs. Supernatural** : The theme that places a character against supernatural forces. *Dracula* and *Christabel* are the type of this. It is also common in comic books.
5. **Theme** : It is author's main idea that he is trying to convey. The theme may be the author's thoughts about a topic or view of human nature. Some simple examples of common themes from literature, TV, and film are :
- Things are not always as they appear to be
 - Love is blind
 - Believe in yourself
 - People are afraid of change
 - Don't judge a book by its cover
 - As you sow, so shall you reap.
6. **Point of View** : It helps in signifying the way a story is told. It is defined as the angle or perspective from which the story is told. Mostly a story is narrated in the third person e.g., *'Tom Jones'* by Fielding, *'War and Peace'* by Tolstoy, *'An Astrologer's Day'* by R.K. Narayan, *'The Selfish Giant'* by Oscar Wilde. Some novels and stories are written in first person e.g., *Moby Dick* by Melville, *'Great Expectations'* by Charles Dickens, *'Pen Pal'* by Srinivas Rao, *'A Special Experience'* by Prem Chand. The second person is not used very often for the narrative point of view. The main character in the story is referred to using the second person pronoun 'you'.

लघुकथा के मुख्य तत्त्व निम्न प्रकार हैं—

- पात्र या चरित्र** : कल्पित कथासाहित्य व लघुकथा में चरित्र-चित्रण को मूल तत्त्वों में शामिल किया जाता है। पात्र ही कहानी का हिस्सा होते हैं। इनके क्रियाकलापों से कहानी आगे बढ़ती है। प्रायः पात्र वास्तविक मानव होते हैं। लेकिन अन्य मानव से विरत प्राणी या वस्तु भी कभी-कभी कहानी के अन्तर्गत पात्र बन जाते हैं जो मनगढ़ंत कार्य से उत्पन्न होते हैं या कार्यव्यापार की परिणति से ऐसा हो सकता है।
इसके अन्तर्गत लेखक पाठक को उन पात्रों का परिचय प्रस्तुत करता है जो कहानी में स्पष्ट रूप से या परोक्ष रूप से प्रकट होते हैं और कहानी को आगे बढ़ाते हैं।
पात्रों के निम्न प्रकार होते हैं—
 - स्थिर पात्र** : रूढ़ पात्र जो एक-दो गुणों से सम्पन्न होते हैं और इनमें कोई बदलाव नहीं आता है; जैसे— जासूस, शराबी, दूसरों की वस्तु हड़पने वाला, दुष्ट सौतेली माँ आदि।
 - एक आयामी पात्र** : विशिष्टताविहीन उथले चरित्र से सम्पन्न पात्र।
 - गतिशील पात्र** : ऊर्जावान पात्र जो किसी अच्छाई या बुराई के परिणामस्वरूप कहानी के अन्त में अपने व्यक्तित्व में आमूल-चूल परिवर्तन ले आता है।
 - बहुआयामी पात्र** : नानाविध गुणों से सम्पन्न, जो मानव होने के नाते होने चाहिए।
- मंचसज्जा (Setting)** : जिस समय व जिन परिस्थितियों में कहानी का अस्तित्व रहा होता है या दर्शाना होता है उसके अनुरूप पृष्ठभूमि की तैयारी को मंचसज्जा या सैटिंग कहा जाता है। कई कहानियों में तो मंचसज्जा का महत्त्व कई गुना बढ़ जाता है। विशेष रूप से ऐतिहासिक या युद्ध की पृष्ठभूमि वाली कहानियों में जबकि अन्य कहानियों में इसका स्थान गौण ही रहता है।

मंचसज्जा के अन्तर्गत निम्नांकित को रखा जाता है—

- (i) स्थल : भौगोलिक पृष्ठभूमि जहाँ पर कार्यव्यापार सम्पन्न होता है।
 - (ii) समय : ऐतिहासिक कालखण्ड की अवधि समय, दिन व वर्ष।
 - (iii) परिवेश या माहौल : कहानी के शुरुआती दौर में वातावरण। वह गमगीन है या खुशनुमा है आदि।
 - (iv) मौसम की दशा : बरसात, तेज धूप, तूफानी हवाएँ या कुछ और।
3. कथानक : इसके अन्तर्गत कहानी का सिलसिलेवार विवरण होता है और इसका प्रायः उपन्यास या कथासाहित्य लघुकथा का सर्वप्रमुख तत्त्व माना जाता है। पात्रों द्वारा जो किया गया, जो कहा गया और जो सोचा गया, वह सब कथानक में समाहित है। कथानकों के स्वरूप नानविध रूपों में हो सकते हैं। कुछ कथानक कारुणिक दृश्य उपस्थित करते हैं तो अन्य सुखानुभूति से पाठक को सराबोर कर देना चाहते हैं। पाठक के समक्ष सुखान्तिका, रोमांस या व्यंग्य का आविर्भाव हो सकता है। कहानी को सिलसिलेवार आगे बढ़ाना व घटनाओं का जारी रहना ही कथानक है। इसका आरम्भ, मध्य व अन्त निश्चित होता है। प्रायः लघुकथा में एक ही कथानक रखा जाता है और रंगमंच भी उसके अनुरूप एक ही होता है। कथानक के पाँच भाग होते हैं—
- (i) आरम्भ : कहानी की शुरुआत जब पात्र व रंगमंच की प्रतीति होती है।
 - (ii) आरोहण : कार्यव्यापार आगे बढ़ता है और उलझनें आकार लेने लगती हैं।
 - (iii) चरम : कहानी अपने चरम पर पहुँचती है जहाँ से गहरा बदलाव आता है।
 - (iv) अवरोहण : कहानी की सनसनी में उतार आता है और वह समाधान की ओर बढ़ती है।
 - (v) नियताप्ति/फलागम : कहानी के समस्त घटनाचक्र व कार्यव्यापार का यह निचोड़ होता है और कहानी अपना उद्देश्य प्राप्त कर पूर्णता को प्राप्त हो जाती है।
4. द्वन्द्व : यह स्थापित शक्तियों व बलों के खिलाफ कार्य करता है। जिस कारण एक घटनाचक्र अगले घटनाचक्र से जुड़ा जाता है और कथानक आगे बढ़ता जाता है। लघुकथा में प्रायः एक ही मूल द्वन्द्व दिखाया जाता है। नायक आन्तरिक द्वन्द्व से घिरा होता है या वह बाहरी अवरोधों का सामना कर रहा होता है। आन्तरिक द्वन्द्व की स्थिति में वह स्वयं से ही कशमकश करता है जबकि बाहरी द्वन्द्व के अवरोध निम्नांकित हो सकते हैं—
- (i) मानव बनाम तकनीक बनावटी बुद्धि वाले रोबोट की ताकत के विरुद्ध पात्र संघर्ष करता है। I. Robot तथा Terminator series इसी तरह के संघर्ष के उदाहरण हैं।
 - (ii) मानव बनाम स्वयं मनोवैज्ञानिक पात्र स्वयं से संघर्ष करता है, अपनी आत्मा से, सही या गलत विचारों से, शारीरिक सीमाओं और चयन आदि से संघर्ष करता है।
 - (iii) मानव बनाम मानव मुख्य पात्र अपने शारीरिक बल से अन्य व्यक्तियों, प्राकृतिक शक्तियों या पशुओं का सामना करता है।
 - (iv) मानव बनाम प्रकृति मुख्य पात्र प्राकृतिक ताकतों का सामना करता है।
 - (v) मानव बनाम समाज (सामाजिक) मुख्य पात्र अन्य लोगों के विचारों, आदतों या रिवाजों के विरुद्ध बोलता है।
 - (vi) मानव बनाम अलौकिक तत्त्व अलौकिक शक्तियों के विरुद्ध पात्र संघर्ष करता है। ड्रैकुला और क्रिस्टेबिल इसी तरह के पात्र हैं।
5. प्रतिपाद्य विषय : यही लेखक का वह विचार होता है जिसके लिए कहानी गढ़ी गयी है। प्रतिपाद्य विषय की उत्पत्ति लेखक के विचारों का परिणाम होती है। कुछ लोक प्रचलित विचार बिन्दु निम्नांकित रूप में हो सकते हैं—
- (i) चीजें जैसी प्रतीत होती हैं वैसी होती नहीं। या, हर चमकती चीज सोना नहीं होती है।
 - (ii) प्यार अंधा होता है।
 - (iii) अपना हाथ जगन्नाथ।

- (iv) नए आविष्कार का जन्म अभाव से होता है।
- (v) लैला की खूबसूरती मजनू की निगाह से देखो।
- (vi) जैसी करनी वैसी भरनी।

6. **दृष्टिकोण** : यह कहानी कहने के ढंग का निरूपण करने में सहायता करता है। यह कहानी के कथानक के कोण या भाव को परिभाषित करता है। किसी कहानी को उत्तम पुरुष (मैं), मध्यम पुरुष (तुम) या अन्य पुरुष (वह) वृत्तान्त के रूप में सुनाया जा सकता है। प्रेमचन्द की कहानी 'अनुभव' उत्तम पुरुष में लिखी गयी है जिसको स्वतन्त्रता सेनानी की पत्नी स्वयं सुना रही है। अधिकांशतः कहानी अन्य पुरुषों में लिखी जाती है; जैसे—फील्डिंग ने 'Tom Jones' को तथा टॉलस्टॉय ने 'War and Peace' को अन्य पुरुष में ही लिखा है। आर०के० नारायण की 'An Astrologer's Day' एवं ऑस्कर विल्डे की 'The Selfish Giant' भी ऐसी ही कहानियाँ हैं। कुछ उपन्यास और कहानियाँ उत्तम पुरुष में लिखी गई हैं; जैसे—Melville की 'Moby Dick', Charles Dickens की 'Great Expectations', Srinivas Rao की 'Pen Pal', Prem Chand की 'A Special Experience' विवरणात्मक दृष्टि से मध्यम पुरुष प्रायः प्रयोग नहीं किया जाता। कहानी का मुख्य पात्र सर्वनाम 'You' मध्यम पुरुष (Second Person) को बताता है।

Q.2. What is autobiography? How will you distinguish it from other similar genres?

आत्मकथा क्या है? अन्य समान विधाओं से इसमें आप किस प्रकार प्रभेद करेंगे?

Ans. In an autobiography, the author writes the story of his own life and achievements. Every man's life is best written by himself so autobiography is preferred to biography.

The word 'autobiography' has been derived from Greek language. Three Greek words give the meaning to this word as-*autos*: self, *bios*: life, *graphein*: to write, this way meaning the story of a person's life written by himself. In terms of literature it covers a broader range. This is why, we have the autobiographical element in literature.

Roy Pascal differentiates autobiography from the periodic self-reflective mode of journal or diary writing by noting that autobiography is a review of a life from a particular moment in time, while the diary moves through a series of moments in time. The memoir form is closely associated with autobiography but it tends to focus less on the self and more on others during the autobiographer's review of their own life.

Autobiographical works are by nature subjective. The inability or unwillingness of the author to accurately recall memories has in certain cases resulted in misleading or incorrect information.

Some well-known autobiographies, which influenced millions and millions people throughout the world are '*Mein Kampf*' by Adolf Hitler, '*My Experiments with Truth*' by Mahatma Gandhi, '*An Autobiography*' by Jawaharlal Nehru. Benjamin Franklin and Sir Winston Churchill also wrote autobiographies, which are read with pride in literary circles.

आत्मकथा में रचनाकार अपने जीवन का स्वयं विवरण प्रस्तुत करता है जिसमें उसकी उपलब्धि अर्थात् सफलताओं व असफलताओं का यथावत विवरण रहता है। किसी व्यक्ति के जीवनचक्र को स्वयं उसके द्वारा ही सर्वश्रेष्ठ रूप में लिखा जा सकता है। यही कारण है कि जीवनी (biography) की अपेक्षा आत्मकथा (autobiography) को अच्छा माना गया है और पसन्द किया जाता है।

शब्द autobiography की व्युत्पत्ति यूनानी भाषा से हुई है, जिसका अर्थ होता है the story of a person's life written by himself. साहित्यिक क्षेत्र में इसका फलक अधिक बढ़ा हो जाता है। इसीलिए साहित्य में autobiographical element पाया जाता है।

रॉय पासकल आत्मकथा का प्रभेद दैनन्दिनी या डायरी से करते हुए कहते हैं कि डायरी में प्रतिदिन के क्रियाकलापों को लेखनबद्ध किया जाता है जबकि आत्मकथा किसी विशेष कालखण्ड के जीवन का चित्रांकन करता है। डायरी में सिलसिलेवार अभिलेख दर्ज किया जाता है। संस्मरण भी आत्मकथा से काफी सादृश्यता रखता है लेकिन इसमें स्वयं के बारे में विवरण न देकर आत्मकथाकार आस-पास के परिवेश के बारे में बताता है।

आत्मकथा का लेखनकार्य स्वाभाविक रूप में अपने अनुभवों पर आधारित होता है। लेकिन कभी-कभी लेखक अपने कुछ क्रियाकलापों को बताने का इच्छुक नहीं होता है या अपनी अयोग्यता समझता है, ऐसी स्थिति में परिणाम यह होता है पाठक को अधूरी जानकारी या गलत जानकारी प्राप्त हो जाती है।

कुछ कालजयी आत्मकथाएँ जिन्होंने लाखों-लाख लोगों के जीवन को अनुप्राणित कर आलोकित कर दिया हैं—Mein Kampf (मीन कैम्फ = मेरा संघर्ष), जिसकी रचना एडोल्फ हिटलर ने की, My Experiments with Truth (सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा), इसको गांधी जी ने लिखा, An Autobiography जवाहरलाल नेहरू ने लिखी। बैजामिन फ्रैंकलिन तथा सर विंस्टन चर्चिल ने भी आत्मकथाएँ लिखीं, जिनकी सराहना की गई और साहित्यिक जगत् में गर्व के साथ उनको पढ़ा जाता है।

Q.3. Many fictional works of travel literature are based on factual journeys. Discuss.

कथासाहित्य के अन्तर्गत अनेक यात्रावृत्तान्त वास्तविक यात्राओं पर आधारित हैं। विवेचना कीजिए।

Ans. In 1589, Richard Hakluyt (1552-1616) published 'Voyages', a foundational text of travelogue literature genre. Travel literature became popular in China during the Song Dynasty (960-1279) of medieval China, and was often written in narrative, prose, essay and diary form.

Fictional travelogues make up a large proportion of travel literature. Many fictional works of travel literature are based on factual journeys as Joseph Conrad's 'Heart of Darkness' and presumably Homer's Odyssey. While other works though based on imaginary and even highly fantastic journeys nevertheless contain factual elements, as Dante's Divine Comedy, Jonathan Swift's Gulliver's Travels, Voltaire's Candide, Samuel Johnson's The History of Rasselas: Prince of Abissinia. Very little literature is available on Indian travelogue. The most dignified and blazing travelogue from Indian subcontinent is worth quoting here. It is a long inspiring journey made by Mahapandit Rahul Sankrityayan himself to Russia, China and Tibet. One can peep into his wide experiments, knowledge and philosophy in the pages of 'Volga se Ganga' (1944), a journey from Volga to Ganga. This is the most enhancing book on travel account ever written on this planet, the earth. And we Indians can boast ourselves to have such a rich and encouraging literature on travelogue.

वर्ष 1589 ई० में Richard Hakluyt (1552-1616) ने 'Voyages' (समुद्री यात्राएँ) का प्रकाशन किया जो travelogue साहित्य विधा संस्थापक पादय सामग्री का एक अनुपम नगीना माना गया। चीन के मध्यकालीन कालखण्ड में सौंग वंश के शासनकाल में यायावरी साहित्य अत्यधिक लोकप्रिय हुआ। यह साहित्य प्रायः कथा आख्यान के रूप में, विवरणात्मक रूप में, निबन्धात्मक रूप में और कभी-कभी डायरी लेखन के रूप में भी होता था। कथासाहित्य के अन्तर्गत यात्रा वृत्तान्तों को बड़े पैमाने पर लिखा गया। अनेक ऐसी साहित्यिक भावभूमि का आधार वास्तविक यात्राओं का विवरण था।

इस प्रकार के यायावरी साहित्य में जोसफ कोनरैड की रचना 'Heart of Darkness' (अंधकार में डूबा मन) और होमर की कालजयी कृति 'Odyssey' (भ्रमणकथा) शामिल हैं। अन्य रचनाओं में कल्पना का पुट कुछ अधिक है और खाली पुलाव पकाने वाली बातें भी हैं। तथापि उनमें सत्यता का अंश भी शामिल है, ऐसी रचनाओं में शामिल हैं—दान्ते की 'Divine Comedy', जोनाथन स्विफ्ट की 'Gulliver's Travels', वॉल्टेयर की 'Candide', सैमुअल जॉनसन की The History of Rasselas: Prince of Abissinia. भारत में यात्रा वृत्तान्त पर बहुत ही कम साहित्य मौजूद है। लेकिन भारत के एक यात्रा वृत्तान्त का उल्लेख करना यहाँ पर समीचीन रहेगा, जिसका विश्वसाहित्य की कोई भी कृति मुकाबला नहीं कर सकती है। इसमें रोंगटे खड़े कर देने वाली प्रेरणादायक यात्रा का विवरण घनीभूत रूप से विद्यमान है, इस यात्रा को महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने अपनी अदम्य इच्छाशक्ति के सहारे रूस, चीन और तिब्बत के इलाकों में होकर पर किया था। उनकी यात्राओं के गहन अनुभव, ज्ञान के उन्मेष और जीवन दर्शन की व्याख्या को बोलगा से गंगा (1944) नामक यात्रा वृत्तान्त में देखा-समझा जा सकता है। किसी भी कालखण्ड में इस भू-मण्डल पर लिखी गई यह सर्वोत्कृष्ट कृति है और केवल इसी एक रचना को आधार बनाकर हम भारतीय अपने आप में गर्व महसूस कर सकते हैं कि यहाँ की माटी में इतने अच्छे और उत्साही यायावरी साहित्य का सृजन हुआ।

Q.4. What are the elements of a short story?

लघु कथा के आवश्यक तत्त्व/विशेषताएँ क्या हैं?

Ans. There are some characteristic elements which are essential to make a short story good. They are as follows :

- 1. Short story should be interesting :** A short story should be so much interesting that it can draw the attention of the readers and can entertain them which is the primary aim of a short story. By ridiculing human follies, it should convey some moral message. But the manner with which it deals with human follies should be interesting enough. If the short story is interesting, it will make the reader absorb and thus it enables the readers to forget all the problems and worries of life.
- 2. Brevity :** One of the important elements of a short story is brevity. A short story is limited to a little space and little time. Infact brevity is the key-note of a short story. It can be read at a single sitting. There should be used absolute economy of means and it should avoid everything that is superfluous. There is to be no word which is unable to move the action of the story.
- 3. Its subject :** Short story may be written on any subject. Everything between earth and heaven is suitable for the subject of a short story. It's subject must be developed in an effective manner within the short space. It must be complete without any suggestion. Anything that is not directly connected with its subject should be avoided.
- 4. Single purpose :** There must be single aim or purpose of the short story. The attention must be focused throughout upon the single purpose of the story and everything not directly linked with the purpose or aim must be rigorously excluded.
- 5. Characterization :** Due to the limit of space, the evolution of characters is not possible in the short story. The writer can not portray a character in full. Only some aspects and certain features of a character are represented in a short story.
- 6. A few characters :** The introduction of a dozen or half a dozen characters is not possible in a short story. If there are many characters in the story; it will then result in over crowding. Consequently none of the characters will be developed in an effective manner.

7. **Singleness of effect** : It must also have singleness of effect. All the events, all the incidents, all the characters of the story must be invented to create that pre-conceived effect. By focusing the attention on the one point, a powerful effect must be created on the reader.
8. **Dialogue** : The place of dialogue is very significant in the story. It is dialogues that add to the interest of the story and make it easy to read as well as interesting. Through dialogue we get an idea about the character of an individual. But the dialogues must be brief and to the point. It should avoid long speeches.
9. **Suitable atmosphere** : One of the important elements of the short story is its suitable atmosphere. The atmosphere must be according to the story. If there is a tragic story, the atmosphere may be of tragic gloom. If the story is detective, the atmosphere may be of mystery and horror. In all, a suitable atmosphere adds charm to the story.
10. **Language** : The language of the short story should be free from ambiguity. It should be easy, simple and direct to the point. The words must be used economically. Every word and sentence must take the action of the story a step further. There should be no place of words and sentences which are superfluous.

कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जो लघु कथा को अच्छा बनाने के लिये आवश्यक हैं। वे निम्नलिखित हैं—

1. **लघु कथा रुचिप्रद होनी चाहिए**—लघु कथा इतनी रुचिप्रद हानी चाहिए कि यह पाठक का ध्यान आकर्षित कर सके एवं उनका मनोरंजन कर सके जो कि लघु कथा का प्राथमिक उद्देश्य है। मानवीय कमियों का उपहास करके इसे नैतिक संदेश प्रदान करना चाहिए। किन्तु वह पद्धति जिसके द्वारा यह मानवीय कमियों के साथ व्यवहार करता है काफी रुचिप्रद होनी चाहिए। यदि लघु कथा रुचिप्रद है, तो पाठक को ध्यानमग्न कर देगी तथा इस प्रकार यह पाठक को जीवन की सभी समस्याओं एवं चिन्ता को भुलाने में सक्षम बना देती है।
2. **संक्षिप्तता**—लघु कथा के महत्वपूर्ण तत्वों में से एक है उसकी संक्षिप्तता। एक लघु कथा कम समय एवं कम स्थान तक सीमित होती है। वास्तव में संक्षिप्तता लघु कथा की कुंजी है। इसे एक बार बैठकर पढ़ा जा सकता है। इसमें शब्दों की सम्पूर्ण मितव्ययिता प्रयुक्त होनी चाहिए तथा इसे उन सभी वस्तुओं से बचना चाहिए जो अनावश्यक हैं। इसमें ऐसा कोई शब्द नहीं होना चाहिए जो कहानी को आगे बढ़ाने में अयोग्य हो।
3. **इसका विषय**—लघु कथा को किसी विषय पर लिखा जा सकता है। पृथ्वी तथा स्वर्ग के मध्य प्रत्येक वस्तु लघु कथा की विषय-वस्तु के लिये उपयुक्त है। इसकी विषय-वस्तु प्रभावशाली रूप में विकसित होनी चाहिए। यह बिना किसी सुझाव के पूर्ण होनी चाहिए। कोई भी वस्तु, जो इसके विषय से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित है, से बचना चाहिए।
4. **एकाकी उद्देश्य**—लघु कथा का एकाकी उद्देश्य होना चाहिए। ध्यान पूर्णतया कहानी के एकाकी उद्देश्य पर केन्द्रित होना चाहिए तथा प्रत्येक वस्तु जिसका उद्देश्य से प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं है उसे निकाल देना चाहिए।
5. **पात्र-चित्रण**—स्थान की सीमा के कारण, लघु कथा में चरित्रिक विकास सम्भव नहीं है। लेखक एक पात्र को पूर्ण रूप से चित्रित नहीं कर सकता केवल पात्र के कुछ पहलू और निश्चित गुणों को लघु कथा में प्रस्तुत किया जाता है।
6. **कुछ पात्र**—लघु कथा में एक दर्जन अथवा आधा दर्जन पात्रों का परिचय सम्भव नहीं है। यदि कहानी में अनेक पात्र होंगे, तो इसका परिणाम अत्यधिक भाड़ में होगा। परिणामस्वरूप किसी भी पात्र को प्रभावशाली तरीके से विकसित नहीं किया जा सकेगा।
7. **एकाकी प्रभाव**—इसमें प्रभाव की एकाकीपन भी होना चाहिए। उस एकाकी प्रभाव की रचना करने के लिये कहानी की सभी घटनाओं, क्षणों और सभी पात्रों का अविष्कार करना चाहिए। एक बिन्दु पर ध्यान केन्द्रित करके पाठकों पर एक प्रभावशाली प्रभाव उत्पन्न करना चाहिए।

8. **संवाद**—कहानी में संवाद का स्थान अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। यह संवाद ही हैं जो कहानी की रुचि को बढ़ाते हैं तथा इसे पढ़ने में सरल साथ ही साथ रुचिपूर्ण बनाते हैं। संवाद के माध्यम से हम व्यक्ति के चरित्र के विषय में अनुमान लगाते हैं किन्तु संवाद संक्षिप्त एवं बिन्दु पर केन्द्रित होने चाहिए। इसे लम्बे संवादों से भी बचना चाहिए।
9. **उपयुक्त वातावरण**—लघु कथा के महत्त्वपूर्ण गुणों में से एक है इसका उपयुक्त वातावरण कहानी के अनुसार होना चाहिए। जैसे कि यदि दुखद कहानी हैं तो वातावरण त्रासदीपूर्ण होना चाहिए। यदि कहानी जासूसी है तो वातावरण रहस्य एवं भययुक्त हो सकता है। कुल मिलाकर उपयुक्त वातावरण कहानी के आकर्षण को बढ़ाता है।
10. **भाषा**—लघु कथा की भाषा अस्पष्टता से मुक्त होनी चाहिए। यह सरल एवं साधारण होनी चाहिए तथा सीधे लक्ष्य पर होनी चाहिए। शब्दों का कम से कम प्रयोग होना चाहिए। प्रत्येक शब्द एवं वाक्य कहानी के घटनाक्रम को एक कदम आगे बढ़ाना चाहिए। उन शब्दों तथा वाक्यों का कोई स्थान नहीं होना चाहिए जो अनावश्यक हो।

Q.5. Define Autobiography. What are its main characteristics?

आत्मकथा से क्या आशय है ? इसकी विशेषताएँ बताइए।

Ans. An autobiography is an account of one's own self. Generally it presents a continuous narrative of major events in the life of an author. The word 'Autobiography' is composed of two words; 'Auto' means self and 'Biography' means 'life-story'. Therefore an autobiography is a story of experiences and achievements of writer's own life. It must suffer a constitutional flaw because it must come to an end before the author's death. Yet Dr. Johnson preferred autobiography to biography. He is of the opinion that 'no man's life could be better written than himself.' Longfellow says, 'Autobiography is a product of first hand experience, Biography of second hand knowledge.' An autobiography presents personal experiences directly, unhampered by the artificiality of impersonal forms of an author. The psychoanalytic critics consider writing of an autobiography as writer's attempt to 'reconstruct the self.'

The earliest example of the full and candid expression of the self in Europe is found in St. Augustine's autobiography entitled *Confessions* in 5th century. Rousseau's autobiography published under the same title in 18th century became a model for the later writers. Some of the permanent contributions to English literature are the autobiographies of David Hume, Edward Gibbon, Benjamin Franklin, Leigh Hunt, H.G. Wells, Winston Churchill and Rudyard Kipling etc. Mahatma Gandhi's *My Experiments with Truth* and Pt. Jawahar Lal Nehru's *Discovery of India* are Indian autobiographies of great literary significance.

Main Features of an Autobiography are given below—

1. An autobiography is a record of experiences and achievements of the writer's own self. It narrates the struggles and deeds which helped him to achieve name and fame in life.
2. An autobiography should be entirely frank, honest and truthful presentation of the writer's inner life as well as public career.
3. It is a string of trying situations that a writer has experienced in his life. But the writer depicts these situations in an exciting and lively manner.
4. It has a clear and characteristic style that gives a well-planned and convincing description of the personality of the writer and his works which earned him fame.
5. An autobiography should have a touch of humour in it. A good autobiographer is one who does not even hesitate to cut jokes on himself in the interest of truthful and honest presentation.

आत्मकथा किसी व्यक्ति का स्वयं का विवरण है। सामान्यतः यह किसी लेखक के 'जीवन' की महत्वपूर्ण घटनाओं का निरन्तर वर्णन प्रस्तुत करती है। Autobiography शब्द दो शब्दों से बना है। 'Auto' जिसका अर्थ 'स्वयं' होता है तथा 'Biography' जिसका अर्थ जीवनी होता है। अतः आत्मकथा लेखक के स्वयं के जीवन के अनुभवों एवं उपलब्धियों की कहानी है। इसमें (आत्मकथा) में एक संरचनात्मक दोष है क्योंकि यह लेखक की मौत से पहले ही पूर्ण हो जाती है, फिर भी डॉ० जॉनसन ने जीवन कथा (Biography) की अपेक्षा आत्मकथा को ज्यादा श्रेष्ठ माना। उसका मानना है कि 'किसी व्यक्ति के जीवन के बारे में उसके स्वयं से अच्छा किसी के द्वारा नहीं लिखा जा सकता।' लॉगफैलो कहता है 'आत्म कथा प्रथम (First hand) अनुभव का परिणाम है जीवन-कथा पुराने (Second-hand) ज्ञान का परिणाम है।' आत्मकथा लेखक की व्यक्तित्व शून्य आकृतियों की कृत्रिमता द्वारा बिना बाधक बने सीधे-तौर पर व्यक्तिगत अनुभवों को पेश करती है। मनोविश्लेषक समालोचक आत्मकथा लिखने को लेखक का 'स्वयं का पुननिर्माण' करने का प्रयास मानते हैं।

यूरोप में स्वयं की परिपूर्ण तथा स्पष्ट अभिव्यक्ति का सबसे पहला उदाहरण 5वीं सदी में सेन्ट ऑगस्टाइन की Confessions नाम की आत्मकथा में पाया जाता है। 18वीं सदी में इसी नाम से प्रकाशित रूसों की आत्मकथा बाद के लेखकों के लिए एक आदर्श बनी। अंग्रेजी साहित्य में डेविड ह्यूम, एडवार्ड गिबन, बेन्जामिन फ्रैन्कलीन, ले हन्ट, एच०जी० वैल्स विन्सटन चर्चिल तथा रूडयार्ड किपलिंग की आत्मकथाएँ अंग्रेजी साहित्य की स्थायी देन हैं। महात्मा गांधी की 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' एवं पं. जवाहर लाल नेहरू की 'भारत की खोज' बहुत ही साहित्यिक महत्व की भारतीय आत्मकथाएँ हैं।

आत्मकथा की मुख्य विशेषताएँ

1. आत्मकथा लेखक के खुद के अनुभवों तथा उपलब्धियों का लेख प्रमाण (record) है। यह उन कृत्यों एवं संघर्षों का वर्णन करती है जिन्होंने उसे जीवन में नाम व प्रसिद्धि अर्जित करने में मदद की।
2. आत्मकथा में लेखक के आंतरिक जीवन के साथ उसके सामाजिक चरित्र (Public Career) का भी पूर्णतः स्पष्ट, ईमानदारी तथा सच्ची प्रस्तुतिकरण होना चाहिए।
3. यह एक कष्टकारी परिस्थितियों का धागा है जिनका लेखक ने अपने जीवन में अनुभव किया है।
4. इसकी एक स्पष्ट एवं विशिष्ट शैली होती है जो लेखक के व्यक्तित्व तथा उसकी कृतियों, जिन्होंने उसे प्रसिद्धि दिलाई, का एक सुनियोजित और विश्वसनीय विवरण प्रदान करता है।
5. आत्मकथा में हास्य का पुट होना चाहिए। एक अच्छा आत्मकथा लेखक सच्ची एवं ईमानदार प्रस्तुति करने के लिए यहाँ तक कि अपने आप का मजाक बनाने से भी नहीं हिचकिचाता है।

□

UNIT-III

Prose Devices

SECTION-A (VERY SHORT ANSWER TYPE) QUESTIONS

Q.1. What is the importance of sentence patterns?

वाक्य पैटर्न का महत्त्व क्या है?

Ans. When we are writing an assignment, the pattern and structure of a sentence will be the most important things to consider. In order to make the sentences meaningful and effective, we will have to learn how to make correct sentences using different patterns.

जब हम एक सत्रीय कार्य लिख रहे होते हैं, तो वाक्य के पैटर्न और संरचना पर विचार करने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण चीजें होंगी। वाक्यों को अर्थपूर्ण और प्रभावी बनाने के लिए, हमें सीखना होगा कि विभिन्न पैटर्न का उपयोग करके सही वाक्य कैसे बनाएँ।

Q.2. How many types of imagery are?

चित्र कितने प्रकार के होते हैं?

Ans. There are five most common types of imagery used in creative writing :

1. Visual Imagery, 2. Auditory Imagery, 3. Olfactory Imagery, 4. Gustatory Imagery and 5. Tactile Imagery.

रचनात्मक लेखन में पाँच सबसे सामान्य प्रकार की इमेजरी का उपयोग किया जाता है—

1. दृश्यात्मक छायांकन, 2. श्रवण छायांकन, 3. घ्राण छायांकन, 4. उत्साहपूर्ण छायांकन एवं 5. स्पर्शनीय छायांकन।

Q.3. What is a subject matter?

विषय वस्तु क्या है?

Ans. The subject matter of a story can also help to establish its mood. For example, a story about war is likely to feature a happy mood.

एक कहानी की विषय वस्तु भी उसके मूड को स्थापित करने में मदद कर सकती है। उदाहरण के लिए, युद्ध के बारे में एक कहानी में एक खुश मिजाज होने की संभावना है।

Q.4. What type of device is an analogy?

सादृश्य किस प्रकार का उपकरण है?

Or Define the term 'analogy'.

(2021)

सादृश्य को परिभाषित कीजिए।

Ans. An analogy is a literary device often used in literature and poetry to make connections between familiar and unfamiliar things, suggest a deeper significance, or create imagery in the reader's mind.

एक सादृश्य एक साहित्यिक उपकरण है जिसका उपयोग अक्सर साहित्य और कविता में परिचित और अपरिचित चीजों के बीच संबंध बनाने, गहरे महत्त्व का सुझाव देने या पाठक के दिमाग में कल्पना बनाने के लिए किया जाता है।

Q.5. What do you mean by a plot?

प्लॉट से आप क्या समझते हैं?

Ans. The plot is the story and more specifically, how the story develops, unfolds and moves in time.

कथानक कहानी है और अधिक विशेष रूप से, कहानी कैसे विकसित होती है, सामने आती है और समय के साथ आगे बढ़ती है।

Q.6. What do you refer to 'point of view' as a prose device?

एक गद्य विधा के रूप में 'दृष्टिकोण' से आप क्या समझते हैं?

Ans. Point of view is a prose device which is utilized as a literary device to indicate the angle or perspective from which a story is told. Point of view refers to the 'eyes' of the narrative voice that determine the position or angle of vision from which the story is being relayed. Point of view is one of the most crucial choices made by fiction writers since it governs the reader's access to the story and determines how much the reader is able to know at any given moment with regard to what is taking place in the narrative

दृष्टिकोण (Point of View) एक गद्य विधा है जिसका उपयोग साहित्यिक युक्ति के रूप में कहानी के दृष्टिकोण को इंगित करने के लिए किया जाता है। वास्तव में दृष्टिकोण को आख्यान की आवाज के लिए 'आँखें' कहा गया है जिसके माध्यम से कहानी की स्थिति या उसके दृष्टिकोण का निर्धारण होता है और कहानी आगे बढ़ती जाती है। कहानी-कथा लेखकों के लिए दृष्टिकोण अत्यधिक विशिष्ट पसन्द होती है, क्योंकि यही वह तत्व है जिसके कारण पाठक की पहुँच कहानी तक हो पाती है और इसी से आभास मिलता है कि कहानी तक पाठक की पहुँच किस सीमा तक हो सकी है और आख्यान में क्या घटित हो रहा है।

Q.7. Differentiate among analogy, metaphor and simile.

सादृश्य, रूपक और उपमा में अन्तर बताइए।

Ans. These are all figures of speech which are used to create comparisons between different entities. These literary devices are often confused for each other, though they can be distinguished. A simile utilizes the words 'like' or 'as' to make a comparison. A metaphor uses figurative language to compare two things by stating that one is the other. An analogy creates a comparison with the intent of explanation or indicating a larger point.

ये तीनों ही अलंकार हैं जो भिन्न वस्तुओं के बीच साम्यता बताने का कार्य करते हैं। इन साहित्यिक विधाओं के सम्बन्ध में प्रायः अस्पष्टता बनी रहती है जबकि इनमें अन्तर स्पष्ट किया जा सकता है। उपमा के अलंकार में 'like' या 'as' का उपयोग किया जाता है। रूपक में आलंकारिक भाषा का प्रयोग करते हुए एक वस्तु को दूसरी वस्तु के रूप में स्थापित कर दिया जाता है। सादृश्य में अधिक विस्तार के साथ तुलना की जाती है।

Q.8. Discuss about anecdote as a prose device.

उपाख्यान की एक गद्य विधा के रूप में विवेचना कीजिए।

Ans. A short and interesting story, or an amusing event, often proposed to support or demonstrate some point and to make the audience laugh is termed as an anecdote. Anecdotes can include an extensive range of tales and stories. In fact, it is a short description or an account of any event that makes the reader laugh or bleed over the topic presented for the purpose.

There are several types of anecdotes. Amusing anecdotes are often used in literature, or at such events as family reunions, wedding receptions, and other get-togethers. Teachers tell anecdotes to their students in classrooms about eminent people and celebrities.

एक छोटी व मनोरंजक कहानी जो आश्चर्यजनक घटनाक्रम को दर्शाती है और किसी बिन्दु के समर्थन में तथ्य प्रस्तुत करती है जिस कारण दर्शक-दीर्घा में हास्य का संचार हो जाता है, को उपाख्यान कहा जाता है। आख्यान के अन्तर्गत बड़ी संख्या में विविध कथाएँ व कहानियाँ हो सकती हैं। वास्तव में, यह एक लघु आकार का विवरण होता है जो किसी भी घटनाक्रम से सम्बन्धित हो सकता है। यह पाठक को हँसने पर मजबूर कर देता है या फिर उस विषय पर सोचने के लिए विवश कर देता है।

उपाख्यान के अनेक प्रकार हो सकते हैं। मनोरंजक आख्यानों का समावेश साहित्यिक कृतियों में किया जाता है या अन्य समारोहों में; जैसे—पारिवारिक मिलन, वैवाहिक स्वागत और अन्य मिलन समारोह। अध्यापकगण भी अपने छात्रों को कक्षाओं में प्रतिष्ठित लोगों और स्वनामधन्य व्यक्तियों के आख्यान सुनाते हैं।

Q.9. What do you understand by 'antithesis'?

विरोधालंकार से आप क्या समझते हैं?

Ans. Antithesis may be defined as a literary device which means opposite or contrast. It is a rhetorical device in which two opposite ideas are put together in a sentence or stanza to achieve a contrasting effect. Antithesis emphasizes the idea of contrast by parallel structures of the contrasted phrases or clauses. The structure of phrases and clauses are similar, in order to draw the attention of the listeners or readers.

"Setting foot on the moon may be a small step for a man but a giant step for mankind."

The use of contrasting ideas, "a small step" and "a giant step," in the sentence above emphasizes the significance of one of the biggest landmarks of human history.

विरोधालंकार या antithesis को एक साहित्यिक युक्ति के रूप में परिभाषित किया है जिसका आशय विपरीत या विसंगति है। यह एक प्रकार की वाक्यपटुतापूर्ण युक्ति है जिसमें दो विरोधी वस्तुओं को किसी वाक्य या पद्यांश में एक साथ प्रयोग किया जाता है ताकि विरोधाभासी प्रभाव की उत्पत्ति हो सके। विरोधालंकार में विरोधी वस्तुओं का आभास कराया जाता है जिसमें समान रूप से विरोधी वाक्यांशों या उपवाक्यों को एक साथ रखा जाता है जिससे श्रोता या पाठक का ध्यान आकर्षित किया जा सके।

"Setting foot on the moon may be a small step for a man but a giant step for mankind."

इस वाक्य में विरोधाभासी शब्दावली 'a small step' और 'a giant step' का प्रयोग किया गया है। इस वाक्य में मानव इतिहास की एक सर्वाधिक युगान्तरकारी घटना के महत्त्व को प्रतिपादित किया गया है।

Q.10. Give an example of antithesis given by Charles Dickens in 'A Tale of Two Cities'.

चार्ल्स डिकिनस 'A Tale of Two Cities' में दिया गया Antithesis या विरोधालंकार का साहित्य में एक उदाहरण दीजिए।

Ans. The opening lines of 'A Tale of Two Cities' by Charles Dickens provide unforgettable example of antithesis thus:

चार्ल्स डिकिनस द्वारा लिखित 'A Tale of Two Cities' में अविस्मरणीय विरोधालंकार का उदाहरण निम्नवत् प्रकट किया गया है—

"It was the best of times, it was the worst of times, it was the age of wisdom, it was the age of foolishness, it was the epoch of belief, it was the epoch of incredulity, it was the season of Light, it was the season of Darkness, it was the spring of hope, it was the winter of despair, we had everything before us, we had nothing before us, we were all going direct to Heaven, we were all going direct to the other way."

यह एक अच्छा समय था। यह सबसे खराब समय भी था। यह बुद्धिमत्ता का युग था। यह मूर्खताओं का भी युग था। यह विश्वास का युग था। यह अविश्वास का भी युग था। यह प्रकाश का मौसम था। यह अंधकार का मौसम भी था। यह उम्मीदों का वसंत था। यह निराशा का भी जाड़ा था। हमारे सामने सबकुछ था और हमारे सामने कुछ भी नहीं था। हम सभी सीधे स्वर्ग की ओर जा रहे थे। हम सभी सीधे गलत राह में भी जा रहे थे।

Q.11. Give any five examples of common antithesis which are commonly used.

किन्हीं पाँच सामान्य विरोधालंकारों का उदाहरण दीजिए जिन्हें सामान्यतः उपयोग किया जाता है।

Ans. Following are the five common antithetical statements which have become part of our everyday speech:

पाँच सामान्य विरोधालंकारों के उदाहरण निम्न हैं जो प्रतिदिन की बोलचाल में प्रयोग किए जाते हैं—

- (i) Man proposes, God disposes.
- (ii) Give every man thy ear, but few thy voice.
- (iii) Love is an ideal thing, marriage a real thing.
- (iv) Speech is silver, but silence is gold.
- (v) Patience is bitter, but it has a sweet fruit.
- (i) मनुष्य लाख कोशिश करे, वही होता है, जो ईश्वर चाहता है।
- (ii) सभी की बात सुनो, परन्तु सभी को सलाह मत दो।
- (iii) प्रेम एक आदर्श है, परन्तु विवाह वास्तविकता है।
- (iv) भाषण चाँदी की तरह हो सकता है, परन्तु खामोशी सोने की तरह होती है।
- (iv) धैर्य कड़वा हो सकता है, परन्तु इसका फल हमेशा मीठा होता है।

Q.12. Explain about pathos as a literary device.

साहित्यिक विधा के रूप में करुणा (Pathos) का विवरण दीजिए।

Ans. Pathos may be described a literary device that is designed to inspire emotions from reader. Pathos, Greek for “suffering” or “experience”, originated as a conceptual mode of persuasion with the Greek philosopher, Aristotle. Aristotle believed that utilizing pathos as a means of stirring people’s emotions is effective in turning their opinion towards the speaker. This is due in part because emotions and passion can be engulfing and compelling, even going against a sense of logic or reason.

Pathos या करुणा को एक साहित्यिक विधा के रूप में वर्णित किया जा सकता है, जो पाठक की भावनाओं को प्रकट करती है। करुणा का आशय परेशानियों का अनुभव होता है। ग्रीक भाषा में करुणा (Pathos) से तात्पर्य ‘कष्ट’ या ‘अनुभव’ से है जिसका पश्चिमी साहित्य में आविर्भाव अरस्तू नामक यूनानी दार्शनिक से माना जाता है। अरस्तू का विश्वास था कि लोगों की भावनाओं को उत्तेजित करने के लिए करुणा एक अच्छा माध्यम है जिसके द्वारा विचार को उचित रूप से प्रस्फुटित किया जा सकता है। इसमें मनोवेगों और मनोविकारों, दोनों तत्त्वों का सम्मिश्रण हो जाता है जिसको पाठक सुनने के लिए लालायित हो जाता है और तब तर्क और विवेक की आवश्यकता भी शून्य हो जाती है।

Q.13. What do you mean by ‘Diction’ as a literary device?

एक साहित्यिक विधा के रूप में पदयोजना से आपका क्या अभिप्राय है?

Ans. Diction refers to the linguistic choices made by a writer to convey an idea or point of view, or tell a story, in an effective way. The author’s selection of words or vocabulary and the artistic arrangements of these words constitute the style and establish the voice of a literary

work. Therefore, analyzing the style of a work of literature is an attempt to identify and understand diction, the type and quality of individual words that comprise the vocabulary of the work. Diction is closely connected to characterization. The words associated with a literary character represent their ideals, values and attitudes.

पदयोजना द्वारा भाषा की शैली का वरण लेखक द्वारा किया जाता है ताकि वह किसी विषयवस्तु को सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत कर सके या किसी कहानी को प्रभावोत्पादक रूप में कह सके। लेखक द्वारा शब्दों का चयन और शब्दावली का ज्ञान और इनका सम्यक रूप से प्रस्तुतीकरण ही लेखक की शैली को आकार देता है और साहित्यिक कृति की आवाज को सार्थकता प्रदान करता है। इसलिए किसी साहित्यिक कृति की शैली का विश्लेषण करना पदयोजना को समझना ही है जिसमें अलग-अलग शब्दों का प्रकार व शब्दावली शामिल होती है। पदयोजना का सम्बन्ध चरित्र-चित्रण से गहराई से जुड़ा हुआ है।

Q.14. Explain the sentence pattern.

वाक्य पैटर्न की विवेचना कीजिए।

Ans. Sentence patterns are made up of phrases and clauses. A **phrase** is a group of connected words but it is not a complete sentence because it is missing a subject and/or verb. A **clause** contains a subject (Actor) and/or verb (Action). Phrases are just one component that makes up a complete sentence.

Two types of clauses—

1. **An independent clause** is a complete thought. It can stand alone as a complete sentence.
2. **A dependent clause** (subordinate clause) cannot stand alone as a complete sentence. It begins with a subordinating conjunction (because, when, while, after,.....)

The possibilities are endless for different types of sentences.

वाक्य पैटर्न उपवाक्य एवं वाक्यांशों से बनते हैं। एक वाक्यांश जुड़े हुए शब्दों का एक समूह है लेकिन यह एक पूर्ण वाक्य नहीं है; क्योंकि इसमें एक कर्ता और/या क्रिया गायब है। एक उपवाक्य में एक विषय (कर्ता) और क्रिया (कार्रवाई) होता है। वाक्यांश केवल एक घटक है जो एक पूर्ण वाक्य बनाते हैं।

दो प्रकार के उपवाक्य—

1. एक स्वतंत्र उपवाक्य एक पूर्ण विचार है। यह एक पूर्ण वाक्य के रूप में हो सकता है।
2. एक आश्रित उपवाक्य (अधीनस्थ उपवाक्य) अकेला एक पूर्ण वाक्य नहीं हो सकता। यह एक अधीनस्थ के साथ शुरू होता है (क्योंकि, कब, जबकि, बाद में,।)

विभिन्न प्रकार के वाक्यों के लिए संभावनाएँ अनंत हैं।

Example :

1. Subject + Verb + Adv
2. Adj + Sub + Adv + Verb + Prepositions phrase

Patterns :

Sub + Verb

Sub+Verb+Obj

Sub+Verb+Adj

Sub+Verb+Adv

Sub+Verb+Narration

Verb

Object : Direct, Indirect

SECTION-B (SHORT ANSWER TYPE) QUESTIONS

Q.1. How does Shakespeare's plays feature the literary device of imagery for reader? Discuss giving some examples.

शेक्सपियर के नाटकों में साहित्यिक विधा imagery (कल्पना) का प्रयोग पाठक के लिए हुआ है। उदाहरण सहित विवेचना कीजिए।

Ans. Writers use imagery to create pictures in the mind of reader, often with words and phrases that are uniquely descriptive and emotionally charged to emphasize an idea. William Shakespeare's works feature imagery as a literary device for reader and audience as a means to enhance their experience of his plays. Shakespeare's artistic use of language and imagery is considered to be some of the greatest in literature.

Some famous examples of imagery from Shakespeare's plays are given below :

कल्पना का प्रयोग लेखकों द्वारा पाठक के मन-मस्तिष्क में चित्रावली प्रकट करने के निमित्त किया जाता है जिसका माध्यम शब्द और शब्दसमूह होते हैं जिनका प्रणयन विवरणात्मक व भावनात्मक विशिष्टता के साथ किया जाता है ताकि एक विचार पर विशेष बल दिया जा सके। विलियम शेक्सपियर के साहित्यिक कृतित्व में imagery का बाहुल्य दिखायी देता है जो शेक्सपियर के नाटकों सम्बन्धी उनकी अनुभूति में बढ़ोतरी करने वाला प्रमाणित होता है। शेक्सपियर की कलात्मकता में उनके द्वारा भाषा व imagery का प्रयोग बहुआयामी है जो साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

शेक्सपियर के नाटकों के imagery सम्बन्धित कुछ उदाहरण निम्नांकित हैं—

(i) "And thus I clothe my naked villainy

With odd old ends stol'n out of holy writ:

And seem a saint, when most I play the devil." Richard III

(ii) "We are such stuff as dreams are made on, and our little life is rounded with a sleep."
The Tempest

(iii) "Sigh no more, ladies, sigh no more,

Men were deceivers ever,

One foot in sea and one on shore,

To one thing constant never." Much Ado About Nothing

(iv) "If I be waspish, best beware my sting." The Taming of the Shrew

(v) "Good-night, sweet prince; And flights of angels sing thee to the rest." Hamlet

(vi) "Lovers and madmen have such seething brains,

Such shaping fantasies, that apprehend

More than cool reason ever comprehends." A Midsummer Night's Dream.

(vii) "There's daggers in men's smiles." Macbeth

(viii) "My bounty is as boundless as the sea, My love as deep." Romeo and Juliet

Q.2. Differentiate between mood and atmosphere.

मिजाज और वातावरण में अन्तर कीजिए।

Ans. Mood is a literary device that is created directly by the writer to evoke an emotion in the reader while, atmosphere is a general feeling or sensation generated by the environment of a scene in a literary work. Atmosphere may be described as a feeling imposed on the reader

rather than an emotion evoked in a reader. To illustrate, the atmosphere of a very dramatic scene in literature may be described as restrictive. However, 'restrictive' is not applicable in describing the mood and emotion of the reader in response to the scene. Instead, restrictive applies to the atmospheric feeling of the environment created in the scene, not the mood. Establishing mood in a story, poem, novel, or other fictional work is an essential literary device. Mood engages the reader with the narrative and helps them understand many aspects of a story on an emotional level. Because of this, the reader can make further connections with the literary work as the writer is able to express deeper meaning.

Mood ऐसी साहित्यिक विधा है जो पूर्णतया लेखक द्वारा सृजित होती है ताकि पाठक भावातिरेक में झूलने लगे। जबकि भावनाओं की अनुभूति के लिए वातावरण की उत्पत्ति, दृश्य की परिकल्पना के द्वारा साहित्यिक कार्य में किया जाता है। वातावरण को हम एक एहसास के रूप में मान सकते हैं जो पाठक पर आरोपित किया जाता है न कि पाठक के भीतर से इसकी उत्पत्ति होती है। उदाहरणतः किसी नाटकीय दृश्य के वातावरण को प्रतिबंधित किया जा सकता है। लेकिन ऐसा दृश्य के समानान्तर पाठक को भावनाओं में करना सम्भव नहीं है। प्रतिबंधात्मकता वातावरण में तो की जा सकती है लेकिन चित्रवृत्ति में परिवर्तन सम्भव नहीं है।

किसी कहानी, कविता, उपन्यास या अन्य कथा साहित्य के कार्य में स्थापित मनोदशा या चित्रवृत्ति एक आवश्यक साहित्यिक युक्ति होती है। इसके द्वारा पाठक कहानी के साथ एकाकार हो जाता है और भावनात्मक स्तर पर कहानी के अनेक पहलुओं को समझ पाने में सफल होता है। इसी के साथ पाठक उस साहित्यिक कृति की अगली तारतम्यता को महसूस कर लेता है जिसमें लेखक का दृष्टिकोण अधिक गहराई से प्रस्फुटित होता है।

Q.3. What do you mean by humour?

हास्य से आप क्या समझते हैं?

Ans. Meaning: The funny or amusing qualities of somebody/something are called humour. It refers to being able to see when something is funny and to laugh at things is also called humour.

Example : Ramesh has good at sense of humour.

Purpose :

1. To keep somebody happy by doing what he/she wants.
2. The faculty of perceiving and expressing or appreciating what is abusing and crucial: a writer with humour & zest: An instance of being or attempting to be comical, or amusing something humorous.

Tendency of experiences to provoke laughter and provide amusement.

— laugh at something funny (pun or joke)

— humour depends on a host of variables in geographical location, culture, maturity level of education, intelligence and context.

Psychological Theories consider human induced behaviour to be very healthy.

Spiritual : a gift from God

Mystical : an unexplainable mystery

This can facilitate social interaction

अर्थ—किसी व्यक्ति/वस्तु का मजाकिया या मनोरंजन गुण।

यह देखने में सक्षम होना कि कब कुछ मजेदार है और किसी चीज पर हँसना हास्य कहलाता है।

उदाहरण—रमेश का सेंस ऑफ ह्यूमर अच्छा है।

उद्देश्य—

1. किसी को जो वह चाहता/चाहती है उसे करके खुश रखने के लिए।
2. गाली देने वाली और महत्त्वपूर्ण चीजों को समझने और व्यक्त करने या उनकी सराहना करने की क्षमता: हास्य और उत्साह के साथ एक लेखक: हास्यपूर्ण, या मनोरंजन होने या होने का प्रयास। कुछ हास्यपूर्ण करना।
 - (i) हँसी भड़काने और मनोरंजन प्रदान करने के लिए अनुभवों की प्रवृत्ति।
 - (ii) किसी मजेदार बात पर हँसना।

हास्य भौगोलिक स्थिति, संस्कृति, शिक्षा के परिपक्वता स्तर, बुद्धि और संदर्भ में कई चरों पर निर्भर करता है।

मनोवैज्ञानिक सिद्धांत—मानव प्रेरित व्यवहार पर विचार करना जिससे स्वस्थ रहें।

आध्यात्मिक—भगवान की ओर से एक उपहार

रहस्यमय—एक अस्पष्ट रहस्य

यह सामाजिक संपर्क को सुगम बना सकता है।

SECTION-C (LONG ANSWER TYPE) QUESTIONS

Q.1. Explain the theme as a component of fiction.

Theme या विषय-वस्तु की कथा-साहित्य का एक अवयव के रूप में विवेचना कीजिए।

Ans. A theme is a central topic, subject or message within a narrative. The most common contemporary understanding of theme is an idea or point that is central to a story, which can be summed in a single word, such as 'love', 'death', betrayal, etc. Typical examples of themes of this type are 'conflict between the individual and society', 'coming of age', 'humans in conflict with technology', 'nostalgia' and 'the dangers of unchecked ambition'.

Themes often explore historically common or cross-culturally recognizable ideas, such as ethical questions and are usually implied rather than stated explicitly. An example of this would be whether one should live a seemingly better life, at the price of giving up parts of one's humanity, which is a theme in Aldous Huxley's *Brave New World*. Along with plot, character, setting and style, theme is considered one of the components of fiction. A theme may be exemplified by the actions, utterances or thoughts of a character in a novel.

Theme allows for literature to remain meaningful. It can be revisited by many readers at once or by a single reader across time. For example, William Shakespeare's well-known tragedy 'Romeo and Juliet', has been performed and read countless times and by countless people since its publication in 1597.

विषयवस्तु के आख्यान में कोई मूल प्रसंग, विषय या सन्देश होता है। विषयवस्तु के सम्बन्ध में हमारे युग की सोच के रूप में यह कोई विचार या बिन्दु होता है जो कहानी के केन्द्र में रहता है जिसको एक शब्द में अभिव्यक्त किया जा सकता है, जैसे—'प्रेम', 'मृत्यु', 'विश्वासघात' आदि। इस प्रकार की विशिष्ट विषयवस्तु है 'व्यक्ति और समाज का टकराव', 'यौवन की ओर', 'तकनीक और मानव का संघर्ष', 'घर की याद' और 'अति महत्वाकांक्षा के खतरे'।

ऐतिहासिक रूप से समान पहलुओं पर विषयवस्तुओं का चयन किया जा सकता है अथवा संस्कृति के समान अवयवों का समावेश विचारों में प्रकट किया जा सकता है जैसे प्रजातीय प्रश्न जो प्रायः अन्तर्निहित होते हैं न कि सुस्पष्ट रूप से प्रकट रूप में। इसका एक उदाहरण यह हो सकता है कि क्या कोई मानवता की शर्त पर अच्छा जीवन जीने का दिखावा कर सकता है जो कि Aldous Huxley की पुस्तक 'Brave New World' की विषयवस्तु है। कथानक, पात्र, रंगमंच सज्जा व शैली के साथ ही विषयवस्तु को कथा-साहित्य का आवश्यक अवयव माना जाता है। किसी विषयवस्तु को नाटक में पात्र के कार्यव्यापार, कथन या विचार द्वारा अनुकरणीय बनाया जा सकता है।

विषयवस्तु के सहारे साहित्य अर्थवान हो जाता है। इसको अनेक पाठकों द्वारा पढ़ा जा सकता है फिर किसी एक पाठक द्वारा बार-बार पढ़ा जा सकता है। उदाहरण के लिए विलियम शेक्सपियर की लोकप्रिय त्रासदी 'Romeo and Juliet' अपने प्रकाशन वर्ष 1597 के बाद से ही बार-बार प्रदर्शित की गयी और असंख्य लोगों द्वारा बार-बार पढ़ी गयी।

Q.2. Describe the first person point of view and give some examples of such literary works.

उत्तम पुरुष दृष्टिकोण का विवरण देते हुए इस प्रकार की कुछ साहित्यिक कृतियों का उल्लेख कीजिए।

Ans. In first person point of view, one of the story's characters is narrating the literary work. This viewpoint is indicated by the use of first person pronouns, including "I," and the reader assumes that the character is close to the story's action. First person narrative voice provides the reader an intimate and close look into a character's thoughts, but the perspective of the story is limited by what the character is able to see and know.

As a literary device, point of view is generally expressed through the use of pronouns. Each has its advantages and limitations. First and third person points of view are far more common than second person point of view in literature. First person narrative allows the writer to establish intimacy with the reader by allowing access to the narrator's inner thoughts. Third person narrative is flexible in that the writer can focus on more than one character's actions and thoughts.

Some well-known examples of literary works with first person point of view are given below:

- (i) 'The Great Gatsby'.
- (ii) 'Jane Eyre'
- (iii) 'The Yellow Wallpaper'
- (iv) 'Moby Dick'
- (v) 'The Adventures of Huckleberry Finn'

उत्तम पुरुष के दृष्टिकोण से कहानी को सम्बन्धित कर पात्र ही साहित्यिक कृति में उल्लिखित घटनाक्रम का विवरण देता है। इस दृष्टिकोण में उत्तम पुरुष स्वयं को 'मैं' के रूप में सम्बोधित करता है और पाठक को अहसास होता है कि यह पात्र कहानी के कथानक से गहराई से जुड़ा हुआ है। उत्तम पुरुष वाचन के द्वारा पाठक पात्र के विचारों को घनिष्ठता से अंगीकार कर पाता है। लेकिन कहानी का सापेक्ष महत्त्व कम रह जाता है क्योंकि कहानी को पात्र जितना देख व समझ पाता है, वही सीमित सामग्री पाठक तक पहुँचती है।

एक साहित्यिक विधा के रूप में दृष्टिकोण का प्रस्तुतीकरण सर्वनामों के माध्यम से होता है, जिनमें से प्रत्येक में अनुकूल स्थितियाँ व सीमाएँ निहित हैं। मध्यम पुरुष की अपेक्षा उत्तम पुरुष व अन्तम पुरुषों का उपयोग साहित्य में अधिक सामान्य है। उत्तम पुरुष कथानक में लेखक पाठक से अधिक अन्तरंगता स्थापित कर लेता है जिससे सूत्रधार के विचारों को घनीभूत रूप से अंगीकार कर लिया जाता है। अन्य पुरुष दृष्टिकोण में अधिक लचीलापन होता है क्योंकि इसमें लेखक एक से अधिक पात्रों के क्रियाकलापों व विचार भंगिमाओं पर एकाग्रचित्त हो सकता है। उत्तम पुरुष के दृष्टिकोण से लिखी गयी कुछ सुविख्यात साहित्यिक कृतियाँ निम्नवत् हैं—

- (i) 'The Great Gatsby'.
- (ii) 'Jane Eyre'
- (iii) 'The Yellow Wallpaper'
- (iv) 'Moby Dick'
- (v) 'The Adventures of Huckleberry Finn'.

Q.3. Discuss inversion as a prose device.

एक गद्य विधा के रूप में व्युत्क्रम का विवरण दीजिए।

Ans. It is a reversal of position, order, form or relationship as :

1. Inversion is a change in normal word order e.g., the place of verb before the subject,
2. The process or result of changing or reversing the relative positions of the notes of a musical interval, chord or phrase.

Examples :

1. The ocean blue
2. Writes the girl

While the correct placement of words is :

- (i) The blue Ocean
- (ii) The girl writes.

Writers use inversion to maintain a particular meter or rhyme scheme in poetry or to emphasise a specific work in prose.

Example : My teacher, kind and generous,

An inverted sentence is a sentence in a normally subject- first language in which the predicate (verb) comes before the subject (Noun).

Example : Down the street lived the man and his wife

The law of inversion is the practice of inverting a lesson and looking at it from a different perspective.

Four Kinds of inversions :

1. General
2. Terbulent
3. Subsistence
4. Frontal

Example : The dog ran down the street

Inv.—Down the street ran the dog

Inversion is usually used :

1. After negative adverbial expression
2. After negative adverbial expression of place
3. After seledom, rarely, never, or little
4. After hardly, scarcely, barely, no sooner or when nothing happens after another.

इसका अर्थ है—स्थिति, क्रम, रूप या संबंध का उलटा होना जैसे—

1. सामान्य शब्द क्रम में परिवर्तन—विषय से पहले क्रिया का स्थान,
2. एक संगीत अंतराल राग या वाक्यांश के नोट्स की सापेक्ष स्थिति को बदलने या उलटने की प्रक्रिया या परिणाम।

उदाहरण—

1. सागर नीला
2. लिखती है लड़की।

जबकि शब्द है—(i) नीला सागर (ii) लड़की लिखती है।

लेखक कविता में एक विशेष मीटर या कविता योजना को बनाए रखने के लिए या गद्य में एक विशिष्ट कार्य पर जोर देने के लिए उलटा लिखते हैं।

उदाहरण—मेरे शिक्षक, दयालु और उदार

एक उल्टा वाक्य एक सामान्य रूप से विषय—पहली भाषा में एक वाक्य है जिसमें विधेय (क्रिया) विषय (संज्ञा) से पहले आता है—

उदाहरण—सड़क के नीचे वह आदमी और उसकी पत्नी रहते थे।

व्युत्क्रम का नियम एक पाठ को उलटने और इसे एक अलग दृष्टिकोण से देखने का अभ्यास है।

चार प्रकार के व्युत्क्रम—

(i) सामान्य (ii) अशान्त (iii) निर्वाह (iv) ललाट

उदाहरण—कुत्ता सड़क पर नीचे भाग गया।

व्युत्क्रम—नीचे सड़क पर भागा कुत्ता

व्युत्क्रम का आमतौर पर उपयोग किया जाता है—

1. नकारात्मक क्रिया विशेषण के बाद
2. स्थान की नकारात्मक क्रियाविशेषण अभिव्यक्ति के बाद
3. शायद ही कभी (Seldom), मुश्किल से (Rarely) कभी नहीं (Never) अथवा कुछ (Little)।
4. मुश्किल से (hardly), मुश्किल से (Scarcely), मुश्किल से ही (Barely) या (so sooner) या जब एक के बाद कुछ कल नहीं होता है।

Q.4. What is meant by antithesis?

प्रतिपक्षी से आप क्या समझते हैं?

Ans. It is the opposite of something : A difference between two things (Love is the antithesis of hate)

Contrast

1. Her behaviour was the very antithesis of cowardice (Contrast of Feeling)
2. Give me liberty or give me death (Contrast of Ideas)

Rhetoric : The placing of a sentence or one of its parts against another to which it is opposed to form a balanced contrast of ideas.

It is a figure of speech in which irreconcilable opposites or strongly contrasting ideas are placed in Juxtaposition and sustained e.g., as art is long, the time is fleeting.

In poetry the effect of antithesis is often one of tragic irony or reversal.

An **oxymoron** is a phrase that was of two contradicting or opposing series. Antithesis is a device that presents two contrasting ideas in a sentence but not in the same phrase.

Oxymoron : beautifully ugly, regularly irregular

Antithesis : United we stand, divided we fall

Juxtaposition : sets up a comparison and contrast between two concepts that can be either similar or different.

In other words, It is a figure of speech involving a seeming contradiction of ideas, words, clauses or sentences within a balanced grammatical structure.

Examples :

1. Man proposes, God disposes.
2. In peace you are for war and in war you long for peace.
3. To err is human, to forgive divine.

4. Give every man thy ear, but follow thy voice.
5. It was the age of wisdom, it was the age of foolishness.
6. It was the season of light, it was the season of darkness.
7. It was the spring of hope, it was the winter of despair.
8. Live together as brothers or perish together as fools.
9. He who desires peace, should prepare for war.
10. Love is an ideal thing, marriage a real thing.

यह किसी चीज का विपरीत अर्थ है—दो चीजों के बीच का अंतर है (जैसे प्रेम घृणा का विलोम है।)

कंटास्ट—

1. उसका व्यवहार कायरता के विपरीत था। (भावनाओं का प्रतिपक्ष)
2. मुझे आजादी दो या मुझे मौत दो (विचारों का प्रतिपक्ष)

बयानबाजी—एक वाक्य या उसके एक हिस्से को दूसरे के खिलाफ रखना, जो संतुलित विचारों के विपरीत है। यह एक अलंकार है जिसमें असंगत, विपरीत या अत्यधिक विपरीत विचारों को एक साथ रखा जाता है। जैसे—कला दीर्घकालीन, समय भाग रहा है।

कविता में विरोधाभास का प्रभाव दुखद, विडंबना या उलटफेर का होता है।

विरोधाभास एक वाक्यांश है जिसमें दो अनुबंध या विरोधी शृंखला हैं। विलोम एक ऐसा उपकरण है जो एक वाक्य में दो विपरीत विचारों को प्रस्तुत करता है लेकिन एक ही वाक्यांश में नहीं।

विरोधाभास—Beautifully ugly, Regularly irregular.

Antithesis : United we stand, divided we fall

निकट स्थिति—यह दो अवधारणाओं के बीच तुलना और विपरीतता स्थापित करता है जो या तो समान या भिन्न हो सकते हैं। दूसरे शब्दों में, यह एक अलंकार है जिसमें एक संतुलित व्याकरणिक संरचना के भीतर विचारों, शब्दों, खंडों या वाक्यों के प्रतीत होने वाले विरोधाभासों को शामिल किया गया है।

उदाहरण—

1. मनुष्य जो चाहता है, ईश्वर वह नहीं करते।
2. शांति में आप युद्ध की इच्छा करते हैं और युद्ध में आप शांति की लालसा रखते हैं।
3. मानव गलती करता है, ईश्वर क्षमा कर देते हैं।
4. सबकी सुनों, अपनी करो।
5. यह ज्ञान का युग था, यह मूर्खता का युग था।
6. यह प्रकाश का मौसम था, यह अंधकार का मौसम था।
7. यह आशा का वसंत था, यह निराशा की शरद् ऋतु थी।
8. भाइयों की तरह एकसाथ रहें या एकसाथ मूर्खों की तरह नष्ट हों।
9. जो शांति चाहता है, उसे युद्ध के लिए तैयार रहना चाहिए।
10. प्यार एक आदर्श चीज है, विवाह एक वास्तविक चीज है।



UNIT-IV

Short Stories

1. The Last Leaf
2. The Lament
3. The Diamond Necklace

SECTION-A VERY SHORT ANSWER TYPE QUESTIONS

Q.1. Who is the writer of the story 'The Last Leaf'?

‘द लास्ट लीफ’ कहानी के लेखक कौन हैं?

Ans. The story *'The Last Leaf'* is written by O Henry.
कहानी ‘द लास्ट लीफ’ ओ हेनरी द्वारा लिखी गई है।

Q.2. Who is the writer of the story 'The Lament'?

‘द लैमेंट’ कहानी के लेखक कौन हैं?

Ans. Anton Chekhov is the writer of the story *'The Lament'*.
एंटोन चेखो ‘द लैमेंट’ कहानी के लेखक हैं।

Q.3. Who was Anton Chekhov?

एंटोन चेखोव कौन थे?

Ans. Anton Chekhov was a Russian playwright, a writer of short stories and one of the most prominent dramatists in theater history.

एंटोन चेखोव एक रूसी नाटककार, लघु कथाओं के लेखक और थिएटर इतिहास के सबसे प्रमुख नाटककारों में से एक थे।

Q.4. Who was William Sydney Porter?

विलियम सिडनी पोर्टर कौन थे?

Ans. William Sydney Porter (1862-1910) was an American short story writer who wrote under the pseudonym O Henry.

विलियम सिडनी पोर्टर (1862-1910) एक अमेरिकी लघु कथाकार थे जिन्होंने छद्म नाम ओ हेनरी के तहत लिखा था।

Q.5. What kind of a man Mr. Loisel was?

मिस्टर लोसैल किस तरह के आदमी थे?

Ans. Mr. Loisel was a very simple hearted and loving person.
मिस्टर लोसैल बहुत ही सरल दिल और प्यार करने वाले व्यक्ति थे।

Q.6. Who was Matilda married to?

मटिल्डा का विवाह किससे हुआ था?

Ans. Matilda was married to a poor clerk.
मटिल्डा की शादी एक गरीब क्लर्क से हुई थी।

Q.7. Give a brief introduction of O' Henry.

ओ' हेनरी का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

Ans. O' Henry was an American short story writer born in the year 1862. His stories are known for their surprising ending. William Sydney was born on 11 September 1862 in Greensboro, North Carolina. His mother died when he was three. He and his father moved into the home of his parental grandmother. As a child, Porter was always busy in reading. He read whatever his hands lay upon, from classics to cheap novels. His aunt tutored him until he was 15.

Some of his famous short stories included 'The Four Million', 'The Gift of Magi', 'Telemachus, Friend' and 'The Last Leaf', etc.

ओ' हेनरी एक अमेरिकी लघुकथा लेखक थे जिनका जन्म सन् 1862 में हुआ था। उनकी कहानियाँ आश्चर्यजनक अन्त के लिए जानी जाती हैं। विलियम सिडनी का जन्म 11 सितम्बर 1862 को नॉर्थ कैरोलिना राज्य के ग्रीन्सबोरो में हुआ था। जब वह केवल तीन वर्ष के थे तो उनकी माँ का देहान्त हो गया। फिर वह अपने पिता के साथ अपनी दादी के यहाँ रहने लगे। बाल्यावस्था में पोर्टर सदैव पढ़ने में व्यस्त रहते थे। साहित्यिक या साधारण जो भी उपन्यास उनको मिलते थे, उन्हें वह पढ़ने लगते थे। उनकी चाची ने उनकी पन्द्रह वर्ष की आयु होने तक उन्हें पढ़ाया। उनकी कुछ प्रसिद्ध लघुकथाओं में शामिल हैं— 'The Four Million', 'The Gift of Magi', 'Telemachus, Friend' और 'The Last Leaf' इत्यादि।

Q.8. Explain the theme of story 'The Last Leaf'.

कहानी 'The Last Leaf' की विषयवस्तु की विवेचना कीजिए।

Or What is the significance of the title 'The Last Leaf'?

(2021)

शीर्षक 'The Last Leaf' का क्या महत्त्व है?

Ans. According to the theme of 'The Last Leaf' that life is precious so faith and hope should never be lost. The word 'last' reflects the main idea of the story which is the last breath of Johnsy. It conveys the message of courage, hope and optimism. The last leaf saves Johnsy's life. Hence, the title suits the story.

'The Last Leaf' की विषयवस्तु के अनुसार, जीवन अनमोल है और इसलिए विश्वास व आशा को कभी नहीं खोना चाहिए। शब्द 'अन्तिम' कहानी के मुख्य विचार को दर्शाता है जो जोन्सी की अन्तिम साँस है। यह कहानी साहस, विश्वास और आशा का संचार करती है। आखिरी पत्ती जोन्सी का जीवन बचाती है। इसलिए शीर्षक कहानी के अनुरूप है।

Q.9. What is the matter of that last leaf in the story 'The Last Leaf'?

कहानी 'The Last Leaf' में उस आखिरी पत्ती का क्या सार है?

Ans. It was autumn and the creeper leaves were falling gradually. This depressed an already ill Johnsy and strangely enough she associated her falling health with leaves. She believed that she would die with the last leaf fell.

पतझड़ का मौसम था और लता की पत्तियाँ धीरे-धीरे गिर रही थीं। इसने पहले से ही बीमार जोन्सी को और अधिक निराश कर दिया और आश्चर्यजनक रूप से उसने अपने गिरते स्वास्थ्य को पत्तियों से जोड़ दिया। उसका मानना था कि अन्तिम पत्ती के गिरने के साथ ही उसकी भी मृत्यु हो जाएगी।

Q.10. What do you know about Anton Chekhov?

एण्टोन चेखोव के बारे में आप क्या जानते हैं?

Ans. Anton Chekhov (1860-1904) was born at Taganrog in Russia. This place is near the sea of Azov. Chekhov was the grandson of a serf. The very fabric of Russian society was permanently altered when Chekhov was only one year old, as serfs were freed on 19 February 1861.

एण्टोन चेखोव (1860-1904) का जन्म टगनरॉग (रूस) में हुआ था। यह स्थल एजोव सागर के समीप स्थित है। चेखोव एक कृषिदास या असामी के प्रपौत्र थे। जब चेखोव केवल एक वर्ष के ही थे तब रूस के सामाजिक ताने-बाने में आमूल-चूल परिवर्तन हुआ क्योंकि 19 फरवरी 1861 को सभी कृषिदासों को स्वतन्त्र कर दिया गया था।

Q.11. Discuss about literary works of Chekhov.

चेखोव के साहित्यिक कार्यों की विवेचना कीजिए।

Ans. Chekhov is one of the important literary figures of Russia and great playwright and story writer of modern times. Older social order plays a central role in many of Chekhov's writings. His family moved to Moscow which was a centre for intellectuals of Russia. There he attended medical school at the University of Moscow and prepared himself for his lifelong profession as a physician. He also began writing to help support his family. He worked as a freelance writer for newspapers and magazines.

चेखोव रूस के एक महत्त्वपूर्ण साहित्यकार हैं जो आधुनिक युग के विशिष्ट नाटककार व लघुकथा लेखक हैं। चेखोव की रचनाधर्मिता में प्राचीन सामाजिक व्यवस्था का मुख्य अवदान रहता है। उनका परिवार मास्को में निवास करने लगा जो रूस में बुद्धिजीवियों का केन्द्र हुआ करता था। वहाँ पर उन्होंने मास्को विश्वविद्यालय के मेडिकल स्कूल में प्रवेश लिया और जीवनवृत्ति के लिए चिकित्सा के व्यवसाय को चुना। अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए उन्होंने लेखनकार्य को अपनाया। समाचारपत्रों व पत्रिकाओं के लिए उन्होंने स्वतन्त्र पत्रकार के रूप में कार्य किया।

Q.12. Is it better to talk to women? Why?

क्या स्त्रियों से बातें करना अधिक अच्छा होता है? क्यों?

Ans. It is said that it is much better to talk to women rather than talking to men because two words are more than enough to make women sob and understand the listener, unlike men. ऐसा कहा जाता है कि पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों से बातें करना अधिक अच्छा होता है क्योंकि दुःख के दो शब्द सुनकर ही स्त्रियाँ सुबकियाँ भरने लगती हैं जबकि पुरुषों पर कोई प्रभाव नहीं होता है।

Q.13. Explain surroundings and environment near the stove.

अँगीठी के समीप के परिवेश व पर्यावरण की विवेचना कीजिए।

Ans. Iona seated beside a large stove that was dirty. The air of the surrounding was thick and suffocating. It was hot around the stove, on the floor, and on the benches. The people around were snoring along with the presence of sleepers.

आयोना एक बड़ी अँगीठी के समीप बैठा था जो काफी गन्दी थी। आस-पास की वायु भी घनी और दमघोंटू थी। अँगीठी के आस-पास, फर्श पर और बेंचों पर काफी गर्मी थी। कुछ लोग सोए हुए थे और उनमें से कुछ खरटे भर रहे थे।

Q.14. What happened to Iona's son?

आयोना के पुत्र को क्या हुआ था?

Ans. Iona's son Barin was admitted to the hospital. According to Iona, he suffered from high fever. And after three days of being admitted in the hospital, he died. Iona rushed to the hospital to collect his dead son's clothes.

आयोना के पुत्र को अस्पताल में भर्ती कराया गया था। आयोना ने बताया कि उसको तीव्र बुखार हो गया था। और अस्पताल में भर्ती होने के तीन दिन पश्चात् उसकी मृत्यु हो गयी। अपने मृत पुत्र के वस्त्रों को लेने के लिए वह अस्पताल गया।

Q.15. What did the coachman and the passerby do?

कोचवान और राहगीर ने क्या किया?

Ans. A coachman from a private carriage sworm at the officer and a passerby ran across the road. He also rubbed his shoulder against the horse's nose, looked at him furiously and swept the snow from his sleeve.

एक निजी गाड़ी के गाड़ीवान ने ऑफिसर को गाली दी और राहगीर सड़क के दूसरी ओर भाग गया। उसने घोड़े की नाक के पास अपने कंधे को रगड़ा उसको क्रोध से देखा और अपनी आस्तीन से बर्फ को झाड़ा।

Q.16. What was the most painful thing for Iona? Discuss

आयोना के लिए सबसे अधिक दुःखदायी चीज क्या थी? विवेचना कीजिए।

Ans. Iona had not been able to speak about his son's death properly to anyone. He suffered from negative thoughts as his son fell ill, and the words said before he died, his illness, his death, his funeral and the journey to the hospital to collect the dead son's clothes. When he was alone, he dared not to think of his son. He could speak about him to anyone but to think of him, and picture it to himself was unbearably very painful for Iona.

आयोना अपने पुत्र के दिवंगत होने के बारे में ठीक तरह से किसी को भी बताने में सफल नहीं हुआ था। जब उसका पुत्र बीमार हुआ तो उसके मन में नकारात्मक विचार पनपने लगे थे। पुत्र की मृत्यु के समय पुत्र द्वारा कहे गए शब्दों का स्मरण होने लगा, उसकी बीमारी का ध्यान आने लगा और उसकी मृत्यु व अन्तिम संस्कार याद आने लगे और वह वाक्या भी जब वह पुत्र के वस्त्रों को लेने अस्पताल गया। जब वह अकेला था तो पुत्र के बारे में नहीं सोचता था। वो किसी से भी पुत्र के बारे में बातें कर सकता था। लेकिन स्वयं उसके बारे में सोचना और समझना उसके लिए सबसे अधिक दुःखदायी चीज थी।

Q.17. What did Iona understand at the last?

अन्त में आयोना को क्या बोध हुआ?

Ans. Iona faced his son's illness, his health and his days in hospital and then his funeral. He suffered a lot due to this. His daughter remained in the village. He understood that it would have been better if he had shared and talked to women instead of men as two words are enough to make women sub and his horse which was his companion for a lifetime. He was there with him throughout all the circumstances.

आयोना ने अपने पुत्र की बीमारी, उसका स्वास्थ्य, अस्पताल में बिताए उसके दिन और फिर उसका अन्तिम संस्कार का सामना किया। इन सबने आयोना को काफी पीड़ा पहुँचायी। इस दौरान उसकी पुत्री गाँव में ही निवास करती रही। आयोना को बोध हो गया कि यदि उसने अपने दुःखों को स्त्रियों के बीच बाँटा होता तो पुरुषों की तरह रूखा उत्तर नहीं मिलता अपितु वे सिसकियाँ भरकर रोने लगतीं। इसी प्रकार उसके घोड़े ने उसका साथ निभाया। सभी परिस्थितियों में वह आयोना के साथ नजर आया।

Q.18. What was Iona looking for in the crowd?

भीड़ में आयोना किसकी खोज कर रहा था?

Ans. Iona was alone and surrounded by silence when reached to the destination. His grief, which had abated for a short while, returned and tried to rend his heart with great force. With an anxious and hurried look, he searched among the crowd passing on either side of the street to find whether there was just one person who would listen to him. But the crowd hurried by without noticing him or his troubles. It had managed to hide itself in such an insignificant shell that nobody could see during the day or the night.

अपने उद्देश्य के लिए भटकते हुए आयोना ने देखा कि वह अकेला है और नीरवता ने उसे घेर लिया है। थोड़ी देर के लिए उसका दुःख दूर हो गया लेकिन वह पुनः लौट आया और उसके हृदय पर प्रहार करने लगा। एक उत्सुक व चलायमान दृष्टि से उसने भीड़ में देखा, जो सड़क के दूसरी ओर गतिशील थी। उसने सोचा कि सम्भवतया कोई उसकी दुःख से भरी कहानी को सुनेगा। लेकिन भीड़ में किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया। यह भीड़ एक महत्त्वहीन आवरण में समाती जा रही थी जहाँ दिन या रात्रि में कोई भी देखने में असमर्थ था।

Q.19. Write a brief note about Loisel's life.

लोसैल के जीवन पर एक संक्षिप्त लेख लिखिए।

Ans. Matilda Loisel is a pretty and charming young woman, but she has been born into a poor family, and so she is married to a lowly clerk in the Ministry of Education, who can afford to provide her only with a modest though not uncomfortable lifestyle. She regrets her lot in life and spends endless hours imagining a more extravagant existence. While her husband expresses his pleasure at the small, modest supper she has prepared for him, she dreams of an elaborate feast served on fancy china and eaten in the company of wealthy friends.

मटिल्डा लोसैल एक सुंदर और आकर्षक युवती है, लेकिन वह एक गरीब परिवार में जन्मी है, और इसलिए उसका विवाह शिक्षा मंत्रालय में एक कनिष्ठ क्लर्क के साथ हो जाता है, जो उसकी सामान्य जरूरतों को पूरा कर सकता है, लेकिन अमीरी नहीं। वह अपने जीवन से दुःखी होती है और लंबा समय समृद्ध जीवन की कल्पना करते हुए गुजारती है। जबकि उसका पति उस साधारण भोजन से भी प्रसन्न होता है जो वह उसके लिए तैयार करती है, लेकिन वह स्वयं कल्पना करती है कि उसे महंगी चाइना क्रॉकरी में शानदार भोजन खाने को मिले जो वह अमीर मित्रों के साथ बैठकर खाए।

Q.20. Why do we feel sympathy towards Matilda?

मटिल्डा के प्रति हम सहानुभूति क्यों महसूस करते हैं?

Ans. Matilda was a woman of self-respect. She did not tell Madame Forestier that she had lost the necklace. She decided to suffer in life but not to lose her self-respect. She worked hard for ten years. She faced difficulties. But she did not grumble. She suffered for no faults of hers. So we feel sympathy towards her.

मटिल्डा स्वाभिमानी महिला थी। उसने हार के खो जाने के बारे में मैडम फॉरेस्टियर को कुछ नहीं बताया। वह दुःख सहने के लिए तैयार थी लेकिन उसने अपने स्वाभिमान पर आँच नहीं आने दी। उसने लगातार दस वर्षों तक कठोर परिश्रम किया। उसने अनेक परेशानियों को झेला। लेकिन वह असन्तोष से ग्रसित नहीं हुई। उसने ऐसे अपराध के लिए दुःख भोगा जिसके लिए वह अपराधी नहीं थी। इसीलिए हम मटिल्डा के प्रति सहानुभूति महसूस करते हैं।

Q.21. We should be content with what life gives us. Discuss

जिन्दगी जो कुछ हमें देती है उससे हमें सन्तुष्ट रहना चाहिए। विवेचना कीजिए।

Ans. We should be always content with what life gives us. We should never try to exceed our limit. The contentment is a must in life. Pomp and show is a wrong nature. Never be a borrower nor a lender.

जिन्दगी जो कुछ हमें देती है उससे हमें सदैव सन्तुष्ट रहना चाहिए। हमें अपनी सीमा कभी नहीं लाँघनी चाहिए। जीवन में सन्तुष्टि का होना परम आवश्यक है। दिखावा करना गलत प्रकृति है। कभी कर्जदार मत बनो और न ही साहूकार बनो।

Q.22. What is the reason behind Matilda's sadness?

मटिल्डा की अप्रसन्नता का क्या कारण था?

Ans. Matilda was a pretty young lady. She was born by an error of destiny into the family of clerks. She suffered because she felt she was born for luxuries. She had no jewellery her friend possessed. Being over ambitious she was always unhappy.

मटिल्डा एक सुन्दर नवयुवती थी। भाग्य से वह एक ऐसे परिवार में पैदा हुई थी जो क्लर्कों का था। वह दुःखी रहती थी क्योंकि वह सोचती थी कि उसका जन्म विलासिता के लिए हुआ है। उसके पास अपनी सहेली के समान गहने नहीं थे। बहुत अधिक महत्वाकांक्षी होने के कारण वह सदैव अप्रसन्न रहती थी।

Q.23. What would have happened if Matilda had spoken the truth to Madame Forestier?

यदि मटिल्डा ने मैडम फॉरेस्टियर से सच बता दिया होता तो क्या होता?

Ans. If Matilda had spoken the truth to Forestier then she would have saved herself and her husband a great deal of trouble. If Matilda had been truthful with Madame Forestier, she could have known from her that the necklace was of false diamond. But Matilda had not the courage to speak the truth which cost her family full ten years. Matilda could easily have avoided a great deal of misery in her life by her confession. But she tried to hide the truth from her friend and so she and her husband had to face a lot of hardships.

यदि सही घटनाक्रम से मटिल्डा ने मैडम फॉरेस्टियर को अवगत करा दिया होता तो उसने बड़ी परेशानी से स्वयं व अपने पति को बचा लिया होता। यदि उसने मैडम फॉरेस्टियर को सत्य बता दिया होता तो उनसे पता चल जाता कि हार नकली हीरे का है। लेकिन मटिल्डा में इतना साहस नहीं था कि वह सत्य का उद्घाटन करे और इसीलिए उसके परिवार को दस वर्षों तक कष्ट झेलना पड़ा। मटिल्डा चाहती तो इस दुःखदायी स्थिति को रोक सकती थी यदि वह वास्तविकता को बता देती। लेकिन उसने अपनी सहेली से तथ्य को छिपाया और इसी कारण उसको और उसके पति को अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

SECTION-B (SHORT ANSWER TYPE) QUESTIONS

Q.1. Draw a character-sketch of Johnsy and Sue.

जोन्सी और सू का चरित्र-चित्रण कीजिए।

Ans. Johnsy and Sue were both young artists who lived together. Johnsy fell ill very seriously and had pneumonia. She had the fancy idea that she would die once the last leaf on the ivy creeper, outside her window, would fall down. The leaves were falling down very fast as the weather was stormy. Only one leaf remained. She felt that the last leaf will fall in the night and she would die. But Behrman went out in the cold night and painted a leaf on the wall. Johnsy saw this leaf the next morning and got back her will to live. But her foolish attitudes lead to the death of Behrman. She was a weak-hearted woman. Sue tried her best to feel Johnsy better and help in to get over her illness. But Johnsy would not listen to her. She was adamant. Sue sought the help of Behrman to solve the issue. Behrman solved the problem by painting a leaf on the wall.

जोन्सी और सू युवा कलाकार थीं जो दोनों साथ रहती थीं। जोन्सी गम्भीर रूप से बीमार हो गयी और उसे निमोनिया हो गया। वह इस विचार से ग्रसित थी कि जब लता की अन्तिम पत्ती झड़ जाएगी तो उसके जीवन की डोर भी टूट जाएगी। तूफानी मौसम होने के कारण पत्तियाँ तेजी से झड़ती जा रही थीं। केवल एक ही पत्ती बची। उसने सोचा कि यह अन्तिम पत्ती रात्रि में झड़ जाएगी और उसकी मृत्यु हो जाएगी। लेकिन बेरमन ने ठण्डी रात्रि में बाहर निकलकर दीवार पर पत्ती का चित्र बना दिया। अगली सुबह जोन्सी ने पत्ती को दीवार पर लगे हुए देखा तो उसमें जीने की ललक जाग उठी, लेकिन उसका मूर्खतापूर्ण कृत्य बेरमन की मृत्यु का कारण बना। वह एक कमजोर दिल की युवती थी। सू ने पूरी कोशिश की कि जोन्सी अच्छा महसूस करे और उसकी सहायता करे। लेकिन जोन्सी उसकी नहीं सुनती थी। वह जिद्दी थी। सू ने बेरमन की सहायता ली ताकि समस्या को सुलझाया जा सके। बेरमन ने दीवार पर पत्ती की चित्रकारी कर समस्या को सुलझा दिया।

Q.2. Write a note on the character of Behrman.

बेरमन के चरित्र पर एक लेख लिखिए।

Or Discuss the plot of the story 'The Lament'.

(2021)

'The Lament' कहानी की विवेचना कीजिए।

Ans. Behrman was an old man living on the ground floor of the house where Sue and Johnsy lived. His lifelong dream was to paint a masterpiece. Sue told him about the condition of Johnsy. Johnsy felt that she would die, once the last leaf fell from the ivy creeper. Behrman thought of a plan to save Johnsy. He went out in the rainy and stormy night and painted a picture of a leaf on the ivy. Johnsy saw the leaf the next morning and got back her will to live. But Behrman died of pneumonia because he had been out all night in the cold. Thus Behrman made the supreme sacrifice of giving up his life for the sake of another person. He was a great soul.

बेर्मान एक वृद्ध आदमी था जोकि मकान के भूमितल पर रहता था जहाँ सू और जोन्सी रहती थीं। उसका एक सपना था कि वह एक अद्भुत चित्रकारी करे। सू ने उसे जोन्सी की परेशानी से अवगत कराया। जोन्सी सोचती थी कि जैसे ही लता से आखिरी पत्ती झड़ जाएगी उसी क्षण उसकी भी मृत्यु हो जाएगी। अन्तिम पत्ती के गिरने के समय बेर्मान ने एक योजना पर कार्य किया ताकि जोन्सी को बचाया जा सके। वह आँधी-बारिश के दौरान रात्रि में बाहर गया और दीवार पर एक पत्ती बना दी। जोन्सी ने अगली सुबह पत्ती को सही स्थल पर लगे हुए देखा और उसमें जीने की उमंग जाग उठी। लेकिन बेर्मान की निमोनिया के कारण मृत्यु हो गयी क्योंकि ठण्ड में भी वह रातभर बाहर रहा था। इस प्रकार दूसरे का जीवन बचाने के लिए उसने अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दे दिया। वह हुतात्मा था।

Q.3. Give a brief narration of the story 'The Lament' in your own words.

कहानी 'The Lament' का विवरण अपने शब्दों में कीजिए।

Ans. 'The Lament' is a tale about a man named Iona. He is mourning over his dead son. Throughout the story, this sledge driver tries over and over again to talk to someone about his son's death. Iona's son tragically died a week ago and still has not told any person.

Readers are aware of the setting when an officer yells at Iona saying, "Sledge to Vbyborgskaya!" It is a village in Russia. The story claims that Iona is 'white like a ghost and sits on the box without stirring, bent as double as the living body can be bent'. Iona's first fare was a military officer. At first, this man seemed interested in Iona's story, but when Iona turned around to talk to him in more detail, the officer started shouting at him about his driving. Iona's next fare was three abnoxious youngmen. They were unruly but Iona gave them a ride hoping they would just listen to him. But they replied that we shall all die, and Iona received no sympathy. Finally, when he could no longer hold his thoughts in any longer, he took his horse back to the stable. He came upon another cabman and told him about his grief only to find the cabman was fast asleep. Iona wanted to tell someone the details of his son's death yet no one showed an interest.

'The Lament' एक कहानी है जो आयोना नामक व्यक्ति से सम्बन्धित है। वह अपने पुत्र की मृत्यु पर शोकमग्न है। पूरी कहानी में यही दिखाया गया है कि यह स्लेज गाड़ीवान बार-बार प्रयास करता है कि कोई व्यक्ति उसके पुत्र की मृत्यु के बारे में उससे सुने। आयोना का पुत्र एक सप्ताह पूर्व मृत्यु को प्राप्त हो चुका था तथापि यह तथ्य वह अभी तक किसी को नहीं बता पाया है।

पाठकों की मंचसज्जा की पूरी जानकारी है जब यह अधिकारी आयोना से जोर से कहता है, "स्लेज को विबोर्गस्कया ले चलो!" यह रूस का एक गाँव है। कहानी में बताया गया है कि आयोना भूत की तरह सफेद है और बिना हिले-डुले बक्से पर बैठा रहता है और उसके शरीर का झुकाव भी काफी अधिक हो जाता है। इस दौरान उसको पहले यात्री के रूप में एक सैन्य अधिकारी मिलता है। पहले तो वह आयोना की कहानी में रुचि लेता है लेकिन जब आयोना विस्तार से बताना चाहता है तो अधिकारी उसकी ड्राइविंग पर चिल्लाने लगता है। आयोना को इसके बाद तीन युवक यात्री के रूप में मिले जो गलत प्रकार के थे। लेकिन आयोना ने उन्हें स्लेज पर बैठा लिया ताकि वे उसकी बातें सुन सकें। लेकिन उन लोगों ने कहा कि एक दिन तो हम सभी की मृत्यु होनी है। इस प्रकार आयोना के प्रति कोई सहानुभूति प्रकट नहीं की गयी। अन्त में जब वह किसी

को भी अपनी भावनाओं से अवगत नहीं करा पाया तो उसने अपने घोड़े के साथ अस्तबल में प्रवेश किया। वहाँ उसे दूसरा गाड़ीवान मिला जिसको उसने अपनी व्यथा सुनानी शुरू की तो देखा कि गाड़ीवान तो गहरी नींद में सो चुका है। आयोना अपने पुत्र की मृत्यु के बारे में बताना चाहता था लेकिन उसे सुनने के लिए कोई तैयार ही नहीं था।

Q.4. Write a short note about Monsieur Loisel.

मॉनसेर लोसैल के चरित्र के बारे में विवरण दीजिए।

Ans. On account of his simplicity, honesty and hardwork Monsieur Loisel gets the sympathy of readers. Though he was poor, he was very honest. In the hour of need he handed over the whole amount to buy the garments for his wife. He loved his wife from the bottom of his heart. It was his love for her that he could not see tears in her eyes. He was a very hardworking man. To repay the debt he worked hard day and night.

His role in the story is highly significant. He is remembered by the readers because of courage, his heroism and hard work. His character shows his high sense of sacrifice.

अपनी सादगी, ईमानदारी और कठोर परिश्रम के कारण मॉनसेर लोसैल पाठक की सहानुभूति प्राप्त करने में सफल होता है। यद्यपि वह गरीब था तथापि ईमानदार था। आवश्यकता के समय उसने पूरी धनराशि अपनी पत्नी की पोशाक खरीदने के लिए दे दी। वह अपनी पत्नी को मन की गहराई से प्रेम करता था। यह उसका प्रेम ही था जिस कारण वह उसकी आँखों में आँसू नहीं देख सकता था। वह कठोर परिश्रम करने वाला व्यक्ति था। उधार की धनराशि चुकाने के लिए उसने दिन-रात मेहनत की। कहानी में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण है। अपने साहस, नायकत्व व कठोर परिश्रम के कारण पाठकों में उसकी स्मृति चिरस्थायी हो जाती है। उसके चरित्र में उसके उदात्त त्याग की अनुभूति होती है।

Q.5. Draw a character sketch of Mrs. Loisel.

श्रीमती लोसैल का चरित्र-चित्रण कीजिए।

Ans. Matilda was born in a poor family. She was very beautiful. By virtue of her good looks, she felt that she was born for all delicacies and luxuries. She wished to be admired and loved and to be married to some rich and renowned person. But she had to marry a petty clerk. She dreamt of lavish parties and rich dresses and jewels. Her dreamy ambitious and vain nature pushed her into trouble. She paid a heavy price for her foolish desires. She borrowed a necklace to wear at a ball. But the necklace was lost. That ruined her physical and mental beauty. But, she was brave and honest, she worked hard day by day to pay off her loan.

मटिल्डा ने एक गरीब परिवार में जन्म लिया था। वह बहुत सुंदर थी। अपनी सुन्दरता के कारण वह समझती थी कि वह सब प्रकार के सुख और व्यंजन भोगने के लिए पैदा हुई है। वह चाहती थी कि सब उसकी प्रशंसा करें और स्नेह करें। वह किसी धनवान व प्रसिद्ध व्यक्ति से विवाह करना चाहती थी। लेकिन उसे एक मामूली से क्लर्क से विवाह करना पड़ा। वह शानदार पार्टियों में जाने की कल्पना करती थी और महँगी पोशाकें व गहने पहनना चाहती थी। उसके ख्याली पुलाव और दिखावटी स्वभाव ने उसे परेशानी में डकेल दिया। अपनी मूर्खतापूर्ण इच्छाओं के लिए उसे बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। नृत्यपार्टी के लिए उसने एक हार उधार लिया जो खो गया। इस घटना ने उसकी शारीरिक व मानसिक सुन्दरता को बरबाद कर दिया। लेकिन वह साहसी व ईमानदार थी, उसने लगातार कठोर परिश्रम किया ताकि उधार को चुकाया जा सके।

SECTION-C (LONG ANSWER TYPE) QUESTION

Q.1. Write the summary of 'The Last Leaf'.

द लास्ट लीफ का सारांश लिखिए।

Ans. Sue and Johnsy were two friends and artists. They lived together in a small flat situated on the third storey of an old flat. Johnsy falls ill with pneumonia in November. Sue was worried

and sent for the doctor. He told Sue that Johnsy had lost the will to live. Medicine would not help her.

Sue tried her best to make Johnsy take interest in things around her. She talked about clothes, fashion and brought her drawing board into Johnsy's room and started painting. She also whistled while painting.

Johnsy looked at an ivy creeper outside on the wall shedding its leaves. She started counting backward from twelve. She asked what it was all about. Johnsy said that she would die with the falling of the last leaf. Sue told her that was all nonsense. But it had no effect on Johnsy.

Behrman, an old painter, lived on the ground floor. He had a dream that he would one day paint a masterpiece. Sue told Behrman about Johnsy's strange fancy. Both he and Sue went to Johnsy's room while she was sleeping. They saw the ivy creeper had only one leaf left on it. It was raining and seemed that the last leaf would fall anytime.

Johnsy awoke for her sleep and saw the last leaf. It was green and healthy Johnsy looked at it every hour but it did not fall even in the stormy evening. This received Johnsy's will to live. Johnsy admitted that she was a wicked girl. The last leaf had shown that. It was a sin to want to die. She asked for a mirror and had lots of hot soup.

Next morning Sue told Johnsy about Behrman. He had been ill for only two days. The guard found him on his bed. His clothes and shoes were wet. He had been shivering in the stormy night. He had painted the last leaf on the wall that night. He caught pneumonia and died. The last leaf was his masterpiece. He painted in the night when the last leaf fell.

सू और जॉन्सी दो युवा दोस्त और कलाकार थे। पुराने घर की तृतीय मंजिल पर स्थित एक छोटे से फ्लैट में साथ रहते थे। नवम्बर में जॉन्सी निमोनिया से गम्भीर रूप से बीमार हो गई। सू चिन्तित हुई और डॉक्टर को बुलाया। उसने सू को बताया कि जॉन्सी ने जीने की इच्छा खो दी है। दवाई से उसको कोई मदद नहीं मिलेगी।

सू ने जॉन्सी को अपने आसपास की चीजों में दिलचस्पी लेने के लिए हर संभव कोशिश की और अपना ड्राइंग बोर्ड भी जॉन्सी के कमरे में ले आई और पेंटिंग शुरू कर दी। पेंटिंग करते समय सीटी भी बजाई।

जॉन्सी ने एक आइवी लता को बाहर दीवार पर अपनी पत्तियों को बहाते हुए देखा। वह बारह से पीछे की ओर गिनने लगी। सू ने पूछा कि यह सब क्या है? जॉन्सी ने कहा है कि वह आखिरी पत्ता गिरने के साथ मर जाएगी। सू ने उससे कहा कि यह सब बकवास है लेकिन जॉन्सी पर इसका कोई भी असर नहीं हुआ।

एक पुराने चित्रकार बेहरमन भूतल पर रहते थे। उसका स्वप्न था कि वह एक दिन एक उत्कृष्ट कृति को बनाये। सू ने बेहरमन को जॉन्सी की अजीब कल्पना के बारे में बताया। जब वह सो रही थी तो वह और सू, दोनों जॉन्सी के कमरे में चले गए। उन्होंने देखा कि आइवी लता पर केवल एक ही पत्ता बचा था। बारिश हो रही थी और लग रहा था कि आखिरी पत्ता कभी भी गिरेगा।

जॉन्सी निद्रा से जागी और उसने आखिरी पत्ता देखा। यह हरा और खिला हुआ था। जॉन्सी ने हर घण्टे इसे देखा लेकिन यह तूफानी शाम में भी नहीं गिरा था। इसने जॉन्सी की जीवित रहने की इच्छा को पुनः जीवित किया।

जॉन्सी ने यह माना कि वह एक दुष्ट लड़की थी। आखिरी पत्ते ने उसे सिखाया कि मरना पाप था। उसने शीशा माँगा और गरमागरम सूप भी।

अगली सुबह सू ने जॉन्सी को बेहरमन के बारे में बताया। वह सिर्फ दो दिन से बीमार थे। गार्ड ने उसे अपने बिस्तर पर पाया। उसके कपड़े और जूते गीले थे। वह तूफानी रात में कांप रहे थे। बेहरमन ने उस रात दीवार पर उस आखिरी पत्ते को रंग दिया था। उसे निमोनिया हो गया था जिससे उसकी मौत हो गई थी। जिस रात आखिरी पत्ता गिरा उसने उसी रात इसे चित्रित किया था।

Q.2. What is the main theme in Anton Chekhov's "The Lament" also called "Misery"?

Anton Chekhov के "The Lament", का जिसको "Misery" भी कहते हैं, मुख्य विषय (theme) क्या है?

Ans. "The Lament" also known as "Misery" is a short story by Anton Chekhov about a Russian sledge driver whose son has recently died and his reactions.

The central theme of the story, as the title suggests, is "Misery". Iona Potapov, the driver, takes several fares and each time tries to share his grief with his passengers.

"Drive on ! drive on ! ..." says the officer. "We shan't get there till tomorrow going on like this. Hurry up!"

The sledge-driver cranes his neck again, rises in his seat, and with heavy grace swings his whip. Several times he looks round at the officer, but the latter keeps his eyes shut and is apparently disinclined to listen.

However, his fares all have their own problems in life, or simply do not care; Iona is unable to unburden himself by sharing his grief and so continues on, "white like a ghost".

Iona looks round at them. Waiting till there is a brief pause, he looks round once more and says :

"This week....er... my...er... son died!"

"We shall all die, ..." says the hunchback with a sigh, wiping his lips after coughing. "Come, drive on ! drive on !"

Without any sympathetic human contact, Iona feels the pain of his son's passing more powerfully than if he had said nothing. Finally, he turns to his faithful mare, who can't comprehend his sorrow but listens patiently.

"Are you munching ?" Iona asks his horse, seeing her shining eyes. "There, munch away, munch away.

He said good-bye to me. . . . He went and died for no reason Now, suppose you had a little colt, and you were own mother to that little colt. . . . And all at once that same little colt went and died....You'd be sorry, wouldn't you?..."

The little horse munches, listens, and breathes on his master's hands. Iona is carried away and tells his all about it.

It is in the act of telling the story that Iona finds a measure of peace. He has tried to connect with his fellow men, but they are all wrapped up in their own lives, superficial or otherwise. Iona's final act is similar to that of confession; he tells the story that has been weighing on his mind and so is relieved of its pressure. His "misery" has eased through his telling of a "Lament".

"The Lament" जिसको "Misery" भी कहा जाता है, Anton Chekhov द्वारा रचित एक लघु कहानी है। यह एक रशियन घोड़ा चालक की कहानी है जिसका बेटा अभी-अभी मरा है। कहानी में कहानीकार उसकी प्रतिक्रियाओं के बारे में बताता है।

इस कहानी का मुख्य विषय जैसे उसका शीर्षक बताता है Misery (कष्ट/पीड़ा) है। Iona Potapov जो एक घोड़ा चालक है कई सवारियाँ लेता है और हर बार उनके साथ अपना दर्द बाँटने की कोशिश करता है।

“चलते रहो, चलते रहो” आर्मी ऑफिसर कहता है “हम इस तरह से वहाँ कल तक नहीं पहुँच पाएँगे जल्दी करो।” घोड़ा चालक अपनी सीट से उठता है और बड़े भारी मन से चाबुक चलाता है। कई बार वो पीछे पलटकर ऑफिसर को भी देखता है परन्तु ऑफिसर अपनी आँखें बन्द रखता है और वह कुछ भी सुनने में रुचि नहीं लेता है।

हालांकि उसकी सवारियों की अपने जीवन में अपनी ही समस्याएँ हैं, या (सवारी) वे बिल्कुल भी परवाह नहीं करते। Iona अपना दुख बाँटने में सफल नहीं हो पाता और ऐसे ही आगे बढ़ता है। Iona अपनी सभी सवारियों को पीछे मुड़कर देखता है। वह फिर पीछे मुड़कर देखकर कहता है, “इस सप्ताह मेरा बेटा मर गया!” “हम सब मर जाएँगे” गाड़ी चालक से खांसते हुए कहता है “चलो, बढ़ते चलो, बढ़ते चलो!”

बिना किसी सहानुभूति और मानव सम्पर्क से Iona अपने बेटे के मरने का दर्द और भी ज्यादा महसूस करता है। आखिरकार वह अपने भरोसेमंद घोड़े की तरफ देखता है जो उसका दर्द नहीं समझता है किन्तु फिर भी वह धैर्यपूर्वक सुनता है। “क्या तुम कुछ खा रहे हो?” Iona अपनी घोड़े की चमकती हुई आँखों की तरफ देखते हुए बोलता है।

उसने मुझे good bye बोला और बिना किसी कारण से मर गया। अब मान लो तुम्हारा एक बच्चा होता, तुम छोटे से बच्चे की माँ होती और वह अचानक मर जाता तो क्या तुम्हें दुःख नहीं होता। घोड़ा खाते हुए सुनता है और अपने मालिक के हाथों पर सांस छोड़ता है। Iona को प्रोत्साहन मिलता है और वह उसको अपने बेटे के विषय में सब कुछ बताता है। यह एक कहानी सुनाने की क्रिया है जिसमें Iona को एक प्रकार की शांति महसूस होती है। उसने अपनी सभी सवारियों के साथ बात करने की बहुत कोशिश की लेकिन वह सब अपनी जिन्दगी में उलझे हुए हैं। Iona के अन्तिम एक्ट अपराध स्वीकृति की तरह है, वह कहानी बताकर अपने दिमाग को हल्का करता है और अपने दबाव को दूर करता है। यह कहानी सुनाकर वह अपने दुःखों को कम कर देता है।

Q.3. Discuss the story “Misery/The Lament” and the characters of Iona and the horse.

“Misery” कहानी और उसके पात्र Iona और उसके घोड़े की चर्चा कीजिए।

Ans. Grief strikes all men at some time at least in their lives. The stages of grief are similar for everyone; however, some people hold their feelings inside. There are those who need to share their feelings. This is true of the protagonist in the story “Misery” by Anton Chekhov. Iona Potapov wants and needs to talk to someone. Chekhov shows the indifference that man can show to one another.

The setting of the story is winter in Russia. It is extremely cold with snow falling. The narration is third person point of view with an omniscient limited narrator.

Iona is elderly. He has recently suffered a grievous loss. After a brief illness, his son has died. Iona is beside himself with sorrow. There is no one to talk with about this tragedy, and no one with whom to share his misery. Iona “thirsts for speech”.

He has been sitting in his sleigh with his little, white horse. As the story progresses, he does gain several fares, none of whom is interested in talking to the driver as everyone wants to reach his destination hurriedly.

The first is an officer. He does show some interest in the story of the death of the driver’s son.

‘H’m! What did he die of?’

Iona turns his whole body round to his fare, and says

‘Who can tell! This must have been from fever...He lay three days in the hospital and then he died... God’s will.’

That is the end of the discussion. Iona is left with nothing to satisfy his longing to share his story.

The second fare is three young men. One of them is a hunchback. He is particularly sarcastic and bitter about life. The sustenance he receives from them is "We all have to die."

The third encounter is a house porter. He tells the driver to go on and leave him alone.

After this encounter, Iona gives up and returns to the yard for the evening.

Iona sits in the cab room. He thirsts for human conversation. His son has been dead for a week. He has been unable to talk to anyone about it. He has a daughter who lives in the country, yet he has not been able to see her either. There is a young cabby in the room; however, he is thirsty and too sleepy to have any interest in the old man.

Finally, Iona decides to go outside and see about his horse. When he sees him, he is munching on hay. He begins to talk to him. It as though she understands that he must talk about his son's death. Iona is reduced to experiencing some relief in the warm, animal companionship of his horse.

The old man feels some relief that the horse listens, eats, and breathes on him as he talks to him. Having lost faith in man, he is warmed by his old friend, the horse, with whom he shares his life. Psychologically, his sorrow cannot be contained any longer. He rushes to talk to anyone or anything. He finds comfort being able to communicate even with an animal.

The horse symbolizes what man will not give Iona: attention, reflection, and love. This the horse willingly gives to the old man. Sadly, humanity turns away from the old man who needs the attention. The animal does not.

दुःख सबके जीवन में कभी ना कभी आता है। दुःखों के चरण सबके लिए एक जैसे होते हैं हालांकि कुछ लोग अपनी भावनाओं को अपने अंदर ही दबा लेते हैं। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो अपनी भावनाओं को दूसरों को बताना चाहते हैं। यह Anton Chekhov की कहानी Misery/The Lament के नायक पर पूर्णतया सत्य बैठती है। Iona Potapov किसी को अपनी बात बताना चाहता है। Chekhov यहाँ पर एक व्यक्ति की दूसरे व्यक्ति के प्रति उदासीनता को दर्शाता है। यह कहानी रशिया के सर्दियों की है जहाँ पर बहुत अधिक बर्फ पड़ती है। Iona एक वृद्ध है जिसने हाल फिलहाल ही एक गम्भीर क्षति को झेला है। एक संक्षिप्त बीमारी के बाद उसका बेटा मर जाता है। Iona दुःख में बिल्कुल अकेला है उसके पास कोई नहीं है जिसे अपने हादसे के बारे में बता सके।

वह अपने छोटे-से सफेद घोड़े के साथ अपनी गाड़ी में बैठा है। जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, उसको कई सारी सवारियाँ मिलती हैं लेकिन कोई भी उसकी बातों में रुचि नहीं दिखाता क्योंकि सबको अपने गंतव्य पर जाने की जल्दी है। वह अफसर ही पहला व्यक्ति है जो उसकी बेटे की मौत की कहानी में दिलचस्पी दिखाता है।

हम्म! वह कैसे मर गया?

Iona अपने पूरे शरीर को सवारी की तरफ घुमाता है और कहता है।

कौन बता सकता है! यह जरूर बुखार की वजह से हुआ होगा वह अस्पताल में तीन दिन पड़ा रहा और मर गया भगवान की इच्छा।

यहीं चर्चा का अन्त होता है। Iona अपनी कहानी बताने की उत्सुकता को सन्तुष्ट नहीं कर पाता।

उसकी दूसरी सवारी तीन नौजवान हैं जिनमें से एक कुबड़ा है जो जीवन के प्रति बहुत ही निन्दनीय और कटु है। उनसे उसे जो जीवन आधार प्राप्त हुआ है वह यह है—“हम सबको मरना ही होगा”।

उसकी तीसरी सवारी एक बोझा ढोने वाला है जो चालक से कहता है कि आगे चलो और उसे अकेला छोड़ दो। इस मुलाकात के बाद Iona सब कुछ छोड़ देता है और वापस घर आ जाता है।

अपनी गाड़ी के कमरे में बैठे हुए उसको बात करने की तीव्र इच्छा होती है क्योंकि उसका बेटा हफ्ता पहले मर चुका है और वह किसी से बात नहीं कर पा रहा है। उसकी एक बेटी भी है जो शहर में रहती है फिर भी वह उससे मिल नहीं पाता। कमरे में एक नौजवान भी है जो कि प्यासा और निद्रालु होने की वजह से वृद्ध आदमी में कोई रुचि नहीं दिखाता।

आखिरकार, वह बाहर जाने का निर्णय लेता है ताकि वह अपने घोड़े को देख सके। जब वह बाहर आता है तो देखता है वह चारा खा रहा है वह उससे बात करना शुरू करता है कि जैसे उसे सब कुछ समझ आ रहा हो। Iona को उससे बात करके कुछ राहत मिलती है।

वृद्ध आदमी का मन हल्का होता है कि घोड़ा उसको सुनता है, खाना खाता है और उस पर सांस लेता है। इंसानों पर अपना विश्वास खो जाने के बाद उसको अपने पुराने दोस्त घोड़े के साथ अपना जीवन व्यतीत करना अच्छा लगता है। मनोवैज्ञानिक तरीके से उसके दुःखों को दबाकर रखना असंभव है इसलिए वो किसी से भी बात करने के लिए चला जाता है। उसको एक जानवर से बात करने में भी सुकून महसूस होता है।

घोड़ा यहाँ पर ध्यान और प्यार का प्रतीक है जो Iona को कोई मनुष्य नहीं दे सकता। बहुत अफसोस की बात है कि इंसानियत उस वृद्ध आदमी को जिसे उसकी जरूरत है छोड़ देती है। वह कार्य एक जानवर नहीं कर सकता।

Q.4. The story 'The Diamond Necklace' teaches us many lessons which form the crux of human values. Discuss.

कहानी 'The Diamond Necklace' हमें बहुत-सी शिक्षाएँ देती हैं जो मानवीय गरिमा का मर्म हैं। विवेचना कीजिए।

Ans. The story 'The Diamond Necklace' very first thing teaches us, is the need to be content in life. Matilda, though born into a family of clerks and married to a petty clerk with the Ministry of Public Instruction, remains unhappy. She suffers from the feeling that she is born for all delicacies and luxuries, but has to live miserably in poverty. So, when she has to attend the office party with her husband, she asks him for money to get a new dress. Her husband sacrifices the money he has saved to buy a gun to get her the dress. Then also she is not content. She feels that she could look still more beautiful with a jewel. She thus borrows a necklace from her friend, thinking that it is made of diamonds. At the party, she remains elegant, gracious, smiling and absolutely happy. She was thus the prettiest of all. But this vanity is short lived and is the beginning of all troubles in her life. She loses the necklace and she gets a new diamond necklace as its replacement by borrowing heavily. Subsequently, she is pushed to live in poverty as she slogs for ten years to save money to pay back the huge debt. Then the horrible reality frightens her. She realises how her false pride has taken away her otherwise happy contented life. The story thus discusses the negative effects of pride and vanity.

कहानी 'The Diamond Necklace' से पहली शिक्षा जो हमें मिलती है वह यह है कि हमें अपने जीवन से सन्तुष्ट होना चाहिए। मटिल्डा का जन्म क्लर्कों के परिवार में हुआ था और एक मामूली से क्लर्क से उसका विवाह हुआ था जो लोक शिक्षा मन्त्रालय में कार्यरत था, इसीलिए मटिल्डा असन्तुष्ट रहती थी। उसे लगता था कि वह सभी व्यंजनों और सुखों को भोगने के लिए पैदा हुई है। लेकिन उसे गरीबी में रहने के लिए अभिशप्त होना पड़ा है। जब उसे एक ऑफिस पार्टी में जाना था तो उसने पोशाक खरीदने के लिए धन की माँग की। उसके पति को अपना धन देना पड़ा जो उसने बन्दूक खरीदने के लिए बचाकर रखा था। तब भी मटिल्डा को सन्तुष्टि नहीं हो पायी। उसे लगा कि बिना गहने के उसका श्रृंगार अधूरा ही रहेगा। अतः उसने अपनी सहेली से एक हार उधार लिया। इस हार को उसने हीरे का समझा। समारोह में वह सर्वाधिक स्फूर्त रही, वह सब प्रकार से प्रसन्न थी। वह वहाँ उपस्थित सभी महिलाओं में सर्वाधिक सुन्दर, आलीशान, प्रसन्न और खुश दिखायी दे रही थी। लेकिन ऐसा दिखावा क्षणभंगुर होता है और यहीं से उसके जीवन में परेशानियों का दौर शुरू हो गया। वह हार को खो देती है और नया हार खरीदने के लिए उसे बड़ी धनराशि उधार लेनी होती है। इसके बाद उसे गरीबी में रहना पड़ा और कठोर परिश्रम करना पड़ा। धन की बचत करने के लिए उसे इसी हालात में दस वर्षों तक रहना पड़ा। तब उसे वास्तविकता का बोध हुआ। उसे पता चला कि उसके दिखावे ने किस प्रकार उसके सन्तुष्ट जीवन में तूफान ला दिया। इस प्रकार इस कहानी में दिखावे के नकारात्मक पहलू को दर्शाया गया है।



UNIT-V

Short Stories

1. The Lost Child
2. Under the Banyan Tree
3. The Tunnel

SECTION-A VERY SHORT ANSWER TYPE QUESTIONS

Q.1. Who is the writer of the story 'Under the Banyan Tree'?

'अंडर द बरगद ट्री' कहानी के लेखक कौन हैं?

Ans. R.K. Narayan is the writer of the story 'Under the Banyan Tree'.

आर०के० नारायण 'अंडर द बरगद ट्री' कहानी के लेखक हैं।

Q.2. When was Mulk Raj Anand born?

मुल्क राज आनंद का जन्म कब हुआ था?

Ans. Mulk Raj Anand was born on December 12, 1905 at Peshawar (now in Pakistan) in India.

मुल्क राज आनंद का जन्म 12 दिसंबर, 1905 को पेशावर (अब पाकिस्तान में) भारत में हुआ था।

Q.3. When was Mulk Raj Anand's 'Coolie' published?

मुल्क राज आनंद की 'कुली' कब प्रकाशित हुई थी?

Ans. Mulk Raj Anand's 'Coolie' was published in 1936.

मुल्क राज आनंद की 'कुली' 1936 में प्रकाशित हुई थी।

Q.4. How can you say that the child was scared of his father in the story 'The Lost Child'?

आप कैसे कह सकते हैं कि 'द लॉस्ट चाइल्ड' कहानी में बच्चा अपने पिता से डर गया था?

Ans. In the story 'The Lost Child' the child was tempted by many things but he asked for them only in slow murmurs. This shows that he was scared of his father and could not express his demands as rightfully as some other children do.

'द लॉस्ट चाइल्ड' कहानी में बच्चे को बहुत सी चीजों का लालच था लेकिन उसने धीमी बड़बड़ाहट में ही उन्हें माँगा। इससे पता चलता है कि वह अपने पिता से डरता था और अपनी माँगों को अन्य बच्चों की तरह सही तरीके से व्यक्त नहीं कर पाता था।

Q.5. What was the full name of R.K. Narayan?

आर०के० नारायण का पूरा नाम क्या था?

Ans. R.K. Narayan's full name was Rasipuram Krishnaswami Narayan.

आर०के० नारायण का पूरा नाम रासीपुरम कृष्णास्वामी नारायण था।

Q.6. Who was the writer of the 'Malgudi Days'?

'मालगुडी डेज' के लेखक कौन थे?

Ans. R.K. Narayan was the writer of the 'Malgudi Days'.

आर०के० नारायण 'मालगुडी डेज' के लेखक थे।

Q.7. Give an introduction of Mulk Raj Anand.

मुल्कराज आनंद का परिचय दीजिए।

Ans. Mulk Raj Anand was an Indian writer in English, notable for his description of the lives of the lower castes and poorer castes in Indian society. Anand was one of the pioneers of Indo-Anglian fiction. Mulk Raj Anand was born on 12 December, 1905 in Peshawar. He graduated with honors from Khalsa College, Amritsar in 1924. Anand belonged to an ordinary Hindu family which was financially not very well off.

मुल्कराज आनंद एक भारतीय-अंग्रेजी लेखक थे जो कि निम्न एवं गरीब श्रेणी के जीवन विवेचन लेखन के लिये जाने जाते हैं। आनंद भारतीय-अंग्रेजी उपन्यास लेखन में अग्रणी हैं। मुल्कराज आनंद का जन्म 12 दिसम्बर 1905 को पेशावर में हुआ था। उन्होंने खालसा कॉलेज, अमृतसर से 1924 में स्नातक पूर्ण किया। आनंद एक साधारण हिन्दू परिवार से थे जिसकी आर्थिक दशा ज्यादा अच्छी नहीं थी।

Q.8. When was Anand's first novel published?

आनंद का प्रथम उपन्यास कब प्रकाशित हुआ?

Ans. Anand's first novel 'Untouchable' was published by an English firm in 1935, after it had been rejected by as many as nineteen publishers in England. Then came four other novels from his pen in quick succession. These were *Coolie* (1936), *Two Leaves and a Bud* (1937), *The Village* (1939) and *Across the Black Waters* (1940).

आनंद का प्रथम उपन्यास, उन्नीस से ज्यादा प्रकाशकों के मना कर देने के बाद, इंग्लैण्ड में 1935 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास का शीर्षक 'Untouchable' था। इसके बाद आनंद की कलम से चार उपन्यास आये जो हैं—*Coolie* (1936), *Two Leaves and a Bud* (1937), *The Village* (1939) और *Across the Black Waters* (1940).

Q.9. Enumerate the fifteen novels of Mulk Raj Anand.

मुल्कराज आनन्द के पंद्रह उपन्यासों के नाम लिखिए।

Ans. Following are the novels of Anand in Chronological order :

आनन्द के उपन्यास क्रमानुसार निम्नलिखित हैं—

- | | |
|--------------------------------------|---|
| 1. Untouchable (1935) | 2. Coolie (1936) |
| 3. Two Leaves and a Bud (1937) | 4. Lament on the Death of a Master of Arts (1938) |
| 5. The Village (1939) | 6. Across the Black Waters (1940) |
| 7. The Sword and the Sickle (1942) | 8. The Big Heart (1945) |
| 9. Seven Summers (1951) | 10. Private Life of an Indian Prince (1953) |
| 11. The Old Woman and the Cow (1960) | 12. The Road (1963) |
| 13. The Death of a Hero (1964) | 14. Morning Face (1970) |
| 15. Confession of a Lover (1976) | |

Q.10. What is the place of parents in a life of any child?

किसी बच्चे के जीवन में उसके माता-पिता का क्या स्थान है?

Ans. The parents of a child are his only refuge. He cannot live without his parents. The separation of the parents brings out the sense of insecurity in the child. In their absence he cannot get anything from others. He accepts things only from his parents and from no other ones.

बच्चे के माता-पिता उसके एकमात्र सहारा हैं। वह अपने माता-पिता के बिना नहीं रह सकता। माता-पिता से पृथक होने से बच्चे में असुरक्षा की भावना उत्पन्न हो जाती है। माता-पिता की अनुपस्थिति में बच्चा किसी से कोई चीज नहीं ले सकता। वह केवल अपने माता-पिता से ही चीजें स्वीकार करता है और किसी अन्य व्यक्ति से नहीं।

Q.11. What is the child psychology about his parents in the story 'The Lost Child'?

'The Lost Child' में बच्चे की अपने माता-पिता के बारे में क्या मनोवैज्ञानिक स्थिति है?

Ans. The child psychology worked when the parents were lost in the fair. However, unkindly his parents were, they were his solace and refuge. He could not trust a man howsoever kind and affectionate he was. The child was offered all the things which he wanted and his parents had refused them to him. But he was not ready to enjoy them now. His constant restrain was 'I want my mother, I want my father'.

जब मेले में माता-पिता खो गए तो बाल मनोविज्ञान ने कार्य किया। उसके माता-पिता कितने ही निर्दयी रहे हों, वे उसका आलम्बन व सहारा थे। वह किसी अन्य व्यक्ति पर विश्वास नहीं कर सका, चाहे वह कितना ही दयालु व स्नेही रहा हो। बच्चे को सब चीजें दी गयीं जो वह चाहता था और उसके माता-पिता ने उसको उन्हें दिलाने से मना कर दिया था। परन्तु वह अब उनका आनन्द लेने के लिए तैयार नहीं था। उसका लगातार रुदन यही था कि 'मुझे मेरी माँ चाहिए, मुझे मेरे पिता चाहिए।'

Q.12. Describe the natural beauty of the mustard fields as described in the story.

सरसों के खेत की प्राकृतिक छटा का वर्णन कहानी के हिसाब से कीजिए।

Ans. In the story 'The Lost Child', the child entered a mustard field. It was a beautiful field shining with yellow flowers. There were many butterflies in the field. The child began to chase the butterflies.

बच्चा एक सरसों के खेत में चला गया। यह बहुत सुन्दर खेत था जो पीले फूलों से चमक रहा था। खेत में अनेक तितलियाँ थीं। बच्चा तितलियों के पीछे भागने लगा।

Q.13. Discuss briefly the early life of RK Narayan.

आर०के० नारायण के प्रारंभिक जीवन की संक्षिप्त विवेचना कीजिए।

Ans. Rasipuram Krishnaswami Narayanswami (1906-2001) was born in Madras (presently Chennai). His father was a school teacher in Mysore. All his brothers and sisters shifted to Mysore along with his parents but he was left behind with his grandmother.

R.K. Narayan was not a brilliant student. He graduated from Maharaja College, Mysore at the age of twenty four in 1930. He failed in his high school examination as well as in Intermediate examination. He was fond of reading. He wrote stories at the age of fifteen. After completing his graduation, he worked as a clerk to earn livelihood for his family.

आर०के० नारायण (1906-2001) का जन्म मद्रास में हुआ था। उनके पिता मैसूर में एक अध्यापक थे। उनके सभी भाई-बहन अपने माता-पिता के साथ मैसूर आ गए थे, लेकिन वह अपनी दादी के पास ही रुक गए।

आर०के० नारायण कोई मेधावी छात्र नहीं थे। वर्ष 1930 ई० में चौबीस वर्ष की आयु में उन्होंने महाराजा कॉलेज मैसूर से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। हाई स्कूल व इण्टरमीडिएट की परीक्षा में वे अनुत्तीर्ण हो गए। उन्हें पढ़ने का बेहद शौक था। पन्द्रह वर्ष की आयु में उन्होंने कहानियाँ लिखनी प्रारम्भ कर दीं। स्नातक डिग्री लेने के बाद, परिवार का भरण-पोषण करने के लिए उन्होंने क्लर्क की नौकरी कर ली।

Q.14. What was the reason behind the Nambi's failure of telling the story at the second day? Discuss.

नाम्बी का दूसरे दिन कहानी सुनाने में असमर्थ रहने का क्या कारण था? विवेचना कीजिए।

Ans. On the second day, the villagers faithfully assembled under the banyan tree to listen to Nambi's story. He started the story and went on for an hour continuously. He felt relieved and thanked the Goddess Shakti. But when he recommenced the story, he failed to tell it after a few minutes. He stammered and paused. The crowd rose silently and went home.

दूसरे दिन गाँववाले विश्वास के साथ बरगद के पेड़ के नीचे एकत्रित हुए ताकि नाम्बी की कहानी सुन सकें। उसने कहानी सुनानी शुरू की और एक घण्टे तक वह ऐसा करता रहा। उसने राहत की साँस ली और देवी शक्ति का धन्यवाद किया। लेकिन जब उसने पुनः कहानी सुनानी शुरू की तो कुछ मिनटों के बाद वह कहानी आगे नहीं सुना सका। वह थोड़ा-सा हकलाया और उसकी आवाज रुंध गयी। भीड़ में लोग धीरे-धीरे खड़े होने लगे और फिर घर को चले गए।

Q.15. What was the method of Nambi of telling his age?

नाम्बी का अपनी आयु बताने का क्या ढंग था?

Ans. Nambi was very old but nobody could tell about his exact age. Whenever anybody asked Nambi about his age, he referred to an ancient famine or an invasion or the building or a bridge. In this way he related his birth to some memorable public event to create a halo of mystery round it.

नाम्बी की आयु काफी अधिक थी लेकिन कोई भी व्यक्ति उसकी वास्तविक आयु बताने में असमर्थ था। जब भी कोई व्यक्ति नाम्बी से उसकी आयु जानना चाहता था तो वह अतीत के किसी अकाल या किसी हमले अथवा किसी भवन या पुल का विवरण देने लगता था। इस प्रकार अपनी आयु को वह किसी सार्वजनिक घटनाक्रम से जोड़कर उसे रहस्य के आवरण में लपेट देता था।

Q.16. How did the villagers look upon Nambi? What was their opinion of the man?

नाम्बी को गाँववाले किस नजर से देखते थे? उसके बारे में गाँववाले क्या राय रखते थे?

Ans. Nambi was an unusually fantastic storyteller for whom the village folk had great regard. They respected him and would fulfil his needs of food and clothing. They regarded him as a great enchanter who enjoyed the favour of Goddess Shakti. They looked upon Nambi as a storehouse of knowledge. They would feel awe and wonder when they listened to his wonderful stories. They tolerated his eccentricities as signs of his special genius.

नाम्बी असाधारण रूप से अद्भुत कहानी सुनानेवाला व्यक्ति था जिसका गाँववालों के बीच गहरा सम्मान था। वे उसका आदर करते थे और उसके भोजन व वस्त्रों की पूर्ति करने के लिए तैयार रहते थे। वे उसे सम्मोहक के रूप में देखते थे जिसको देवी शक्ति का आशीर्वाद प्राप्त था। वे नाम्बी को ज्ञान का भण्डार मानते थे। जब वो अद्भुत कहानियाँ सुना रहा होता था तो लोग आश्चर्य से भर जाते थे। वे लोग उसकी सनक को भी उसकी विशिष्ट योग्यता के रूप में सहन करते थे।

Q.17. Give a brief introduction of Ruskin Bond.

रस्किन बॉण्ड का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

Ans. Ruskin Bond by his own name established a bond between India and Britain. He is an Indian author of British descent. He was born in Kasauli in the then province of Punjab in 1934. He is described as the Indian Wordsworth in recognition of his love of nature and in its mystification. The reason may be that he developed a great association with nature when most of his life was spent amidst Himalayas.

अपने नाम के अनुरूप ही रस्किन बॉण्ड ने भारत व ब्रिटेन के बीच एक बॉण्ड या अटूट रिश्ता बनाया है। वह ब्रिटिश मूल के भारतीय लेखक हैं। उनका जन्म सन् 1934 में कसौली में हुआ था जो तब पंजाब प्रान्त का भाग था। अपने प्रकृति प्रेम के कारण उन्हें भारत का वर्ड्सवर्थ कहा जाता है। उन्होंने प्रकृति के साथ अपने को एकाकार कर लिया है। इसका कारण है कि उनका अधिकांश जीवन हिमालय की वादियों में बीता।

Q.18. "It is safer in the jungle than in the town," says Sundar Singh. Justify the statement in the context of the story "The Tunnel." (2021)

“नगर की अपेक्षा जंगल सुरक्षित है” सुंदर सिंह कहता है। “The Tunnel” कहानी के सन्दर्भ में इस कथन की विवेचना कीजिए।

Ans. The short story, “The Tunnel,” takes place in the Himalayan foothills. Sundar Singh is a watchman of this tunnel and he inspects the tunnel twice a day. He says that “It is safer in the jungle than in the town” because once when he went to the nearby town, he was almost run over by a motor car. As compared to a town, the jungle is a peaceful, relaxed and safe place.

यह लघुकथा “The Tunnel” हिमालय की तलहटी में घटती है। सुंदर सिंह इस सुरंग का चौकीदार है तथा वह हर दिन इसका दो बार निरीक्षण करता है। वह कहता है “नगर की अपेक्षा जंगल सुरक्षित है” क्योंकि एक बार जब वह पास के नगर में गया था, एक कार ने उसे लगभग रौंद ही दिया था। एक नगर के मुकाबले जंगल एक शान्त, तनाव मुक्त और सुरक्षित स्थान है।

Q.19. Draw a character sketch of Suraj.

सूरज का चरित्र चित्रण कीजिए।

Ans. Suraj is a young boy and is also the protagonist of the story. He is anxious to know more about this world. He rides a bicycle and loves watching the passing trains.

सूरज एक छोटा लड़का है जो कहानी का नायक भी है। वह इस संसार के बारे में अधिक से अधिक जानने के लिए उत्सुक है। वह साइकिल की सवारी करता है और जाती हुई रेलगाड़ी को देखना उसे पसंद है।

Q.20. What emotion is created at the end of the story "The Tunnel"?

कहानी “The Tunnel” के समापन के दौरान किस मनोभाव का आविर्भाव होता है?

Ans. The emotions are created by awe, mystery and suspense. The story ends on a parting note. Suraj and his father are travelling in the train which is going to Delhi. Now, Suraj becomes emotional while travelling in train and remembers passionately his friend, the watchman with the lamp.

मनोभावों का आविर्भाव विस्मय, रहस्य और असमंजस के द्वारा होता है। कहानी का समापन विदाई के रूप में होता है। सूरज और उसके पिता रेलगाड़ी में यात्रा कर रहे हैं जो दिल्ली जा रही है। इस यात्रा के दौरान सूरज भाव विह्वल हो उठता है और उसको अपने मित्र लैम्प वाले चौकीदार की याद आने लगती है।

Q.21. Which were the sounds that Suraj could not recognise?

वे कौन-सी आवाजें थीं जिनको सूरज पहचान नहीं पाया?

Ans. Some sounds were coming that Suraj could not recognise. These sounds came from the trees, creakings and whisperings, as though the trees were coming alive, stretching their limbs in the dark, shifting a little, reflexing their fingers.

कुछ आवाजें आ रही थीं जिनको सूरज पहचान नहीं सका था। पेड़ों से आने वाली चरचराहट व सरसराहट की इन आवाजों से लग रहा था मानों पेड़-पौधे जीवन्त हो उठे हों जिन्होंने अँधेरे में अपनी शाखाओं को फैलाकर विस्तार दे दिया हो और आगे बढ़कर अपनी टहनियों को राहत दी हो।

SECTION-B (SHORT ANSWER TYPE) QUESTIONS**Q.1. Discuss the feelings of the child after separation of parents.**

माता पिता से पृथक् होने के बाद बच्चे की भावनाओं का विवरण दीजिए।

Ans. After the separation of the parents the child feels insecure. He wept loudly with dry throat. He ran at once, crying in fear: "Mother, father." Hot and fierce tears rolled down from his eyes. He was panic-stricken. He ran in all directions. His throat was choked. His yellow turban became untied. He was wet with sweat. He ran to a green grassland. His parents were not found there. Then he ran hotly to a shrine. People seemed to be crowding there. Men jostled each other. The poor child struggled to carve a way between their feet. He was knocked by their movements. He might have been trampled underfoot if he had not cried aloud "Father, mother." A man heard his groan. He stooped with very great difficulty. He lifted him up in his arms.

माता-पिता के पृथक् हो जाने के बाद बच्चा असुरक्षा की भावना महसूस करता है। वह सूखे गले से जोर-से रोया। वह भय से चिल्लाता हुआ एकदम दौड़ा : 'माँ, पिता!' उसके नेत्रों से गर्म और अनगिनत आँसू टपकने लगे। वह भयभीत था। वह चारों ओर भागा। उसका गला रूँध गया। उसकी पीली पगड़ी खुल गई। पसीने से वह तर हो गया। वह हरी घास के मैदान की ओर दौड़ा। उसके माता-पिता वहाँ भी नहीं मिले। तब वह बेतहाशा एक मन्दिर की ओर दौड़ा। लोगों की भीड़ वहाँ लग रही थी। लोग आपस में धक्का-मुक्की कर रहे थे। बेचारे बच्चे ने इन लोगों के पैरों में से होकर रास्ता बनाने के लिए संघर्ष किया। वह उनकी हलचल से नीचे गिरा जा रहा था। वह पैरों के नीचे कुचला गया होता यदि वह जोर से न चिल्लाता 'पिता, माता!' एक आदमी ने उसको कराहते सुना। वह बड़ी कठिनाई से नीचे झुका। उसने बच्चे को अपनी भुजाओं में उठा लिया।

Q.2. "Priorities change when the child loses his parents". Discuss the theme of the story 'The Lost Child' in reference to the above statement. (2021)

"जब बालक अभिभावकों को खो देता है तो प्राथमिकताएँ बदल जाती हैं।" इस कथन को सन्दर्भित करते हुए 'The Lost Child' कहानी की विषय-वस्तु की विवेचना कीजिए।

Ans. For any child, the security of cosy feeling of being with the family is the most important. While, the child in the present story "The Lost Child" is with his parents, he is enjoying everything on display at the fair and the natural backdrop of butterflies, flowers and swan. Once the harsh realization of being lost hits him, his topmost priority is to find his parents. This is because parents are everything to a child. The person who is trying to pacify the child by offering him different goodies will, at the most, give a temporary succour to him. But to continue normal life, he needs to be united with his parents. Although a child may not comprehend this complex thing, but the natural instinct of parent child bonding makes him behave the way he is behaving.

किसी भी बालक के लिए अपने परिवार के साथ आरामदायक भावना की सुरक्षा सबसे महत्वपूर्ण है। 'The Lost Child' कहानी में बालक जब तक अपने अभिभावकों के साथ है, वह मेले में उपस्थित हर वस्तु व तितलियों, फूल व हंस की प्राकृतिक पृष्ठभूमि का आनंद ले रहा है।

जब उसे ज्ञात होता है कि वह खो गया है, उसकी सर्वोच्च प्राथमिकता अपने अभिभावकों को ढूँढ़ने की है। वह व्यक्ति जो विभिन्न वस्तुएँ देकर उसे शान्त करने की चेष्टा कर रहा है, अधिकाधिक उसे अस्थायी राहत दे सकता है। किन्तु सामान्य जीवन के लिए उसे अपने अभिभावकों से मिलने की आवश्यकता है। हालाँकि एक बालक इस जटिल विषय को न समझ पाये, किन्तु अभिभावक व बालक के सम्बन्ध की स्वाभाविक प्रवृत्ति उससे ऐसा व्यवहार करवा रही है जैसा कि वह कर रहा है।

Q.3. Discuss the child's love for nature?

बच्चे के प्रकृति-प्रेम की विवेचना कीजिए।

Ans. The child's psychology comes into play from the very beginning. In the fair, he is running between the legs of his parents. He is enthusiastic to visit the fair. He is overjoyed to see the fields of pale mustard for miles. He enters the mustard fields. He follows the dragonflies, blackbee and butterfly. He tries to catch them. He is also attracted by the little insects and worms along the footpath. He sees an old banyan tree outstretching its arms over jaman, neem and champak and casting its shadow across golden cassia and crimson gulmohur. When he enters the grove, he gathers the raining petals in his hands. He hears the cooing of the doves and shouts, "The dove! The dove!" The raining petals dropped, forgotten from his hands.

बाल-मनोविज्ञान प्रारम्भ से ही कार्य करने लगता है। मेले में वह अपने माता-पिता की टाँगों के बीच में दौड़ रहा है। वह मेला देखने के लिए उत्साही है। वह मीलों तक फैले हुए पीली सरसों के खेतों को देखकर अति प्रसन्न होता है। वह सरसों के खेतों में घुस जाता है। वह ड्रैगन-फ्लाइ, भ्रमर तथा तितली का पीछा करता है। वह उनको पकड़ने का प्रयत्न करता है। पगडण्डी के साथ उड़ते हुए छोटे कीट-पतंगों तथा अन्य कीटों की ओर आकर्षित होता है। वह देखता है कि एक पुराना बरगद का वृक्ष जामुन, नीम और चम्पक के ऊपर अपनी भुजाएँ फैला रहा है और अपनी छाया सुनहरे काशिया और लाल गुलमोहर के ऊपर फेंक रहा है। जब वह वृक्षों के कुंज में घुसता है तो वह अपने हाथों में नीचे बरसती हुई पंखुड़ियाँ एकत्र करता है। वह फाख्ता की आवाज सुनता है, और पुकारता है, "फाख्ता! फाख्ता।" वह भूल जाता है कि उसके हाथों में बरसी हुई पंखुड़ियाँ हैं, वे नीचे गिर जाती हैं।

Q.4. What things attracted the child in the fair?

मेले में किन चीजों ने बच्चे को आकर्षित किया?

Ans. Following things attracted the child which he wanted to possess :

- (i) **Balloons** : The child was carried away by the rainbow glory of the silken colour balloons. He wanted to possess them all, but he could not.
- (ii) **Flowers** : As the child entered the grove, a shower of young flower fell upon him. He began to gather the raining petals in his hands. But when he heard the cooing of the doves, he ran towards his parents, shouting : "The dove! The dove!" The raining petals dropped from his forgotten hands.
- (iii) **Sweets** : The child was attracted by the sweet shop. He stared open eyed and his mouth watered for the burfi. He slowly murmured, "I want that burfi." But he couldn't have it.
- (iv) **Garland of gulmohur** : The child was attracted by the garlands of gulmohur and the sweetness of their scents. He went to the basket of flowers and murmured, 'I want that garland.' But he failed to get it.

(v) **Toys** : The child was attracted by the toys in the shops that lined the way. He pleaded to his parents, "I want that toy." But his father looked at him red-eyed.

निम्नलिखित चीजों ने बच्चे को आकर्षित किया जिन्हें वह प्राप्त करना चाहता था—

- (i) **गुब्बारे**—बच्चा रेशमी रंगों के इन्द्रधनुषी गुब्बारों के प्रभामण्डल द्वारा आकर्षित हुआ। वह उन सब गुब्बारों को प्राप्त करना चाहता था, परन्तु वह प्राप्त नहीं कर सका।
- (ii) **पुष्प**—जैसे ही बच्चा कुंज में घुसा, पुष्पों की बौछार उस पर हुई। उसने बरसती हुई पंखुड़ियों को अपने हाथ में एकत्र किया। परन्तु जब उसने फाख्ता की आवाज सुनी तो वह पुकारता हुआ अपने माता-पिता की ओर भागा, 'फाख्ता! फाख्ता!' उसके विस्मृत हाथों से छूटकर पंखुड़ियाँ नीचे गिर गईं।
- (iii) **मिठाइयाँ**—बच्चा मिठाई की दुकान की ओर आकर्षित हुआ। वह खुली आँखों से टकटकी लगाकर देखता रहा और बर्फी को देखकर उसके मुँह में पानी भर आया। वह धीरे से बुदबुदाया, 'मुझे यह बर्फी चाहिए।' परन्तु वह उसे प्राप्त नहीं कर सका।
- (iv) **गुलमोहर की माला**—बच्चा गुलमोहर की मालाओं और उनकी मोहक सुगंध द्वारा आकर्षित हुआ। वह पुष्पों की टोकरी के पास गया और बुदबुदाया, 'मुझे यह माला चाहिए।' परन्तु वह माला पाने में असफल रहा।
- (v) **खिलौने**—रास्ते के दोनों ओर स्थित दुकानों में जो खिलौने रखे थे उन्होंने बच्चे को आकर्षित किया। उसने अपने माता-पिता से आग्रह किया, "मुझे यह खिलौना चाहिए।" परन्तु उसके पिता ने क्रोधपूर्ण दृष्टि से उसकी ओर घूरा।

Q.5. Do you agree that the story of Mulk Raj Anand 'The Lost Child' is full of pathos? Discuss.

क्या आप सहमत हैं कि मुल्कराज आनन्द की कहानी 'The Lost Child' करुण रस से भरपूर है? विवेचना कीजिए।

Ans. In the story, 'The Lost Child' pathos flows from the beginning to the end of the story. We feel pity for the child when his desire is crushed directly or indirectly. The desire of the child's heart is suppressed by the old, cold stare of refusal in the eyes of his parents. When the child is lost at the roundabout, he looks on all sides, but there is no sign of his parents. His throat is dry. He cries in fear: 'Mother, father.' Hot and fierce tears roll down from his eyes. He is panic-stricken. He runs in all directions, knowing not where to go. His throat is choked with the swallowing of his spittle. He is knocked to and fro by the movements of people when he struggles to carve a way between their legs. He might have been trampled underfoot. Just then a man heard his shrill shrieked voice and lifted him up. When the kind man asks him : 'How did you get here, child? Whose baby are you?' The child weeps more bitterly now than ever.

'The Lost Child' कहानी में करुण रस आरम्भ से अन्त तक प्रवाहित होता है। हमें बच्चे पर करुणा आती है जब उसकी इच्छा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कुचली जाती है। बच्चे के माता-पिता की आँखों में व्याप्त मनाही की पुरानी, निर्दयी टकटकी द्वारा बच्चे के हृदय की इच्छा दबाई जाती है। जब बच्चा झूले के पास खो जाता है, वह चारों ओर देखता है, परन्तु उसके माता-पिता का कोई चिह्न नहीं मिलता। उसका गला सूखा है। वह भय से चिल्लाता है : 'माँ, पिता!' अनगिनत गर्म आँसू उसकी आँखों से लुढ़कते हैं। वह भयभीत है। वह चारों दिशाओं में दौड़ता है, उसे पता नहीं कहाँ जाना है। थूक निगलने से उसका गला रुँध जाता है। जब वह आवाजाही कर रहे लोगों की टाँगों के बीच से रास्ता बनाने का प्रयास करता है तो उनके पैरों से टकराता है। वह उनके पैरों के नीचे कुचला गया होता, तब ही एक व्यक्ति ने उसकी तीक्ष्ण कर्ण कटु आवाज सुनी और उसे उठा लिया। जब दयालु व्यक्ति बच्चे से पूछता है : 'बच्चे, तुम यहाँ कैसे आए? तुम किसके बच्चे हो?' तब बच्चा पहले से अधिक बहुत फूट-फूटकर रोता है।

Q.6. Review the story "The Lost Child" written by Mulk Raj Anand in your own words?

मुल्कराज आनन्द की कहानी 'The Lost Child' की समीक्षा अपने शब्दों में कीजिए।

Ans. The story 'The Lost Child' is one of the best stories of Mulk Raj Anand. Every description of the story is clear. There is nothing vague. The language of the story is very easy, simple and idiomatic practical. The author of the story is master of child psychology. When the child is separated from his mother and father in a village fair, his cries and running from one place to another depict the sad plight of the child. There is Indian countryside atmosphere in the whole story. The green fields, too much rush in a village fair and variety of people's dress attract the reader. The plot of the story is much interesting. Once we begin to read the story, it is impossible to leave it aside before concluding it.

कहानी 'The Lost Child' मुल्कराज आनन्द की सर्वश्रेष्ठ कहानियों में से एक है। कहानी का प्रत्येक वर्णन स्पष्ट है। इसमें कुछ भी व्यर्थ नहीं है। कहानी की भाषा बहुत सरल, सादा और मुहावरेदार है। कहानी का लेखक बाल-मनोविज्ञान का व्यावहारिक जानकार है। जब बच्चा गाँव के एक मेले में अपने माता-पिता से बिछुड़ जाता है तब उसकी चीखें और इधर-से-उधर दौड़ना उसकी दुःखद पीड़ा को दर्शाता है। सम्पूर्ण कहानी में भारत का ग्रामचलिक वातावरण व्याप्त है। हरे खेत, गाँव के एक मेले में भारी भीड़ और लोगों की विभिन्न प्रकार की वेशभूषा हमें आकर्षित करती है। कहानी का कथानक अत्यधिक रुचिकर है। एक बार कहानी पढ़ना शुरू करने के पूर्व उसे अधूरी छोड़ देना असम्भव है।

Q.7. Why did the villagers like to listen to the stories of Nambi?

गाँववाले नाम्बी की कहानियों को क्यों सुनना चाहते थे?

Ans. Nambi was an excellent storyteller with an extraordinary ability to make interesting stories. His way of narrating the story was quite interesting. He was otherwise a very ordinary person and being illiterate had read no books. His gift of storytelling was so extraordinary that it appeared to be a supernatural gift. He also encouraged this belief that it was with the special kindness of the Goddess that he was able to tell those wonderful stories. Nobody could guess his age because he had made this also a mystery by linking it with ancient things and happenings.

नाम्बी एक अच्छा कहानी सुनानेवाला था जो मनोरंजक कहानियाँ गढ़ने में विशेष योग्यता रखता था। कहानी कहने का उसका ढंग काफी रोचक होता था। अन्यथा वह एक मामूली-सा ही व्यक्ति था और अनपढ़ था जिसने कोई पुस्तक नहीं पढ़ी थी। कहानी सुनाने की उसकी योग्यता अद्भुत थी और लगता था कि यह दैवी उपहार है। उसने इस विचार को यह कहकर अधिक महत्त्व दे दिया कि दैवी की अनुकम्पा के कारण वह इतनी अद्भुत कहानियाँ सुना पाता है। उसकी आयु कितनी थी, इस तथ्य का भी किसी को पता नहीं था क्योंकि इस पहलू को भी उसने रहस्य के आवरण से घेर दिया था और प्राचीन वस्तुओं व घटनाक्रमों से स्वयं को जोड़ देता था।

Q.8. Why does the author call Nambi an 'enchanter'?

लेखक ने नाम्बी को वशीभूत करने वाला क्यों कहा?

Ans. An enchanter is a person who delights someone greatly and captures his mind and heart completely with his art. Nambi has been called an 'enchanter' in "Under the Banyan Tree" because he possessed a wonderful talent for story telling on account of which he captures the attention of all the villagers. On account of this talent people consider him a miracle performer. Nambi could keep the villagers under perpetual enchantment. He made their dull and drab life look interesting and enjoyable.

वशीभूत करनेवाला ऐसा व्यक्ति होता है जो किसी को गहराई से प्रसन्नता की अनुभूति करा सकता है और उसके मन-मस्तिष्क को अपनी कला के प्रभाव से आकर्षित कर लेता है। कहानी 'Under the Banyan Tree' में नाम्बी को वशीभूत करनेवाला कहा गया है क्योंकि कहानी कहने का उसका निराला अंदाज है जिससे सभी गाँववालों को वह वशीभूत करने में समर्थ होता है। उसकी इसी योग्यता के कारण लोग उसे अनोखा निष्पादक कहते हैं। नाम्बी गाँववालों को स्थायी रूप से वशीभूत करने की सामर्थ्य रखता था। उसने उनके नीरस व उबाऊ जीवन को मनोरंजक व उत्साही बना दिया।

Q.9. Write about the main literary works of Ruskin Bond.

रस्किन बॉण्ड के साहित्यिक कार्यों का विवरण कीजिए।

Ans. After his high school education Ruskin Bond went to England where he wrote his first novel 'The Room on the Roof.' This is a semi-autobiographical story of an orphaned Anglo-Indian boy Rusty. Reaching India he wrote several short stories and poems for newspapers and magazines. He edited a magazine for four years. As a freelancer he wrote a number of novels, poems and short stories. His prominent works include Vagrants in the Valley, Ghost Stories from the Raj, A Season of Ghosts, A Face in the Dark, The Blue Umbrella, Funny Side up, A Flight of Pigeons, A Lamp is Lit (a collection of essays).

हाईस्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद रस्किन बॉण्ड इंग्लैण्ड चले गये जहाँ पर उन्होंने अपना पहला उपन्यास 'The Room on the Roof' लिखा। इसकी कहानी एक एंग्लो-इंडियन लड़के रस्ती से सम्बन्धित है जो अनाथ है और यह अर्ध-आत्मकथात्मक स्वरूप में लिखी गयी है। भारत वापस आने के बाद उन्होंने अनेक लघुकथाएँ और कविताएँ लिखीं जो समाचारपत्र और पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं। उन्होंने चार वर्ष तक एक पत्रिका का सम्पादन किया। उन्होंने अनेक उपन्यास, कविताएँ और लघुकथाएँ लिखीं। उनकी प्रमुख कृतियों में शामिल हैं 'Vagrants in the Valley', 'Ghost Stories from the Raj', 'A Season of Ghosts', 'A Face in the Dark', 'The Blue Umbrella', 'Funny Side Up', 'A Flight of Pigeons' और निबंधों का संग्रह 'A Lamp is Lit'.

Q.10. Draw a character-sketch of Sunder Singh.

सुन्दर सिंह का चरित्र-चित्रण कीजिए।

Ans. Sunder Singh is a watchman at his duty to inspect the tunnel and keep it clear of obstacles. He has his own ways towards life. One such way is his simplicity. He is a simple man, believes in the peaceful nature around the tunnel and his hut. He is not afraid of dark and wild animals, but he is afraid of city life and the bustle that goes there. He says that last time when he went to the city, he was almost run over by a bus. Another aspect of his character is that he is extremely brave. He is not afraid of dark, loneliness and wild animals. He inspects the dark tunnel with his tiny lamp. He is punctual of his duty.

सुन्दर सिंह एक चौकीदार है। उसका कार्य सुरंग को निर्विघ्न स्थिति में रखना है। जीवन के प्रति उसकी अपनी ही सोच है। वह सादगी पसन्द करता है। वह एक साधारण ढंग का व्यक्ति है। वह अपनी झोंपड़ी व सुरंग के आस-पास शान्त वातावरण को पसन्द करता है। वो अँधेरे या जंगली जानवरों से घबराता नहीं है लेकिन शहरी जीवन से उसे डर लगता है और वहाँ की भीड़-भाड़ वाली हलचल से भी। वह बताता है कि जब वह पिछली बार शहर गया था तो वह बस द्वारा कुचले जाने से बाल-बाल बचा था। उसके चरित्र का एक अन्य पहलू यह है कि वह काफी बहादुर है। वह अँधेरे, अकेलेपन, जंगली जानवरों से डरता नहीं है। अँधेरी सुरंग का निरीक्षण करने के लिए वह अपने छोटे-से लैम्प का सहारा लेता है। वह कर्तव्यपरायण है।

SECTION-C (LONG ANSWER TYPE QUESTION)

Q.1. Write the biography of Mulk Raj Anand.

मुल्कराज आनन्द की जीवनी लिखिए।

Ans. Mulk Raj Anand (12 December 1905-28 September 2004) was an Indian writer in English, notable for his depiction of the lives of the poorer castes in traditional Indian society. They are noted for their perceptive insight into the lives of the oppressed and for their analysis of impoverishment, exploitation and misfortune. He was a recipient of the civilian honour of the Padma Bhushan.

He was born in Peshawar, Anand studied at Khalsa College, Amritsar, graduating with honours in 1924 before moving to England. While working in a restaurant to support himself, he attended University College London as an undergraduate and later studied at Cambridge University, earning a Ph.D in Philosophy in 1929. Anand married English actress and Communist Kathleen Van Gelder in 1938; they had a daughter, Susheila, before divorcing in 1948.

Mulk Raj Anand's literary career was launched by a family tragedy arising from the rigidity of India's caste system. Anand was active in the Indian independence movement. While in London, he wrote propaganda on behalf of the Indian cause alongside India's future Defence Minister V. K. Krishna Menon, while trying to make a living as a novelist and journalist. At the same time, he supported Left causes elsewhere around the globe, traveling to Spain to volunteer in the Spanish Civil War, although his role in the conflict was more journalistic than military. He spent World War II working as a scriptwriter for the BBC in London. He was a friend of Picasso and had paintings by Picasso in his personal art collection. He was also a friend of George Orwell.

Anand returned to India in 1947 and continued his prodigious literary output there. His work includes poetry and essays on a wide range of subjects, as well as autobiographies, novels and short stories. Prominent among his novels are 'The Village' (1939), 'Across the Black Waters' (1939), 'The Sword and the Sickle' (1942), all written in England; 'Coolie' (1936) and 'The Private Life of an Indian Prince' (1953) are perhaps the most important of his works written in India. He also founded a literary magazine, 'Marg' and taught in various universities. During the 1970s, he worked with the International Progress Organization (IPO) on the issue of cultural self-awareness among nations. Anand also delivered a series of lectures on eminent Indians, including Mahatma Gandhi, Jawaharlal Nehru and Rabindranath Tagore.

His novel 'The Private Life of an Indian Prince' is autobiographical in the manner of the rest of his subsequent oeuvre. In 1950 Anand embarked on a project to write a seven-part autobiography titled "seven ages of man".

Anand was a lifelong socialist. His novels attack various aspects of India's social structure as well as the legacy of British rule in India. He was a founding member of the Progressive Writers' Association.

मुल्कराज आनंद (12 दिसम्बर 1905-28 दिसम्बर 2004) अंग्रेजी साहित्य के एक भारतीय लेखक थे जो पारंपरिक भारतीय समाज में गरीबों के जीवन को दिखाने के लिए प्रसिद्ध थे। आनन्द को उनके उपन्यासों और लघुकथाओं के लिए सराहा जाता है। वे उत्पीड़ितों के जीवन में अपनी बोधगम्य अंतर्दृष्टि और दरिद्रता, शोषण और दुर्भाग्य के विश्लेषण के कारण जाने जाते हैं। वह 'पद्मभूषण' के नागरिक सम्मान से नवाजे गये थे।

पेशावर में जन्मे आनंद ने अमृतसर के खालसा कॉलेज में पढ़ाई की और इंग्लैण्ड जाने से पहले 1924 में स्नातक किया। उन्होंने यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन में एक स्नातक के रूप में हिस्सा लिया और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में शोध प्रबंध के साथ दर्शनशास्त्र में पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की।

आनंद ने 1938 में अंग्रेजी अभिनेत्री और कम्युनिस्ट कैथलीन वैन गेल्डर से विवाह किया। 1948 में तलाक से पहले उनकी एक बेटी सुशीला थी।

मुल्कराज आनन्द का साहित्यिक जीवन भारत की जाति व्यवस्था की कठोरता से उत्पन्न एक पारिवारिक त्रासदी से शुरू हुआ। आनन्द भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलनों में सक्रिय थे। लंदन में रहते हुए उन्होंने एक उपन्यासकार और पत्रकार के रूप में जीवन-यापन करते हुए भारत के भावी रक्षा मंत्री वी०के० कृष्ण मेनन के साथ भारतीयकरण की तरफ से प्रचार लिखा। उन्होंने पूरे विश्व में वामपंथी कारणों को समर्थन दिया, स्पेन के गृहयुद्ध में स्वयंसेवक के लिए स्पेन की यात्रा की, हालाँकि उनकी भूमिका सेना की तुलना में अधिक पत्रकारिता थी। उन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध में लंदन बीबीसी के लिए एक पटकथा लेखक के रूप में कार्य किया। वह पिकासो के मित्र थे और उनके व्यक्तिगत कला संग्रह में पिकासो के चित्र थे वे George Orwell के भी दोस्त थे।

आनन्द 1947 में भारत आए और यहाँ अपना विलक्षण साहित्यिक उत्पादन चलाए रखा। उनके काम में कई विषयों पर कविता और निबन्ध, साथ ही आत्मकथाएँ, उपन्यास और लघुकथाएँ शामिल हैं। प्रमुख उपन्यास हैं 'द विलेज' (1939), 'अक्रॉस द ब्लैक वाटर्स' (1939), 'द स्वोर्ड एण्ड द सिकल' (1942) जो इंग्लैण्ड में लिखे गये। 'कुली' (1936) और 'प्राइवेट लाइफ ऑफ एन इंडियन प्रिंस' (1953) भारत में लिखी गई प्रमुख रचनाएँ हैं। उन्होंने साहित्यिक पत्रिका, 'मार्ग' की भी स्थापना की और विभिन्न विश्वविद्यालयों में पढ़ाया। 1970 के दशक में उन्होंने राष्ट्रों के मध्य सांस्कृतिक आत्म-जागरूकता के मुद्दे पर (IPO) अन्तर्राष्ट्रीय प्रगति संगठन के साथ काम किया। आनन्द ने महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू और रवीन्द्रनाथ टैगोर सहित प्रख्यात भारतीयों पर भी एक शृंखला दी थी।

उनका 1953 में उपन्यास 'द प्राइवेट लाइफ ऑफ एन इंडियन प्रिंस' उनके बाद की बाकी हिस्सों की तरह आत्मकथात्मक है। 1950 में आनन्द ने सात भागों की आत्मकथा लिखने की योजना शुरू की जिसका शीर्षक 'सात युग का आदमी' था।

आनन्द आजीवन समाजवादी रहे। उनके उपन्यास भारत की सामाजिक संरचना के साथ-साथ भारत में ब्रिटिश शासन के विरासत के अनेक पहलुओं पर हमला करते हैं। वह प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन के संस्थापक सदस्य थे।

Q.2. Narrate the story 'The Banyan Tree' in your own words.

कहानी 'The Banyan Tree' का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

Ans. "Under the Banyan Tree" is a very interesting story by the well-known story writer RK Narayan; this story deals with life in a small Indian village named Somal where people lived in utter poverty. The central character in the story is Nambi, an unusual storyteller who has fascinated the village folks with his fabulous and interesting stories. He was illiterate, yet had an active imagination that helped him invent fascinating stories that left the villagers spellbound; this was the reason that they often assembled near the village temple under a banyan tree to hear his stories patiently and attentively as if spellbound in the imaginary world that was created before them by the magical voice of Nambi.

Nambi lived in a small temple in the village. In return for entertaining them, the villagers would cater to Nambi's needs for food and clothes. His stories mainly revolved round kings and their courts, and he took several days to complete his story. He would weave a magical web around his stories with his enchanting narration. He thought that this was the gift of the goddess before whose idol he prayed daily and conducted the worship for the villagers on each Friday.

Everything was going smoothly when, one day, Nambi failed to narrate a story and felt dumbstruck, nor could he tell the story the next day as well. He tried to recall the story but in

vain. His mind was no longer under control and his imagination flagged. He felt that the Goddess whom he worshipped had stopped favouring him. When this occurred over several days, the villagers felt disappointed and the number of listeners decreased.

Nambi realized that he had lost his art of storytelling, so he felt desolate and hopeless; and finally decided to remain silent forever. He did not speak ever after. Nevertheless, the villagers kept on providing him food and clothes as a gesture.

Under the Banyan Tree एक बहुत ही रोचक कहानी है जिसे सुप्रसिद्ध लेखक आर के नारायण ने लिखा है। यह कहानी भारत के एक छोटे से गाँव सोमल में रहने वाले लोगों के जीवन से संबंधित है जो बहुत गरीबी में जीवन बिता रहे हैं। कहानी का केंद्रीय चरित्र नांबी है जो एक असाधारण कहानी बक्ता है और जिसने अपनी शानदार और रोचक कहानियों से गाँववालों को मंत्रमुग्ध कर रखा है। वह अशिक्षित है, लेकिन उसके पास सक्रिय कल्पनाशक्ति है जिसके कारण उसे आकर्षक कहानियों को रचित करने में सहायता प्राप्त होती है जिनके जादुई आगोश में गाँववाले बाँध जाते हैं। यही कारण था कि वे उसकी कहानियों को संयमपूर्वक और ध्यानपूर्वक सुनने के लिए शाम को मंदिर के निकट बरगद के पेड़ के नीचे एकत्र होते थे मानो वे उसकी बाँध रख सकने वाले काल्पनिक संसार से जुड़े हुए हैं जिसकी रचना नांबी अपनी जादुई आवाज में करता है।

नांबी गाँव में स्थित एक छोटे मंदिर में रहता था। इसके बदले, गाँववाले नांबी की भोजन और कपड़ों की आवश्यकताओं की देखभाल करते हैं। उसकी कहानियाँ अधिकांश राजाओं और उनके दरबार के आसपास घूमती हैं और एक कहानी कहने में वह कई दिन लेता है। वह अपनी कहानियों के आसपास अपने मोहक वर्णन से एक जादुई जाल-सा बुनता है। उसका विचार है कि यह देवी का उसके लिए एक वरदान है जिसके सामने वह रोज प्रार्थना करता है और प्रत्येक शुक्रवार गाँववालों की पूजा कराता है।

सबकुछ सही चल रहा था लेकिन एक दिन नांबी कहानी नहीं सुना पाता और स्वयं को भौंचक्का हुआ पाता है, न ही वह अगले दिन ही कहानी सुना पाता है। वह कहानी को याद करने का प्रयत्न करता है, लेकिन सफल नहीं होता। उसका दिमाग उसके नियंत्रण में नहीं रहता और उसकी कल्पनाशक्ति उसका साथ नहीं देती। उसे लगता है कि देवी ने उससे कृपा वापस ले ली है। जब यह अनेक दिनों तक चलता रहा तो गाँववाले निराश हो गए और उसे सुनने वालों की संख्या घट गई।

नांबी को समझ आ गया कि उसकी कहानी कहने की कला समाप्त हो गई है, इसलिए वह निराश और अकेला महसूस करता है, और अंत में वह मौन धारण करने का निश्चय कर लेता है। उसके बाद वह कभी नहीं बोलता। फिर भी जब भी वह उनके घर जाता तो गाँववाले उसे भोजन और कपड़े देते रहते हैं जो उस असाधारण कहानी कहने वाले के लिए उनकी श्रद्धा का प्रतीक है।

Q.3. Explain about the village Somal discussed in the story 'Under the Banyan Tree'.

कहानी 'Under the Banyan Tree' में विवेचित गाँव सोमल के बारे में वर्णन कीजिए।

Ans. The village Somal was situated in the heart of forest region of Mampi and the nearest bus stop was nearly ten miles away. It was a small village that had a population of less than three hundred. The village did not have a planned settlement. Its streets and lanes were bent or twisted and they ran into one another. In the middle of the village there was a tank. This small tank was full of dirty water which was used for drinking, bathing and washing the cattle. It was so dirty and polluted that diseases like malaria and typhoid were frequently spread by it in the village. The drain water would stagnate in green puddles in the backyard of every house. The people of the village were insensitive to their surroundings. Most of them were illiterate. Even Nambi who lived in the village temple and entertained the villagers by telling them wonderful stories was illiterate. Most of the villagers were religious minded and used to worship in the temple of Goddess Shakti. They were simple folk who led a dull but contented life. There were no serious quarrels or conflicts in the village.

सोमल गाँव मम्पी वन के बीच में स्थित था और यहाँ का सबसे निकट का बस अड्डा लगभग दस मील दूर था। यह एक छोटा-सा गाँव था जिसकी आबादी तीन सौ से भी कम थी। गाँव को किसी सही योजना से नहीं बसाया गया था। इसकी सड़कें व गलियाँ यहाँ-वहाँ मुड़ी हुई थीं। ये एक-दूसरे को पार कर जाती थीं। गाँव के बीच में एक तालाब था। यह छोटा-सा तालाब गन्दे जल से भरा रहता था। इस जल का उपयोग पीने के लिए, नहाने के लिए और मवेशियों को धोने के लिए किया जाता था। यह इतना गन्दा व प्रदूषित था कि मलेरिया व टायफॉइड जैसी बीमारियाँ प्रायः ही इसके द्वारा गाँव में फैल जाती थीं। नालियों का जल घरों के पिछले हिस्से में गारे के रूप में जमा होता रहता था। लोग अपने आसपास के वातावरण की कोई चिन्ता नहीं करते थे। अधिकांश लोग अनपढ़ थे। गाँव के मन्दिर में रहने वाला नाम्बी जो अजीब कहानियाँ सुनाकर गाँववालों का मनोरंजन करता था, वह भी अनपढ़ था। अधिकांश गाँव वाले धार्मिक प्रवृत्ति के थे और देवी शक्ति की उपासना किया करते थे। ये भोले-भाले लोग थे जो एक नीरस लेकिन सन्तुष्ट जिन्दगी जी रहे थे। गाँव में लोगों के बीच झगड़े नहीं होते थे।

Q.4. Give a brief summary of the 'The Tunnel'.

'The Tunnel' का सारांश संक्षेप में लिखिए।

Ans. It was a hot noon and Suraj, a young boy, ventured into the forest and headed towards the tunnel. He wanted to see the train coming out of it. He had cycled from the town and had left it at a nearby small village, from where he walked all the way to reach the tunnel. The whistle of the train and the following thunder informed him that the train was about to come. He looked at the train shooting out of the tunnel, puffing like a green, black and gold dragon. Suraj found the train very beautiful.

After the train had gone, Suraj walked along the embankment towards the tunnel. As he walked into the tunnel, it became very dark; he was a little confused if the night had fallen, so he looked back to reassure himself that it was day yet. He could see a small round circle of light ahead of him, which was the another opening of the tunnel.

Suraj turned back as there was nothing to do or see in the tunnel except the damp and sticky walls with some stray animals like lizards and bats. As he walked out, he saw a fleeting glimpse of a leopard. He was confused what it was, but the watchman confirmed that it was one.

The watchman, named Sundar Singh, was posted there to look after the rails and tunnel. Only two trains passed the tunnel a day. He inspected the tunnel before a train approached and if he found everything fine, he would take a rest in his hut, else he would signal the train to stop way before the train entered the tunnel.

Suraj talked to Sundar Singh, who claimed that the tunnel and the leopard were his. He informed that the train passing there at night was a mail train and it was a delight to watch it. When Suraj asked if it was safe to be in the jungle at night, he said that it was safer to be in the jungle than in the town.

Suraj went away, but returned the following evening. The night jungle is quite different from that of the daylight jungle, as even rustle of the leaves could mean the movement of a frightening animal. Hearing the animals' sounds, they drank tea, inspected the tunnel and came back to sit on the cot. It was at this time when they heard the sound as if someone was cutting through the branch of a tree. Sundar Singh said that it was a leopard and the train was about to come, so it was necessary to shoo away the leopard for its safety. Suraj was confused if it would be safe to go near the leopard. Sundar Singh assured him that the leopard had nothing to do with them and it would go away on seeing them.

In the tunnel, they spotted the leopard crouching on the track. They screamed together to shoo it away. The leopard turned swiftly and disappeared into the darkness. The train came thundering a little after, leaving the tracks trembling after it.

A week later, Suraj was travelling by the same train with his father. His father was travelling to Delhi on a business trip and he had decided to take Suraj with him thinking where he roamed about. As the train approached the tunnel, he strained his eyes to look into the dark night and saw the lamp of the watchman. In the dark, he could not see him, but he knew it was him, though other passengers thought him to be a firefly; they never knew that it was the watchman lighting up the darkness for steam engines and leopards.

गरम दोपहर थी और किशोर सूरज ने जंगल में प्रवेश किया और सुरंग की ओर चल दिया। वह उससे रेल को बाहर आते देखना चाहता था। वह नगर से साइकिल द्वारा निकट के गाँव तक आया था और उसने अपनी साइकिल वहीं छोड़ दी थी और वहाँ से वह पैदल चलकर यहाँ सुरंग तक आया था। रेल की सीटी और इसके बाद होने वाले कंपन ने उसे बताया कि रेल आने ही वाली थी। उसने रेल को बाहर आते देखा जो उसे किसी हरे, काले और सुनहरे ड्रेगन के समान लगी। उसे वह रेल बहुत सुंदर लगी।

जब रेल चली गई तो सूरज पत्थर की दीवार के साथ-साथ सुरंग की ओर चलने लगा। जब वह सुरंग में कुछ दूरी तक गया तो वहाँ बिलकुल अँधेरा हो गया, उसे लगा कि शायद रात हो गई थी, इसलिए उसने मुड़कर देखा कि सुरंग के बाहर अभी भी उजाला था। अपने आगे दूर वह प्रकाश का एक छोटा गोला देख सकता था जो सुरंग का दूसरा छोर था।

सुरंग में नम और फिसलन-भरी दीवारों और कुछ जानवरों जैसे छिपकलियों और चमगादड़ों के अतिरिक्त और कुछ देखने के लिए नहीं था, इसलिए सूरज सुरंग से वापस चला। जब वह बाहर आया तो उसने तीव्र गति से तेंदुए को गायब होते देखा, उसे संदेह था कि वह क्या था, लेकिन चौकीदार ने उसे बताया कि वह एक तेंदुआ ही था।

सुंदर सिंह नामक चौकीदार वहाँ पटरियों और सुरंग की सुरक्षा के लिए तैनात था। एक दिन में केवल दो रेलें वहाँ से गुजरती थीं। वह रेल के आने से पहले पटरियों की जाँच करता था और यदि उसे सबकुछ ठीक मिलता था तो वह अपनी झोपड़ी में आराम करता था, अन्यथा रेल को सुरंग में प्रवेश करने से पहले रुकने का संकेत देता था।

सूरज ने सुंदर सिंह से बात की तो उसने बताया कि सुरंग और तेंदुआ उसके थे। उसने उसे बताया कि वहाँ रात को गुजरने वाली रेल मेल (तीव्र गामी) थी, और इसे देखना बहुत सुंदर लगता था। जब सूरज ने पूछा कि रात को जंगल में रुकना सुरक्षित था तो चौकीदार ने बताया कि शहर में रहने से जंगल में रहना कहीं अधिक सुरक्षित था।

सूरज चला गया लेकिन अगली शाम को वापस आ गया। रात में जंगल दिन के जंगल से बिल्कुल अलग होता है क्योंकि पत्तियों की खड़खड़ाहट का अर्थ भी किसी खतरनाक जानवर की उपस्थिति हो सकती थी। जानवरों की आवाज सुनते हुए उन्होंने चाय पी, सुरंग की जाँच की और वापस चारपाई पर आकर बैठ गए। यह इस समय था कि उन्हें ऐसी कोई आवाज सुनाई दी मानो कोई लकड़ी को आरी से काट रहा हो। सुंदर सिंह ने कहा कि यह तेंदुआ था और यह कि रेल आने वाली थी और इसलिए यह आवश्यक था कि उसे वहाँ से भगा दिया जाए क्योंकि उसे वहाँ चोट लग सकती थी। सूरज को भय लगा कि क्या उस समय तेंदुए के निकट जाना सुरक्षित होगा। सुंदर सिंह ने उसे विश्वास दिलाया कि तेंदुए का उनसे कोई लेना-देना नहीं था और उन्हें देखकर वह वहाँ से चला जाएगा।

सुरंग में कुछ दूरी पर उन्होंने तेंदुए को बैठे देखा। वे एक-साथ जोर से चिल्लाए, जिस पर तेंदुआ तेजी से मुड़ा और अँधेरे में गायब हो गया। कुछ ही देर में रेल आ गई शोर मचाते हुए और अपने पीछे पटरियों को कंपन करते छोड़ गई।

एक सप्ताह बाद सूरज उसी रेल में अपने पिता के साथ यात्रा कर रहा था। उसके पिता व्यापार के सिलसिले में दिल्ली जा रहे थे और उन्होंने निश्चय किया था कि सूरज को अपने साथ ले जाएँ क्योंकि न जाने वह कहाँ-कहाँ घूमता रहता था। जब रेल सुरंग के नजदीक पहुँची, उसने अपनी आँखों पर जोर दिया और अँधेरे में चौकीदार की लालटेन देखने लगा। अँधेरे में वह उसे तो नहीं देख पाया लेकिन उसे पता था कि यह वही था, हालांकि अन्य यात्री उसे जुगनू समझते होंगे। उन्हें पता नहीं होगा कि यह चौकीदार था जो स्टीम इंजनों और तेंदुओं के लिए पटरियों पर उजाला करता था।



UNIT-VI

Prose

1. Of Studies
2. Dream Children
3. Sir Roger at the Church

Explanations with Reference to The Context

[1]

Studies serve for delight, for ornament, and for ability. Their chief use for delight is in privateness and retiring; for ornament, is in discourse; and for ability, is in the judgement and disposition of business. For expert men can execute, and perhaps judge of particulars, one by one; but the general counsels, and the plots and marshalling of affairs, come best from those that are learned. (2021)

Reference to the Context : These educational lines have been taken from Sir Francis Bacon's well-known essay 'Of Studies'. Francis Bacon is considered as the father of English prose. Indeed he was a man of versatile genius during his living centuries. In these lines, the essayist describes the values and importance of education.

Explanation : The essayist discusses the purpose, functions and advantages of studies. Here he deals with the functions of study. According to Bacon, studies have three main functions to perform. He says that those who are leading a life of seclusion find a lot of delight and satisfaction from their studies. They also help in imparting beauty to the conversation. Finally, the studies impartability and wisdom to perform his business in a good manner. Thus the studies impart all the pleasures in the lonely hours, beauty and effectiveness to the conversation and exchange of thoughts and the ability to take a balanced view and consequents suitable action in our daily life. Learned persons are balanced and systematic and so they judge every affair properly prior in taking actions in their daily affairs.

संदर्भ और प्रसंग—ये शैक्षिक पंक्तियाँ सर फ्रांसिस बेकन के प्रसिद्ध निबंध 'ऑफ स्टडीज' से ली गई हैं। फ्रांसिस बेकन को अंग्रेजी गद्य का जनक माना जाता है। वास्तव में वह अपनी जीवित सदियों के दौरान बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे। इन पंक्तियों में निबंधकार शिक्षा के मूल्यों और महत्त्व का वर्णन करता है।

व्याख्या—निबंधकार अध्ययन के उद्देश्य, कार्यों और लाभों पर चर्चा करता है। यहाँ वह अध्ययन के कार्यों से सम्बन्धित है। बेकन के अनुसार, अध्ययन के तीन मुख्य कार्य हैं। उनका कहना है कि जो लोग एकांत में जीवन व्यतीत कर रहे हैं, उन्हें अपनी पढ़ाई से बहुत खुशी और सन्तुष्टि मिलती है। वे बातचीत को सुंदरता प्रदान करने में भी मदद करते हैं। अंत में, अपने व्यवसाय को अच्छे तरीके से करने के लिए निष्पक्षता और ज्ञान का अध्ययन करता है। इस प्रकार अध्ययन अकेले घंटों में सभी सुखों बातचीत और विचारों के आदान-प्रदान के लिए सुंदरता और प्रभावशीलता और संतुलित दृष्टिकोण लेने की क्षमता प्रदान करता है और परिणामस्वरूप हमारे दैनिक जीवन में उपयुक्त कार्यवाही करता है। विद्वान व्यक्ति संतुलित और व्यवस्थित होते हैं और इसलिए वे अपने दैनिक मामलों में कार्यवाही करने से पहले हर मामले की सम्पत्ति का न्याय करते हैं।

[2]

To spend too much time in studies is sloth; to use them too much for ornament, is affectation; to make judgement wholly by their rules, is the humor of a scholar.

Reference to the Context : These educational lines have been taken from Sir Francis Bacon's well-known essay 'Of Studies'. Francis Bacon is considered as the father of English prose. Indeed he was a man of versatile genius during his living centuries. In these lines, the essayist describes the values and importance of education.

Explanation : Here, the author warns against the dangers of the studies of an excessive nature. The essayist issues a note of warning that if a long time is spent extraordinarily on studies, it is not at all desirable. The person who spends too much time on reading books becomes slow and incapable of physical activity. The person who relies too much on his knowledge, gained through the study of books, makes his conversation artificial formal and pedantic. Similarly it is equally inadvisable to take decisions about every day business with the help of books because such decisions are impracticable and only the whims and caprices of scholars lead to such decisions.

संदर्भ और प्रसंग—ये शैक्षिक पंक्तियाँ सर फ्रांसिस बेकन के प्रसिद्ध निबंध 'ऑफ स्टडीज' से ली गई हैं। फ्रांसिस बेकन को अंग्रेजी गद्य का जनक माना जाता है। वास्तव में वह अपनी जीवित सदियों के दौरान बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे। इन पंक्तियों में निबंधकार शिक्षा के मूल्यों और महत्त्व का वर्णन करता है।

व्याख्या—यहाँ, लेखक अत्यधिक प्रकृति के अध्ययन के खतरों के प्रति आगाह करता है। निबंधकार चेतावनी का एक नोट जारी करता है कि यदि एक लंबा समय असाधारण रूप से व्यतीत किया जाता है या अध्ययन किया जाता है, तो यह बिल्कुल भी वांछनीय नहीं है। जो व्यक्ति पुस्तकों को पढ़ने में बहुत अधिक समय व्यतीत करता है वह धीमा और शारीरिक गतिविधि करने में असमर्थ हो जाता है। जो व्यक्ति पुस्तकों के अध्ययन के माध्यम से प्राप्त अपने ज्ञान पर बहुत अधिक निर्भर करता है, वह अपनी बातचीत को कृत्रिम औपचारिक और पांडित्यपूर्ण बनाता है। इसी प्रकार प्रतिदिन के व्यवसाय के बारे में पुस्तकों की सहायता से निर्णय लेना भी उतना ही अनुपयुक्त है क्योंकि ऐसे निर्णय अव्यावहारिक होते हैं और केवल विद्वानों की सनक ही ऐसे निर्णयों की ओर ले जाती है।

[3]

They perfect nature, and are perfected by experience; for natural abilities are like natural plants, that need pruning, by study; and studies themselves do give forth directions too much at large, except they be bounded in by experience.

Reference to the Context : These educational lines have been taken from Sir Francis Bacon's well-known essay 'Of Studies'. Francis Bacon is considered as the father of English prose. Indeed he was a man of versatile genius during his living centuries. In these lines, the essayist describes the values and importance of education.

Explanation : Here, Francis Bacon is describing the usefulness of studies and the functions they perform. The knowledge gained through books is made really impressive and useful when it is supplemented by the experience of actual life. Studies are of great use. Besides helping the reader in affording pleasure in his hours of loneliness, imparting grace and liveliness to his conversation and enriching his store of wisdom and knowledge, they also help in the development and cultivation of his talents and natural abilities. But the knowledge gained through studies, is itself helped and named more effective by the practical experiences of life. In order to convince us about the soundness of his statement, the essayist uses a very apt and effective simile. He compares the natural talents and abilities to plants, trimmed and

pruned so that the natural abilities and talents are developed and cultivated favourably when guided and controlled through the discipline and knowledge of studies.

संदर्भ और प्रसंग—ये शैक्षिक पंक्तियाँ सर फ्रांसिस बेकन के प्रसिद्ध निबंध 'ऑफ स्टडीज' से ली गई हैं। फ्रांसिस बेकन को अंग्रेजी गद्य का जनक माना जाता है। वास्तव में वह अपनी जीवित सदियों के दौरान बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे। इन पंक्तियों में निबंधकार शिक्षा के मूल्यों और महत्त्व का वर्णन करता है।

व्याख्या—यहाँ, फ्रांसिस बेकन अध्ययन की उपयोगिता और उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यों का वर्णन कर रहे हैं। पुस्तकों के माध्यम से प्राप्त ज्ञान वास्तव में प्रभावशाली और उपयोगी हो जाता है जब इसे वास्तविक जीवन के अनुभव से पूरक किया जाता है। अध्ययन बहुत काम के हैं। पाठक को उसके अकेलेपन के घंटों में आनंद लेने में मदद करने, उसकी बातचीत में अनुग्रह और जीवंतता प्रदान करने और ज्ञान और ज्ञान के अपने भंडार को समृद्ध करने के अलावा, वे उसकी प्रतिभा और प्राकृतिक क्षमताओं के विकास और खेती में भी मदद करते हैं। लेकिन अध्ययन के माध्यम से प्राप्त ज्ञान, जीवन के व्यावहारिक अनुभवों से ही मदद और नाम दिया जाता है। अपने कथन की सत्यता के बारे में हमें समझाने के लिए, निबंधकार एक बहुत ही उपयुक्त और प्रभावी उपमा का उपयोग करता है। वह प्राकृतिक प्रतिभाओं और क्षमताओं की तुलना पौधों से करता है, छंटनी और काट-छाँट करता है ताकि अध्ययन के अनुशासन और ज्ञान के माध्यम से निर्देशित और नियंत्रित होने पर प्राकृतिक क्षमताओं और प्रतिभाओं को अनुकूल रूप से विकसित किया जा सके।

[4]

Crafty men condemn studies, simple men admire them, and wise men use them; for they teach not their own use; but that is a wisdom without them, and above them, won by observation.

Reference to the Context : These educational lines have been taken from Sir Francis Bacon's well-known essay 'Of Studies'. Francis Bacon is considered as the father of English prose. Indeed he was a man of versatile genius during his living centuries. In these lines, the essayist describes the values and importance of education. He also describes the different attitudes of different types of persons towards studies.

Explanation : Here, Francis Bacon has so far discussed the functions of studies and the help they render in developing and cultivating talents and abilities of a person given to studies. The essayist makes a very important but subtle observation. He distinguishes between a learned and a wise person. There are various kinds of persons who study books. They have different attitudes towards studies. Crafty, cunning and mischievous persons look down upon studies, because the knowledge gained through them is impracticable and hence useless for them. The foolish readers are easily and greatly impressed by the knowledge contained in the books and so they simply respect and admire them but the wise readers use the knowledge of the books to their advantage in their every day life. The studies themselves do not teach and tell how they can be put to use. It is beyond their scope. But a wise person through a keen and careful observation, blending the knowledge of books with the experience of life.

संदर्भ और प्रसंग—ये शैक्षिक पंक्तियाँ सर फ्रांसिस बेकन के प्रसिद्ध निबंध 'ऑफ स्टडीज' से ली गई हैं। फ्रांसिस बेकन को अंग्रेजी गद्य का जनक माना जाता है। वास्तव में वह अपनी जीवित सदियों के दौरान बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे। इन पंक्तियों में निबंधकार शिक्षा के मूल्यों और महत्त्व का वर्णन करता है। वह अध्ययन के प्रति विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों के विभिन्न दृष्टिकोणों का भी वर्णन करता है।

व्याख्या—यहाँ, फ्रांसिस बेकन ने अब तक अध्ययन के कार्यों और अध्ययन के लिए दी गई व्यक्ति की प्रतिभा और क्षमताओं को विकसित करने में उनके द्वारा प्रदान की जाने वाली सहायता पर चर्चा की है। निबंधकार एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण लेकिन सूक्ष्म अवलोकन करता है। वह एक विद्वान और एक बुद्धिमान व्यक्ति के बीच अंतर करता है। विभिन्न

प्रकार के व्यक्ति हैं जो पुस्तकों का अध्ययन करते हैं। पढ़ाई के प्रति उनका नजरिया अलग होता है। धूर्त, चालाक और बुरे स्वभाव वाले व्यक्ति पढ़ाई को तुच्छ समझते हैं, क्योंकि उनके द्वारा प्राप्त ज्ञान अव्यावहारिक है और इसलिए उनके लिए बेकार है। मूर्ख पाठक पुस्तकों में निहित ज्ञान से आसानी से और बहुत प्रभावित होते हैं और इसलिए वे उनका सम्मान और प्रशंसा करते हैं लेकिन बुद्धिमान पाठक अपने दैनिक जीवन में अपने लाभ के लिए पुस्तकों के ज्ञान का उपयोग करते हैं। अध्ययन स्वयं नहीं सिखाते और बताते हैं कि उन्हें कैसे उपयोग में लाया जा सकता है। यह उनके दायरे से बाहर है। लेकिन एक बुद्धिमान व्यक्ति एक गहरी और सावधानीपूर्वक अवलोकन के माध्यम से, जीवन के अनुभव के साथ पुस्तकों के ज्ञान को मिश्रित करता है।

[5]

Children live to listen to stories about their elders, when they were children: to stretch their imagination to the conception of a traditionary great-uncle or granddame, whom they never saw.

(2021)

Reference to the Context : These beautiful lines have been taken from Charles Lamb's popular *Dream Children*. Here Charles Lamb begins his subject by telling us about the taste and habits of his imaginative children.

Explanation : Charles Lamb intends to tell the story of his grand mother to his children who desire to hear it. He says that this is the habit of children. They have a great desire to hear the stories of the childhood of their elders. They want to hear what their elders did when they were children. They hear about their grand mother or grand father. The children had never seen them. They want to imagine about them. For this purpose they pull their imagination hard.

प्रसंग और संदर्भ—ये सुंदर पंक्तियाँ चार्ल्स लैम्ब के लोकप्रिय ड्रीम चिल्ड्रन से ली गई हैं। यहाँ चार्ल्स लैम्ब अपने कल्पनाशील बच्चों के स्वाद और आदतों के बारे में बताकर अपने विषय की शुरुआत करते हैं।

व्याख्या—चार्ल्स लैम्ब अपने बच्चों को अपनी दादी माँ की कहानी सुनाने का इरादा रखता है जो इसे सुनना चाहते हैं। उनका कहना है कि यह बच्चों की आदत होती है। उन्हें अपने बड़ों के बचपन की कहानियाँ सुनने की बड़ी इच्छा होती है। वे सुनना चाहते हैं कि जब वे बच्चे थे तो उनके बड़ों ने क्या किया। वे अपनी दादी या दादा के बारे में सुनते हैं। बच्चों ने उन्हें कभी नहीं देखा था। वे उनके बारे में कल्पना करना चाहते हैं। इस उद्देश्य के लिए वे अपनी कल्पना को जोर से खींचते हैं।

[6]

Here Alice put one of her dear mother's look, too tender to be called up-braiding.

Reference to the Context : These beautiful lines have been taken from Charles Lamb's popular *Dream Children*. Here Charles Lamb begins his subject by telling us about the taste and habits of his imaginative children. This is how Alice Felt when she heard that the wooden planks with the story on them were not there now.

Explanation : Here, the author told his children that the story '*Children in the Wood*' was carved on planks. These planks were pulled down by a richman. The children did not like it. Alice was displeased. There was expression on her face. But it was gently. It could not be called anger. Charles Lamb remembered that such an expression could sometimes be seen on her mother's face.

प्रसंग और संदर्भ—ये सुंदर पंक्तियाँ चार्ल्स लैम्ब के लोकप्रिय ड्रीम चिल्ड्रन से ली गई हैं। यहाँ चार्ल्स लैम्ब अपने कल्पनाशील बच्चों के स्वाद और आदतों के बारे में बताकर अपने विषय की शुरुआत करते हैं। ऐलिस को ऐसा ही लगा जब उसने सुना कि उन पर कहानी के साथ लकड़ी के तख्ते अब नहीं हैं।

व्याख्या—यहाँ, लेखक ने अपने बच्चों को बताया कि 'चिल्ड्रन इन द वुड' कहानी तख्तों पर उकेरी गई है। इन तख्तों को एक धनी व्यक्ति ने गिरा दिया। बच्चों को यह पसंद नहीं आया। ऐलिस नाराज थी। उसके चेहरे पर भाव थे। लेकिन यह धीरे से था। इसे क्रोध नहीं कहा जा सकता। चार्ल्स लैम्ब को याद आया कि ऐसी अभिव्यक्ति कभी-कभी उसकी माँ के चेहरे पर देखी जा सकती थी।

[7]

And all its old ornaments stripped and carried away to the owner's other house, where they were set up, and looked as awkward as if some one were to carry away the old tombs they had seen lately at the Abbey, and stick them up in Lady C.'s tawdry gilt drawing-room.

Reference to the Context : These beautiful lines have been taken from Charles Lamb's popular *Dream Children*. Here Charles Lamb begins his subject by telling us about the taste and habits of his imaginative children. This is how Alice felt when she heard that the wooden planks with the story on them were not there now.

In these lines, Lamb tells us how beautiful decorations were removed from the great house.

Explanation : Here, Charles Lamb says that Mrs. Field had maintained the respectable position of the grand house. But after sometime it became very old. It was nearly pulled down. The old decorations in it were removed. They were taken away to the new house. They were fixed there. But they looked very clumsy in the new house. They looked as strange as the tombstones would look if they taken away from the graveyard in Westminster Abbey and put up in the showy gilded drawing room of a rich lady. Tombstones are serious. They do not look proper in a showy place. In the same way, decorations from the old majestic house did not look proper in a house of new fashion.

प्रसंग और संदर्भ—ये सुंदर पंक्तियाँ चार्ल्स लैम्ब के लोकप्रिय ड्रीम चिल्ड्रन से ली गई हैं। यहाँ चार्ल्स लैम्ब अपने कल्पनाशील बच्चों के स्वाद और आदतों के बारे में बताकर अपने विषय की शुरुआत करते हैं। ऐलिस को ऐसा ही लगा जब उसने सुना कि उन पर कहानी के साथ लकड़ी के तख्ते अब नहीं हैं।

इन पंक्तियों में, चार्ल्स लैम्ब हमें बताता है कि कैसे महान घन से सुंदर सजावट को हटा दिया गया था।

व्याख्या—यहाँ, चार्ल्स लैम्ब का कहना है कि श्रीमती फील्ड ने भव्य घर की सम्मानजनक स्थिति को बनाए रखा था। लेकिन कुछ समय बाद यह बहुत पुराना हो गया। इसे लगभग नीचे खींच लिया गया था। उसमें लगे पुराने साज-सज्जा को हटा दिया गया। उन्हें नए घर में ले जाया गया। उन्हें वहीं ठीक कर दिया गया। लेकिन नए घर में वे बेहद अनाड़ी लग रहे थे, वे उतने ही अजीब लग रहे थे जितने कि मकबरे के पत्थर लगेगे अगर वे वेस्टमिंस्टर एब्बे के कब्रिस्तान से निकालकर एक अमीर महिला के आकर्षक सोने के ड्राइंग रूम में रख दें। मकबरे गम्भीर हैं। दिखावटी जगह पर ये ठीक नहीं लगते। उसी प्रकार पुराने राजसी घर की साज-सज्जा नए फैशन के घर में उचित नहीं लगती थी।

[8]

Here little Alice spread her hands. Then I told what a tall, upright, graceful person their great-grandmother Field once was; and how in her youth she was esteemed the best dancer—here Alice's little right foot played an involuntary movement, till upon my looking grave, it desisted.

Reference to the Context : These beautiful lines have been taken from Charles Lamb's popular *Dream Children*. Here Charles Lamb begins his subject by telling us about the taste and habits of his imaginative children. This is how Alice felt when she heard that the wooden planks with the story on them were not there now. Here the essayist shows how they sometimes move in sympathy even without our knowing it.

Explanation : Here, the author told his children that their great grandmother Field was considered the best dancer in the country. Alice heard. Alice liked it so much that her little foot began to move in dance of itself. She had not tried to move it. Charles Lamb saw it. He looked serious. Alice noted that she had done wrong and her father did not like it. At this, her foot ceased to move.

प्रसंग और संदर्भ—ये सुंदर पंक्तियाँ चार्ल्स लैम्ब के लोकप्रिय ड्रीम चिल्ड्रन से ली गई हैं। यहाँ चार्ल्स लैम्ब अपने कल्पनाशील बच्चों के स्वाद और आदतों के बारे में बताकर अपने विषय की शुरुआत करते हैं। ऐलिस को ऐसा ही लगा जब उसने सुना कि उन पर कहानी के साथ लकड़ी के तख्ते अब नहीं हैं। इन पंक्तियों में, चार्ल्स लैम्ब हमें बताता है कि कैसे महान घर से सुंदर सजावट को हटा दिया गया था। यहाँ निबंधकार दिखाता है कि कैसे वे कभी-कभी हमारे जाने बिना भी सहानुभूति में आगे बढ़ते हैं।

व्याख्या—यहाँ लेखक ने अपने बच्चों को बताया कि उनकी परदादी फील्ड को देश की सर्वश्रेष्ठ नर्तकी माना जाता था। ऐलिस ने सुना। ऐलिस को यह इतना पसंद आया कि उसका नन्हा पैर अपने आप ही नाचने लगा। उसने इसे हिलाने की कोशिश नहीं की थी। चार्ल्स लैम्ब ने इसे देखा। वह गम्भीर लग रहा था। ऐलिस ने कहा कि उसने गलत किया है और उसके पिता को यह पसंद नहीं आया। इस पर उसका पैर हिलना बंद हो गया।

[9]

It is certain the country-people would soon degenerate into a kind of savages and barbarians, were there not such frequent returns of a stated time, in which the whole village meet together with their best faces, and in their cleanliest habits, to converse with one another upon indifferent subjects, hear their duties explained to them, and join together in adoration of the Supreme Being.

Reference to the Context : These lines have been taken from *Sir Roger at the Church*, one of the famous *Coverley Papers* written by Joseph Addison, the pioneer personal essayist of English literature. These *Coverley Papers* are a light hearted criticism of social evils of the time. The essayist took such evils as were too trivial to be punished by law and too fantastical to be censured by social code of morality. The evils never the less affected the society.

Explanation : Here, Joseph Addison states the Sunday, whether or not a man made practice, is a very good method to keep society civilized. The author says that he is confident that if there were no Sunday, common men would degenerate into a kind of savages. The regular return of the day saves them from being barbarians. On this day the whole village assembles looking fresh and cheerful in their best dresses. They discuss together different aspects and problems of their day to day life. The priest in the church explains to them their duties both: social and spiritual. They understand life better and join together in their prayers to the Supreme Being, the God. They refresh their memories and then go to their worldly duties remembering that they owe their existence to him. This makes them better human beings, more civilized and more humble.

संदर्भ और प्रसंग—ये पंक्तियाँ 'सर रोजर एट द चर्च' से ली गई हैं, जो अंग्रेजी साहित्य के अग्रणी व्यक्तिगत निबंधकार जोसेफ एडिसन द्वारा लिखित प्रसिद्ध कवरली पेपर्स में से एक है। ये कवरली पेपर्स उस समय की सामाजिक बुराइयों को हल्की-फुल्की आलोचना हैं। निबंधकार ने ऐसी बुराइयों को लिया जो कानून द्वारा दंडित किए जाने के लिए बहुत तुच्छ थीं और नैतिकता की सामाजिक संहिता द्वारा निंदा किए जाने के लिए बहुत ही काल्पनिक थीं। बुराइयों ने समाज को कभी कम प्रभावित नहीं किया।

व्याख्या—यहाँ, जोसेफ एडिसन ने रविवार को कहा, चाहे मानव निर्मित अभ्यास हो या नहीं, समाज को सभ्य बनाए रखने का एक बहुत अच्छा तरीका है। लेखक का कहना है कि उन्हें विश्वास है कि अगर रविवार नहीं होता, तो आम आदमी एक

तरह की बर्बरता में पतित हो जाते। दिन की नियमित वापसी उन्हें बर्बर होने से बचाती है। इस दिन पूरा गाँव अपने बेहतरीन परिधानों में तरोताजा और खुशमिजाज दिखने के लिए इकट्ठा होता है। वे अपने दैनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं और समस्याओं पर एक साथ चर्चा करते हैं। चर्च में पुजारी उन्हें उनके कर्तव्यों के बारे में बताते हैं—सामाजिक और आध्यात्मिक दोनों। वे जीवन को बेहतर ढंग से समझते हैं और परमपिता परमेश्वर से अपनी प्रार्थनाओं में एक साथ शामिल होते हैं। वे अपनी यादों को ताजा करते हैं और फिर यह याद करते हुए अपने सांसारिक कर्तव्यों में चले जाते हैं कि वे अपना अस्तित्व उसी के लिए देते हैं। यह उन्हें बेहतर इंसान, अधिक सभ्य अधिक विनम्र बनाता है।

[10]

Sunday clears away the rust of the whole week, not only as it refreshes in their minds the notions of religion, but as it puts both the sexes upon appearing in their most agreeable forms, and exerting all such qualities as are apt to give them a figure in the eye of the village. A country-fellow distinguishes himself as much in the churchyard as a citizen does upon the Change, the whole parish politics being generally discussed in that place either after sermon or before the bell rings.

Reference to the Context : These lines have been taken from *Sir Roger at the Church*, one of the famous *Coverley Papers* written by Joseph Addison, the pioneer personal essayist of English literature. These *Coverley Papers* are a light hearted criticism of social evils of the time. The essayist took such evils as were too trivial to be punished by law and too fantastical to be censured by social code of morality. The evils never the less affected the society.

Explanation : Here, Joseph Addison says that Sunday, in a way clears away the rust gathered by man on the six days of the week. It is both physical and spiritual. Spiritually, they refresh their notion of religion on this day and remain grateful to God for His mercy. At the same time they appear in their best dresses and each sex trips to impress the opposite by his or her behaviour. They try to show their best qualities so that they are admired by the whole village. In the city people appear in very attractive way in the change while in the villages they do it in the church on Sunday. They do it either before the sermon or after it. In a way they return from the Church newly refreshed and full of vitality and busy themselves in their duties as better human beings.

संदर्भ और प्रसंग—ये पंक्तियाँ 'सर रोजर एट द चर्च' से ली गई हैं, जो अंग्रेजी साहित्य के अग्रणी व्यक्तिगत निबंधकार जोसेफ एडिसन द्वारा लिखित प्रसिद्ध कवरली पेपर्स में से एक है। ये कवरली पेपर्स उस समय की सामाजिक बुराइयों की हल्की-फुल्की आलोचना हैं। निबंधकार ने ऐसी बुराइयों को लिया जो कानून द्वारा दंडित किए जाने के लिए बहुत तुच्छ थीं और नैतिकता की सामाजिक संहिता द्वारा निंदा किए जाने के लिए बहुत ही काल्पनिक थीं। बुराइयों ने समाज को कभी कम प्रभावित नहीं किया।

व्याख्या—यहाँ, जोसेफ एडिसन कहते हैं कि रविवार, सप्ताह के छह दिनों में मनुष्य द्वारा एकत्र किए गए जंग को एक तरह से साफ कर देता है। यह भौतिक और आध्यात्मिक दोनों है। आध्यात्मिक रूप से, वे इस दिन धर्म की अपनी धारणा को ताजा करते हैं और उनकी दया के लिए भगवान के आभारी रहते हैं। साथ ही वे अपने सबसे अच्छे परिधानों में दिखाई देते हैं और प्रत्येक सेक्स अपने व्यवहार से विपरीत को प्रभावित करने के लिए करते हैं। वे अपने सर्वोत्तम गुणों को दिखाने की कोशिश करते हैं ताकि पूरे गाँव में उनकी प्रशंसा हो। शहर में लोग बदलाव में बहुत आकर्षक रूप में दिखाई देते हैं जबकि गाँवों में वे रविवार को चर्च में करते हैं। वे इसे या तो धर्मोपदेश से पहले या उसके बाद करते हैं। एक तरह से वे चर्च से नए सिरे से तरोताजा और जीवन शक्ति से भरे हुए लौटते हैं और बेहतर इंसान के रूप में अपने कर्तव्यों में खुद को व्यस्त रखते हैं।

[11]

Sometimes he will be lengthening out a verse in the singing-psalms, half a minute after the rest of the congregation have done with it; sometimes, when he is pleased with the matter of his devotion, he pronounces Amen three or four times to the same prayer; and sometimes stands up when everybody else is upon their knees, to count the congregation, or see if any of his tenants are missing.

Reference to the Context : These lines have been taken from *Sir Roger at the Church*, one of the famous *Coverley Papers* written by Joseph Addison, the pioneer personal essayist of English literature. These *Coverley Papers* are a light hearted criticism of social evils of the time. The essayist took such evils as were too trivial to be punished by law and too fantastical to be censured by social code of morality. The evils never the less affected the society. Through his humorous behaviour Addison emphasizes the importance of the church in the life of common man.

Explanation : In these lines, the essayist says that sometimes Sir Roger behaves in a very strange way at the church. On such occasions he could be heard lengthening out a verse from the psalms if it is to his liking. He would sing it half a minute longer when the rest of the tathering had finished it. Sometimes he would utter *Ameen* three or four times of the same prayer if he is pleased with the matter of the devotion. Even, sometimes he is seen standing up when everybody else is on his tenants is missing. The oddity of his behaviours creates humour but has a positive effect upon the gillagers because his intentions are always good.

संदर्भ और प्रसंग—ये पंक्तियाँ 'सर रोजर एट द चर्च' से ली गई हैं, जो अंग्रेजी साहित्य के अग्रणी व्यक्तिगत निबंधकार जोसेफ एडिसन द्वारा लिखित प्रसिद्ध कवरली पेपर्स में से एक है। ये कवरली पेपर्स उस समय की सामाजिक बुराइयों की हल्की-फुल्की आलोचना हैं। निबंधकार ने ऐसी बुराइयों को लिया जो कानून द्वारा दंडित किए जाने के लिए बहुत तुच्छ थीं और नैतिकता की सामाजिक संहिता द्वारा निंदा किए जाने के लिए बहुत ही काल्पनिक थीं। बुराइयों ने समाज को कभी कम प्रभावित नहीं किया। एडिसन अपने विनोदी व्यवहार के माध्यम से आम आदमी के जीवन में चर्च के महत्त्व पर जोर देते हैं।

व्याख्या—इन पंक्तियों में निबंधकार कहता है कि कभी-कभी सर रोजर चर्च में बहुत अजीब व्यवहार करता है। ऐसे अवसरों पर उन्हें अपनी पसंद के अनुसार स्रोत से एक पद को लंबा करते हुए सुना जा सकता है। वह इसे आधा मिनट और गाता था जब बाकी टेदरिंग ने इसे समाप्त कर दिया था। कभी-कभी वह भक्ति की बात से प्रसन्न होने पर एक ही प्रार्थना के तीन या चार बार अमीन का उच्चारण करता था। यहाँ तक कि कभी-कभी तो वह खड़े भी नजर आते हैं, जबकि बाकी सब अपने किराएदारों के नदारद होते हैं। उनके व्यवहार की विषमता हास्य पैदा करती है लेकिन गिलहरियों पर सकारात्मक प्रभाव डालती है क्योंकि उनके इरादे हमेशा अच्छे होते हैं।

SECTION-A (VERY SHORT ANSWER TYPE) QUESTIONS

Q.1. Give a brief introduction of Francis Bacon.

फ्रांसिस बेकन का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

Ans. Francis Bacon, an English philosopher and statesman, was born at York House in the Strand, London on 22 January 1561. As a boy his wit and precocity attracted the attention of the queen, who used jestingly to call him her 'younger lord keeper' - his father then being the keeper of the Great Seal of England. He was educated at Trinity college, Cambridge, and in preparation for a career of statesmanship was sent to Paris in the suite of the English ambassador.

अंग्रेजी दार्शनिक व राजनीतिज्ञ फ्रांसिस बेकन का जन्म 22 जनवरी 1561 को स्ट्रैण्ड लन्दन के यॉर्कहाउस में हुआ था। बाल्यकाल में ही उसकी वाक्पटुता व तीक्ष्ण बुद्धि ने रानी का ध्यान आकर्षित किया जो उसे मजाक में अपना 'युवा लॉर्ड कीपर' कहती थी। बेकन की शिक्षा ट्रिनिटी कॉलेज, कैंब्रिज में हुई। अंग्रेज राजनयिक पेशे की तैयारी के लिए उसे पेरिस भेज दिया गया।

Q.2. What, according to Bacon, are the uses of studies?

(2021)

बेकन के अनुसार पढ़ाई के क्या उपयोग हैं?

Ans. According to Bacon, studies serve for delight, for ornament, and for ability. Their chief use for delight is in privateness and retiring; for ornament, is in discourse; and for ability, is in the judgement and disposition of business.

बेकन के अनुसार, पढ़ाई आनंद, सजावट व योग्यता के लिए है। उनका मुख्य उपयोग निजता व आराम के क्षणों में आनंद लेना; बोलचाल व भाषण देने में सजावट तथा निर्णय लेने और व्यापार करने में योग्यता होना है।

Q.3. What does Bacon want to explain in this essay?

इस निबन्ध में बेकन क्या विवरण करना चाहते हैं?

Ans. Francis Bacon, in his classic essay "Of Studies", explains how and why study or knowledge is important to the human beings. The great essayist explains the importance of study and opens the essay with what use is study. He says that study can be for pleasure, ornament or to cultivate ability, and also tells how study can be used in each capacity.

फ्रांसिस बेकन, अपने शास्त्रीय निबंध "Of Studies" में व्याख्या करते हैं कि अध्ययन या ज्ञान किस प्रकार और क्यों हम मनुष्यों के लिए महत्वपूर्ण है। वह महान निबंधकार अध्ययन के महत्व की व्याख्या करता है और निबंध का आरंभ यह कहकर आरंभ करता है कि अध्ययन का क्या महत्व है। वह कहता है कि अध्ययन मनोरंजन के लिए, सजावट या दिखावट के लिए या योग्यता/क्षमता पैदा करने के लिए हो सकता है।

Q.4. What is the affinity between study and experience?

अध्ययन और अनुभव के मध्य किस प्रकार का गहरा सम्बन्ध है?

Ans. Study and experience have a close relation. Study develops the natural ability of a man but it must be guided and perfected by the practical experience of life. Natural abilities can be compared to natural plants. Study gives guidance which is too vague and general. Guidance given by books can be applied to practical affairs of life only when it has been corrected and controlled by experience of life. Books give us knowledge, but they do not teach the practical use of that knowledge. This practical use of knowledge can be learnt only through the experience of life. Experience lies outside books, and is superior to the study or knowledge of books.

अध्ययन व अनुभव में घनिष्ठ सम्बन्ध है। अध्ययन एक व्यक्ति की स्वाभाविक योग्यताओं को विकसित करता है परन्तु उसे जीवन के अनुभव से नियन्त्रित व विकसित किया जाना चाहिए। स्वाभाविक योग्यताओं की तुलना प्राकृतिक पौधों से ही की जा सकती है। पुस्तकों द्वारा दिया गया निर्देशन बहुत सामान्य व अस्पष्ट होता है। उसे जीवन के व्यावहारिक मामलों पर तभी लागू किया जा सकता है जब वह जीवन के अनुभव द्वारा नियन्त्रित व सही किया जा चुका हो। पुस्तकें हमें ज्ञान देती हैं परन्तु उस ज्ञान का व्यावहारिक उपयोग नहीं सिखातीं। ज्ञान का व्यावहारिक उपयोग जीवन के अनुभव व निरीक्षण से सीखा जा सकता है। अनुभव पुस्तकों के बाहर की बात है जो अध्ययन या किताबी ज्ञान से श्रेष्ठ होता है।

Q.5. What is the effect of different kinds of books on the reader?

पाठक पर विभिन्न प्रकार की पुस्तकों का क्या प्रभाव पड़ता है?

Ans. Different kinds of books have different effects upon the readers. History makes a man wise. Poetry makes a man imaginative. Mathematics develops subtlety in a man. Natural philosophy i.e., physics, chemistry enables a man to go deep into things. Logic and rhetoric develop a man's debating powers. The study of Moral philosophy makes a man grave or serious.

विभिन्न प्रकार की पुस्तकों के पाठकों पर विभिन्न प्रभाव होते हैं। इतिहास व्यक्ति को बुद्धिमान बनाता है। कविता मनुष्य को कल्पनाशील बनाती है। गणित व्यक्ति को सूक्ष्म अन्तर परखना सिखाता है। प्राकृतिक दर्शन अर्थात् भौतिक व रसायन विज्ञान मनुष्य को वस्तुओं की गहराई तक जाना सिखाते हैं। तर्कशास्त्र व भाषण देने की कला व्यक्ति को तर्क करना सिखाते हैं। नैतिक दर्शन का अध्ययन मनुष्य को गम्भीर बनाता है।

Q.6. 'Dream Children' is full of humour and pathos. Discuss.

'Dream Children' हास्य व करुणा से भरपूर हैं। विवेचना कीजिए।

Ans. A fine blending of humour with pathos is found nowhere as has been used by Charles Lamb in his essay. His 'Dream Children' is the essay in which we find sustained pathos with humour. The writer seems to laugh under the impression of his agonies.

जैसा मार्मिक चित्रण हास्य व करुणा के मिश्रण से चार्ल्स लैम्ब ने अपने निबन्ध में किया है वैसे विवरण अन्यत्र नहीं मिलता है। उसके 'Dream Children' में करुणा व हास्य का स्थायी भाव दिखायी देता है। अपनी पीड़ा व परेशानी के बीच भी वह हँसता हुआ दिखायी देता है।

Q.7. Discuss about Field and her great house as shown in the essay 'Dream Children'.

फील्ड और उनके विशाल मकान का वर्णन कीजिए जैसा कि 'Dream Children' में दिखाया गया है।

Ans. Lamb starts his story beginning with his grandmother Field who had in her possession a great house in Norfolk in which the story of the children is told. She used to live alone in such a big house. She was a good religious lady and everybody used to respect her. Field loved all her grandchildren, specially John Lamb who did not like to stay much in the boundaries of that large house.

लैम्ब अपनी कहानी का प्रारम्भ अपनी दादी फील्ड से करता है जिनका नोरफोक में एक विशाल मकान था जिसमें बच्चों के बारे में कहानी सुनायी जा रही है। इतने विशाल मकान में वह अकेली रहा करती थीं। वह धार्मिक स्वभाव की एक अच्छी महिला थीं और सभी लोग उनका सम्मान करते थे। फील्ड अपने सभी पौत्रों को स्नेह करती थीं, विशेष रूप से जॉन लैम्ब को, जो उस विशाल मकान की चहारदीवारी में कैद होकर नहीं रहना चाहता था।

Q.8. Discuss the type of language used by Lamb in his essays.

लैम्ब द्वारा अपने निबन्धों में प्रयोग की गई भाषा का विवेचना कीजिए।

Ans. Lamb writes very simple sentences when he is didactic and serious in the narrative of facts like Bacon. He uses a lot of dashes and leaves the sentences incomplete when he is sensitive and imaginative. His essays are full of rich similes, metaphors and oxymorons. He breaks big sentences using colons and semicolons. Brackets have been used to a friendly conversation with the readers. Lamb has chosen different styles for different purposes.

बेकन की तरह जब लैम्ब शिक्षाप्रद व गम्भीर विषयों पर विवरण प्रस्तुत करता है तो वह सरल वाक्यों का लेखन में उपयोग करता है। जब वह भावुक व कल्पनाशील लेखन करता है तो वह बार-बार डैश का प्रयोग करता है और वाक्यों को अधूरा

छोड़ देता है। उसके निबन्ध उपमा, रूपक, विरोधाभास जैसे अलंकारों से भरपूर रहते हैं। वह कॉलन और अर्धविराम का प्रयोग कर लम्बे वाक्यों को लघु आकार देने में समर्थ होता है। अनुकूलता का वातावरण सृजित करने के लिए वह कोष्ठकों का प्रयोग भी करता है। लैम्ब ने भिन्न-भिन्न उद्देश्यों के लिए सर्वथा भिन्न शैलियों का प्रयोग किया है।

Q.9. Do you think that Lamb's essays are autobiographical? Comment.

क्या आप सोचते हैं कि लैम्ब के निबन्ध निजता से ओतप्रोत हैं? विवेचना कीजिए।

Ans. Lamb is a personal essayist. His essays are autobiographical. There is no essay which does not expose any fact about Lamb's life. His essays throw a light of his own mood and temperament. Every essay of his is full of seriousness. Though he was lifelong bachelor, he depicts his longings to be a father and husband. Imagination, grief, pictorial qualities and his emotions reveal his personal life. His essays are subjective in character.

लैम्ब निजता का निबन्धकार है। उसके निबन्ध आत्मपरक होते हैं। ऐसा कोई निबन्ध नहीं है जिसमें लैम्ब के जीवन से सम्बन्धित कोई तथ्य न हो। उसके निबन्धों में उसके स्वभाव व मनोदशा पर प्रकाश पड़ता है। उसके सभी निबन्ध गम्भीरता से ओतप्रोत होते हैं। यद्यपि वह आजीवन अविवाहित रहा तब भी वह पिता और पति होने की अपनी इच्छा प्रकट करता है। कल्पनाशीलता, विषाद, चित्रात्मकता और उसकी भावनाएँ उसके निजी जीवन को उद्भाषित करती हैं। चरित्र में उसके सभी निबन्ध आत्मपरक होते हैं।

Q.10. It is said that Lamb's essays are the blending of fact and fiction. Discuss in your own words.

यह कहा जाता है कि लैम्ब के निबन्ध वास्तविकता और कल्पना का सम्मिश्रण होते हैं। अपने शब्दों में विवेचना कीजिए।

Ans. Lamb's essays are marked by an exquisite blending of fact and fiction. In fact, he was an imaginative artist and not a factual recorder of events. Most of his essays have references to his personal life yet to write a biography of Lamb only on the basis of his essays is not an easy task. This is due to his incurable habit of mingling fact and fiction, and truth and imaginary details.

लैम्ब के निबन्धों में वास्तविकता व कल्पनाशीलता का उत्कृष्ट सम्मिश्रण दिखायी देता है। वास्तविकता यह है कि वह कल्पनाशीलता का कलाकार था और उसे वास्तविक तथ्यों से कोई लेना-देना नहीं था। उसके अधिकांश निबन्धों में उसके निजी जीवन की झलक मिलती है तथापि इन निबन्धों को आधार बनाकर उसकी जीवनी लिख पाना प्रायः असम्भव ही है। ऐसा इसलिए है कि वह वास्तविकता व कल्पनाशीलता को और सत्य घटना व काल्पनिक घटना को इस प्रकार मिश्रित कर देता है कि उन्हें पृथक् कर पाना पाठक के लिए असम्भव है।

Q.11. Give a brief introduction of Joseph Addison.

जोसेफ एडिसन का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

Ans. Joseph Addison was born in 1672. His father Lancelot Addison (1632-1703) was a scholarly English Clergyman. Addison was educated at Amesbury, Lichfield, Charterhouse School in London, Queens College and Magdalen, Oxford. In 1693, he began his literary career with a poetic address to Dryden and won his instant favour.

जोसेफ एडिसन का जन्म 1672 में हुआ था। उसके पिता लांसलॉट एडिसन (1632-1703) एक विद्वान् अंग्रेज पादरी थे। एडिसन की शिक्षा एम्सबरी, लिचफील्ड व चार्टर हाउस स्कूल लन्दन में तथा क्वीन्स कॉलेज व मेग्दालेन, ऑक्सफोर्ड में हुई थी। 1693 में Dryden के लिए एक काव्यात्मक सम्बोधन से उसने अपना साहित्यिक जीवन प्रारम्भ किया व तुरन्त उसका स्नेह जीता।

Q.12. Addison's life was divided between political and literary duties. Discuss.

एडीसन का जीवन राजनीतिक और साहित्यिक कार्यों के बीच बँटा हुआ था। विवेचना कीजिए।

Ans. Addison's life was divided between political and literary duties. He wrote his essays for 'The Tatler' and 'The Spectator' between 1709 and 1714 on which his fame as an essayist of substance depends. Based upon his reputation he rose in administrative and political fields and became Under Secretary, Member of Parliament, Secretary for Ireland and finally Secretary of State.

एडीसन का जीवन राजनीतिक व साहित्यिक कार्यों के बीच बँटा हुआ था। वर्ष 1709 से 1714 के बीच उसने The Tatler व The Spectator के लिए निबन्ध लिखे। इसी के आधार पर उसे निबन्धकार के रूप में ख्याति मिली। अपनी ख्याति के अनुरूप वह प्रशासनिक व राजनीतिक क्षेत्रों में आगे बढ़ा। वह अवर सचिव, संसद सदस्य, आयरलैंड का सचिव और अन्त में गृहमन्त्री बना।

Q.13. In which manner does Addison describe the relevance of Sunday?

रविवार की प्रासंगिकता को एडीसन ने किस प्रकार विवेचित किया है?

Ans. Addison is always pleased on a Sunday in a country. He thinks that if the life of Sunday is not enjoyed as a holiday there will be no change in the life of people. Sunday is the only human institution that can make the civilization more refined and civilized.

ग्रामीण अंचल में रविवार का दिन एडीसन के लिए सदैव ही प्रसन्नता प्रदान करने वाला होता है। उसका मानना है कि यदि रविवार के दिन को अवकाश के रूप में नहीं मनाया गया तो लोगों के जीवन में कोई बदलाव नहीं आएगा। रविवार ही ऐसी मानवीय संस्था है जो सभ्यता को और अधिक परिष्कृत व संस्कारपूर्ण बना सकती है।

Q.14. Why does Addison call Sunday the best institution in the life of man, whether man-made or God-made ?

एडीसन रविवार को भगवान द्वारा निर्मित अथवा मनुष्य द्वारा निर्मित मनुष्य के जीवन में सर्वश्रेष्ठ परम्परा/संस्था क्यों कहते हैं?

Ans. Joseph Addison regards Sunday as the best institution in human life whether devised by God, when he rested on the seventh day after working for six days, creating the Universe, or devised by man. If Sunday, and the tradition to go to Church on this day, were not there, man would be uncivilised and barbaric. In a way it clears the rust of the society gathered by human beings during the last six days of the week.

एडीसन रविवार को मनुष्य के जीवन की सर्वश्रेष्ठ परम्परा मानते हैं, चाहे यह मनुष्य द्वारा स्थापित हो अथवा भगवान द्वारा, जब भगवान ने ब्रह्माण्ड की रचना का कार्य छः दिनों तक करने के पश्चात् सातवें दिन आराम किया। यदि रविवार और इस दिन चर्च जाने की परम्परा न हो तो मनुष्य असभ्य एवं बर्बर रह जाता। एक प्रकार से यह समाज के अन्दर मनुष्य द्वारा सप्ताह के छः दिनों के भीतर जमा की गयी जंग और गंदगी को दूर कर देता है।

SECTION-B (SHORT ANSWER TYPE QUESTIONS)**Q.1. Why is it necessary to perfect studies by experience?**

अध्ययन को अनुभव से सम्पूर्ण करना क्यों आवश्यक है?

Ans. While accepting the importance of studies in the life of man, Bacon explains that studies are not complete in themselves. On the one hand they perfect the nature of man but are themselves perfected by experience i.e. practical experience is necessary to make a proper use

of studies. It is necessary because the knowledge of rules gained from books is vague and abstract. Life is not a uniform thing. Circumstances change regularly and man has to adjust according to them. Theory and principles are to be duly adjusted to make them fit in the practical aspects of life. Without doing so man cannot make a proper use of his studies. It is only the wise who can make proper use of their studies.

मनुष्य जीवन में अध्ययन के महत्व को स्वीकार करते हुए बेकन स्पष्ट करते हैं कि अध्ययन अपने आप में सम्पूर्ण नहीं होता है। एक ओर तो वह मनुष्य प्रकृति को पूर्णता प्रदान करता है, दूसरी ओर स्वयं अनुभव से पूर्ण होता है। कहने का अर्थ है कि अध्ययन का उचित उपयोग करने के लिए अनुभव आवश्यक है। यह इसलिए आवश्यक है क्योंकि पुस्तकों से प्राप्त नियमों का ज्ञान स्पष्ट एवं भावपरक होता है। जीवन एक जैसा नहीं होता। परिस्थितियाँ सतत् परिवर्तित होती रहती हैं और मनुष्य को उनके अनुसार अपने को व्यवस्थित करना पड़ता है। नियमों एवं सिद्धान्तों को जीवन में व्यावहारिक पक्ष के अनुसार सटीक बनाने के लिए उचित तालमेल बैठाना पड़ता है। ऐसा किये बिना मनुष्य अपने अध्ययन का उचित प्रयोग नहीं कर सकता। केवल बुद्धिमान लोग ही अपने अध्ययन का उचित उपयोग कर सकते हैं।

Q.2. How, according to Bacon, young men should make proper use of their studies ?

बेकन के अनुसार नवयुवकों को अपने अध्ययन का उचित उपयोग किस प्रकार करना चाहिए?

Ans. Bacon believes that studies are very useful in giving man pleasure, ornament and ability. But to make their proper use youngmen have to observe a few things. They should not read to contradict or confute i.e. a young man should not, unless very necessary, contradict others. There are various angles from which truth can be seen. May be, the man is having his point of view based upon his experience and the young man may only show his ignorance by contradicting the man.

The young man should also not take for granted what others say. He should try to judge the sayings of others by his own understanding of life. The information should be first tested and then accepted. Similarly, he should not make a show of his studies. The proper thing is to study, to weigh and consider. The conclusions, thus arrived at would be the right knowledge of a young man.

बेकन मानते हैं कि अध्ययन मनुष्य के आनन्द, अलंकरण एवं योग्यता प्रदान करने में बहुत उपयोगी है। लेकिन उसका उचित उपयोग करने के लिए नवयुवकों को कुछ बातों का पालन करना आवश्यक है। उन्हें अपना अध्ययन खण्डन करने अथवा विवाद उत्पन्न करने के लिए नहीं करना चाहिए अर्थात् नवयुवक को जब तक बहुत आवश्यक न हो, दूसरों का खण्डन नहीं करना चाहिए। सत्य को देखने के बहुत से कोण हो सकते हैं। हो सकता है कि उस व्यक्ति का अपने अनुभव पर आधारित अपना दृष्टिकोण हो और उस व्यक्ति के मत का खण्डन करके नवयुवक केवल अपना अज्ञान ही प्रदर्शित कर रहा हो।

नवयुवकों को दूसरों द्वारा कही गई बातों को वैसा ही स्वीकार नहीं कर लेना चाहिए। उसको दूसरों के कथनों को अपनी जीवन की समझ के अनुसार समझना चाहिए। जानकारी को पहले परखा जाना चाहिए और तब स्वीकार किया जाना चाहिए। इसी प्रकार उसे अपने ज्ञान का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए। उचित यही होगा कि अध्ययन का उपयोग समझकर विचार करने के लिए किया जाए। इस प्रकार पहुँचा निष्कर्ष ही नवयुवक का उचित ज्ञान होगा।

Q.3. How does reading affect the personality of man?

अध्ययन से मनुष्य का व्यक्तित्व किस प्रकार प्रभावित होता है?

Ans. Studies develop the total personality of man. His habit of conversation makes him witty. A man becomes exact by writing. His thinking and expression become exact when he writes them on paper.

In the same way, study of different subjects has its impact on the personality of man in different ways. It has been experienced that the study of history makes a man wise. History is the account of the human activities of a period. When a man reads history he learns the mistakes committed in that period and learns from these mistakes of the past. The study of poetry makes man imaginative. Poet's imagination takes long flights and man also sharpens his imaginative skills by reading poetry. Study of mathematics develops refinement of human nature. Philosophy makes man deep. The philosophers are known to be cymini sectores i.e. hair splitters. Man learns to go deep into his subject by the study of philosophy. In the same way logic and rhetoric develop debating and oratorical skills of man.

अध्ययन से मनुष्य के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है। वार्तालाप की उसकी आदत उसे वाक्चतुर बनाती है। लेखन के द्वारा मनुष्य सटीक होता है।

इसी प्रकार विभिन्न विषयों का अध्ययन मनुष्य के व्यक्तित्व पर भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रभाव डालता है। यह अनुभव में आया है कि इतिहास का अध्ययन मनुष्य को बुद्धिमान बनाता है। इतिहास किसी काल का मानवीय गतिविधियों का संकलन है। जब मनुष्य इतिहास का अध्ययन करता है, तो उसे उस काल में की गयी गलतियों की जानकारी होती है और भूतकाल की इन गलतियों से वह शिक्षा ग्रहण करता है। काव्य का अध्ययन मनुष्य को कल्पनाशील बनाता है। कवियों की कल्पना बड़ी-बड़ी उड़ानें भरती हैं और काव्य का अध्ययन करके मनुष्य अपनी कल्पनाशीलता को पैना बनाता है। गणित का अध्ययन मनुष्य की प्रकृति को परिष्कृत करता है। दर्शन मनुष्य को गंभीर्य प्रदान करता है। दार्शनिकों को बाल की खाल निकालने वाला कहा जाता है। दर्शन के अध्ययन से मनुष्य विषय की गंभीरता में जाना सीखता है। इसी प्रकार तर्क एवं भाषण-कला मनुष्य की वाद-विवाद एवं भाषण-कला को विकसित करते हैं।

Q.4. Write about the imaginative children in 'Dream Children'.

'Dream Children' के काल्पनिक बच्चों के विषय में लिखिए।

Ans. There are two imaginary children John and Alice in the story 'Dream Children'. The children are imaginatry because Lamb has been a bachelor but wishes to be a father. They are important characters as the whole description goes on for their pleasure. Lamb tells them of the fruits which were forbidden to him. At this John secretly deposited a bunch of grapes which was observed by Alice. But both seemed willing to relinquish them as it was irrelevant for the present. On hearing that Field was the best dancer, the little right foot of Alice plays involuntarily movement. Charles Lamb pathetically explains that he was as uneasy without John Lamb as their uncle John must have been when the doctor took off his limb. At this the two children started crying.

'Dream Children' की कहानी में जॉन और एलिस दो काल्पनिक बच्चे हैं। बच्चे काल्पनिक हैं क्योंकि लैम्ब अविवाहित रहा और पिता बनने की इच्छा रखता था। वे प्रमुख पात्र हैं क्योंकि सारा वर्णन उनके आनन्द के लिए है। लैम्ब उन्हें बताता है कि फलों की उसे मनाही थी। इस पर जॉन एक अंगूर का गुच्छा छिपाकर रख लेता है जिसे एलिस द्वारा देख लिया जाता है। परन्तु दोनों उसे त्यागने के इच्छुक दिखाई दिये, क्योंकि वर्तमान में यह असंगत था। यह सुनकर कि फील्ड श्रेष्ठ नृत्यांगना थी, एलिस का दाहिना पैर अनायास ही नाचने लगा। चार्ल्स लैम्ब करुणापूर्ण ढंग से बताया कि बिना जॉन लैम्ब के इतना बेचैन था जितना कि उनके अंकल जॉन रहे, जबकि डॉक्टर ने उनका अंग-भंग किया। इस पर दोनों बच्चों ने रोना शुरू कर दिया।

Q.5. Draw a character sketch of Field in 'Dream Children'.

'Dream Children' में Field का चरित्र चित्रण दीजिए।

Ans. In 'Dream Children' Lamb imagines his two children John and Alice; persuading him to tell the stories of their elders. In real life Lamb was not married. Here he is in reverie i.e.

day-dream. Lamb begins with his grandmother Field who lived in a great house in Norfolk. She was respected by everybody as she was soft-spoken, good and religious. Although she had only the charge of the house, she might be said to be the mistress of it. She had been tall, upright and best dancer in her youth; till a cruel disease, cancer bowed her down with pain. But even cancer could not bend her good spirit. When she died, her funeral was followed by a large number of common people.

'Dream Children' में लैम्ब दो बच्चों जॉन और एलिस की कल्पना करता है, उसे बड़ों की कहानियाँ सुनाने के लिए फुसलाते हैं। वास्तविक जीवन में लैम्ब विवाहित नहीं था। यहाँ वह दिवा-स्वप्न में है। लैम्ब अपनी दादी फील्ड से प्रारम्भ करता है जो नोफेक में एक बड़े भवन में रहती थी। वह हर व्यक्ति के द्वारा सम्मानित थी, क्योंकि वह मृदुभाषी, अच्छी व धार्मिक थी। यद्यपि उसे इस भवन का केवल रक्षण अधिकार ही प्राप्त था फिर भी उसे इसकी मालकिन कहा जा सकता था। वह अपनी जवानी में लम्बी, सीधी और सर्वश्रेष्ठ नृत्यांगना रही थी, जब तक कि निर्दयी बीमारी कैंसर के दर्द ने उसे झुका दिया। परन्तु कैंसर भी उसकी अच्छी आत्मा को नहीं झुका सकी। जब उसकी मृत्यु हुई, उसकी अन्त्येष्टि में बहुत से सामान्यजन सम्मिलित हुए।

Q.6. Write in brief about the life of Lamb.

Lamb के जीवन के विषय में संक्षेप में लिखिए।

Ans. Charles Lamb was born in London on February 10, 1775. He was born and brought up in a building named 'Temple in the olden days. The building, later on, was shifted into a lodging of lawyers. Lamb's father was a confidential clerk to a lawyer. His mother Elizabeth Field was the daughter of the great grandmother Field who is referred to in the essay 'Dream Children'. Charles' other surviving brother and sister were John Lamb and Mary. Lamb received his education in a charity school 'Christ's Hospital'. While studying there, Lamb made S.T. Coleridge his friend.

Charles' elder brother John Lamb did not share sufferings of the family, that is why Charles started working as a clerk in South Seahouse in the very young age of fourteen. After two years he joined 'India House'. His interest in reading and writing got him retired from 'India House' to a literary career. He wrote his essays under the pseudonym of 'Elia'.

Charles Lamb लन्दन में 10 फरवरी, 1775 को पैदा हुए। वे एक भवन में पैदा हुए और पले जिसका नाम पुराने समय में 'Temple' था। बाद में यह भवन वकीलों के निवास में बदल दिया गया। Lamb के पिता एक वकील के विश्वस्त क्लर्क थे। उसकी माता 'Elizabeth Field' Great Grandmother Field की पुत्री थी, जिसका संदर्भ 'Dream Children' में दिया गया है। Charles के अन्य जीवित भाई-बहन John Lamb और Mary Lamb थे। Lamb ने एक धर्मार्थ संस्था 'Christ's Hospital' में शिक्षा ग्रहण की। वहाँ अध्ययन करते हुए उसने S.T. Coleridge से मित्रता की।

Charles का बड़ा भाई John Lamb परिवार के दुःखों में हिस्सा नहीं बँटाता था, यही कारण था कि Charles ने चौदह वर्ष की छोटी आयु में ही 'South Seahouse' में क्लर्क का कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। दो साल बाद 'India House' में सम्मिलित हो गया। पढ़ने-लिखने में उसकी रुचि ने उसे 'India House' से अवकाश दिलाकर साहित्यिक जीवन में पहुँचा दिया। उसने छद्मनाम 'Elia' के अन्तर्गत निबन्ध लिखे।

Q.7. Lamb is Prince of English Essayists. Comment.

लैम्ब अंग्रेजी निबन्धकारों का राजकुमार है। व्याख्या कीजिए।

Ans. Lamb is one of the great English essayists like Thomas Browne, Steel and Addison, etc.; that is why he has been called the prince of English essayists. There is beautiful blending of facts with fiction in his essays. His creations are humorous, heart-touching and pathetic in

particular. Lamb is to English essays what Milton is to English poetry and Shakespeare to English drama.

He wrote for 'London Magazine' under the name of 'Elia' who was an Italian and Lamb's colleague at the South Seahouse. These essays were especially written to express his innermost emotions, and to relieve the despair and grievances. His power of understanding, blending of facts with fiction, his principles of education, his peculiar style, etc. make Lamb the prince of English essayists.

लैम्ब अंग्रेजी के महान निबन्धकारों; जैसे—Thomas Browne, Steel and Addison आदि में से एक हैं। यही कारण है कि उन्हें अंग्रेजी निबन्धकारों का राजकुमार कहा जाता है। उसके निबन्धों में सत्य और कल्पना का सुन्दर समन्वय है। उसकी रचनाएँ विशेष रूप से हास्यपूर्ण, मर्मस्पर्शी और कारुणिक हैं। लैम्ब अंग्रेजी निबन्ध के लिए वही है जो मिल्टन अंग्रेजी काव्य के लिए और शेक्सपीयर अंग्रेजी नाटक के लिए।

उसने 'London Magazine' में Elia के नाम से लिखा जो एक इटैलियन था और South Sea House में उसका सहकर्मी था। ये निबन्ध विशेष रूप से उसकी अन्दरूनी भावनाओं को व्यक्त करने और निराशा व दुःखों को शान्त करने के लिए लिखे गये थे। उसकी समझ, तथ्य और कल्पना का समन्वय उसमें शिक्षण सिद्धान्त, उसकी विशिष्ट पद्धति लैम्ब को अंग्रेजी निबन्धकारों का राजकुमार बनाते हैं।

Q.8. What steps has Sir Roger taken to sustain and increase the interest and faith of his people in the institution of the Church ?

सर रोजर ने चर्च की संस्था के लिए लोगों के मन में रुचि बनाये रखने एवं उसे बढ़ाने के लिए क्या कदम उठाए हैं?

Ans. Sir Roger, the baronet of Worcestershire, is an ideal Churchman. He is a regular Churchgoer and wants that his parishiners should be likewise. For this he uses his authority as the knight quite rashly but at the same time he also gives some incentives so that people's faith in God remains firm.

As the landlord of the village he has got the inside of the Church walls painted and decorated with verses from the Bible. He has also donated a beautiful piece of cloth for the pulpit and got the pulpit railed. Besides, he has appointed a singer who roams the village singing hymns and instructing the villagers about the correct tune of the songs. This keeps the memory of the people fresh about religion. He has donated a hassock to every villager so that they may use it for kneeling during prayers.

Sir Roger also gives rewards to young men who give right answers on the Catchising day. He has declared that the post of clerk would be given to a meritorious young man after the present incumbent retires. All these steps have their positive effect on the mind of people to make them good church men.

सर रोजर जो वोरसेस्टरशायर के बेस हैं, एक आदर्श चर्च के व्यक्ति हैं। वे नियमित रूप से चर्च जाते हैं और चाहते हैं कि उनके पेरिश के लोग भी वैसे ही रहें। इसके लिए वे नाइट के रूप में अपने अधिकार काफी कठोरता से लागू करते हैं लेकिन साथ ही वे कुछ प्रोत्साहन भी देते हैं, जिससे लोगों की भगवान में आस्था दृढ़ बनी रहे।

गाँव के जमींदार के रूप में उन्होंने चर्च के भीतर की दीवार पर रोगन करा कर उसे बाईबिल की पंक्तियों से सजवाया है। उन्होंने मंच के लिए एक सुन्दर कपड़ा भी दान दिया है और मंच के चारों तरफ रेलिंग लगवाई है। इसके अतिरिक्त उन्होंने एक गायक को नियुक्त किया है जो प्रार्थना एवं भजन गाता हुआ गाँव में घूमता रहता है और गाँव वालों को गीतों की सही

धुनों की शिक्षा देता है। इससे लोगों की धर्म की स्मृति ताजी बनी रहती है। उन्होंने प्रत्येक ग्रामवासी को एक गद्देदार आसन दान में दी है ताकि वे प्रार्थना के समय झुकने के लिए उसका उपयोग कर सकें।

सर रोजर नवयुवकों को पुरस्कार भी देते हैं जो प्रश्नोत्तर के दिन सही उत्तर देते हैं। उन्होंने यह भी घोषणा की है कि क्लर्क का पद वर्तमान पदाधिकारी के सेवानिवृत्त होने पर योग्यता के अनुसार दिया जाएगा। इन सब कदमों का लोगों के मन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है, जिससे वे अच्छे चर्च के व्यक्ति बने हैं।

Q.9. Describe some of the eccentricities, Sir Roger suffers from as seen in his behaviour on Sunday at Church.

सर रोजर के चरित्र की कुछ विसंगतियों का वर्णन कीजिए जिनसे सर रोजर ग्रस्त है और जो रविवार के दिन चर्च में उनके व्यवहार में दिखाई पड़ती हैं।

Ans. Sir Roger is a landlord of good intentions, having the goodness for his people at his heart. But his behaviour sometimes shows him a man of eccentric nature. However, this also results from his simplicity and essential good nature. This is seen in his behaviour on a Sunday at Church.

He is in the habit of standing in the middle of a prayer or sermon and count the gathering to see if any one of his tenants is missing. He does not allow any one to take a short nap except himself. He also lengthens a verse and sings it half a minute longer when the rest of the congregation has finished it. In the same manner he says 'Amen' three or four times for some prayer if the matter is to his liking.

He does not let any one disturb the service. He once gave a rebuke to an idle fellow John Mathews, who was kicking his heels to divert his attention.

When the service is over, he is the first to move out through the two rows of the villagers who bow to him. In between, he enquires about those who are absent. This is taken as a mild reprimand to such people. These things are taken positively by the people who love him as much as they respect him.

सर रोजर सदभावना वाले जमींदार हैं जिनके मन में लोगों की भलाई सदा रहती है। लेकिन कई बार उनका व्यवहार उन्हें सनकी प्रवृत्ति वाला व्यक्ति प्रदर्शित करता है। हालाँकि यह उनकी सादगी और मूल भली प्रवृत्ति का ही परिणाम है। ये बातें रविवार के दिन चर्च में उनके व्यवहार में दिखाई पड़ती हैं।

उन्हें प्रार्थना अथवा उपदेश के बीच में ही खड़ा होकर उपस्थित लोगों की गिनती करने की आदत है ताकि वे देख सकें कि कोई व्यक्ति अनुपस्थित तो नहीं है। वे अपने अतिरिक्त किसी दूसरे को झपकी नहीं लेने देते हैं। वे किसी प्रार्थना की पंक्ति को कुछ बाद तक गाते रहते हैं जबकि समूह के दूसरे व्यक्ति उसे पूर्ण कर चुके होते हैं। इसी प्रकार वे एक प्रार्थना के बाद यदि उसकी सामग्री उन्हें पसन्द आ जाये, तो तीन-चार बार 'आमीन' कहते रहते हैं।

वे किसी दूसरे को प्रार्थना में व्यवधान नहीं डालने देते। उन्होंने एक बार एक निठल्ले व्यक्ति जोन मैथ्यूज को खुलेआम फटकार लगाई क्योंकि वह उनका ध्यान बँटाने के लिए एड़ियों से खटखट कर रहा था।

जब प्रार्थना समाप्त हो जाती है तो सबसे पहले वे ही बाहर निकलते हैं और दो पंक्तियों में खड़े अपने इलाके के लोगों के बीच से गुजरते हैं जो झुक कर उनका सम्मान करते हैं। बीच-बीच में वे अनुपस्थित लोगों के विषय में जानकारी करते हैं जो अनुपस्थित होते हैं। यह ऐसे लोगों के लिए एक प्रकार की हल्की-फुल्की फटकार के रूप में लिया जाता है। ये सब चीजें लोगों द्वारा सकारात्मक रूप में ली जाती हैं, जो उन्हें उतना ही प्यार करते हैं जितना उनका सम्मान करते हैं।

Q.10. Why did Sir Roger grow eccentric in his behaviour?

सर रोजर अपने व्यवहार में सनकी क्यों बन गये?

Ans. Sir Roger was a perfectly dressed, well-bred gentleman in his youth, very modern and fashionable. He also acted as a magistrate. Once he was written with love for a perverse Young

widow who was extremely beautiful. He was attracted by her beauty and after getting some initial response, he was crossed by her.

This development had a very adverse impact on his attitude to life. He became serious and, in fact, never dressed himself properly after the incident. Even after several decades the effect is still there. He continues to wear the same old fashioned suit although, as he himself tells in light moments, that has been in and out of fashion for twelve times.

He has refused to marry and remains a bachelor. This disappointment in love has made him eccentric in his behaviour. Yet he has recovered his jollity of nature quite a bit but could not regain his old natural self.

अपनी युवावस्था में सर रोजर सुन्दर ढंग से कपड़े पहनने वाले सुसभ्य भद्र पुरुष थे और बहुत आधुनिक एवं फैशनेबुल थे। वे मजिस्ट्रेट का भी कार्य करते थे। एक बार उन्हें एक बदमिजाज युवती विधवा से जो बहुत सुन्दर थी, प्यार हो गया। वे उसकी सुन्दरता के प्रति आकर्षित हो गये और प्रारम्भ में कुछ बढ़ावा पाने के बाद उसके द्वारा ठुकरा दिये गये।

इस घटना का उनके जीवन के प्रति दृष्टिकोण पर बहुत विपरीत प्रभाव पड़ा। वे बहुत गंभीर हो गये और वास्तव में इस घटना के पश्चात् उन्होंने कभी ठीक ढंग से कपड़े नहीं पहने। कई दशाब्दियाँ बीत जाने के पश्चात् भी यह प्रभाव अभी भी बना हुआ है। वे अभी भी पुराने फैशन के उसी सूट को पहनते हैं। यद्यपि जैसा कि वे कभी मजाक के क्षणों में स्वयं कहते हैं कि वह बारह बार फैशन में और फैशन से बाहर हो चुका है।

उन्होंने विवाह करने से इन्कार कर दिया और कुँवारे ही रहे। प्यार में इस निराशा ने उनके व्यवहार में उन्हें सनकी बना दिया फिर भी उन्होंने अपनी प्रकृति की मस्ती फिर से काफी हद तक प्राप्त कर ली लेकिन अपने पुराने व्यक्तित्व को फिर से प्राप्त नहीं कर सके।

Q.11. Give a brief summary of the 'Sir Roger at the Church'.

'Sir Roger at the Church' का संक्षिप्त सारांश लिखिए।

Ans. Sunday is always pleasant for Addison if it is spent in countryside. Sunday is an important day in countryside. People come to pray in church in their best garments. Whole village meet together with their pleasant faces. There they join together in adoration of the Supreme Being. Sunday cleans away the rust of the whole week. The parish politics is discussed in that place, either after sermon or before the bell rings.

Sir Roger is a man of religious feelings. He is landlord to the whole congregation and he feels his duty to keep the environment of the church pleasant by keeping them in good order. He never allows any person to sleep in it besides himself. By chance he goes into a short nap at sermon and then stands up and looks about, if he sees anybody else nodding, he wakes them himself or sends his servants to arise them. He himself sings psalms. He even counts the number of members and sees if any of his tenants is missing.

All people feel that Sir Roger bears a general good sense and worthiness of character. No one is allowed to displace till Sir Roger is gone out of the church.

एडीसन के लिए रविवार का दिन सदैव ही सुखदायक होता है यदि यह ग्रामीण अंचल में व्यतीत किया जाए। ग्रामीण अंचल में रविवार का विशेष महत्त्व होता है। अपनी विशिष्ट पोशाकों में लोग इस दिन गिरजाघर पहुँचते हैं। प्रसन्नचित्त चेहरों के साथ लोग आपस में मिलते हैं। वहाँ वे परमेश्वर के सम्मान में सामूहिक रूप से एकत्रित होते हैं। पूरे सप्ताह की थकावट को रविवार का दिन दूर कर देता है। गिरजाघर की राजनीति पर भी यहाँ पर चर्चा होती है, ऐसा धार्मिक प्रवचन के बाद होता है या फिर चर्च की घण्टी बजने से पहले।

सर रोजर धार्मिक प्रकृति का व्यक्ति है। वह पूरे समागम का मालिक है और गिरजाघर के वातावरण को सुखदायक बनाना वह अपना कर्तव्य समझता है, इसके लिए वह सब कुछ व्यवस्थित रूप में रखता है। वह किसी भी व्यक्ति को वहाँ पर

झपकी नहीं लेने देता है। इस नियम से वह स्वयं को अलग रखता है। यदि कभी वह प्रवचन के दौरान झपकी लेने लगता है तो वह उठकर देखता है कि कोई अन्य व्यक्ति तो ऐसा नहीं कर रहा है। ऐसा होने पर वह स्वयं ऐसे लोगों को जगा देता है अथवा अपने कर्मचारियों से ऐसा करने को कहता है। वह स्वयं भजन भी गाता है। वह सदस्यों की गिनती कर देखता है कि कोई उनमें से गायब तो नहीं है।

सभी लोग महसूस करते हैं कि सर रोजर की समझ अच्छी है और वह अच्छे चरित्र का प्रतिनिधित्व करता है। जब तक सर रोजर गिरजाघर से बाहर नहीं चला जाता है तब तक किसी को भी वहाँ से जाने की अनुमति नहीं होती है।

SECTION-C LONG ANSWER TYPE QUESTIONS

Q.1. Write a note on Bacon as an essayist.

एक निबन्धकार के रूप में बेकन पर एक लेख लिखिए।

Ans. Bacon's Concept of Essay : FRANCIS BACON is the father of English essay. He borrowed the concept of essay as a literary term from Montaigne, the French essayist in the sixteenth century. He gave his composition in prose the name 'Assai', which in French means an attempt. He treated essay as a medium of expression of the personal thought of the author. But Bacon changed the very nature of essay. He thought essay to be an objective form of literature where the author condenses all the ideas about the subject. The essay need not be a very cohesive and systematic piece. Therefore, he called his essays 'dispersed meditations' and 'disjointed fragments'. His essays appear to be crammed with ideas. It is said that he lighted his torch with the candle of others.

Still Bacon is the central figure among the prose writers of that period. It is strange because he was sceptical about the capability of English as a language. He thought that only Latin was the sure medium of expression.

His Style : Bacon is well-known in the field of literature for his style. It is believed that he had more than one style. Actually he changed his style according to the subject under discussion. Like all writers of the period he also punctuated his essays with Latin expressions which give him depth and elegance. But his sentences are not musical or graceful as is the case with others like Browne and Milton.

Bacon's style has been found as aphoristic and epigrammatic. It is very terse and each sentence is complete in itself. Any sentence can be taken out and the reader need not search for contexts anywhere. The ideas are so condensed in them selves that they can be easily expanded into paragraphs. Bacon is perhaps the briefest of English essayists.

In the essays of his earlier period Bacon rarely uses connectives. It appears that they are different pieces, independent of each other. In his famous essay **Of Truth** he says: "A mixture of lie doth ever add pleasure" and "Truth may perhaps come to the price of pearl". Because of this he called his essays 'disjointed fragments' and 'dispersed meditations'. But in his later essays he appears more cohesive and finished. The use of connectives can be seen. He says: "Virtues are like precious odours, most fragrant when they are burnt or crushed."

Subject of His Essays—The remarkable quality of Bacon is that he took his subjects from everyday life. Even the ordinary men and women felt interested in reading them. They are full of worldly wisdom with practical advice for life. But sometimes he appears too practical. In one of his essays he advocates deserting friendship if the friend serves no purpose. This makes

him look like too selfish . Because of this Macaulay called him 'The wisest, the brightest and the meanest of mankind.' But in the essay 'Of Truth' he says: "... clear and round dealing is the honour of man's nature....." In the same essay he establishes : "Certainly, it is heaven upon earth, to have a man's mind move in charity, rest in providence, and turn upon the poles of truth."

निबन्ध : अर्थ—फ्रांसिस बेकन अंग्रेजी निबन्ध के पिता माने जाते हैं। उन्होंने निबन्ध की साहित्यिक विधा के रूप की अवधारणा 16वीं शताब्दी में फ्रांसीसी निबन्धकार मॉन्टेन से ली।

उन्होंने गद्य में अपनी रचना को 'एसाई' नाम दिया था जिसका फ्रांसीसी भाषा में अर्थ 'एक प्रयास' होता है। उन्होंने निबन्ध को लेखक के व्यक्तिगत विचारों की अभिव्यक्ति माना था। किन्तु बेकन ने निबन्ध की प्रकृति को ही बदल दिया। उन्होंने निबन्ध को वस्तुपरक साहित्य का रूप माना जिसमें लेखक विषय पर समस्त विचारों को समाहित करता है। निबन्ध का कोहेसिव (सामंजस्यपूर्ण) एवं क्रमबद्ध होना आवश्यक नहीं है। इसीलिए उन्होंने अपने निबन्धों को 'बिखरे हुए विचार' एवं 'बिना जुड़े टुकड़े' कहा। उनके निबन्धों में विचार दूँसे गये प्रतीत होते हैं। उनके विषय में कहा जाता है कि उन्होंने दूसरों की मोमबत्तियों से अपनी मशाल प्रज्वलित की।

फिर भी उस काल के गद्य लेखकों में बेकन केन्द्रीय व्यक्ति हैं। यह बात अजीब लगती है क्योंकि बेकन अंग्रेजी की एक भाषा के रूप में सामर्थ्य के प्रति शंकालु थे। वे मानते थे कि केवल लैटिन ही विचारों की अभिव्यक्ति का निश्चित माध्यम थी।

शैली—बेकन साहित्यिक क्षेत्रों में अपनी शैली के लिए विख्यात हैं। यह माना जाता है कि उनकी एक से अधिक लेखन शैलियाँ थीं। वास्तव में विचाराधीन विषय के अनुसार वे अपनी शैली में परिवर्तन करते थे। उस काल के लेखकों की तरह उन्होंने भी अपने निबन्धों को लैटिन वाक्यों से भरा जिससे उन्हें शालीनता एवं गंभीरता प्राप्त होती है। लेकिन उनके वाक्यों में संगीत एवं गरिमा का अभाव है, जैसा कि ब्राउन एवं मिल्टन में पाया जाता है।

बेकन की शैली संक्षिप्तता और मुहावरों वाले गुणों के लिए जानी जाती है। वह बहुत संक्षिप्त है तथा प्रत्येक वाक्य अपने आप में पूर्ण है। किसी भी वाक्य को अलग निकाला जा सकता है और पाठक को उसके सन्दर्भ के लिए भटकना नहीं पड़ता। विचार इतने संग्रहित एवं समाहित हैं कि उन्हें आसानी से एक पूर्ण पैराग्राफ में विस्तारित किया जा सकता है।

संभवतः बेकन अंग्रेजी निबन्धकारों में सबसे अधिक संक्षिप्त लेखक हैं।

उनके प्रारंभिक काल के निबन्धों में बेकन मुश्किल से ही कनैक्टिक्स का प्रयोग करते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि वे भिन्न-भिन्न रचनाएँ हैं जो एक-दूसरे पर निर्भर नहीं करती। अपने प्रसिद्ध निबन्ध 'ऑफ ट्रुथ' में वे कहते हैं, "सत्य में झूठ का मिश्रण आनन्द में वृद्धि करता है" एवं "सत्य शायद मोती के मोल आता है।" इसी कारण उन्होंने अपने निबन्धों को 'बिना जुड़े टुकड़े' तथा 'बिखरे हुए विचार' कहा। किन्तु अपने बाद के निबन्धों में वे अधिक कोहेसिव एवं सम्पूर्ण प्रतीत होते हैं। इनमें कनैक्टिक्स का प्रयोग दिखायी पड़ता है। वे कहते हैं कि गुण कीमती सुगन्ध की तरह हैं जिन्हें जब पीसा या जलाया जाता है, सर्वाधिक सुगन्धमय नजर आते हैं।

विषय वस्तु—बेकन की महत्वपूर्ण विशेषता है कि उन्होंने अपने विषय रोजाना के जीवन से लिए। सामान्य स्त्री, पुरुष भी जिन्हें पढ़ने में रुचि लेते थे। उनमें सांसारिक ज्ञान भरा है, जिनमें जीवन के लिए व्यावहारिक सलाह दी गयी है लेकिन कभी-कभी वे अति व्यावहारिक प्रतीत होते हैं। अपने एक निबन्ध में वे मित्रता को त्यागने की सलाह देते हैं, यदि मित्र से अब कोई लाभ न मिल रहा हो। इससे वे अत्यधिक स्वार्थी नजर आते हैं। इसी कारण मैकाले ने उन्हें सबसे अधिक बुद्धिमान, विद्वत्तापूर्ण किन्तु मानवता का सबसे अधिक निम्न प्रवृत्ति का व्यक्ति कहा। किन्तु 'ऑफ ट्रुथ' नामक अपने निबन्ध में, वे कहते हैं "..... स्पष्ट एवं ईमानदार व्यवहार मनुष्य की प्रकृति का उत्कर्ष है।" इसी निबन्ध में वे कहते हैं, "वास्तव में यह धरती पर स्वर्ग के समान है कि मनुष्य का मन दया में प्रवृत्त हो, भाग्य में रहे एवं सत्य से धुत्र की ओर मुड़े।"

Q.2. Narrate the story of 'Of Studies' in your own words.

कहानी 'Of Studies' का अपने शब्दों में सारांश लिखिए।

Ans. Francis Bacon, in his classic essay 'Of Studies', explains how and why study or knowledge is important to we human beings. The great essayist explains the importance of study and opens the essay with the what use is study. He says that study can be for pleasure, ornament or to cultivate ability, and also tells how study can be used in each capacity. He says that the learned men can deliver the best arrangements and advice. A scholar can only laugh when it is said that it is laziness to spend time studying, or using it for ornament, or to make all decisions as per the learning. He says that our abilities need pruning and that can be done by study. He distinguishes to say that crafty men contemn studies, simple men admire them and wise men make the best use of them. The author says that studying cultivates the ability to weigh and consider. He gives the master stroke when he says: 'Some books are to be tasted, others to be swallowed, and some few to be chewed and digested...', and he goes on to explain what he means by this statement. He says that some books are not worthy to be read by oneself, and a deputy can be asked to summarise it for you to know what it deals with. Speaking about the importance of reading, he again makes a quotable quote : "Reading maketh a full man; conference a ready man; and writing an exact man." He humorously says that a person who writes little ought to have a great memory, a person who confers little ought to have a great wit, and a person who reads little, he will have to be cunning to show his wisdom which in fact he does not possess. He also tells how different subjects are useful to man. He stresses that studies pass on into the character. He says that any anomaly in learning can be made up with studies. A person can boost up his mental ability through study. He also explains how different defects of the mind can be overcome through special subjects.

फ्रांसिस बेकन, अपने शास्त्रीय निबंध 'Of Studies' में व्याख्या करते हैं कि अध्ययन या ज्ञान किस प्रकार और क्यों हम मनुष्यों के लिए महत्वपूर्ण है। वह महान निबंधकार अध्ययन के महत्व की व्याख्या करता है और निबंध का आरंभ यह कहकर आरंभ करता है कि अध्ययन का क्या महत्व है। वह कहता है कि अध्ययन मनोरंजन के लिए, सजावट या दिखावट के लिए या योग्यता/क्षमता पैदा करने के लिए हो सकता है। वह यह भी बताता है कि अध्ययन का प्रयोग इन विभिन्न प्रयोजनों के लिए किस प्रकार किया जा सकता है। वह कहता है कि ज्ञानी मनुष्य सर्वोत्तम व्यवस्था और सलाह प्रदान कर सकते हैं। कोई विद्वान केवल इस बात पर हँस सकता है कि अध्ययन करते समय बिताना आलस्य है, या इसका प्रयोग दिखावट के लिए होता है, या सभी निर्णय केवल इसी पर निर्भर रहते हुए किए जा सकते हैं। वह कहता है कि हमारी योग्यताओं को काट-छाँटने की आवश्यकता होती है और यह कार्य अध्ययन के द्वारा संपन्न किया जा सकता है। वह अंतर करते हुए कहता है कि चालाक व्यक्ति अध्ययन का निरादर करते हैं, साधारण व्यक्ति इसकी प्रशंसा करते हैं और बुद्धिमान व्यक्ति इसका सर्वोत्तम प्रयोग करते हैं। लेखक कहता है कि अध्ययन से मूल्यांकन करने और विचार करने की योग्यता सीखी जाती है। वह अपना सर्वोत्तम कथन कहता है कि कुछ पुस्तकें केवल स्वाद लेने के लिए होती हैं, अन्य पुस्तकें निगली जाने के लिए होती हैं और कुछ थोड़ी-सी चबाने और पचाने के लिए होती हैं। इसके बाद वह व्याख्या करता है कि वह इसे किस अर्थ में कह रहा है। वह कहता है कि कुछ पुस्तकें स्वयं पढ़ने के उपयुक्त नहीं होतीं, और किसी सहायक को उनका सारांश बनाने के लिए कहा जाता सकता है कि वह किस बारे में है। पढ़ने के महत्व के बारे में कहते हुए लेखक एक ओर उद्धरणीय बात कहता है कि पाठन से एक व्यक्ति पूर्ण बनता है, वार्ता करने से वह तैयार व्यक्ति बनता है और लेखन से वह निपुण व्यक्ति बनता है। वह मजाक में कहता है कि कोई व्यक्ति जो कम लिखता है उसकी स्मृति बड़ी होनी चाहिए, एक व्यक्ति जो कम वार्ता करता है उसकी मानसिक क्षमता अधिक होनी चाहिए, और एक व्यक्ति जो कम पढ़ता है, उसे चालाक होना चाहिए क्योंकि उसे बुद्धिमानी दिखानी होती है जो उसके पास नहीं होती। वह यह भी कहता है कि किस प्रकार विभिन्न विषय व्यक्ति के लिए उपयोगी होते हैं। वह जोर देकर कहता है कि अध्ययन चरित्र का भाग बन जाता है। वह

कहता है कि अध्ययन में किसी कमी को भी अध्ययन से ही पाटा जा सकता है। कोई व्यक्ति अपनी मानसिक योग्यता को अध्ययन के माध्यम से बढ़ा सकता है। वह यह भी कहता है कि मस्तिष्क के विभिन्न दोषों को किस प्रकार विशेष विषयों के अध्ययन से नियंत्रित किया जा सकता है।

Q.3. Narrate the story 'Dream Childeren' in your own words.

कहानी 'Dream Childeren' का सारांश अपने शब्दों में कीजिए।

Ans. Charles Lamb is known as the prince of personal essays which are replete with his own thoughts, recollection, dreams, likes, dislikes, joys and sorrows. Full of autobiographical elements, his essay 'Dream Children' opens with the description to his young children Alice and John the tales of his childhood when he used to live with his great-grandmother, Field. The essay goes on to describe how important is childhood and dear ones who one meets at that early time of life. Adopting a nostalgic tone, the essay provides a peep into the author's childhood and goes on to narrate to the dream children the humorous details of his time spent in his great grandmother's house; the love between two brothers, Charles and John, their frequent wanderings and mischief in the grand house and their memories of the orchid trees and the fish pond. The tone of the essay shifts from humorous to tragic when it goes on to describe the death of the author's beloved brother and great-grandmother whom he loses at an early age of his life. The essay is full of the essayist's unfulfilled longings and desires; this element is evident in the essay when the author narrates to the children the events and incidents from his past life. The essay highlights the themes of loss and regret in the essayist's life. He goes on to reflect nostalgically on his childhood and regrets the loss of his dear ones. He also feels depressed on the loss of his unrequited love Alice and regrets not marrying her. The essayist moans that the happy and joyful days of his childhood have slipped past in a blink of an eye. He even places John Lamb or James Elia on a high place though he does not deserve it because of his meanness and selfishness. During his adulthood, he takes his loneliness to the heart desperately yearning for the return of the old happier days of his life. The climax is reached when the essay makes the readers aware of the reality that the children listening to Lamb's stories are nothing but a figment of his imagination and a dream of a sleeping man. And also that the essayist tells that he married Ann Simmons, in fact, she did not marry him, rather she married Bartrum. This essay recollects the old happy childhood memories and moans the lonely adult age, and in this way, depicts aptly the transient nature of life where nothing can sustain forever.

चार्ल्स लैम्ब को व्यक्तिगत निबंधों का राजकुमार कहा जाता है जो उसके अपने विचारों, यादों, सपनों, पसंद और नापसंद, आनंद और दुःखों से भरे हुए हैं। आत्मकथात्मक तत्वों से भरपूर, उनका निबंध Dream Children उनके छोटे बच्चों एलीस और जॉन को कहानी के वर्णन से आरंभ होता है जब वह अपनी परदादी फील्ड के पास रहा करते थे। निबंध आगे वर्णन करता है कि बचपन और प्रियजन कितने महत्वपूर्ण हैं जो जीवन के पूर्वकाल में मिलते हैं। स्मृति में डूबे इस लयबद्ध निबंध में लेखक के बचपन की एक झाँकी देखने को मिलती है और यह निबंध आगे उन हास्यात्मक विवरण के समय का वर्णन करता है जो उसने अपनी परदादी के घर में बिताया था। इसमें उस बड़े घर में दोनों भाइयों चार्ल्स और जॉन, उनका अक्सर घूमना और शैतानी करने की यादों के साथ-साथ फल के बाग और मछली के तालाब की यादें भी जुड़ी हुई हैं। निबंध की लय हास्यात्मक से दुःखद उस समय हो उठती है जब यह लेखक के प्रिय भाई और परदादी की मृत्यु के बारे में बताता है, वे उसके जीवन के आरंभिक भाग में उससे बिछुड़ जाते हैं। निबंध निबंधकार के अपूर्ण इच्छाओं से भरपूर है, यह तत्व उस समय स्पष्ट हो उठता है जब वह बच्चों को अपने बीते जीवन की उन घटनाओं को बताता है। निबंध में निबंधकार का अपने जीवन में प्रियजनों से बिछुड़ना और उसका दुःख उच्च बिंदु है। वह अपने बचपन की यादों के बारे में विचार करता है और अपने प्रियजनों की हानि का अफसोस करता है। वह अपने एक-तरफा प्यार एलीस की मृत्यु के बारे में भी

वेदना प्रकट करता है कि उसने उससे विवाह नहीं किया। निबंधकार दुःख मनाता है कि उसके बचपन के खुशनुमा और आनंददायी दिन बहुत जल्दी से बीत गए। वह जॉन लैम्ब या जेम्स एलिया को भी एक उच्च स्थान पर रखता है हालाँकि वह इसके योग्य नहीं क्योंकि वह नीच और स्वार्थी था। अपनी वयस्कता में लेखक अपने अकेलेपन को निराश होकर दिल पर ले लेता है और आशा करता है कि वे पुराने दिन उसके जीवन में एक बार फिर लौट आएँगे। इस कहानी का उच्चतम बिंदु उस समय आता है जब निबंध पाठकों को उस वास्तविकता से अवगत कराता है कि लैम्ब की कहानी को सुन रहे बच्चे कुछ भी नहीं हैं और कल्पना का अंश मात्र हैं और वे एक सोते हुए व्यक्ति के स्वप्न मात्र हैं। साथ ही, निबंधकर बताता है कि उसने एन सिमंस से विवाह किया, लेकिन वास्तव में, उसने उससे विवाह नहीं किया, बल्कि उसने बार्टूम से विवाह किया। निबंध पुरानी बचपन की खुशनुमा यादों को याद करता है और अकेलेपन से ग्रसित वयस्क आयु का अफसोस करता है, और इस प्रकार, यह उचित प्रकार से जीवन की बदलती प्रकृति का वर्णन करता है जिसमें कुछ भी सदा एक समान नहीं रहता।

Q.4. Give the stylistic qualities of Charles Lamb.

Charles Lamb की शैलीगत विशेषताएँ बताइए।

Ans. Charles Lamb is an eminent prose writer. He is called prince among the English essayists. He does not have any specific style in prose writing. He had a great love for ancient literature and old-fashioned things. Secondly, he was extremely sad in his personal life. These two qualities enabled Lamb to use many styles. No two of his essays are similar in the style.

Quaintness : There is no doubt that the most remarkable feature of Lamb's style lies in his quaintness and in the use of archaic words. He had a great study of the ancient authors. Moreover he was a pictorial essayist. He did not imitate any other essayist, but it is his own style. He had a love for ancient references and proverbs. In the essay 'Dream Children' he narrates the ruined beauty of the great house and reaches in the history of Roman Emperors.

Poetic Essayist : In the narration of his essays Lamb touches every aspect of heart and emotion. All of a sudden he turns to be sensitive. More often he is serious and finds a tale in the simplicity of things like Wordsworth. His use of figures of speech in the essays compels us to think him as a poetic essayist. Somewhere his use of ancient references is beyond the reach of common readers. His Similes, Metaphors and quotations are far fetched. He adds romanticism to the facts and soon he roars high in the sky. 'Dream Children' is the best example of it.

Personal Essayist : Lamb's essays are autobiographical in both the manners. First, there is no essay which does not expose any fact about Lamb's life. Secondly, his essays throw a light of his own mood and temperament. His personal life was full of griefs. So every essay by him is full of seriousness. Every common reader may understand the facts of Lamb's life presented in his essays. Though he was lifelong bachelor, he depicts his longings to be a father and husband. Imagination, grief, pictorial qualities and his emotions reveal his personal life.

Humour and Pathos : An author is the reflection of his own brain and heart. Lamb had a lot of griefs in his life and basically, he was a man of hypochondriac temperament. In the same way he wrote no essay without pathos. Somewhere this pathos is mild and somewhere it reaches to the extremity. Though his essays have humour too, yet it seems that he is trying to laugh to mock the sadness of his life. These two contradictory qualities have been mixed with a perfect skill. He makes the readers smile but at last we sympathize with him. He smiles to deride his misfortunes.

Language : Lamb writes very simple sentences when he is didactic and serious in the narration of facts like Bacon. He uses a lot of dashes and leaves the sentences incomplete when

he is sensitive and imaginative. His essays are full of rich Similes, Metaphors and Oxymorons. He breaks big sentences using colons and semicolons. Brackets, too, have been used to a friendly conversation with the readers. His language is serious and humorous. Lamb has chosen different styles for different purposes. It is useless to convey to a single idea of the impression of Lamb's style.

Charles Lamb एक विख्यात गद्य लेखक है। अंग्रेजी निबन्धकारों में उसे एक राजकुमार समझा जाता है। गद्य लेखन में Charles Lamb की कोई विशेष शैली है ऐसा उसके विषय में नहीं कहा जा सकता। उसे पुराने ढंग की वस्तुओं और प्राचीन साहित्य से विशेष प्रेम था। दूसरे, वह अपने व्यक्तिगत जीवन में अत्यन्त दुखी था। इन दोनों गुणों ने लैम्ब को अनेक शैली का प्रयोग करने के योग्य बना दिया। उसके कोई से दो निबन्ध शैली में समान नहीं हैं।

विलक्षणता—इसमें कोई सन्देह नहीं है कि लैम्ब की शैली का सबसे प्रमुख गुण उसकी विलक्षणता और प्राचीन शब्दों के प्रयोग में है। उसने प्राचीन लेखकों का काफी अध्ययन किया था। दूसरे लैम्ब एक चित्रांकक लेखक था। उसने किसी निबन्धकार की शैली की नकल नहीं की बल्कि यह उसकी अपनी शैली है। उसे प्राचीन सन्दर्भों और कहावतों से लगाव था। निबन्ध 'Dream Children' में वह विशाल घर की बर्बाद सुन्दरता की व्याख्या करता है और रोमन शासकों के इतिहास में पहुँच जाता है।

काव्यात्मक निबन्धकार—अपने निबन्धों के वर्णन में लैम्ब हृदय और भावना के प्रत्येक कोने को छू लेता है। अचानक वह भावुक हो जाता है। ज्यादातर वह गम्भीर होकर Wordsworth की तरह वस्तुओं की सादगी में भी एक कहानी ढूँढ लेता है। निबन्धों में उसका अलंकारों का प्रयोग हमें उसे एक काव्यात्मक निबन्धकार सोचने को बाध्य करता है। कहीं पर तो उसका प्राचीन संदर्भों का प्रयोग साधारण पाठक की पहुँच से बाहर होता है। उसके रूपक, उपमा और विरोधाभास दूरगामी होते हैं। वह तथ्यों में कल्पना जोड़ देता है और जल्दी ही आसमान में ऊँची उड़ान भरने लगता है। इसका सर्वोत्तम उदाहरण 'Dream Children' है।

व्यक्तिगत निबन्धकार—लैम्ब के निबन्ध दोनों तरह से आत्मकथात्मक हैं। प्रथम, ऐसा कोई निबन्ध नहीं है जो उसके व्यक्तिगत जीवन के बारे में कोई तथ्य उजागर ना करता हो। दूसरे उसके निबन्ध उसकी अपनी मनोदशा और प्रकृति पर प्रकाश डालते हैं। उसका व्यक्तिगत जीवन दुखों से भरा हुआ है। लैम्ब के निबन्धों में प्रस्तुत उसके जीवन के तथ्यों को प्रत्येक साधारण पाठक समझ सकता है। हालांकि वह जीवन भर कुंआरा रहा फिर भी वह पिता और पति बनने की अपनी इच्छाओं को चित्रित करता है। कल्पना, दुःख चित्रांकक गुण और उसकी भावनों उसके व्यक्तिगत जीवन को उजागर करती हैं।

हास्य और करुणा—एक लेखक अपनी बुद्धि और हृदय का प्रतिबिम्ब होता है। लैम्ब के जीवन में अनेक दुख थे और मूलरूप से वह पित्तोन्मादी प्रकृति का व्यक्ति था। ठीक उसी तरह उसने कोई भी निबन्ध बिना करुणा के नहीं लिखा। कहीं पर यह करुणा हल्की है और कहीं पर यह अन्तिम छोर तक पहुँच जाती है। हालांकि उसके निबन्धों में हास्य भी है, तो भी ऐसा प्रतीत होता है कि वह अपने दुखों का उपहास करने के लिए हँसने की कोशिश कर रहा है। ये दोनों विरोधी गुण पूर्ण कौशल के साथ मिश्रित किये गये हैं। वह पाठकों को हँसाता है परन्तु अन्त में हमारी सहानुभूति उसी के साथ होती है। वह अपने दर्भाग्य का उपहास करने के लिए मुस्कुराता है।

भाषा—लैम्ब जब बैकन की तरह शिक्षाप्रद और गम्भीर तथ्यों का वर्णन करता है तो वह साधारण वाक्य लिखता है। जब वह भावुक ओर कल्पनाशील होता है तो कोमे का प्रयोग करता है और वाक्यों को अधूरा छोड़ देता है। उसके निबन्ध बुद्धिमत्तापूर्ण उपमा, रूपक और विरोधाभास अलंकारों से भरे हुए होते हैं। वह colon और semicolons का प्रयोग करके लम्बे वाक्यों को तोड़ देता है। पाठकों से मित्रवत् बात करने हेतु वह कोष्ठकों का भी प्रयोग करता है। उसकी भाषा गम्भीर व हास्यात्मक है। लैम्ब भिन्न उद्देश्यों के लिए भिन्न शैलियों का प्रयोग किया है Lamb की शैली के प्रभाव के विषय में एक विचार को मानना व्यर्थ होगा।

Q.5. Give a brief estimate of the character of Sir Roger on the basis of the essay 'Sir Roger at the Church'.

'Sir Roger at the Church' नामक निबन्ध के आधार पर सर रोजर के चरित्र का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

Ans. Introduction : Sir Roger De Coverley, the baronet of Worcestershire, is a loving creation of the authors of 'The Coverley Papers'. He is a man of whimsical nature, which is the result of his being ill-treated at the hands of a 'perverse widow' in his youth. Ever since he could not be his natural self again and carried with him a strangeness of behaviour. Though whimsical, he has succeeded in keeping his essential gentleness and goodness of nature. Though he sounds humorous on many occasions, he does not fail in making the necessary impact to improve the conduct of those whom he thinks are not in the right. Steele conceived him simply in this light, a tool whose humorous behaviour makes others conscious of the follies of their behaviour and spurs them to improve themselves. In this way Sir Roger emerges a character with infinite goodwill at heart, though eccentric in behaviour.

His Daily Routine : The present essay depicts Sir Roger behaving in his usual whimsical self but that does not make a negative impact on his men. He is in the Church on a Sunday as he is a regular person in the matter of religion. Addison regards Sunday the best human tradition. It is a type of cleanser and freshener of man's life because it removes the sort of rust that a man collects living his worldly life from Monday to Saturday. He feels that absence of Sunday would surely have rendered man barbaric and savage. Sir Roger makes full use of his authority to see that his parishioners behave properly and remain good citizens.

His Eccentric Behaviour : Sir Roger appears in the Church with his usual whimsical and humorous self. He cannot allow anyone to take a short nap during the sermon except himself. If by chance he takes a nap, he sees around if anyone else is doing so, after recovering from it. If he finds anyone doing it, he sends his servant to wake him, which is a type of mild rebuke. Then he keeps reciting a verse from the prayer, half a minute after others have finished it. He is also in the habit of saying 'Amen' three or four times if the matter in devotion pleases him. This humorous and ironical behaviour of Sir Roger is an interesting feature of his personality.

Rash and Authoritarian : Sir Roger is quite rash and authoritarian in showing his authority as the knight of the parish. He rebuked one John Mathew openly in the middle of a service because the young man was kicking his heels to divert his boredom. He is quite idle a man and Sir Roger's rebuke had a sobering effect on him and a reminder to the rest to behave properly.

Good Churchman : The knight is a good Churchman and attends the Church regularly. He encourages the youngmen by rewarding them. He has also got the inner walls of the Church painted and gave a new pulpit cloth and got it railed. He also appointed a devotional singer who roams the village singing hymns and refreshing their faith. At the same time he is severe in the case of absentees and enquires about them who are not able to attend the church due to illness or such reasons. This has a good effect on the people and they come to Church regularly.

A Devoted Fellow : Sir Roger appears to be a fellow devoted to the welfare of his people. When the sermon is over, he is the first to go out. He passes through his people who keep bowing to him in two rows. He keeps enquiring about the wife of one, mother of another who are missing. It is his indirect way of reprimanding those who are absent without proper reason.

प्रस्तावना—सर रोजर डी कावरली, जो बोरसेस्टरशायर के बेरोनेट (जमींदार) हैं, 'दी कावरली पेपर्स' के लेखक की प्यारी रचना है। वे सनकी स्वभाव के व्यक्ति हैं जो जवानी के दिनों में एवं बिगडैल विधवा द्वारा उनके साथ किये गये दुर्व्यवहार का परिणाम है। तभी से वे कभी भी सामान्य नहीं हो पाये और उनके व्यवहार में एक अजीब सनक उत्पन्न हो गयी। यद्यपि वे सनकी हैं किन्तु उनके व्यवहार की मूल भलमनसाहत एवं भलाई बनी रही। यद्यपि वे कई अवसरों पर सनकी लगते हैं किन्तु वे उन लोगों पर, जिन्हें वे समझते हैं कि ठीक आचरण नहीं करते हैं, आवश्यक छाप छोड़कर उनके आचरण को सुधारने में सफल रहते हैं। स्टील ने उनकी कल्पना केवल इसी रूप में की थी जो एक सनकी व्यवहार वाला माध्यम था जो दूसरों को उनकी भूलों का अहसास करा दे तथा अपने में सुधार करने के लिए प्रेरित करे। इस प्रकार सर रोजर ऐसे व्यक्ति के रूप में दिखाई पड़ते हैं जो भले ही व्यवहार में सनकी थे किन्तु जिसके हृदय में अनन्त सद्भावना है।

उनके दैनिक कार्यकलाप—यह निबन्ध सर रोजर को उनके सामान्य सनकी रूप में प्रस्तुत करता है लेकिन इसका उनकी प्रजा पर नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है। वह रविवार को चर्च में है, क्योंकि वे धर्म के मामलों में नियमित व्यक्ति हैं। एडीसन रविवार को सर्वश्रेष्ठ माननीय परम्परा मानते हैं। वे इसे एक प्रकार का सफाई और ताजगी वाला दिन मानते हैं क्योंकि यह जीवन में आये एक प्रकार के जंग या गंदगी के, जो आदमी अपने दैनिक सांसारिक जीवन में सोमवार से शनिवार तक लगा लेता है, दूर करता है। उनका मानना है कि रविवार यदि न होता तो मनुष्य जंगली और बर्बर हो जाता। सर रोजर अपने पूरे अधिकारों का प्रयोग करते हैं ताकि उनके इलाके के लोग उचित व्यवहार करें और अच्छे नागरिक बने रहें।

सनकी व्यवहार—सर रोजर चर्च में अपने सामान्य सनकी व्यवहार में दिखायी पड़ते हैं। वे अपने अतिरिक्त किसी को भी उपदेश के मध्य झपकी लेने की अनुमति नहीं देते हैं। यदि संयोग वश वे झपकी ले भी लें तो आँख खुलते ही वे अपने चारों ओर निगाह डालते हैं कि कोई अन्य झपकी तो नहीं ले रहा है। यदि वे देखते हैं कि कोई अन्य व्यक्ति ऐसा कर रहा है तो अपने नौकर को भेजकर उसे जगा देते हैं। यह एक प्रकार की हल्की फटकार होता है। वे प्रार्थना की किसी पंक्ति के आधा मिनट बाद भी बोलते रहते हैं जबकि अन्य लोग उसे पूरा कर चुके होते हैं। यदि प्रार्थना का कोई भाग उन्हें अधिक पसंद आ जाता है तो वे तीन चार बार 'आमीन' बोलते हैं। यह सनकी एवं अजीब व्यवहार उनके चरित्र का मजेदार पक्ष है।

एक तानाशाह—सर रोजर अपने उस पेरिश के जमींदार के अधिकार प्रदर्शित करने में काफी जल्दबाज एवं तानाशाही हैं। उन्होंने प्रार्थना के मध्य में जॉन मैथ्यू नामक युवक को खुलेआम फटकार लगायी क्योंकि वह अपनी बोरियत दूर करने के लिए ऐडियो से खट-खट कर रहा था, वह बिल्कुल निठल्ला व्यक्ति है और सर रोजर की फटकार का उस पर अच्छा प्रभाव पड़ा। साथ ही यह बाकी लोगों को भी याद दिलाना था कि ठीक से व्यवहार करें।

धार्मिक व्यक्ति—'नाईट' अच्छे धार्मिक व्यक्ति हैं और नियमित रूप से चर्च जाते हैं। वे नवयुवकों को पुरस्कृत कर उन्हें प्रोत्साहित करते हैं। उन्होंने चर्च की भीतरी दीवारों पर नया पेन्ट कराया है तथा मंच के लिए नया कपड़ा देकर उसकी रेलिंग लगवाई है। उन्होंने एक धार्मिक गायक को नियुक्त किया है जो गाँव में प्रार्थना गीत गाते हुए और चर्च में लोगों की आस्था बनाते हुए घूमता रहता है। साथ ही वे अनुपस्थित लोगों के विषय में बहुत कठोर हैं और जो लोग बीमारी अथवा अन्य कारणों से चर्च नहीं आ पाते हैं उनकी पूछताछ करते रहते हैं। इसका लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ता है और वे नियमित रूप से चर्च आते हैं।

समर्पित व्यक्ति—सर रोजर अपने लोगों की भलाई के लिए समर्पित व्यक्ति हैं। जब प्रार्थना समाप्त हो जाती है तो वे सबसे पहले बाहर निकलते हैं। वे दो पंक्तियों में खड़े अपने लोगों के बीच से निकलते हैं जो उनके सामने सिर झुकाये रहते हैं। वे किसी की पत्नी, किसी की माँ, जो अनुपस्थित होते हैं, के विषय में पूछताछ करते रहते हैं। यह उन लोगों को डाँटने का अपरोक्ष ढंग है जो बिना किसी उचित कारण के अनुपस्थित रहते हैं।

Q.6. Discuss Joseph Addison as an essayist.

(2021)

एक निबंधकार के रूप में जोसफ एडीसन की विवेचना कीजिए।

Ans. Joseph Addison is one of the greatest English essayists. His literary reputation rests upon the essays from the Spectator and the Tatler. His essays earned great name and fame for him.

Addison was a great social critic and reformer. His essays are faithful reflection of the life of the time. In 'The Spectator' he appears as a consummate painter of contemporary life and manners. He aimed at social reformation. As a social reformer, he attacked the coarser vices of his time. He directed his essays against gambling, drinking, indecency, cruelty and other evil practices.

Addison wrote nearly four hundred essays which deal with a wide diversity of subject. They deal with typical subjects like fashion, drunkenness, Jealousy, Prayer etc. Politics and religion are also touched. He was the reconciler of hostile parties and the founder of public opinion. He was the enemy of all-excess. He always advocated moderation and tolerance. He exposed the ridiculous principle of the comedy of manners and laughed at the follies and foibles of ladies.

Humour and Satire : Addison is a humorist of high rank. The humour reflected in his writing is of a rare order. This humour is humane, serene and impartial. It is mildly ironical, tolerant and urbane. He knew how to ridicule anything without abusing it. Addison is a gentle and good-natured satirist. His satire is not a weapon to cause injury but a means to cleanse the society of its follies. He disdains personal satire. In him satire and humour run so close that they almost blend with each other.

Characterization : Addison's art of characterization is conditioned by his wit and humour. Sir Roger is Addison's best attempt at character writing. The characters of the Spectator represent a particular class of the society. Sir Roger de Coverley, Sir Andrew Freeport, Will Honeycomb and the Spectator are immortal creations. These characters are not wooden and lifeless but real. In these character sketches we have the seed of the novel. Thus the spectator has been rightly called the forerunner of English novel. Thus Addison's contribution to the development of novel is remarkable.

Style : Addison is one of greatest masters of English prose. His prose style is very attractive. It has been praised as middle style. He perfected English prose as an instrument for the expression of social thought. He took features of his style from almost all his predecessors. His prose is the prose of a journalist. It is suitable for miscellaneous purpose - for newspaper and political work, for history and for biography. In short, his style suits the subject matter.

Words and Sentences : Addison chose the words carefully for their meaning and music. He does not use Latin words and loosely constructed sentences. His sentences are compact, simple and short.

Flexibility, Clarity and Lucidity : Addison's prose has the essence of flexibility, neatness, clarity, lucidity and precision. He employed his style according to the need of the subject matter. As a prose writer he can be compared with Lamb and Hazlitt. According to Haugh Walker "Much had been done by Dryden, much was done by Steele, much too by Defoe and Swift. But no one did more than Addison."

In Short, Addison's contribution to English literature is remarkable. He is a great scholar and master of style. He is a consummate painter of life and manners.

जोसफ एडीसन महानतम अंग्रेजी निबन्धकारों में से एक हैं। उनकी साहित्यिक प्रतिष्ठा Spectator व Tattler में उनके निबन्धों के कारण है। इन निबन्धों से उन्हें बहुत प्रसिद्धि मिली।

एडीसन एक महान सामाजिक आलोचक व सुधारक थे। उनके निबन्ध उनके समय के जीवन के सच्चे प्रतिबिम्ब हैं। 'The Spectator' में वह उस समय के जीवन के बेहतरीन चित्रकार हैं। उनका लक्ष्य समाज सुधार था। समाज सुधारक के रूप

में उन्होंने अपने समय की कुरीतियों पर हल्ला बोला। उन्हें अपने निबन्धों को जुआ, नशाखोरी, अश्लीलता, क्रूरता आदि पर केन्द्रित किया।

एडीसन ने विभिन्न विषयों पर लगभग चार सौ निबन्ध लिखे। ये विषय फैशन, नशाखोरी, ईर्ष्या, पूजा, राजनीति व धर्म आदि हैं। वे परस्पर द्वेषपूर्ण पार्टियों को मिलाने वाले व जनता के मत बनाने वाले थे। उन्होंने Comedy of Errors के हास्यास्पद सिद्धान्त को उजागर किया तथा सभ्य महिलाओं की गलतियों व कमियों पर ठहाके लगाये।

हास्य व व्यंग्य—एडीसन उच्च स्तर के हास्य रस के लेखक हैं। उनके लेखन में हास्य दुर्लभ प्रकार का है। यह हास्य दयालु, शान्त व निष्पक्ष है। यह हल्का-सा व्यंग्यात्मक, सहिष्णु व शिष्ट है। उन्हें किसी को, अपशब्द कहे बिना, उपहास करना आता था। एडीसन एक सभ्य व अच्छे व्यवहार वाले व्यंग्यकार हैं। उनका व्यंग्य किसी को चोट पहुँचाने का हथियार नहीं बल्कि समाज को उसकी कुरीतियों से मुक्ति का एक साधन है।

निरूपण—एडीसन के निरूपण को उनका हास्य व बुद्धि आकार देते हैं। चरित्र लेखन में सर रोजर एडीसन का सर्वश्रेष्ठ प्रयास है। Spectator के चरित्र समाज के एक विशेष वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। Sir Roger de Coverley, Sir Andrew Freeport, Will Honeycomb और Spectator अमर चरित्र हैं। यह सब चरित्र भावशून्य और निष्प्राण नहीं परन्तु वास्तविक हैं। इन चरित्रों में हमें उपन्यास का बीज मिलता है। अतः Spectator को अंग्रेजी उपन्यास का अग्रदूत सत्य ही कहा गया है। इस प्रकार उपन्यास के विकास में एडीसन का योगदान उल्लेखनीय है।

शैली—एडीसन अंग्रेजी गद्य के महानतम विशेषज्ञों में से एक है। उनकी गद्य शैली बहुत आकर्षक है। इसकी Middle Style कहकर प्रशंसा की गई है। उन्होंने अंग्रेजी गद्य को सामाजिक विचारों की अभिव्यक्ति के उपकरण के रूप में निपुण बनाया। उन्होंने अपनी शैली की विशेषताएँ अपने पूर्ववर्तियों से लीं। उनका गद्य पत्रकार का गद्य है जो विभिन्न प्रकार के कार्य; जैसे—समाचारपत्र और राजनीतिक कार्य, इतिहास और जीवन चरित्र के लिए उपयुक्त है। उनकी शैली विषय के लिए उपयुक्त है।

शब्द एवं वाक्य—एडीसन शब्दों का उनके अर्थ व संगीत के लिए सावधानीपूर्वक चुनाव करते थे। वह Latin शब्दों व ढीले वाक्यों का उपयोग नहीं करते थे। उनके वाक्य छोटे, सामान्य व कसे होते हैं।

लचीलापन, स्पष्टता व सुबोधगम्यता—एडीसन के गद्य में लचीलापन, सफाई, सुबोधगम्यता आदि का निचोड़ है। उन्होंने अपनी शैली का चुनाव व उपयोग विषय के अनुसार किया। एक गद्य लेखक के रूप में उनकी तुलना लैम्ब और हैज्लिट से की जा सकती है। ह्यू वॉकर के अनुसार, “ड्रायडेन ने बहुत कुछ किया, स्टील ने बहुत किया, डैफो व स्विफ्ट ने बहुत अधिक किया। किन्तु किसी ने भी एडीसन से अधिक न किया।”

अतः यह कहा जा सकता है कि अंग्रेजी साहित्य में एडीसन का योगदान महत्वपूर्ण है। वह शैली के महान विद्वान हैं। वह जीवन और उसके तरीकों के महान चित्रकार हैं।

□

UNIT-VII

Prose

1. Professions for Women (Virginia Woolf)
2. Patriotism Beyond Politics and Religion (A.P.J. Abdul Kalam)
3. The Conquest of the world by Indian Thought (Swami Vivekanand)

Explanations with Reference to The Context

[1]

Writing was a reputable and harmless occupation. The family peace was not broken by the scratching of a pen. No demand was made upon the family purse. For ten and sixpence one can buy paper enough to write all the plays of Shakespeare-if one has a mind that way. Pianos and models, Paris, Vienna and Berlin, masters and mistresses, are not needed by a writer. The cheapness of writing paper is, of course, the reason why women have succeeded as writers before they have succeeded in the other professions.

Reference to the Context : These lines have been taken from Virginia Woolf's popular essay 'Profession of Women'. In these lines Virginia Woolf tells how she did her 'best to kill (the Angel in the House)'. The Angel represents what Woolf aspires to be in order to fulfill what others would expect to do and achieve. In the speech 'Profession of Women' Virginia Woolf's main point was to bring awareness to the phantoms and abstracts women face in their job. She said that 'the family place was not broken by the scratching of a pen'. No demand was made upon the family purse.

Explanation : Here, Virginia Woolf says that being a dangerous and impertinent, as being a doctor, or a lawyer can be at least as long as said women remains silent and keeps from harshly criticizing the work of her male colleagues: kindness, tenderness and a sort of devotion are necessary if a woman intends to keep working in a field of wholly dominated by a patriarchal heirarchy. So we can say that Virginia Woolf insists writing was a prestigious and harmless profession. This is an under statement because as shown later in his essay. Writing can be harmful business.

संदर्भ और प्रसंग—ये पंक्तियाँ वर्जीनिया वुल्फ के लोकप्रिय निबंध 'Profession of Women' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में वर्जीनिया वुल्फ बताती हैं कि कैसे उन्होंने 'मारने के लिए सबसे अच्छा (घर में एंजिल)' किया। एंजिल प्रतिनिधित्व करता है कि वुल्फ क्या बनना चाहता है ताकि वह पूरा कर सके जो दूसरे करने और हासिल करने की उम्मीद करेगा। 'महिलाओं का पेशा' भाषण में वर्जीनिया वुल्फ का मुख्य बिन्दु प्रेत के प्रति जागरूकता लाना और महिलाओं को उनके काम में बाधा डालना था। उन्होंने कहा कि 'कलम की खरोंच से पारिवारिक जगह नहीं टूटी'। परिवार के पर्स पर कोई माँग नहीं की गई थी।

व्याख्या—यहाँ, वर्जीनिया वुल्फ का कहना है कि एक डॉक्टर, या एक वकील होने के नाते एक खतरनाक और जिद्दी होना कम-से-कम तब तक हो सकता है जब तक कहा गया है कि महिलाएँ चुप रहती हैं और अपने पुरुष सहयोगियों के काम की कठोर आलोचना करने से बचती हैं—दया, कोमलता और यदि एक महिला पितृसत्तात्मक उत्तराधिकार के पूर्ण प्रभुत्व वाले क्षेत्र में काम करना चाहती है तो भक्ति की आवश्यकता होती है। तो हम कह सकते हैं कि वर्जीनिया वुल्फ का कहना है कि लेखन एक प्रतिष्ठित और हानिरहित पेशा था। यह एक अंडर स्टेटमेंट है क्योंकि जैसा कि बाद में उनके निबंध में दिखाया गया है। लेखन हानिकारक व्यवसाय हो सकता है।

[2]

But to show you how little I deserve to be called a professional woman, how little I know of the struggles and difficulties of such lives, I have to admit that instead of spending that sum upon bread and butter, rent, shoes and stockings, or butcher's bills, I went out and bought a cat—a beautiful cat, a Persian cat, which very soon involved me in bitter disputes with my neighbours.

Reference to the Context : These lines have been taken from Virginia Woolf's popular essay 'Profession of Women'. In these lines Virginia Woolf tells how she did her 'best to kill (the Angel in the House)'. In these lines Virginia Woolf does not believe she is good enough and it affects her audience of women greatly because she reflects on the self-doubt they have all had once.

Explanation : Here, Virginia Woolf tells about how little she deserves to be called a professional woman, how little she knows about the difficulties of such lives. She did not use her money on bread and butter, rent, shoes and stockings etc., but instead bought a beautiful Persian cat which very soon involved Virginia Woolf in arguments with her neighbours.

संदर्भ और प्रसंग—ये पंक्तियाँ वर्जीनिया वुल्फ के लोकप्रिय निबंध 'Profession of Women' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में वर्जीनिया वुल्फ बताती है कि कैसे उन्होंने 'मारने के लिए सबसे अच्छा (घर में एन्जल)' किया। इन पंक्तियों में वर्जीनिया वुल्फ को विश्वास नहीं है कि वह काफी अच्छी है और इसका महिलाओं के दर्शकों पर बहुत प्रभाव पड़ता है क्योंकि वह उस आत्म-सन्देह को दर्शाती है जो उन सभी में एक समय में था।

व्याख्या—यहाँ, वर्जीनिया वुल्फ बताती है कि वह एक पेशेवर महिला कहलाने की कितनी कम योग्य है, वह ऐसे जीवन की कठिनाइयों के बारे में कितना कम जानती है। उसने अपने पैसे का उपयोग रोटी और मक्खन, किराए, जूते और मोजा आदि पर नहीं किया, बल्कि इसके बजाय एक सुंदर फारसी कैन खरीदा, जिसमें बहुत जल्द वर्जीनिया वुल्फ अपने पड़ोसियों के साथ बहस में शामिल हो गई।

[3]

She was intensely sympathetic. She was immensely charming. She was utterly unselfish. She excelled in the difficult arts of family life. She sacrificed herself daily. If there was chicken, she took the leg; if there was a draught she sat in it—in short she was so constituted that she never had a mind or a wish of her own, but preferred to sympathize always with the minds and wishes of others. Above all—I need not say it—she was pure. Her purity was supposed to be her chief beauty—her blushes, her great grace.

Reference to the Context : These lines have been taken from Virginia Woolf's popular essay 'Profession of Women'. In these lines Virginia Woolf tells how she did her 'best to kill (the Angel in the House)'. The Angel represents what Woolf aspires to be in order to fulfill what others would expect to do and achieve.

Explanation : Here, Virginia Woolf says that while working on her writing she has to face phantom. She mentions what people expect from women. Virginia Woolf says that she was

intensely sympathetic, immensely charming, and utterly unselfish and excelled in difficult arts of family. She sacrificed herself daily as she had no mind or wish of her own, but preferred to sympathize with the minds and wishes of others. But most important Virginia Woolf said that she was pure. That was her description of the phantom, 'Angel in the House'. Her purity was supposed to be her chief beauty. Therefore, we can say that the woman is in the society only as goddess of decency. All that is expected of him is that should simply be devoted to others and spend his life in the service of his loved ones.

संदर्भ और प्रसंग—ये पंक्तियाँ वर्जीनिया वुल्फ के लोकप्रिय निबंध 'Profession of Women' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में वर्जीनिया वुल्फ बताती हैं कि कैसे उन्होंने 'मारने के लिए सबसे अच्छा (घर में एन्जिल)' किया। एंजेल प्रतिनिधित्व करता है कि वुल्फ क्या बनना चाहता है ताकि वह पूरा कर सके जो दूसरे करने और हासिल करने की उम्मीद करेंगे।

व्याख्या—इधर, वर्जीनिया वुल्फ का कहना है कि अपने लेखन पर काम करते हुए उसे प्रेत का सामना करना पड़ता है। वह बताती हैं कि लोग महिलाओं से क्या उम्मीद करते हैं वर्जीनिया वुल्फ का कहना है कि वह बेहद सहानुभूतिपूर्ण, बेहद आकर्षक, और पूरी तरह निःस्वार्थ और परिवार की कठिन कलाओं में उत्कृष्ट थीं। वह हर दिन खुद को बलिदान करती थी क्योंकि उसके पास अपना कोई मन या इच्छा नहीं थी, लेकिन वह दूसरों के मन और इच्छाओं के साथ सहानुभूति रखना पसंद करती थी। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण वर्जीनिया वुल्फ ने कहा कि वह शुद्ध थी। वह प्रेत, 'एंजेल इन द हाउस' का उनका विवरण था। उसकी पवित्रता को उसका मुख्य सौंदर्य माना जाता था। अतः हम कह सकते हैं कि नारी समाज में शालीनता की देवी के रूप में ही है। उससे केवल यही अपेक्षा की जाती है कि वह बस दूसरों के प्रति समर्पित रहे और अपने प्रियजनों की सेवा में अपना जीवन व्यतीत करे।

[4]

Thus, whenever I felt the shadow of her wing or the radiance of her halo upon my page, I took up the inkpot and flung it at her. She died hard. Her fictitious nature was of great assistance to her. It is far harder to kill a phantom than a reality. She was always creeping back when I thought I had despatched her Though I flatter myself that I killed her in the end, the struggle was severe; it took much time that had better have been spent upon learning Greek grammar; or in roaming the world in search of adventures.

Reference to the Context : These lines have been taken from Virginia Woolf's popular essay 'Profession of Women'. In these lines Virginia Woolf tells how she did her 'best to kill (the Angel in the House)'. The Angel represents what Woolf aspires to be in order to fulfill what others would expect to do and achieve.

Explanation : Here, Virginia Woolf says that whenever I felt the shadow of his feather on my page, I picked up a pot of ink and through on her. Her real nature helped him a lot. Killing a copy is in reality far more difficult than it seems. When I thought I had sent her although I flatter myself that I killed him in the end, the struggle was serious. In the end we can say that the ghost was killed, it was called by many names by the author. For examples; angel, devduta, society etc., mainly the society which does not allow him to work freely imposes many restrictions on him. It has been shown in this that the writer has killed the society of ghost ceased to exist. Although she had to face a lot of trouble but she did not give up and she took a sign of relief only after ending that Angel.

संदर्भ और प्रसंग—ये पंक्तियाँ वर्जीनिया वुल्फ के लोकप्रिय निबंध 'Profession of Women' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में वर्जीनिया वुल्फ बताती हैं कि कैसे उन्होंने (घर में एन्जिल) 'मारने के लिए सबसे अच्छा' किया। एंजेल

प्रतिनिधित्व, जो वुल्फ जो बनना चाहती हैं, का प्रतिनिधित्व करता है ताकि जो दूसरे इनसे उम्मीद करते हैं, वे उसे प्राप्त कर सकें।

व्याख्या—यहाँ, वर्जीनिया वुल्फ का कहना है कि जब भी मुझे अपने पृष्ठ पर उनके पंख की छाया महसूस हुई, मैंने स्याही की एक बोतल उठाई और उस पर फेंकी। उसके वास्तविक स्वभाव ने उसकी बहुत मदद की। एक प्रति को मारना वास्तव में जितना लगता है उससे कहीं अधिक कठिन है। जब मैंने सोचा कि मैंने उसे भेज दिया है, वह रेंगती वापस आ जाती। हालाँकि मैं खुद को बहकाती हूँ कि मैंने उसे अंत में मार डाला, संघर्ष गम्भीर था। अंत में हम कह सकते हैं कि भूत मारा गया, इसे लेखक ने कई नामों से पुकारा। उदाहरण के लिए; एंजेल, देवदूत, समाज आदि, मुख्य रूप से वह समाज जो उसे स्वतंत्र रूप से काम करने की अनुमति नहीं देता है, उस पर कई प्रतिबंध लगाता है। इसमें दिखाया गया है कि लेखक ने भूतों के समाज का वध कर दिया है। हालाँकि उन्हें काफी परेशानी का सामना करना पड़ा लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और उस फरिश्ते के खत्म करने के बाद ही उन्होंने राहत की साँस ली।

[5]

Ah, but what is "herself"? I mean, what is a woman? I assure you, I do not know. I do not believe that you know. I do not believe that anybody can know until she has expressed herself in all the arts and professions open to human skill.

Reference to the Context : These lines have been taken from Virginia Woolf's popular essay 'Profession of Women'. In these lines Virginia Woolf tells how she did her 'best to kill (the Angel in the House)'. The Angel represents what Woolf aspires to be in order to fulfill what others would expect to do and achieve.

Explanation : The Angel was dead but then what remained? Virginia Woolf says that it was a simple and common object a young woman in a bedroom with an inkpot. After Virginia Woolf got rid of her falsehood, only that young woman was left by herself. But Virginia Woolf states that the answer to what is that woman is not known to her. She does not believe anybody can know until she has expressed herself in all the arts and professions open to human skill. This was one of the reasons, why Virginia Woolf agreed for her speech so that the ones inspired by her speech can find the answer to 'what is a woman?' Virginia Woolf, in these lines, told that it is not easy for them to recognize women. It is possible to get to know them until she presents her own art.

संदर्भ और प्रसंग—ये पंक्तियाँ वर्जीनिया वुल्फ के लोकप्रिय निबंध 'Profession of Women' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में वर्जीनिया वुल्फ बताती हैं कि कैसे उन्होंने 'मारने के लिए सबसे अच्छा (घर में एंजेल)' किया। एंजेल प्रतिनिधित्व करता है कि वुल्फ क्या बनना चाहता है ताकि वह पूरा कर सके जो दूसरे करने और हासिल करने की उम्मीद करेंगे।

व्याख्या—देवदूत मर गया था लेकिन फिर क्या रह गया? वर्जीनिया वुल्फ का कहना है कि यह एक साधारण और सामान्य वस्तु थी जो एक युवा महिला एक शयनकक्ष में एक इंकपॉट के साथ थी। वर्जीनिया वुल्फ के अपने झूठ से छुटकारा पाने के बाद, केवल उस युवती को खुद ही महसूस हुआ। लेकिन वर्जीनिया वुल्फ का कहना है कि वह महिला क्या है इसका जवाब उसे नहीं पता। वह विश्वास नहीं करती कि कोई भी जान सकता है जब तक कि वह मानव हत्या के लिए खुली सभी कलाओं और व्यवसायों में खुद को व्यक्त नहीं कर लेती। यह एक कारण था कि वर्जीनिया वुल्फ ने अपने भाषण के लिए सहमति क्यों दी ताकि उनके भाषण से प्रेरित लोगों को 'एक महिला क्या है' का जवाब मिल सके। इन पंक्तियों में वर्जीनिया वुल्फ ने बताया कि उनके लिए महिलाओं को पहचानना आसान नहीं है। उन्हें तब तक जानना सम्भव है जब तक वह अपनी कला प्रस्तुत नहीं करती।

[6]

For a people and a nation to rise to the highest, they must have a common memory of great heroes and exploits, of great adventures and triumphs in the past. If the British rose to great heights it is because they had great heroes to admire, men like Lord Nelson, say, or the Duke of Wellington. Japan represents a fine example of national pride.

The Japanese are proud of being one people, having one culture, and because of that they could transform a humiliating military defeat into a triumphant economic victory.

Reference to the Context : These lines have been taken from A.P.J. Abdul Kalam's famous lecture *Patriotism Beyond Politics and Religion (from Our Ignited Minds)*. He served as the 11th President of India from 2002 to 2007. Dr. Kalam says that a nation should be above everything in life.

Explanation : In these lines, the writer says that all people should respect and love their country. He tells that for people and the nation to rise to the highest. The people must have a common memory of great national heroes. They should exploit of great adventures and triumphs of the past. He further says that if the British rose to great heights it is because they had great heroes to admire. They had great men like Lord Nelson, say, or the Duke of Wellington. The author calls Japan a great country. Japan represents a fine example of national pride. The Japanese are proud of being one people, having one culture and civilization. And because of that the Japanese could transform a humiliating military defeat into a triumphant economic victory. In this way they could brought a great name and fame for their country.

संदर्भ और प्रसंग—ये पंक्तियाँ ए०पी०जे० अब्दुल कलाम के प्रसिद्ध व्याख्यान *Patriotism Beyond Politics and Religion (from Our Ignited Minds)* से ली गई हैं। उन्होंने 2002 से 2007 तक भारत के 11वें राष्ट्रपति के रूप में कार्य किया। डॉ० कलाम कहते हैं कि एक राष्ट्र को जीवन में सब कुछ से ऊपर होना चाहिए।

व्याख्या—इन पंक्तियों में लेखक कहता है कि सभी लोगों को अपने देश का सम्मान और प्रेम करना चाहिए। वह बताता है कि लोगों और राष्ट्र के लिए उच्चतम स्तर पर उठना है। लोगों के पास महान राष्ट्रीय नायकों की एक सम्मान स्मृति होनी चाहिए। उन्हें अतीत के महान कारनामों और विजयों का लाभ उठाना चाहिए। वह आगे कहते हैं कि अगर अंग्रेज महान ऊँचाइयों तक पहुँचे तो इसका कारण यह था कि उनके पास प्रशंसा करने के लिए महान नायक थे। उनके पास लॉर्ड नेल्सन, या ड्यूक ऑफ वेलिंगटन जैसे महान व्यक्ति थे। लेखक जापान को एक महान देश कहते हैं। जापान राष्ट्रीय गौरव का एक बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत करता है। जापानियों को एक व्यक्ति होने, एक संस्कृति और सभ्यता होने पर गर्व है, और इस वजह से जापानी एक अपमानजनक सैन्य हार को विजयी आर्थिक जीत में बदल सकते थे। इस तरह वे अपने देश के लिए एक बड़ा नाम और प्रसिद्धि ला सकते थे।

[7]

In India, the core culture goes beyond time. It precedes the arrival of Islam; it precedes the arrival of Christianity. The early Christians, like the Syrian Christians of Kerala, have retained their Indianness with admirable determination. Are they less Christian because their married women wear the mangalsutra or their menfolk wear the dhoti in the Kerala style? Kerala' Chief Minister, A. K. Antony, is not a heretic because he and his people are part of Kerala's culture. Being a Christian does not make him an alien. On the contrary,

it gives an added dimension to his Indianness. A. R. Rahman may be a Muslim but his voice echoes in the soul of all Indians, of whatever faith, when he sings Vande Matram.

Reference to the Context : These lines have been taken from A.P.J. Abdul Kalam's famous lecture *Patriotism Beyond Politics and Religion (from Our Ignited Minds)*. He served as the 11th President of India from 2002 to 2007. Dr. Kalam says that a nation should be above everything in life.

Explanation : According to Dr. Kalam, India is a great country. In India, the core culture goes beyond time. India's great culture precedes the arrival of Islam and it precedes the arrival of Christianity too. The early Christians, like the Syrian Christians of Kerala, have retained their Indianness with admirable determination. Are they less Christian because their married women wear the mangalsutra or their menfolk wear the dhoti in the Kerala style? He further says that Kerala's Chief Minister, A. K. Antony, is not a heretic because he and his people are part of Kerala's culture. Being a Christian does not make him an alien. On the contrary, it gives an added dimension to his Indianness. The writer says that A R Rahman may be a muslim but his voice echoes in the soul of all Indians, of whatever faith, when he sings Vande Matram. This is the great culture of India.

संदर्भ और प्रसंग—ये पंक्तियाँ ए०पी०जे० अब्दुल कलाम के प्रसिद्ध व्याख्यान *Patriotism Beyond Politics and Religion (from Our Ignited Minds)* से ली गई हैं। उन्होंने 2002 से 2007 तक भारत के 11वें राष्ट्रपति के रूप में कार्य किया। डॉ० कलाम कहते हैं कि एक राष्ट्र को जीवन में सब कुछ से ऊपर होना चाहिए।

व्याख्या—डॉ० कलाम के अनुसार भारत एक महान देश है। भारत में, मूल संस्कृति समय से परे जाती है। भारत की महान संस्कृति इस्लाम के आगमन से पहले की है और यह ईसाई धर्म के आगमन से भी पहले ही है। केरल के सीरियाई ईसाइयों की तरह प्रारम्भिक ईसाइयों ने भी सराहनीय दृढ़ संकल्प के साथ अपनी भारतीयता बरकरार रखी है। क्या वे कम ईसाई हैं क्योंकि उनकी विवाहित महिलाएँ मंगलसूत्र पहनती हैं या उनके पुरुष केरल शैली में धोती पहनते हैं? वह आगे कहते हैं कि केरल के मुख्यमंत्री, ए०के० एंटनी, विधर्मी नहीं हैं क्योंकि वे और उनके लोग केरल की संस्कृति का हिस्सा हैं। ईसाई होने से वह पराया नहीं हो जाता। इसके विपरीत, यह उनकी भारतीयता को एक अतिरिक्त आयाम देता है। लेखक का कहना है कि ए०आर० रहमान भले ही मुस्लिम हों, लेकिन जब वे वंदे मातरम गाते हैं, तो उनकी आवाज सभी भारतीयों की आत्मा में गूँजती है, चाहे वह किसी भी धर्म का हो। यह भारत की महान संस्कृति है।

[8]

The greatest danger to our sense of unity and our sense of purpose comes from those ideologists who seek to divide the people. The Indian Constitution bestows on all the citizens total equality under its protective umbrella. What is now cause for concern is the trend towards putting religious form over religious sentiments. Why can't we develop a cultural-not religious-context for our heritage that serves to make Indians of us all? The time has come for us to stop differentiating. What we need today is a vision for the nation which can bring unity.

Reference to the Context : These lines have been taken from A.P.J. Abdul Kalam's famous lecture *Patriotism Beyond Politics and Religion (from Our Ignited Minds)*. He served as the 11th President of India from 2002 to 2007. Dr. Kalam says that a nation should be above everything in life.

Explanation : The writer says that the greatest danger to our sense of unity and our sense of purpose comes from those ideologists who seek to divide the people by their thoughts. The Indian Constitution is the largest constitution in the world. The Indian Constitution bestows on all the citizens total equality under its protective umbrella. The writer further says that why can't we develop a cultural-not religious-context for our heritage that serves to make Indians of us all? The time has come for us to stop differentiating. The writer says that what we need today is a vision for the nation which can bring unity. The writer says this regarding his country India.

संदर्भ और प्रसंग—ये पंक्तियाँ ए०पी०जे० अब्दुल कलाम के प्रसिद्ध व्याख्यान *Patriotism Beyond Politics and Religion (from Our Ignited Minds)* से ली गई हैं। उन्होंने 2002 से 2007 तक भारत के 11वें राष्ट्रपति के रूप में कार्य किया। डॉ० कलाम कहते हैं कि एक राष्ट्र को जीवन में सब कुछ से ऊपर होना चाहिए।

व्याख्या—लेखक का कहना है कि हमारी एकता की भावना और हमारे उद्देश्य की भावना के लिए सबसे बड़ा खतरा उन विचारकों से आता है जो लोगों को अपने विचारों से विभाजित करना चाहते हैं। भारतीय संविधान दुनिया का सबसे बड़ा संविधान है। भारतीय संविधान अपने सुरक्षात्मक छत्र के नीचे सभी नागरिकों को पूर्ण समानता प्रदान करता है। लेखक आगे कहता है कि हम अपनी विरासत के लिए एक सांस्कृतिक-धार्मिक नहीं-संदर्भ विकसित क्यों नहीं कर सकते हैं जो हम सभी को भारतीय बनाने का काम करता है? हमारे लिए अंतर करना बंद करने का समय आ गया है। लेखक का कहना है कि आज हमें जिस चीज की जरूरत है, वह है देश के लिए एक ऐसा विजन जो एकता ला सके। यह लेखक अपने देश भारत के संबंध में कहता है।

[9]

I am proud to belong to a religion which has taught the world both tolerance and universal acceptance. We believe not only in universal toleration, but we accept all religions as true. I am proud to belong to a nation which has sheltered the persecuted and the refugees of all religions and all nations of the earth. I am proud to tell you that we have gathered in our bosom the purest remnant of the Israelites, who came to Southern India and took refuge with us in the very year in which their holy temple was shattered to pieces by Roman tyranny. I am proud to belong to the religion which has sheltered and is still fostering the remnant of the grand Zoroastrian nation.

Reference to the Context : These lines have been taken from Swami Vivekananda's popular speech *'The Conquest of the World by Indian Thought'*. The speech was delivered by him on September 11, 1893. In these lines Swami Vivekananda says that we cannot believe in God unless we believe in yourself and we can go to find God if we cannot see him for heart and every living being.

Explanation : Swami Vivekananda starts by expressing his gratitude for the warm and cordial welcome that he received. Swami Vivekananda is proud of his religion which has taught the world both tolerance and universal acceptance and also accepts all religions as true. He talks about how proud he is about his nation that has sheltered and persecuted and the refugees of all religions and all nations of the earth. He states that they have gathered in their bosom the purest remnant of the Israelites, who came to Southern India and took refuge with them in the very year in which their holy temple was shattered to pieces by Roman tyranny. He was proud to be the part of Hinduism which has sheltered and is still fostering the remnant of the grand Zoroastrian nation.

संदर्भ और प्रसंग—ये पंक्तियाँ स्वामी विवेकानंद के लोकप्रिय *'The Conquest of the World by Indian Thought'* से ली गई हैं। 11 सितम्बर, 1893 को उनके द्वारा भाषण दिया गया था। इन पंक्तियों में स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि हम भगवान में विश्वास नहीं कर सकते जब तक कि हम खुद पर विश्वास नहीं करते हैं और हम भगवान को खोजने जा सकते हैं यदि हम उन्हें दिल और हर जीवित प्राणी के लिए नहीं देख सकते हैं।

व्याख्या—स्वामी विवेकानंद ने जो गर्मजोशी और सौहार्दपूर्ण स्वागत किया, उसके लिए उनका आभार व्यक्त करते हुए शुरुआत करते हैं। स्वामी विवेकानंद को अपने धर्म पर गर्व है जिसने दुनिया को सहिष्णुता और सार्वभौमिक स्वीकृति दोनों सिखाया है और सभी धर्मों को सत्य के रूप में स्वीकार किया है। वह इस बारे में बात करता है कि उसे अपने राष्ट्र के बारे में कितना गर्व है जिसने आश्रय और सताया है और पृथ्वी के सभी धार्मिक और सभी राष्ट्रों के शरणार्थी हैं। वह कहता है कि उन्होंने इसरालाइट्स के सबसे शुद्ध अवशेष को अपनी छाती में इकट्ठा किया है, जो दक्षिणी भारत में आए थे और उसी वर्ष उनके साथ शरण ली थी, जिसमें रोमन अत्याचार द्वारा उनके पवित्र मंदिर को टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया था। उन्हें हिन्दू धर्म का हिस्सा होने पर गर्व था, जिसने आश्रय दिया है और अभी भी भव्य पारसी राष्ट्र के अवशेष को बढ़ावा दे रहा है।

[10]

As the different streams having their sources in different paths which men take through different tendencies, various though they appear, crooked or straight, all lead to Thee.

Reference to the Context : These lines have been taken from Swami Vivekananda's popular speech *'The Conquest of the World by Indian Thought'*. The speech was delivered by him on September 11, 1893. In these lines Swami Vivekananda says that we cannot believe in God unless we believe in yourself and we can go to find God if we cannot see him for heart and every living being.

Explanation : Here, Swami Vivekananda says either that whichever path you take, all paths connect you (God). When you meet, you are at the same cross roads, on which the way many new rivers pass through anywhere meet in the vast ocean itself. Swami Vivekananda says that he is proud to belong to that religion. God gave shelter to refugees from all the religions and nations of the earth. Therefore we can say that Swami Vivekananda compared all religions with different sources of water, which eventually end up in the ocean. Swami Vivekananda stresses the need to stop bigotry. He went on to mention that all religion in like the 'droplets of water' having different sources and finally mingle with the sea. He mentioned that we should stop extreme belief that may lead to unreasonable behaviour.

संदर्भ और प्रसंग—ये पंक्तियाँ स्वामी विवेकानंद के लोकप्रिय *'The Conquest of the World by Indian Thought'* से ली गई हैं। 11 सितम्बर, 1893 को उनके द्वारा भाषण दिया गया था। इन पंक्तियों में स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि हम भगवान में विश्वास नहीं कर सकते जब तक कि हम खुद पर विश्वास नहीं करते हैं और हम भगवान को खोजने जा सकते हैं यदि हम उन्हें दिल और हर जीवित प्राणी के लिए नहीं देख सकते हैं।

व्याख्या—यहाँ, स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि या तो आप जो भी रास्ता अपनाते हैं, सभी रास्ते आपको (भगवान) जोड़ते हैं। जब आप मिलते हैं, तो आप उसी चौराहे पर होते हैं, जिस रास्ते पर कई नई नदियाँ कहीं से भी गुजरती हैं, विशाल महासागर में ही मिलती हैं। स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि उन्हें उस धर्म से संबंधित होने पर गर्व है। भगवान ने पृथ्वी के सभी धर्मों और राष्ट्रों के शरणार्थियों को आश्रय दिया। इसलिए हम कह सकते हैं कि स्वामी विवेकानंद ने सभी धर्मों की तुलना पानी के विभिन्न स्रोतों से की, जो अंततः समुद्र में समा जाते हैं। स्वामी विवेकानंद ने कट्टरता को रोकने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने उल्लेख किया कि सभी धर्म 'पानी की बूँदों' की तरह अलग-अलग स्रोत हैं और अंत में

समुद्र में मिल जाते हैं। उन्होंने उल्लेख किया कि हमें अत्यधिक विश्वास को रोकना चाहिए जिससे अनुचित व्यवहार हो सकता है।

[11]

The present convention, which is one of the most august assemblies ever held, is in itself a vindication, a declaration to the world of the wonderful doctrine preached in the Gita: "Whosoever comes to Me, through whatsoever form, I reach him; all men are struggling through paths which in the end lead to me."

Reference to the Context : These lines have been taken from Swami Vivekananda's popular speech *'The Conquest of the World by Indian Thought'*. The speech was delivered by him in Chicago in the World Parliament of Religions on September 11, 1893. In these lines Swami Vivekananda says that we cannot believe in God unless we believe in yourself and we cannot go to find God if we cannot see him in or heart and every living being.

Explanation : Swami Vivekananda says that the present convention, which is one of the most August assemblies ever held in itself a vindication to the world of the wonderful doctrine preached in the Gita. 'Whoever comes to, through what ever from, I reach him, all men are struggling through paths which in the end lead to me.' Means to say that this makes the principle of Geeta worthwhile. It is said Geeta whoseever comes to me in whatever from it may be if he is missing me or is called me, than his call reaches me. Hearing that I reach the all the people are wandering on the same paths that they have passed in the end lead in the right directions.

संदर्भ और प्रसंग—ये पंक्तियाँ स्वामी विवेकानंद के लोकप्रिय भाषण *'The Conquest of the World by Indian Thought'* से ली गई हैं। 11 सितम्बर, 1893 को शिकागो में विश्व धर्म संसद में उनके द्वारा भाषण दिया गया था। इन पंक्तियों में स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि हम ईश्वर में तब तक विश्वास नहीं कर सकते जब तक कि हम अपने आप में विश्वास नहीं करते हैं और हम ईश्वर को नहीं खोज सकते यदि हम इसे अपने हृदय और हर जीवित प्राणी में नहीं देख सकते।

व्याख्या—स्वामी विवेकानंद का कहना है कि वर्तमान सम्मेलन, जो अब तक की सबसे बढ़िया सभाओं में से एक है और अपने आप में गीता में प्रचारित अद्भुत सिद्धान्त की दुनिया के लिए एक उदाहरण है। 'जो कोई भी आता है, जिस किसी से भी, मैं उस तक पहुँचता हूँ, सभी आदमी उन रास्तों से संघर्ष कर रहे हैं जो अंत में मुझ तक आते हैं।' कहने का मतलब यह है कि यह गीता के सिद्धान्त को सार्थक बनाता है। गीता में कहा गया है जो भी मेरे पास आता है हो सकता है कि वह मुझे याद कर रहा है या मुझे बुलाया गया है, उसकी पुकार मुझ तक पहुँचती है। यह सुनकर कि मैं पहुँचता हूँ सभी लोग उन्हीं रास्तों पर भटक रहे हैं, जिनसे वे अंत में गुजरे हैं, सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

[12]

Sectarianism, bigotry, and its horrible descendant, fanaticism, have long possessed this beautiful earth. They have filled the earth with violence, drenched it often and often with human blood, destroyed civilization and sent whole nations to despair. Had it not been for these horrible demons, human society would be far more advanced than it is now?

Reference to the Context : These lines have been taken from Swami Vivekananda's popular speech *'The Conquest of the World by Indian Thought'*. The speech was delivered by him on September 11, 1893. In these lines Swami Vivekananda says that we cannot believe in God unless we believe in yourself and we can go to find God if we can not see him for heart and every living being.

Explanation : Swami Vivekananda says that communalism in our society is full of bigotry. Terrorism is carried out under the guise of religions. People are found fighting amongst themselves. All these religions find the progress of the country. Bloodshed spreads people consider each other as their enemy. This leads to the destruction of the society and these evils drown the whole society in despair. Now the time has come to eliminate these demons so that the national progresses and equality remains on the earth. Its meaning is that it is necessary to destroy the feeling of communalism, casteism, high and low etc. Only then the nation will develop.

संदर्भ और प्रसंग—ये पंक्तियाँ स्वामी विवेकानंद के लोकप्रिय *“The Conquest of the World by Indian Thought”* से ली गई हैं। 11 सितम्बर, 1893 को उनके द्वारा भाषण दिया गया था। इन पंक्तियों में स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि हम भगवान में विश्वास नहीं कर सकते जब तक कि हम खुद पर विश्वास नहीं करते हैं और हम भगवान को खोजने जा सकते हैं यदि हम उन्हें दिल और हर जीवित प्राणी के लिए नहीं देख सकते हैं।

व्याख्या—स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि हमारी समाज में सांप्रदायिकता कट्टरता से भरी है। धर्म की आड़ में आतंकवाद को अंजाम दिया जाता है। लोग आपस में लड़ते नजर आ रहे हैं। इन सभी धर्मों से देश की प्रगति का पता चलता है। रक्तपात फैलता है लोग एक-दूसरे को अपना दुश्मन समझते हैं। इससे समाज का विनाश होता है और ये बुराइयाँ पूरे समाज को निराशा में डुबो देती हैं। अब समय आ गया है कि इन डेमों को खत्म किया जाए ताकि देश की तरक्की हो और धरती पर समानता बनी रहे। इसका अर्थ यह है कि सांप्रदायिकता, जातिवाद, ऊँच-नीच आदि की भावना को नष्ट करना आवश्यक है। तभी राष्ट्र का विकास होगा।

SECTION-A VERY SHORT ANSWER TYPE QUESTIONS

Q.1. Grive a brief introduction of Virginia Woolf.

वर्जीनिया वुल्फ का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

Ans. Virginia Woolf (1882-1941) was a prominent novelist and critic of twentieth century. She was the most distinguished woman writer of her generation. She was the youngest daughter of Sir Leslie Stephen and his second wife Julia Duckworth. She received her early education at home at Hyde Park Gate in London. She organised literary group ‘The Bloomsbury Group’. In 1905, she began to write for the ‘Times Literary Supplement’.

वर्जीनिया वुल्फ (1882-1941) बीसवीं शताब्दी की एक प्रख्यात उपन्यासकार और समीक्षक थीं। अपनी पीढ़ी की वह सर्वाधिक स्फूर्त लेखिका थीं। सर लेसली स्टीफेन और उनकी दूसरी पत्नी जूलिया डकवर्थ की वह सबसे छोटी पुत्री थीं। उन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर रहते हुए हाइड पार्क गेट लन्दन से ही प्राप्त की। उन्होंने साहित्यिक समूह ‘The Bloomsbury Group’ का गठन किया। वर्ष 1905 से उन्होंने ‘Times Literary Supplement’ के लिए लेख लिखने शुरू किए।

Q.2. Woolf characterises the body to be delicate. Why?

वुल्फ शरीर या काया को सुकोमल बताती हैं। क्यों?

Ans. Woolf characterises the body to be delicate because women have bodies that seem very fragile and weak. She does so to illustrate that society views women as figures who need to be maintained by men, and that they are not capable to take care of themselves.

वुल्फ शरीर या काया को सुकोमल बताती हैं क्योंकि नारी काया नाजुक व कमजोर होती है। वुल्फ ऐसा इसलिए कहती हैं क्योंकि समाज नारी को कमजोर मानता है जिसको पुरुष के सहारे की आवश्यकता रहती है और स्वयं वे अपनी देखभाल करने में असमर्थ होती हैं।

Q.3. Do you agree that Virginia Woolf is a great writer, not a great novelist? Discuss.

क्या आप सहमत हैं कि वर्जीनिया वुल्फ एक अद्वितीय लेखिका हैं न कि महान उपन्यासकार? विवेचना कीजिए।

Ans. Virginia Woolf made the most exciting use of the stream of consciousness technique. She was the most distinguished woman writer of the first half of twentieth century. All Virginia Woolf's characters are aspects of herself. She is a great writer, but not a great novelist. She has ability to put her characters into interesting situations but she is incapable of telling a story.

वर्जीनिया वुल्फ ने 'Stream of Consciousness' तकनीक का सर्वाधिक सफल प्रयोग किया है। बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में वह एक विशिष्ट लेखिका थीं। वर्जीनिया वुल्फ के सभी पात्रों में उसकी अपनी सोच की झलक दिखायी देती है। वह एक अद्वितीयक लेखिका हैं लेकिन वह अच्छी उपन्यासकार नहीं हैं। अपने पात्रों को मनोरंजक स्थिति प्रदान करने में उन्हें महारत हासिल है लेकिन वह कहानी कहने में अक्षम हो जाती हैं।

Q.4. It is considered that symbolism is a part of Virginia Woolf's technique. Discuss.

यह माना जाता है कि प्रतीकात्मकता, वर्जीनिया वुल्फ की तकनीक का एक भाग है। विवेचना कीजिए।

Ans. Virginia Woolf uses symbolism as a part of her technique to present the inner world of perception and she endeavoured to relate it to a deeper philosophic purpose. She finds a symbol to depict the reality which is never experienced. She assembles a strange pattern of symbolic ideas.

वर्जीनिया वुल्फ द्वारा प्रतीकात्मकता को एक तकनीक के रूप में प्रयोग किया गया है ताकि मन के भीतर के संसार को दर्शाया जा सके और इसके द्वारा वह गहन दार्शनिक उद्देश्य की पूर्ति करती है। प्रतीक के माध्यम से वह सत्य का उद्बोधन करती है जिसकी कभी भी अनुभूति नहीं हो पाती है। प्रतीकों की कल्पना के द्वारा वह अनोखे ढाँचे का संयोजन करती है।

Q.5. What are two main obstacles to women's professional identity as per Virginia Woolf? Are these still the two main obstacles?

वर्जीनिया वुल्फ के अनुसार, महिलाओं की पेशेवर पहचान में दो मुख्य समस्याएँ क्या हैं? क्या ये अभी भी दो मुख्य बाधाएँ हैं?

Ans. The two main obstacles to women's professional identity are the expectations of society and the expectations she has for herself. These obstacles still exist but to a certain degree. In 1930 society's expectation for women was to stay home to cook and clean, now women are still seen to do this but are also seen to have a job. Women also give themselves high expectations for many things as they did in 1930's.

महिलाओं की पेशेवर पहचान में दो मुख्य बाधाएँ समाज की अपेक्षाएँ और स्वयं के लिए उसकी अपेक्षाएँ हैं। ये बाधाएँ आज भी मौजूद हैं लेकिन कुछ हद तक 1930 में समाज में महिलाओं से खाना पकाने और साफ-सफाई के लिए घर में रहने की उम्मीद थी, अब भी महिलाएँ ऐसा करती दिखाई देती हैं लेकिन नौकरी भी करती नजर आती हैं। महिलाएँ भी कई चीजों के लिए खुद से बहुत उम्मीद रखती हैं जैसा कि उन्होंने 1930 के दशक में किया था।

Q.6. What do you know about Dr. Abdul Kalam? Discuss briefly.

डॉ० अब्दुल कलाम के बारे में आप क्या जानते हैं? संक्षिप्त विवरण कीजिए।

Ans. Dr. A.P.J. Abdul Kalam (15 October 1931-27 July 2015) was an Indian aerospace scientist who served as the eleventh President of India from 2002 to 2007. He was born at Rameshvaram in Madras Presidency in British India (now Tamil Nadu). He worked as science administrator at the DRDO and the ISRO. He was the main architect of Indian military missile development programme. He is known as the Missile Man of India. He developed ballistic missile and launched vehicle technology. He was the pivotal organiser in India's Pokhran II nuclear test in 1998.

डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम (15 अक्टूबर 1931-27 जुलाई 2015) एक भारतीय अन्तरिक्ष वैज्ञानिक थे जिन्होंने वर्ष 2002 से 2007 तक के कालखण्ड में भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति का पदभार संभाला। ब्रिटिश भारत में मद्रास प्रान्त (सम्प्रति तमिलनाडु) के रामेश्वरम में उनका जन्म हुआ था। DRDO और इसरो में वे वैज्ञानिक प्रशासक के पद पर रहे। भारत के युद्धक मिसाइल प्रोग्राम के वे जनक थे। इसीलिए उनको भारत का मिसाइलमैन' कहा जाता है। उन्होंने प्रक्षेपास्त्र और उपग्रह प्रक्षेपणयान की तकनीक विकसित की। वर्ष 1998 में पोखरण II के परमाणु परीक्षण के कर्णधार व आयोजक डॉ० कलाम ही थे।

Q.7. What does Khushwant Singh say in 'Outlook' about Kalam and his 'Ignited Minds'?

खुशवंत सिंह 'Outlook' पत्रिका में कलाम और उनकी पुस्तक 'Ignited Minds' के बारे में क्या कहते हैं?

Ans. Khushwant Singh says about Dr. Kalam and his book 'Ignited Minds' that Kalam is a dreamer of great dreams and his stimulating and inspiring book 'Ignited Minds' will fire the minds of the young to whom it is primarily addressed.

डॉ० कलाम और उनकी पुस्तक 'Ignited Minds' के बारे में खुशवंत सिंह कहते हैं कि कलाम बड़े सपनों को देखने वाले स्वप्नदृष्टा हैं और प्रोत्साहित करने वाली उनकी प्रेरणादायक पुस्तक 'Ignited Minds' नवयुवकों व नवयुवतियों के मन को आन्दोलित करेगी जिनको मूलतः इस पुस्तक में सम्बोधित किया गया है।

Q.8. What importance to nature has the writer given in one's life?

लेखक ने व्यक्ति के जीवन में प्रकृति की क्या महत्ता बताई है?

Ans. Like Wordsworth and other romantic poets of England and Sumitra Nandan Pant and Nirala of India, the writer is also a great lover of nature. He considers nature as the best friend of man. He gives importance to five kilometres walk in the morning when he can enjoy the beauty of the sunrise, the sweet tuning of the songs of the birds and the pleasure of the cool breeze. He is a great believer in Pantheism. The beaches of the sea and bewitching beauty of the rivers are the centre of attraction for him. The writer has spent a number of years of his life near the coast of the seas and so naturally his love for nature could never be ceased.

इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध कवि वर्ड्सवर्थ और अन्य रोमान्टिक कवि, भारत के सुमित्रा नन्दन पंत तथा निराला जैसे कवियों के समान ही लेखक भी प्रकृति-प्रेमी हैं। वह प्रकृति को मनुष्य का सबसे अच्छा दोस्त मानते हैं। वह सुबह पाँच किमी टहलने की महत्ता बताते हैं। इस समय वह सूर्योदय की सुन्दरता, पक्षियों के मधुर गीतों को सुनना तथा सुबह की ठण्डी वायु का आनन्द ले सकते हैं। वह प्रकृति की प्रत्येक वस्तु में ईश्वर की उपस्थिति पाते हैं।

समुद्री बीच और नदियाँ उनके आर्कषण का केन्द्र हैं। लेखक ने अपने जीवन के अधिकांश साल समुद्र के तटों पर व्यतीत किए हैं इसीलिए प्रकृति के प्रति उनका प्रेम कभी भी कम नहीं होता है।

Q.9. Which is the most important place which has attracted the writer very much?

ऐसा कौन-सा महत्वपूर्ण स्थान है जिसको देखकर लेखक अत्यधिक आकर्षित हुआ?

Ans. The writer is a scientist and for his scientific experiments, he had to go to a number of places of India. He had been fortunate to visit many beautiful places that opened up his mind to the cosmic reality. One such was Chandipur in Orissa. The writer was very happy when he reached there. The word-meaning of Chandipur is the abode of the Goddess Chandi or Durga. The beach here is surely among the finest in India. At low tide the water recedes three kilometres as the tides follow their rhythmic cycle.

लेखक एक वैज्ञानिक है। अपने वैज्ञानिक प्रयोग करने के लिए वह भारत के बहुत से स्थानों पर गया। उसने बहुत से सुन्दर स्थलों का भ्रमण करके विश्वव्यापी वास्तविकता की जानकारी ली। ऐसा ही उड़ीसा में चाँदीपुर नामक एक सुन्दर स्थल है। लेखक जब उस स्थान पर पहुँचा तो उसको देखकर वह बहुत ही खुश हुआ। चाँदीपुर में चंडी या दुर्गा देवी का निवास स्थान है। यहाँ पर भारत का सबसे सुन्दर समुद्री बीच है। यहाँ पर कम ज्वार-भाटे वाला समुद्री बीच का पानी मधुर ध्वनि करता हुआ तीन किलोमीटर तक पीछे हट जाता है।

Q.10. Give a brief introduction of Swami Vivekanand.

स्वामी विवेकानन्द का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

Ans. Swami Vivekanand was born on 12th January 1863 at Kolkata. He was a key figure in the introduction of Indian philosophies of Vedanta and Yoga to the Western world. He was a major force in the contemporary Hindu reform movements in India and contributed to the concept of nationalism in colonial India. He was the chief disciple of the Indian mystic Ramakrishna.

स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी, 1863 को कोलकाता में हुआ था। वह पश्चिमी देशों में वेदान्त व योग के भारतीय दर्शन का प्रसार व प्रचार करने में स्वामी विवेकानन्द का महत्वपूर्ण स्थान है। भारत में उन्होंने सुधारवादी आन्दोलन का प्रारम्भ किया और उपनिवेशक भारत में उन्होंने राष्ट्रवाद की अलख जगायी। रहस्यवादी सन्त रामकृष्ण के वह प्रमुख शिष्य थे।

Q.11. Narrate Narendranath's first introduction to Ramakrishna.

नरेन्द्रनाथ का रामकृष्ण के साथ पहले परिचय का विवरण दीजिए।

Ans. Narendranath's first introduction to Ramakrishna occurred in a literature class at General Assembly's Institution when he heard Professor William Hastie lecturing on William Wordsworth's poem titled as 'Excursion'. While explaining the word 'trance' in the poem Hastie suggested to visit Ramakrishna of Dakshineswar to understand the true meaning of trance.

रामकृष्ण के बारे में नरेन्द्रनाथ को पहली बार अपनी अंग्रेजी साहित्य की कक्षा में पता चला जो जनरल असेम्बली इंस्टीट्यूशन में आहूत की गयी थी। वहाँ पर प्रोफेसर विलियम हेस्टी, विलियम वर्ड्सवर्थ की कविता पर व्याख्यान दे रहे थे जिसका शीर्षक 'Excursion' था। इस व्याख्यान के दौरान वह कविता में आए शब्द trance अर्थात् आत्मविस्मृति या अचेतन अवस्था की व्याख्या कर रहे थे, तब उन्होंने इस शब्द की वास्तविक व्याख्या को समझने के लिए छात्रों से दक्षिणेश्वर में रहने वाले रामकृष्ण से मिलने को कहा।

Q.12. Hindus have been always confined within the four wall of their country. Do you agree?

हिन्दू लोग सदैव ही देश की सीमाओं के भीतर ही सीमित रहे। क्या आप सहमत हैं?

Ans. Many people think that the Hindus have been always confined within the four walls of their country through all ages. But such people are entirely mistaken. They have not studied the whole books. They have not studied the history of the race. The story of our conquest has been described by Ashoka the Great. So, Hindus have not been confined, but have been great conquerors. They won the world through great ideology of Aryans. They have worked for the welfare of whole world.

बहुत से लोगों का विचार है कि युग-युगों से हिन्दू लोग अपने देश की सीमाओं के भीतर ही सीमित रहे हैं। लेकिन ऐसे लोग पूरी तरह से गलत धारणा से ग्रसित हैं। उन्होंने ग्रन्थों का सही अध्ययन नहीं किया है। उन्होंने इस प्रजाति के इतिहास का अध्ययन नहीं किया है। हमारी विजयगाथा का विवरण अशोक महान ने ठीक प्रकार से दिया है। अतः यह नहीं कहा जा सकता कि हिन्दू सीमित दायरे में सिमट कर रहे गए हैं अपितु वे विजेता रहे हैं। उन्होंने आर्यों की विचारधारा का पल्लवन कर विश्व में विजय पायी। उन्होंने अनेक कार्यों को विस्तार देकर पूरे विश्व का कल्याण किया।

Q.13. Is it possible to conquer the world with spirituality?

क्या आध्यात्मिकता के साथ विश्वविजय हासिल की जा सकती है?

Ans. Vivekanand says that we are proud of our spirituality. Let foreigners come and flood the land with their armies. India will conquer the world with its spirituality. We are taught that love must conquer hatred, and hatred cannot conquer itself. Materialism and all its miseries can never be conquered by materialism. Armies only multiply and make brutes of humanity. But India will conquer the West and this triumph will come from spirituality which is inherited in our Aryan culture.

विवेकानन्द कहते हैं कि हमें अपनी आध्यात्मिकता पर गर्व है। विदेशी आक्रान्ताओं को अपने सैन्य दलों के साथ आने दो। भारत अपनी आध्यात्मिक शक्ति से इन सब पर विजय प्राप्त करेगा। हमें बताया गया है कि प्रेम से घृणा पर विजय पायी जा सकती है, लेकिन घृणा स्वयं पर विजय पाने में असमर्थ है। भौतिकवाद और उससे उपजी परेशानियों को कभी भी भौतिक वस्तुओं का संबल लेकर पराजित नहीं किया जा सकता है। सैन्य दलों का सहारा लेने से केवल मानव के प्रति पाशविकता के तत्वों में बढ़ोतरी ही होगी। लेकिन भारत पश्चिमी जगत पर विजय प्राप्त करेगा और इस प्रकार की विजय का मार्ग आध्यात्मिकता से ही प्रशस्त होगा जो हमारी आर्य संस्कृति की धरोहर है।

Q.14. What does Vivekanand ask the young men of Madras to do?

मद्रास के नवयुवकों से विवेकानन्द क्या करने के लिए आग्रह करते हैं?

Ans. Vivekanand wants to spread the ideology of Vedanta. The world wants it and without it the world will be destroyed. So, our spiritual ideas must penetrate deep into the West. Therefore Vivekanand asks the young men of Madras to remember to spread the ideas beyond the seas. The young people must go out and conquer the world through our spirituality and philosophy. We must do our duty sincerely. The only condition of national life is the conquest of the world by Indian thought.

विवेकानन्द वेदान्त के दर्शन का प्रसार सर्वत्र करना चाहते हैं। विश्व भी चाहता है और इसके अभाव में विश्व का कल्याण सम्भव नहीं है इसलिए आवश्यक है कि भारत की आध्यात्मिक विचारधारा का प्रसार पश्चिमी जगत में भी हो। इसीलिए विवेकानन्द मद्रास के नवयुवकों से आग्रह करते हैं कि वे इन विचारों को समुद्र पार तक प्रसारित करने के लिए तैयार रहें।

नवयुवक देश की सीमाओं से बाहर निकलें और अपने देश की आध्यात्मिकता और उसके दर्शन के माध्यम से विश्व पर विजय पायें इसके लिए हमें अपने कर्तव्य का पालन पूरी निष्ठा से करना चाहिए। राष्ट्रीय जीवन की सही अवस्था यही है कि भारतीय विचारों के द्वारा विश्व पर विजय पाई जाए।

SECTION-B (SHORT ANSWER TYPE QUESTIONS)

Q.1. Woolf writes about 'the body', to be delicate and genteel or euphemistic. Explain, keeping in mind the historical content of the work.

वुल्फ शरीर के बारे में लिखती हैं कि वह नाजुक और सभ्य या व्यंजनापूर्ण है। कार्य के ऐतिहासिक संदर्भ को ध्यान में रखते हुए समझाइए।

Ans. Woolf characterizes the body to be delicate because women have bodies that seem very fragile and weak. She does so to illustrate that society views women as figures who need to be maintained by men, and that they are not capable to take care of themselves. Women were seen as fragile most of the time because women do tend to be much more sentimental and emotional than men. Furthermore women have depicted that they are more than just someone who feels more. They have demonstrated that they too are capable to do what a man can do.

वुल्फ शरीर को नाजुक बताती हैं क्योंकि महिलाओं के शरीर बहुत नाजुक और कमजोर लगते हैं। वह यह बताने के लिए ऐसा करती हैं कि समाज महिलाओं को एक ऐसे रूप में देखता है जिसे पुरुषों द्वारा बनाये रखने की जरूरत होती है और यह कि वे स्वयं देखभाल करने में सक्षम नहीं हैं। महिलाओं को ज्यादातर समय नाजुक रूप में देखा जाता था क्योंकि महिलाएँ पुरुषों की तुलना में अधिक भावुक और भावात्मक होती हैं। इसके अलावा महिलाओं ने दर्शाया है कि वे किसी ऐसे व्यक्ति से अधिक हैं जो अधिक सोचता है। उन्होने दिखाया है कि वे भी वह करने में सक्षम हैं जो एक आदमी कर सकता है।

Q.2. What is Woolf's overall tone in this speech? Identify passages where Woolf displays various tones, sometimes in order to assume a specific person, and then develop a description of overall tone?

इस भाषण में वुल्फ का समग्र स्वर क्या है? उन अंशों को पहचानें जहाँ वुल्फ विभिन्न स्वर प्रदर्शित करती हैं, कभी-कभी एक विशिष्ट व्यक्तित्व ग्रहण करने के लिए और फिर समग्र स्वर का विवरण विकसित करती हैं।

Ans. Woolf's tone is very projective and she is very assertive. As mentioned in the text, "These then were two of the adventures of my professional life. The first, killing the Angel in the House-I think I solved. She died. But the second, telling the truth about my own experiences as a body, I do not think I solved. I doubt that any woman has solved it yet. The obstacles against her are still immensely powerful and yet they are very difficult to define. Outwardly, what is simpler than to write books? Outwardly, what obstacles are there for a woman rather than for a man? Inwardly, I think, the case is very different, she still has many ghosts to fight, many prejudices to overcome. Indeed it will be a long time still, I think, before a woman can sit down to write a book without finding a phantom to be slain, a rock to be dashed against. And if this is so in literature, the freest of all professions for women, how is it in the new professions which you are now for the first time entering?" Woolf shows several moods throughout the course of the text and combines all that she is feeling into one through her story.

वुल्फ का समग्र स्वर बहुत ही प्रक्षेपी है और वह बहुत मुखर है जैसा पाठ में, बताया गया है, “ये तब मेरे अपने दो बहुत ही वास्तविक अनुभव थे। ये मेरे पेशेवर जीवन के दो रोमांच थे। घर में एंजेल की हत्या-मुझे लगता है कि मैंने हल किया। वह मर गई। लेकिन दूसरा, एक शरीर के रूप में अपने स्वयं के अनुभवों के बारे में सच बताते हुए, मुझे नहीं लगता कि मैंने हल किया। मुझे संदेह है कि किसी भी महिला ने इसे अभी तक हल नहीं किया है। उसके खिलाफ बाधाएँ अभी भी शक्तिशाली हैं और फिर भी उन्हें परिभाषित करना बहुत मुश्किल है। बाह्य रूप में, एक पुरुष की बजाय एक महिला के लिए क्या बाधाएँ हैं? अन्दर से, मुझे लगता है, मामला बहुत अलग है, उसका पास लड़ने के लिए अभी कई भूत हैं, कई पूर्वाग्रहों को दूर करना है। वास्तव में मुझे लगता है कि यह अभी भी एक लम्बा समय होगा। इससे पहले कि महिला एक प्रेत को मारे जाने के लिए एक किताब लिखने के लिए बैठ सके, एक चट्टान के खिलाफ धारावाही हो जाए और अगर साहित्य में ऐसा है, तो महिलाओं के लिए सभी व्यवसायों में सबसे मुक्त ये कैसा है जिसमें आप पहली बार प्रवेश कर रहे हैं?” वुल्फ पाठ के दौरान विभिन्न मूड दिखाती हैं और उन सभी को जोड़ती हैं, अपनी कहानी के माध्यम से जो वह महसूस कर रही हैं।

Q.3. Dr. A.P.J. Abdul Kalam was not only a great scientist but he was also a socio-religious man. Discuss.

अब्दुल कलाम केवल एक वैज्ञानिक ही नहीं बल्कि वह एक सामाजिक-धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। विवेचना कीजिए।

Ans. A.P.J. Abdul Kalam was not only a great scientist but he was also a socio-religious man. He is a great writer in the line of Pt. Nehru and Mahatma Gandhi. He had great faith in secularism. His patriotism is beyond doubt.

In the present lines Kalam shows his love for nature and morning walk. Even at the age of more than seventy, he still has a very sound health. The secret of his good health is his morning walk which he never fails to take where-ever he goes. He walks five kilometres in the morning everyday. It gives him double benefits. He keeps his health fit and enjoys the beauty of sunrise and hears sweet tunings of the birds. The birds welcome the dawn with their charming sweet songs. The cool breeze of the morning is a joy forever for him. He thanks God for His unlimited pleasant blessings to human beings.

अब्दुल कलाम केवल एक वैज्ञानिक ही नहीं बल्कि वह एक सामाजिक-धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। वह पं० नेहरू और महात्मा गाँधी जैसे महान लेखकों में से एक हैं। वह धर्मनिरपेक्षता में विश्वास रखते थे। उनकी देशभक्ति सन्देह रहित है।

वर्तमान पंक्तियों में कलाम ने प्रकृति से प्रेम तथा सुबह उठकर टहलने के बारे में अपनी रुचि दर्शायी है। सत्तर साल की उम्र से अधिक होने पर भी उनका स्वास्थ्य अच्छा है। उनके स्वास्थ्य का राज सुबह को टहलना ही है। वह जहाँ कहीं भी जाते हैं, टहलना नहीं छोड़ते हैं? वह प्रतिदिन पाँच किमी० तक टहलते हैं? टहलने से उन्हें दोहरा लाभ मिलता है। वह टहलकर अपने स्वास्थ्य को अच्छा बनाते हैं और सूर्य निकलने की सुन्दरता तथा पक्षियों का मधुर संगीत सुनते हैं। पक्षी अपने मधुर गान से सुबह का स्वागत करते हैं। सुबह की मन्द ठंडी वायु उन्हें हमेशा ही खुशी प्रदान करती है। वह ईश्वर को धन्यवाद देते हैं क्योंकि उसने मनुष्य को असीमित खुशियों का भण्डार दिया है।

Q.4. Which are the test-firing of missiles of India, in which there is a great contribution of the writer?

भारत की कौन-कौन सी मिसाइल परीक्षणों में लेखक ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है?

Ans. In India test-firing of missiles started from the Sriharikota range of ISRO but it needed our own missile test range. The Interim Test Range (ITR) was established in 1989 as a dedicated range for launching missiles, rockets and flight test vehicles. A number of missiles of different class including the multirole Trishul, multi-target capable Akash, the anti-tank Nag

missile, the surface to surface missile Prithvi, and long-range technology demonstrator Agni have been tested from the ITR. BrahMos, the Indo-Russian joint venture set up to develop supersonic cruise missiles has also been tested at this range. The ITR has also supported a number of other missiles such as testing of multibarrel rocket launcher Pinaka and the pilotless aircraft Lakshya. All these fire tests have made India capable for making a number of powerful weapons.

भारत में मिसाइलों का परीक्षण Sriharikota Range के ISRO नामक स्थान पर शुरू हुआ था लेकिन इस परीक्षण के लिए हमें अपने मिसाइल परीक्षण क्षेत्र की आवश्यकता थी। सन् 1989 में Interim Test Range की स्थापना की गई थी। यहाँ से रॉकेट तथा अन्य मिसाइलों; जैसे—त्रिशूल, आकाश, नाग, पृथ्वी और अग्नि जैसी मिसाइलों का परीक्षण किया गया। Brahmos और Indo-Russian के सामूहिक प्रयास से Cruise missile का परीक्षण किया गया। ITR ने भी दूसरे प्रकार के मिसाइलों के परीक्षण में अपनी सहायता दी। अनेक प्रकार के रॉकेट भी Pinaka तथा Lakshya नाम के पायलट रहित विमानों का भी परीक्षण किया गया।

Q.5. What sincere co-operation did the writer get from chief minister of Orissa?

लेखक ने उड़ीसा के मुख्यमंत्री से कौन-सा सहयोग प्राप्त किया?

Ans. The writer with his two colleagues, Saraswat and Salwan went to a place called Dhamra. From this place they went to an island. They enjoyed the tasty food of this place in their dinner. They surveyed the island in the morning. They were surprised to see that on the eastern side of the island a Bangladesh flag flying a top of a tree with huts nearby. The island was probably frequented by fishermen from the neighbouring country. His friends quickly removed the flag. The writer with his friends went to the chief minister of Orissa to get some lands for the missile experiments. Abdul Kalam also handed over a letter from the Defence Minister of India in which he asked him to give the writer a clearance certificate to acquire the island for Defence Research and Development Organisation (DRDO). Biju Patnaik who was also a pilot and a great friend of President Sukarno welcomed the writer and his two friends warmly. He promised him to give him support in his missile programme. He also said that it was very important work to the country. The writer was very much impressed with his tremendous personality.

लेखक अपने दो साथी, सारस्वत और सालवान के साथ धामरा नामक स्थान पर गए। यहाँ से वे एक द्वीप पर गए। रात्रि भोज में उन्होंने उस स्थान के स्वादिष्ट फलों का आनन्द लिया। सुबह के समय उन्होंने उस द्वीप का निरीक्षण किया। पूर्व दिशा में उन्होंने जब पेड़ के ऊपरी सिरे पर बांगला देश का झंडा लहराते देखा तो वे बहुत ही आश्चर्य चकित रह गए। उस पेड़ के पास कुछ झोंपड़ियाँ भी थीं। उस द्वीप के आस पास के व्यक्ति मछुआरे थे। उसके मित्रों ने शीघ्र ही उस झंडे को वहाँ से हटा दिया। लेखक अपने मित्रों के साथ उड़ीसा के मुख्यमंत्री के पास कुछ धरती मिसाइलों के परीक्षण के लिए लेने के लिए गए। अब्दुल कलाम ने वहाँ के डिफेंस मंत्री को एक पत्र दिया और कहा कि वे उन्हें वहाँ पर मिसाइलों के परीक्षण की अनुमति दें। बीजू पटनायक, जो एक पायलट थे और राष्ट्रपति सुकरानो के घनिष्ठ मित्र थे, ने लेखक और उनके दोनों मित्रों का गर्मजोशी के साथ आदर सत्कार किया। उन्होंने मिसाइल परीक्षण के लिए जमीन देने का भी वायदा किया। उन्होंने कहा कि यह काम देश के लिए अत्यन्त आवश्यक है। लेखक उनके इस सहयोग से अत्यन्त प्रभावित हुआ।

Q.6. What are the views of the writer about religion and culture?

लेखक के धर्म और सभ्यता पर क्या विचार हैं?

Ans. Abdul Kalam belongs to a Muslim family. But he was very much impressed with a great religious man of Rishikesh. He was an inspiring source to him. Moreover, since his childhood

he was taught all the religions of the world. The object of every religion is to increase spiritual power. Every religion teaches only one lesson and that is to have faith in secularism. He was very fortunate to learn a number of books on different religions right from his high-school upto the age of seventy. The mission of every religion is to uplift the spiritual power. The core of culture is to respect all the religions. India has a broad mind and she has accepted Islam, Christianity and all other religions unhesitatingly. All the people of India belonging to different religions have a great respect for their motherland. They sing 'Vande Matram' with pride and respect Indian Constitution.

अब्दुल कलाम एक मुस्लिम परिवार में जन्मे थे लेकिन वह ऋषिकेश के एक धार्मिक व्यक्ति से बहुत अधिक प्रभावित हुए थे। उनसे उन्हें बहुत प्रेरणा मिली थी। बचपन से ही उन्हें सिखाया गया था कि संसार के सभी धर्मों में धर्म निरपेक्षता की शिक्षा दी गई है। उन्होंने कक्षा दस से लेकर सत्तर वर्ष की उम्र तक धर्म पर लिखी अनेक पुस्तकें पढ़ी हैं। प्रत्येक धर्म का उद्देश्य आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाना है। सभी धर्मों का सम्मान करना ही सभ्यता है। भारत की सभ्यता विस्तृत है और उसने मुस्लिम और इसाई धर्म को संकोच रहित अपनाया है। भारत के सभी धर्मों को मानने वाले व्यक्तियों ने मातृभूमि को बहुत सम्मान दिया है। वे वन्दे मातरम् गीत गाते हैं और भारतीय संविधान के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करते हैं।

Q.7. Write short note on Swami Vivekanand and his philosophy.

स्वामी विवेकानन्द और उनके दर्शन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

Ans. Swami Vivekanand was one of the explicit personalities among those people who started a new awakening in India. His real name was Narendranath and he was born on January 12, 1863 in Calcutta. He was from a highly educated family and was a gifted child with high thinking and intelligent mind and strong will power.

He completed his graduation in English in 1884-1885. His mother wanted him to pursue law, but Swami Vivekanand's mind's thirst was to get hold of the spiritual knowledge. He would spend maximum time conversing with saints and monks, and wandered needlessly in search of truth but never attained any peace and satisfaction. Then he came in contact with Sri Ramakrishna, who influenced him, and he became his devout follower.

Vivekanand's main principle of teaching was that serving humanity means, serving God. He constructed a group of preachers and saints to help the needy, weak, and miserable.

Education is a tool that provides better standards of living. Swami Vivekanand's teachings emphasized and attached a great significance to the role of education as a building blocks of society. However, he died on July 4, 1902.

Swami Vivekanand is a treasured component of Indian history. He was a role model.

स्वामी विवेकानन्द उन लोगों में से एक मुखर व्यक्तित्व वाले थे जिन्होंने भारत में नया जागरण शुरू किया। उनका असली नाम नरेन्द्रनाथ था और वह 12 जनवरी, 1863 में कलकत्ता में पैदा हुए थे। वे बहुत ही पढ़े-लिखे परिवार से थे और वह एक तौहफ़े में मिला एक बच्चा था जो ऊँची सोच वाला, तेज दिमाग और मजबूत सोच शक्ति वाला था।

उन्होंने 1884-1885 में अपनी स्नातक शिक्षा पूर्ण की। उनकी माँ चाहती थीं कि वह कानून की पढ़ाई करें पर उनके मन की प्यास आध्यात्मिक ज्ञान को प्राप्त करने की थी। वह अपना ज्यादातर समय साधु, सन्तों और भिक्षुओं के साथ बिताना चाहते थे और सत्य की खोज में विचरण करते थे परन्तु कभी भी कहीं भी शांति और सन्तुष्टि को नहीं पाते थे। तब वे श्री रामकृष्ण से जुड़े उन्होंने इन्हें प्रभावित किया और वह उनके अनुयायी बन गये।

विवेकानन्द की शिक्षा का प्रमुख सिद्धान्त था-मानवता की सेवा, मतलब ईश्वर की सेवा। उन्होंने सन्तों व प्रचारकों का एक समूह बनाया जो जरूरतमंदों, कमजोरों और दुखियों की मदद करता था।

शिक्षा एक यंत्र है जो अच्छा जीवन देती है। स्वामी विवेकानन्द ने अध्यापन पर जोर दिया और समाज के निर्माण खण्ड के रूप में शिक्षा की भूमिका को बहुत महत्व दिया। हालाँकि 4 जुलाई, 1902 में उनकी मृत्यु हो गई। स्वामी विवेकानन्द भारतीय इतिहास में खजाना स्वरूप हैं। वह एक मार्गदर्शक थे।

Q.8. According to Swami Vivekanand what is teaching and philosophy?

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा और दर्शन क्या हैं?

Ans. He was Hindu monk from India. His teaching and philosophy applied to the reinterpretation of various aspects of education, faith, character building as well as social issues pertaining to India. He was also instrumental in introducing Yoga to the West.

According to Swami Vivekananda a country's future depends on its people, stating 'Man-making is my mission'. Religion plays a central role in this man-making, starting to preach into mankind their divinity, and how they can make it manifest in every movement of life.

वह भारत के हिन्दू भिक्षु थे। उनके शिक्षा और दर्शन ने इस पुनर्व्यवस्था को भारत के सम्बन्धित सहयोग, विश्वास, चरित्र निर्माण के साथ-साथ सामाजिक मुद्दों के विभिन्न पहलुओं पर भी लागू किया और उन्हीं की वजह से पश्चिम में भी योगा प्रसिद्ध हुआ।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार एक देश का भविष्य वहाँ के लोगों पर निर्भर होता है "मानव निर्माण" मेरा लक्ष्य है।" धर्म इसमें मुख्य भूमिका अदा करता है जिसमें कहा गया है कि मानव जाति को उनकी दिव्यता का प्रचार करना और उसे जीवन में हर सफर में कैसे प्रकट करना है।

Q.9. What did Swami Vivekananda say about Indian thoughts regarding the conquest of the world? (2021)

भारतीय विचारों द्वारा विश्व विजय के बारे में स्वामी विवेकानंद का क्या कहना था?

Ans. Swami Vivekananda wanted Indians to be proactive in taking the message of spirituality to the world. For him, aggression does not mean attack, but sustained and sincere work. Conquest does not mean defeating or destroying others but helping all in their inner growth, saving them from destruction.

He asked Indians to conquer the world with their spirituality. He said, love must conquer hatred, hatred cannot conquer itself. Armies when they attempt to conquer armies make brutes of humanity. Spirituality must conquer the West.

Indians have to be the men ready to go out to every country in the world with the messages of the great sages of India. They should be ready to sacrifice everything, so that this message shall reach every corner of the world. Such heroic souls are wanted to help the spread of truth. Such heroic workers should go abroad and help to disseminate the great truths of Vedanta. The world wants it; without it, the world will be destroyed.

Therefore, young men of India, I specially ask you to remember this. Go out and conquer the world through our spirituality and philosophy. There is no other alternative, we must do it or die. The only condition of national life, of awakened and vigorous national life, is the conquest of the world by Indian thought.

स्वामी विवेकानन्द चाहते थे कि भारतीयों को विश्व को आध्यात्मिकता का संदेश देने के लिए सक्रिय होना चाहिए। उनके लिए आक्रामकता का अर्थ आक्रमण नहीं किन्तु निरन्तर और ईमानदार कार्य है। विजय का अर्थ किसी को हराना अथवा तबाह करना नहीं बल्कि उनकी आन्तरिक वृद्धि से है ताकि वे तबाही से बच सकें।

उन्होंने भारतीयों को अपनी आध्यात्मिकता से विश्व विजय को कहा। उन्होंने कहा कि प्रेम घृणा को जीते क्योंकि घृणा स्वयं को नहीं जीत सकती। जब सेनाएँ दूसरी सेनाओं को जीतना चाहती हैं तो मानवता को राक्षसी रूप दे देती हैं। आध्यात्मिकता को पश्चिम को जीतना ही होगा।

भारतीयों को ऐसे व्यक्ति बनना होगा जो महान भारतीय ऋषियों के संदेश लेकर विश्व के प्रत्येक देश में जाएँ। उन्हें अपना सब कुछ बलिदान करने को तैयार रहना होगा ताकि यह संदेश विश्व के हर कोने में पहुँच सके। सत्य के प्रसारण के लिए ऐसे वीर आत्माओं की आवश्यकता है। ऐसे कार्यकर्ताओं को वेदान्त के महान सत्यों के प्रसारण के लिए विदेश जाना चाहिए। विश्व को इसकी आवश्यकता है अन्यथा वह तबाह हो जाएगा।

इसलिए भारत के युवाओं, मैं विशेष रूप से आपको उसे याद करने को कह रहा हूँ। बाहर जाकर हमारी आध्यात्मिकता और दर्शन के माध्यम से विश्व विजय करो। अन्य कोई विकल्प नहीं है या तो हम इसे करें अन्यथा मर जाएँ। राष्ट्रीय जीवन, एक जागृत और ओजस्वी राष्ट्रीय जीवन, की एकमात्र परिस्थिति भारतीय विचारों द्वारा विश्व विजय है।

SECTION-C (LONG ANSWER TYPE QUESTION)

Q.1. Narrate the story 'Professions for Women' in your own words.

'Professions for Women' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

Ans. Virginia Woolf, an eminent English feminist writer, literary critic and publisher, delivered a speech at the National Society for Women's Service in January 1931, and the essay 'Professions for Women' is the abridged version of this speech. In this essay, the author concentrates on the Victorian phantom known as the 'Angel in the House' that represents the selfless, sacrificial woman in the nineteenth century whose sole purpose in life was to soothe, to flatter and to comfort the male half of the world's population, and to succeed in any profession, including in writing, this phantom needed to be killed; only then can they hope to gain victory in the deadly contest for their social and economic equality. This phantom is her own subconsciousness which has been sustained by generations of an oppressive Victorian society. This woman is the creation of men who want to see her as the charming, quiet, unselfish and 'pure' woman of the house. In other words, she did not have or want to have a mind or wish of her own, much less 'a room of her own'. She will have to relinquish her submissive image first. She writes that she took up her pen in her hand to review that novel by a famous man, and it was at this time she killed her submissiveness.

The character that the author creates is much like the author, who could not accept that the only way for a woman to succeed in life was to charm, conciliate and live her way through the maze of male dominated social structures. The author goes on to conclude with questions future generations of women writers must inevitably ask themselves : "You have won rooms of your own in the house hitherto exclusively owned by men. You are able, though not without great labour and effort, to pay the rent. But this freedom is only a beginning; the room is your own, but it is still bare. It has to be furnished; it has to be decorated; it has to be shared."

The author speaks of female emancipation and freedom. But to achieve that, they will have to ask these questions themselves. She also hints that the hard work put in by women cannot go wasted, as she shows that her first review itself won a cheque from the editor, which she spent

on buying a pet cat which symbolises that she spent it on her hobby, which otherwise could not have been cared for by men. However, she goes on to say that she has come to have a roof for herself, but it is bare, and needs to be furnished and decorated, for which she would have to work further.

She also advises how a person can become a successful writer; she says that a person will have to lead a monotonous life surrounded by the same people and things day after day to achieve her goal. She says that it could be easier for a woman to become a writer, but it would be certainly far tougher when it comes to other professions because they would have to face formidable obstacles in their paths.

वर्जीनिया वुल्फ एक प्रसिद्ध अंग्रेजी महिलावादी लेखक, साहित्यिक, आलोचक और प्रकाशक थीं। उन्होंने जनवरी 1931 में नेशनल सोसायटी फॉर वूमैन्स सर्विस में एक भाषण दिया था और उनका निबंध *Professions for Women* उसी भाषण का लघु रूप है। इस निबंध में, लेखिका अपना ध्यान उस विक्टोरियन छाया या भूत पर केंद्रित करती है जिसे उसने 'एंजल ऑफ द हाउस' या घर के देवदूत के नाम से पुकारा है, यह एंजल उस निःस्वार्थी, बलिदानि महिला का प्रतिनिधित्व करता है जो उन्नीसवीं शताब्दी में रहा करता था और जिसके जीवन का एकमात्र ध्येय था दुनिया की जनसंख्या के आधे भाग, अर्थात् पुरुषों को आराम देना, उनकी झूठी प्रशंसा करना और उनके जीवन को सुविधाजनक बनाना; और किसी महिला को किसी व्यवसाय, लेखन सहित, में सफल होने के लिए आवश्यक था कि वह इस छाया को मार डाले और तभी वह महिला सामाजिक और आर्थिक बराबरी के कठिन समर में विजय प्राप्त कर सकती है। यह छाया लेखक का अपना अवचेतन मन है जिसे उस अत्याचारी लेखक कहती हैं कि इस प्रकार की महिला पुरुषों द्वारा रचित की गई है जो उसे घर की सुंदर, शांत, निःस्वार्थ और 'पवित्र' के रूप में देखना चाहते हैं। उसे पहले अपनी सबकुछ अर्पित कर देने वाली छवि का त्याग करना ही होगा। वह लिखती है कि उसने एक प्रसिद्ध पुरुष द्वारा लिखे गए एक उपन्यास की समीक्षा लिखने के लिए पैन उठाया, और यह इस समय था जब उसने अपनी आज्ञाकारिता और दबूपन को मार डाला।

लेखिका द्वारा रचित पात्र भी पर्याप्त रूप से लेखिका के समान ही है, जो यह स्वीकार नहीं कर सका कि किसी महिला के लिए जीवन में सफल होने के लिए उसे पुरुष अधिकार वाली सामाजिक रचनाओं की पहले के माध्यम से अपने आपको सुंदर, समन्वित और अनुरूप बनाना होगा। लेखिक उन प्रश्नों के साथ निष्कर्ष निकालती हुई कहती है जिन्हें लेखिकाओं की आने वाली पीढ़ियों को स्वयं से पूछना होगा: "आपने घर में अपने लिए कमरे ले लिए हैं जिन पर पहले केवल पुरुषों का ही अधिकार था। हालाँकि बिना कड़ी मेहनत और प्रयास के आपको इसका किराया देना होगा। लेकिन यह आजादी केवल एक शुरुआत है; कमरा आपका अपना है, लेकिन यह अभी भी खाली है। इसमें फर्नीचर लगाना होगा, इसे सजाना होगा, इसे बाँटना होगा।"

लेखिका महिला स्वतंत्रता और आजादी की बात करती है। लेकिन उसे प्राप्त करने के लिए, उन्हें पहले ये प्रश्न स्वयं से पूछने होंगे। वह यह भी संकेत देती है कि महिलाओं द्वारा की गई कड़ी मेहनत बेकार नहीं जा सकती, जैसा कि वह दिखाती है कि उसे अपनी पहली समीक्षा के लिए संपादक से एक चेक प्राप्त हुआ, जिसका उपयोग उसने एक पालतू बिल्ली खरीदने के लिए किया, जिसका अर्थ है कि उसने यह अपनी शौक पर खर्च किया, जिसका अन्यथा पुरुषों द्वारा ध्यान न रखा गया होता। लेकिन वह आगे कहती है कि उसके पास अपनी एक छत हो गई है, लेकिन यह कमरा अभी भी खाली है, और इसमें फर्नीचर लगाने और इसे सजाने की आवश्यकता है, जिसके लिए उसे और आगे काम करने की आवश्यकता होगी।

वह यह भी सलाह देती है कि कोई पुरुष किस प्रकार एक सफल लेखक बन सकता है, वह कहती है कि उसे एक रुचिविहीन जीवन जीना होगा जिसमें वह उन्हीं लोगों और चीजों के मध्य बहुत दिनों तक रहेगी ताकि वह अपना प्रयोजन सिद्ध कर सके। वह कहती है कि किसी महिला के लिए लेखिका बनना अधिक आसान हो सकता है, लेकिन जब बात अन्य व्यवसायों की आती है तो यह निश्चित रूप से कहीं अधिक कठिन होगा क्योंकि उन्हें अपने मार्ग में बड़े अवरोधों का सामना करना होगा।

Q.2. Give a critical summary of the essay "Patriotism Beyond Politics and Religion".

A.P.J. Abdul Kalam के 'Patriotism Beyond Politics and Religion' पर एक आलोचनात्मक लेख लिखिए।

Ans. Introduction : A.P.J. Abdul Kalam was a spiritualized scientist. He was a 'Karmyogi'. He was a visionary and dreams of 21st century India which has economic prosperity, national security and rightful place in the world. The learned writer in this lesson has defined the three important words- patriotism, politics and religion. With the help of Swami Vivekananda's wise words the writer starts his essay. The Indian rishi (Swami Vivekananda) considered his religion only to do works of welfare for the needy people. Like R.N. Tagore he does not give any importance merely to idol-worship.

Lover of Nature : The learned writer like some other poets and scholars, was also of the opinion that nature is the best friend of man. He gives importance to morning walk when he can enjoy the beauty of the sun-rise. At this time he can enjoy divine pleasure at the time of dawn. So he was thankful to God for his blessings through this beautiful nature.

His Experiments : The writer feels fortunate to visit beautiful places of India which opened up his mind to cosmic reality. Chandipur in Orissa is one of such places. The meaning of this natural place is the abode of Goddess Durga. The ocean near this place is very beautiful. It's beach is one of the finest beaches in India. There are tamarisk trees on the banks of the beach. They provide cool breeze to the visitors there. The famous river of Chandipur is Suwarnarekha. Like Ganga its water is very pure. It has hypnotic beauty.

Scientific Inventions : Basically the writer was a missile man. He has the credit to invent a number of missiles like - Trishul, Akash, Nag, Prithvi and Agni, etc. The author has given due importance to these missiles. He has given in detail when India got success in the flight of Prithvi missile in July 1995. There was a celebration over this success. His two colleagues Saraswat and Salwan along with the writer reached the island of Dhamra. This natural place is extremely beautiful and they took dinner of tasty fruits of this land. The writer enjoyed the beauty of the land but his friends were not familiar with the sea-life and therefore, they spent the night with some unknown fears.

Co-operation of the Authorities : Near the eastern side of the island they saw a Bangladesh flag flying at the top of a tree with huts nearby. The island was probably frequented by fisherman from the neighbouring country. His friends quickly removed the flag.

Experiments of Missiles : Abdul Kalam with his friends went to the chief minister of Orissa. Biju Patnaik. The chief minister of Orissa, gladly approved his application for his missile programme. The writer appreciated the minister for this geneosity and for his country's progress. Indonesian president Sukarno was very happy because at this time he was blessed with a daughter who was Christened Megawati. This was the Hindu name which was Christened by the leader of the world's largest Muslim nation. Later on his daughter became first the vice-president and then the president of Indonesia.

Kalam as a Teacher : Abdul Kalam during March 2002 was teaching about 200 final year students of engineering at Anna University and he gave a series of ten lectures on 'Technology and its Dimensions'. On the final day of the interaction, one of the students asked him about the doubt of the nuclear weapon test which was conducted in 1998. But unfortunately it was

ill conceived. He also quoted the words of Nobel laureate Dr. Amartya Sen that such types of experiments are economically burden on the country, and there is no need of it. Abdul Kalam with due respect to Dr. Amartya Sen told him that Pt. Nehru also advocated for zero nuclear weapons in all the countries. But later on, the views of Pt. Nehru changed because two of our neighbouring countries are armed with nuclear weapons and missiles. So for our own safety India has to make experiments of such type of missiles.

Security of the Country : Abdul Kalam says that unfortunately India has been invaded in the last 3,000 years by a succession of conquerors, including the British, French, Dutch and Portuguese, either to enlarge their territory or to spread a religion or to steal the wealth of our country. The policy of our country is to defend our nation and never to invade other countries because rulers of our country have always been tolerant and respect the national boundaries of other countries. But in the present cenerio we have also to be physically strong. So like other country we also need to possess nuclear weapons. The writer also explains the same need of nuclear weapons for the country to his friend, Admiral L. Ramadas, who retired as a naval chief. When he threatened that he and his people would hold a demonstration before Parliament protesting against the nuclear test carried out in May 1998, that before doing so they should first demonstrate in front of the White House and the Kremlin against the large quantity of nuclear warhead and ICBMs there.

प्रस्तावना—A.P.J. Abdul Kalam एक आध्यात्मिक वैज्ञानिक थे। वह एक कर्मयोगी थे। वह एक दृष्टा थे और उन्होंने भारत को 21वीं शताब्दी में लाने का स्वप्न देखा, जिसमें आर्थिक समृद्धि, राष्ट्रीय सुरक्षा और संसार में सभी को सही स्थान मिले। इस विद्वान लेखक ने तीन महत्वपूर्ण शब्दों—देशभक्ति, राजनीति और धर्म की परिभाषा दी। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों से प्रभावित होकर लेखक ने यह निबन्ध लिखा। भारतीय ऋषि, स्वामी विवेकानन्द अपने धर्म को आवश्यक लोगों की भलाई के लिए ही कार्य करना मानते थे। R.N. Tagore के समान उन्होंने भी मूर्ति पूजा को महत्ता नहीं दी।

प्रकृति-प्रेमी—अन्य कवियों और विद्वानों के समान ही लेखक भी प्रकृति को मनुष्य का सबसे अच्छा मित्र मानते थे। वह सुबह उठकर टहलने की महत्ता बताई जिसमें वह सूर्योदय की सुन्दरता का आनन्द ले सकें। इस समय वे पक्षियों का गान सुन सकते हैं। ईश्वर ने हमको सूर्योदय के समय अनेक प्रकार के सुख प्रदान किए हैं। इसीलिए लेखक ईश्वर के दिए गए सुन्दर प्राकृतिक वरदानों का बहुत आभारी है।

उसके प्रयोग—लेखक भारत के सुन्दर दृश्यों को देखकर अपने को भाग्यशाली मानते हैं तथा विश्वव्यापी वास्तविकता की जानकारी लेते हैं। उड़ीसा में चाँदीपुर नाम का एक सुन्दर स्थान है। ऐसा लगता है कि इस प्राकृतिक स्थान पर देवी दुर्गा का निवास स्थान है। इस स्थान के पास सुन्दर समुद्र है। भारत में यहाँ पर सबसे अच्छा समुद्री तट (किनारा) है। इस समुद्री तट पर बहुत से झाऊ के वृक्ष हैं जो सदैव हरे-भरे रहते हैं। ये वृक्ष लोगों को ठंडी हवा देते हैं। स्वर्णिखा चाँदीपुर की प्रसिद्ध नदी है। गंगा के समान इस नदी का जल भी पवित्र है। यहाँ पर कृत्रिम सुन्दरता है।

वैज्ञानिक आविष्कार—मौलिक रूप में लेखक एक मिसाइल व्यक्ति थे। उन्होंने अनेक मिसाइलों; जैसे—त्रिशूल, आकाश, नाग, पृथ्वी और अग्नि का आविष्कार किया है। लेखक ने इन मिसाइलों की महत्ता बताई है। उन्होंने जुलाई 1995 में पृथ्वी मिसाइल के सफल उड़ान का विस्तृत वर्णन किया है। पूरे देश में इस सफलता का उत्सव मनाया गया था। उनके दो साथी—सारस्वत और सालवान लेखक के साथ धामरा नामक द्वीप पर पहुँचे थे। यह प्राकृतिक स्थल अत्यन्त सुन्दर है और यहाँ पर उन लोगों ने वहाँ के स्वादिष्ट फलों का रात्रिभोज भी किया। उसके दोनों मित्र समुद्री जीवन से अनभिज्ञ थे इसीलिए उन्होंने डरते हुए वहाँ पर रात व्यतीत की।

अधिकारियों का सहयोग—उस द्वीप की पूर्व दिशा में उन लोगों ने एक पेड़ के ऊपर बंगला देश का झण्डा लहराते देखा। उस द्वीप के आस-पास कुछ झोंपड़ियाँ थी। वहाँ आस-पास के देशों के निवासी मछुआरे थे। उनके मित्रों ने तुरन्त झंडे को वहाँ से हटा दिया।

मिसाइलों के प्रयोग—अब्दुल कलाम अपने मित्रों के साथ उड़ीसा के मुख्यमंत्री से कुछ भूमि मिसाइलों के प्रयोग के लिए माँगने गए। उस समय बीजू पटनायक उड़ीसा के मुख्यमंत्री थे। उन्होंने मिसाइल प्रयोग के लिए उनका प्रार्थना-पत्र स्वीकार कर लिया। लेखक ने मुख्यमंत्री की उदारता की प्रशंसा की क्योंकि उन्होंने देश की भलाई के लिए अच्छा कार्य किया था। इन्डोनेशिया के राष्ट्रपति Sukarno बहुत खुश थे क्योंकि उस समय उनकी एक बेटी थी जिसका नाम मेगावती था। उनके पिता, जो मुस्लिम समुदाय के सबसे बड़े नेता थे, ने उनको हिन्दू नाम दिया था। बाद में उनकी इसी बेटी ने इन्डोनेशिया के उप राष्ट्रपति और राष्ट्रपति का पद का भार सँभाला था।

कलाम एक अध्यापक के रूप में—अब्दुल कलाम मार्च 2002 में अन्ना यूनीवर्सिटी के दो सौ इंजीनियर छात्रों को अन्तिम वर्ष की पढ़ाई करवा रहे थे। उन्होंने 'तकनीकी ज्ञान और उसके परिमाण' पर लगातार दस लैक्चर दिए। पढ़ाई के अन्तिम दिन में एक विद्यार्थी ने कलाम से 1998 में हुए परमाणु हथियार के परीक्षण की सफलता के बारे में पूछा। उन्होंने नोबेल विजेता डॉ॰ अमर्त्य सेन के विचारों को प्रस्तुत करते हुए कहा कि ऐसे प्रयोगों से देश पर आर्थिक भार अधिक पड़ता है इसीलिए ऐसे प्रयोग करने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस पर अब्दुल कलाम ने अमर्त्य सेन का सम्मान करते हुए, बताया कि पहले तो पं॰ नेहरू ने भी परमाणु हथियारों का देश में प्रयोग न किए जाने के बारे में कहा था लेकिन बाद में उनकी विचारधारा बदल गई थी क्योंकि हमारे देश के दो पड़ोसी देशों के पास परमाणु हथियार तथा मिसाइलें थीं। इसीलिए उन्होंने कहा कि अपने देश की सुरक्षा के लिए हमें इस प्रकार की मिसाइलों का प्रयोग करना पड़ा था।

देश की सुरक्षा—अब्दुल कलाम कहते हैं कि दुर्भाग्य से, पिछले 3000 साल पहले उत्तराधिकारियों ने भारत पर आक्रमण कर दिया था। आक्रमण करने वालों में ब्रिटिश, फ्रेंच, डच और पुर्तगाली लोग शामिल थे। ये लोग अपने साम्राज्य की सीमा बढ़ाना चाहते थे या अपने धर्म का विस्तार करना चाहते थे अथवा हमारे देश की सम्पत्ति को लूटने के लिए उन्होंने हमारे देश पर आक्रमण किया था। हमारे देश के लोगों की नीति अपने देश की सुरक्षा करना था न कि दूसरे देशों पर आक्रमण करना, क्योंकि हमारे देश के शासक हमेशा ही सहनशील रहे हैं और वे दूसरे राष्ट्र की सीमाओं का भी सम्मान करते हैं। आज के वर्तमान समय में हमें केवल आर्थिक रूप से ही ताकतवर नहीं होना चाहिए बल्कि शारीरिक रूप से ताकत रखनी चाहिए। इसीलिए अन्य देशों की भाँति हमें भी परमाणु हथियार रखने चाहिए। लेखक ने अपने मित्र एडमिरल एल॰ रामादास, जो जहाज के रिटायर्ड मुखिया थे, से भी परमाणु हथियारों की चर्चा की तब उनके मित्र ने उन्हें धमकी देते हुए कहा था कि वह और उसके साथी मई 1998 में हुए परमाणु परीक्षण के बारे में पार्लियामेंट में इसके विरोध में अपनी आवाज उठाएँगे। उन्होंने कहा था सबसे पहले वे White House और क्रेमलिन के विरुद्ध बड़ी मात्रा में परमाणु हथियारों के विरोध का प्रदर्शन करें।

Q.3. Narrate the essay 'The Conquest of the World by Indian Thought' in your own words.

कहानी 'The Conquest of the World by Indian Thought' का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

Ans. 'The Conquest of the World by Indian Thought' is an essay by Vivekanand. It is the part of the lecture on 'The Work Before Us' delivered by Vivekanand in Madras.

Vivekanand says that we have to learn many things from the world. In his speech, he quotes our great law-giver Manu who said: "Receive some good knowledge even from the low born and even from the man of lowest birth, learn by service the road to heaven." Further he says that as true children of Manu we must obey his commands and be ready to learn the lessons of this life or the life hereafter from anyone who can teach us. We have paid the penalty by about a thousand years of slavery. This idea is also a foolish that Indians must not go out of India and cross the sea.

The expansion is the manifest effect of life. Indian must expend if they want to live. Vivekanand says that he went to abroad to revival of national life, expansion. Some people

think that the Hindus have been always confined within the four walls of their country through all ages, are entirely mistaken. Such people have never studied the history of the Aryan race. Vivekanand is an imaginative man, and his idea is the conquest of the whole world by the Hindu race. The story of India's conquest has been described by the great Emperor of India Ashoka as the conquest of religion and of spirituality. Our Indians can work best when they work for others. Our people should attempt to enlighten other countries with their thoughts. Foreigners may come with their armies.

Let them flood into India, we will conquer the world with our spirituality. This spirituality must conquer the West. The only condition of national life, of awakened and vigorous national life, is the conquest of the world by Indian thought.

If the principles are there, the persons will come by the thousands and millions. If the principle is safe, persons and Buddhas by the hundreds and thousands will be born. Our religion does not depend on a person or persons, it is based upon principles. Thus our allegiance is to the principle always and not to the persons.

'The Conquest of the World by Indian Thought' एक निबन्ध है जो विवेकानन्द के व्याख्यान पर आधारित है। यह 'The Work Before Us' का भाग है जिसका आधार वह व्याख्यानमाला है जिसका संभाषण विवेकानन्द ने मद्रास में किया था।

विवेकानन्द कहते हैं कि हमें विश्व से बहुत कुछ सीखना होगा। अपने व्याख्यान के दौरान वह हमारे आदि विधिवेत्ता मनु को उद्धृत करते हैं जिन्होंने कहा था—“निम्न परिवेश में उत्पन्न व्यक्ति से भी कुछ न कुछ सीखने को मिलता है, यहाँ तक कि निम्न जाति में उत्पन्न व्यक्ति से भी हमें सीखना है। सेवा द्वारा ही हमारे लिए स्वर्ग का मार्ग प्रशस्त होता है।” आगे विवेकानन्द कहते हैं कि मनु की वास्तविक सन्तति होने के कारण हमें उनके निर्देशों का पालन करना चाहिए और इस जीवन के लिए और इस जीवन के बाद आने वाले जीवन के लिए हमें जिससे भी कुछ सीखने को मिलता है तो अवश्य सीखना चाहिए। हमने इस अवमानना के लिए एक हजार वर्षों की गुलामी झेली है। यह विचार भी मूर्खतापूर्ण है कि हमें भारत से बाहर नहीं जाना चाहिए और समुद्र को नहीं लाँघना चाहिए।

विस्तार ही जीवन का वास्तविक उन्मेष है। भारतीयों को पूरे भूमण्डल पर फैल जाना चाहिए यदि वे जीवन्त होकर जीना चाहते हैं। विवेकानन्द कहते हैं कि मैं स्वयं विदेशी धरती पर गया ताकि राष्ट्रीय जीवन में पुनर्जागरण हो जाए और उसका फ़ैलाव हो सके। कुछ लोगों का अभिमत है कि हिन्दू सभी युगों में अपने देश की चारदीवारी में ही बन्द रहे हैं, यह सर्वथा भ्रामक सोच है। ऐसी सोच वाले लोग संभवतया आर्य जाति के इतिहास से अनभिज्ञ ही रहे हैं। विवेकानन्द एक कल्पनाप्रधान सन्त हैं। उनकी इच्छा रही है कि हिन्दू जाति पूरे विश्व में विजय पताका फहराए। भारत की विजय गाथा की कहानी भारत के महान सम्राट अशोक के द्वारा लिखी गयी। सम्राट अशोक ने धर्म व आध्यात्मिकता के द्वारा विजय प्राप्त की। हमारे भारतीय लोग उस समय सर्वश्रेष्ठ योगदान देते हैं जब वे दूसरों के हितार्थ कुछ करते हैं। हमारे लोगों को अपनी विचार शृंखला के द्वारा अन्य देशों को प्रबुद्ध बनाना चाहिए। विदेशी लोग अपनी सेनाओं के साथ हमला करते हैं तो उन्हें ऐसा करने दो, हम अपनी आध्यात्मिक शक्ति से उन्हें पराभूत कर देंगे। इस आध्यात्मिक तत्व द्वारा ही हम पश्चिमी जगत पर विजय पाएँगे। राष्ट्रीय जीवन का चरित्र यही होना चाहिए कि हम जागरूक बनें और पूरे ऊर्जावान होकर भारतीय विचार दर्शन से विश्व को आपादमस्तक आप्लावित कर दें।

यदि नियमबद्ध होकर हम आगे बढ़ेंगे तो जो हजारों-हजार लोग हमसे जुड़े चले जाएँगे। यदि ये नियम अक्षुण्ण रहते हैं तो हजारों की संख्या में प्रबुद्ध लोग जन्म लेंगे। हमारा धर्म किसी व्यक्ति या व्यक्तियों पर आश्रित नहीं है। यह तो सिद्धान्तों पर आश्रित है। अतः हमारी निष्ठा सिद्धान्तों के प्रति है न कि व्यक्तियों के प्रति।



UNIT-VIII

Computer and Writing Skills in English

Computer & Writing Skills in English : PowerPoint Presentation, Letter Writing : Formal & Informal, Letter of Inquiry/Companies, Grievance Redressal Letters, Right to Information Act (RTI), Preparing Resumes/CV using Microsoft Word, Letter of Acceptance/Resignation (Job), Online Writing (Blogging), Content Writing, Effective E-mail writing.

SECTION-A VERY SHORT ANSWER TYPE QUESTIONS

Q.1. How many types of PowerPoint are there?

पावरपॉइंट कितने प्रकार के होते हैं?

Ans. In principle, PowerPoint slides can be split into three different categories, which can exist in their pure form or be combined with others :

(i) Text Sliders, (ii), Conceptual Sliders and (iii) Quantitative Charts.

सिद्धान्त रूप में, पावरपॉइंट स्लाइड्स को तीन अलग-अलग श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है, जो अपने शुद्ध रूप में मौजूद हो सकते हैं या दूसरों के साथ संयुक्त हो सकते हैं—

(i) टेक्स्ट स्लाइडर, (ii) वैचारिक स्लाइडर और (iii) मात्रात्मक चार्ट।

Q.2. What is MS PowerPoint?

एमएस पावरपॉइंट क्या है?

Ans. PowerPoint is a powerful, easy to use presentation graphics software program that allows you to create professional looking electronic slide shows.

पावरपॉइंट एक शक्तिशाली, उपयोग में आसान प्रस्तुति ग्राफिक्स सॉफ्टवेयर प्रोग्राम है जो आपकी पेशेवर दिखने वाले इलेक्ट्रॉनिक स्लाइड शो बनाने की अनुमति देता है।

Q.3. What is 'substantially financed'?

'पर्याप्त रूप से वित्तपोषित' क्या है?

Ans. The is neither defined under RTI Act nor under any other Acts. Therefore, this issue will evolve with time, may be through some court orders etc.

यह न तो आरटीआई अधिनियम के तहत परिभाषित है और न ही किसी अन्य अधिनियम के तहत। इसलिए, यह मुद्दा समय के साथ विकसित होगा, कुछ अदालती आदेशों आदि के माध्यम से हो सकता है।

Q.4. What do you mean by blog writing?

Blog writing के बारे में आप क्या जानते हैं?

Ans. Blog is an online tool which is used by someone to communicate others through cyber world. Blog is potentially used for language learning. It is a great instrument for its users to

find more information. Blog readers are able to give feedback or comments and interact with the author of the blog.

Blog एक ऐसा साधन है जो online पर उपयोग किया जाता है, इसको cyber world के माध्यम से दूसरों तक संप्रेषित किया जाता है। अपने प्रयोगकर्ताओं के लिए अधिक जानकारी प्राप्त करने का यह एक साधन है। Blog के पाठकों को यह सुविधा रहती है कि वे अपने विचारों की प्रतिपुष्टि कर सकते हैं और blog के लेखक से संवाद भी स्थापित कर सकते हैं।

Q.5. What is content writing?

(2021)

विषय लेखन क्या है?

Ans. Content writing is the process of writing, editing, and publishing content in a digital format. This content may include blog posts, video or podcast scripts, e-books or white papers.

विषय लेखन डिजिटल प्रारूप में लिखने, सम्पादन करने और प्रकाशित करने की प्रक्रिया है। इस विषय में ब्लॉग पोस्ट, वीडियो और पॉडकास्ट आलेख, ई-बुक्स और श्वेत पत्र शामिल हैं।

Q.6. Discuss the language and style of candidate's resume.

अभ्यर्थी के आवेदन की भाषा व शैली का विवरण दीजिए।

Ans. The style of the resume has to be simple and specific. There is no need to draft a resume in a vague and confusing language. Care should be taken that the resume is free from grammatical errors. Longer sentences should not be given preference over shorter ones. Action verbs should be used instead of dull expression.

आवेदनपत्र की शैली सादगी के साथ विशिष्टता होनी चाहिए। अस्पष्ट और उलझाव भरी भाषा का प्रयोग इसके विवरण में नहीं किया जाना चाहिए। इस तथ्य का भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि भाषा व्याकरणिक रूप से सर्वथा शुद्ध व परिमार्जित हो। लम्बे वाक्यों के स्थान पर छोटे वाक्यों को प्रमुखता दी जानी चाहिए। भाषा को नीरस अभिव्यक्ति से बचाने हेतु क्रियाओं का प्रयोग करना चाहिए।

Q.7. Discuss the various benefits of e-mail as the medium of communication.

संचार के माध्यम के रूप में ई-मेल के लाभों का विवरण दीजिए।

Ans. Now-a-days, e-mail has become a reliable medium of communication. It has many advantages in the following way :

(i) **Reliable** : Many of the mail systems notify the sender if e-mail message was undeliverable.

(ii) **Easy Source** : There is no requirement of stationery and stamps. One does not have to go to post office. But all these things are not required for sending or receiving an e-mail.

(iii) **Fast Service** : E-mail is very fast. However, the speed also depends upon the underlying network.

(iv) **Low cost** : The cost of sending e-mail is very low.

संचार के क्षेत्र में आजकल ई-मेल को विश्वसनीय माना जाने लगा है। इसके निम्नांकित रूप में अनेक लाभ हैं—

(i) **विश्वसनीय**—यदि ई-मेल का पावती को वितरण नहीं हो पाता है तो इसकी सूचना प्रेषक को दे दी जाती है।

(ii) **आसान स्रोत**—इस विधा में स्टेशनरी व डाक टिकट की आवश्यकता नहीं होती है, अतः डाकघर जाने की आवश्यकता नहीं रहती है। लेकिन इन सब चीजों की आवश्यकता ई-मेल भेजने और प्राप्त करने में नहीं होती है।

(iii) **तेज सेवा**—ई-मेल की गति बहुत तीव्र होती है। इसकी गति नेटवर्क पर आधारित होती है।

(iv) **कम खर्चीली**—यह कम खर्चीली विधा है। ई-मेल भेजने में काफी कम लागत आती है।

SECTION-B (SHORT ANSWER TYPE) QUESTIONS

Q.1. Write a letter to your elder brother who lives abroad, requesting him to send you a personal computer telling the benefits of computers.

अपने भाई को जो कि विदेश में रहता है, एक Personal computer भेजने के लिए प्रार्थना पत्र लिखिए।

Ans. DAV College,

Sadar

Meerut

10-11-2022

Respected Brother,

I received your letter a few days ago and was excited reading about your various experiences. These things were really exciting in their description. You have described how computers are becoming an integral part of our life. Yes, the time is soon going to come when in our country too, computers will become a part of life. I am much interested in knowing about the details of computers. I have opted for the same in my college too. But I think, this is not enough. I want to have my own computer to operate it well. Father has also permitted me for this. I hope, my loving brother will not mind fulfilling this wish of mine.

We all miss you very much.

Yours Affectionately

Arnav Chaudhary

Q.2. You are the resident of Kailash Nagar, Ranchi, Jharkhand. Your colony has a miserable state of drainage. Write a letter to the Municipal Commissioner, Ranchi to take urgent action to improve the situation before the monsoon. (2021)

आप कैलाश नगर, राँची, झारखण्ड के निवासी हैं। आपकी कॉलोनी में जल निकासी की व्यवस्था बहुत खराब है। मानसून के आगमन के पूर्व स्थिति सुधारने के लिए त्वरित कार्यवाही करने के लिए म्यूनिसिपल कमिश्नर, राँची को पत्र लिखिए।

Ans. House No. 123/2B

Street No. 8

Kailash Nagar

Ranchi

Bihar

June 26, 20XX

The Municipal Commissioner

Ranchi

Subject : Poor drainage system in our colony

Sir,

This is to draw your attention to the issue of poor drainage in our colony, especially during the rainy season, which causes a lot of inconvenience to the residents. The dirty, stinking water from drains gets collected on the roads and stagnates there. During

rainy season, the roads become drain themselves. The simple reason behind this flooding of the colony roads is poor drainage system. The stagnated water has been causing serious health issues. Malaria, Dengue, *Chikanguniya*, apart from stink and travelling problems have made the life of residents miserable.

Despite informing you previously, there's still a serious lack of regular cleaning and mass awareness about the maintenance and usage of those drains. Through this letter, I wish to earnestly request you to take necessary steps immediately and solve this problem, so that we don't have to suffer from this menace in the coming monsoon.

Hoping for prompt response,

Yours Truly

Dipankar Gupta

Q.3. Write an e-mail letter to inform your classmates regarding the intra-college quiz competition.

अन्तःमहाविद्यालय वि्वज प्रतियोगिता के सम्बन्ध में अपने सहपाठियों को सूचित करने हेतु एक ई-मेल पत्र लिखिए।

Ans. To: (email id of recipient)

Cc: Bcc:

Subject : Intra-college Quiz Competition.

Hello Everyone!

This is to notify you all that an Intra-college Quiz Competition is going to be conducted in our college on 4 January from 9.30 am in Auditorium 03.

Everyone is, therefore, invited to take part in the competition and show their sense and wisdom.

For further inquiries, feel free to contact me.

Thanks,

(Your name)

Class representative.

Q.4. Write a letter to the Editor of a newspaper making an appeal to your countrymen for Social Responsibility.

अपने देशवासियों को उनकी सामाजिक जिम्मेदारी के बारे में निवेदन करते हुए समाचार पत्र के एक संपादक को एक पत्र लिखिए।

Ans. The Editor,

Asian Express

New Delhi

10-11-2022

Sir, I wish to appeal to my countrymen through the popular columns of your esteemed daily for social responsibility.

Our country is passing through a very critical stage. The seeds of disintegration are being sown in our national as well as social field. An individualistic society with selfish nature is coming forward in our country. This reflects our national life. It should be checked as it is an unhealthy part of society. Man is a social animal. All religions preach

good morals. "Only he lives for others." This is the lesson we learn from all religions and social reformers from Christ to Guru Nanak. We have nothing to borrow from the west as far as our social set up is concerned. Let us not follow the West blindly and disregard even our good things.

It is our duty to do good for us as well as for others. If we disregard our duties, this will cause only social evils, corruption and indiscipline. I appeal to the citizens of my country to perform their duties honestly for the progress of society as well as the whole nation.

Yours faithfully,

Ravita Singh

CAB College

Meerut

Q.5. Write a letter to the Post Master Complaining against the postman for irregular delivery of the post.

डाक के अनियमित वितरण हेतु डाकिये के विरुद्ध शिकायत करते हुए पोस्ट मास्टर को पत्र लिखिए।

Ans.

To,

12, Ghanta Ghar

The Post Master

Meerut, Post Office

Meerut

10-11-2022

Dear Sir,

I wish to bring to your kind attention towards the irregularity and carelessness in delivering of the post in our area. The postman is very careless. He delivers the letters in careless manner. We do not get our important letters in time. Many a time we receive other's letters in our house. I have told the postman about this problem many a time but he gives no response and sometimes gives a rude reply. You are requested kindly to instruct your postman to do his duty honestly in proper manner.

Yours faithfully

Ankush Kumar

Shastri Nagar

Q.6. Write a letter to the Superintendent of Police regarding the increasing number of thefts and chain snatching incidents in your locality.

अपने क्षेत्र में चोरी और चेन स्नेचिंग की बढ़ती घटनाओं के संबंध में पुलिस अधीक्षक को पत्र लिखिए।

Ans.

13/14, Azadpur

Delhi

27-11-2021

To,

The Superintendent of Police,

North-East Zone,

Delhi

Sir,

I want to draw your attention towards the insecure atmosphere. Last evening at about 7 o'clock, a vehicle stopped behind a lady all of a sudden. Two strangers came to her and snatched her gold chain. The woman cried aloud but it was useless. This is not a single incident of chain-snatching in our colony. Four other such incidents have taken place within last two months.

The number of thefts committed in the area is also on the increase. Some strange people break into the house in the afternoon and virtually ransack the house. To tackle this problem, immediate steps should be taken. These should be patrolled by policemen throughout the day. The number of policemen on night duty should be increased. Policemen should be equipped with certain weapons. Hope, you will implement these suggestions to check incidents which have taken away peace of our locality.

Yours Faithfully

Ankush Chaudhary

Q.7. Write a letter to the C.P.I.O. for a Copy of Home Plan.

ग्रह योजना के प्रति के लिए CPIO को पत्र लिखिए।

Ans. To,

Central Public Information Officer (C.P.I.O)

SDO (Buildings), Estate office

U.T, Chandigarh.

1. Name of the Applicant : Dr. Umesh Kansal and Dr Pallavi Gupta

2. Father's name : Shri SK Kansal

3. Address : 112, First floor, Sector 17 A, Chandigarh-160014

4. Telephone Number : 9759162177, 8612065228

5. Particulars of Information/copies of record required:

Please provide me the following information.

Copies of Building Plans in respect of house No. 112,

First floor,

Sector 17 A, Chandigarh. (RPL)

2. A fee of Rs. 10/- has been deposited vide Receipt No. Dated

Dated: - Signature of Applicant

Q.8. Write a letter to the Managing Director about the misbehaviour of a colleague in the company.

कम्पनी के एक सहयोगी के दुर्व्यवहार के बारे में प्रबंध निदेशक को एक पत्र लिखिए।

Ans. From,

Arnav Singh

C/o Pooja Publications

Ratan Nagar, Meerut

To,
Abhishek
Director
Chaudhary Steels
Baraut

Dear Mr./Mrs.

This is to inform you about the inconvenience that I am facing everyday at the work place. My team mate is creating problems for me by abusing me verbally and also by misguiding me in many tasks.

As you know, I am a new employee here and have been clubbed with Name of the person in order to undergo on Job training. Since day one, Name of the person has been very rude towards me and uses foul language against me at almost all times. The recent outburst of his anger in front of all the employees is one of them. Also, he misguides me with the work assignment which is hampering my training.

Kindly investigate this matter further and please resolve this issue. Due to this problem, I am not able to concentrate on my work and hence I request you to please team me up with someone else for the training purpose.

Yours Truly,
Arnav Singh

Q.9. Write an Enquiry letter for exchanging of car.

कार के आदान-प्रदान के लिए एक enquiry letter लिखिए।

Ans. Dev Chaudhary

Meerut

Mobile Number: 9917070706

Date : 08-08-2021

To,

Singh Industries Ltd.

Noida

Subject : Enquiring the details of the car exchange scheme

Dear Sir/Madam,

I am Dev Chaudhary writing this letter to you to know regarding the car exchange scheme. I saw your advertisement for an exchange of old cars in Dainik Jagaran today. I am interested in exchanging my old car to get the new offered car through the exchange scheme.

So, please explain to me more about the scheme and its terms and conditions. Please contact me to the above-given mobile number and can also email me at devchaudharyxxx@gmail.com

Thanking You,

Yours Sincerely,

Dev Chaudhary

General Manager

Q.10. Write a letter of Job acceptance to the employer.

नियोक्ता को नौकरी स्वीकृति पत्र लिखिए।

Ans. August 20, 2021

Ms. Ankush & Company

Deptt. of Human Resource Development

Lucknow

Dear Ms. Ankush

It is with great enthusiasm that I accept the Foreign Service Officer position with the Department of State. I feel confident that I can make a significant contribution to the agency.

As we negotiated, my starting salary will be ₹ 50,000 with the full range of benefits granted to government employees. I will report to work at 8:30 a.m. on December 1 and will have completed the medical examination and drug testing by September 15, I shall complete all employment and insurance forms for the new employee orientation.

Thank you for your assistance during this process. I look forward to working with you and joining the team at the Department.

Sincerely,

Arnav

SECTION-C LONG ANSWER TYPE QUESTIONS

Q.1. What is PowerPoint Presentation? Discuss the major functions of PowerPoint program.

पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन क्या है? इसके मुख्य कार्यों का विवरण दीजिए।

Ans. Microsoft PowerPoint program is one of the presentation software programs used effectively in academic sector. This way of teaching provides the information of the project from a computer onto a projector screen. Due to its inherent features of the PowerPoint, it is developed as business software tool and is adopted by researchers and in education. For making the presentation in a visual mode, dynamic and engaging way, PowerPoint presentation is an easy-to-use software application. In order to highlight the key points, and to show the assignment information, some of the features of the PowerPoint are helpful for the lectures. In addition to that, it brings the audience interest by enabling some of the additional features such as clipart and cartoon in the presentation. In the literature review of previous studies, several researchers have analyzed the effects of PowerPoint on the student performance towards PowerPoint. This has been analysed by the methodology and empirical results of the studies.

Functions of PowerPoint Presentation

There are number of functions that are available in PowerPoint presentation to make your task easier. Some of the main functions are:

Design: The design features of PowerPoint allow you to customize the appearance and format of the slides. PowerPoint typically comes with a set of preloaded themes for you to choose from. These can range from simple color changes to complete format layouts with accompanying

font text. Themes can be applied through the whole presentation or a single slide. Using the page setup allows you to optimize the presentation for the display size; for instance, you should use a larger screen ratio when displaying on a projector compared to a computer screen.

Animation: PowerPoint animation is divided between slide transitions and element animation. Using slide transition adds an effect when switching slides during a slide show. You can edit the transition effect and timing, as well as opt for an on-click or automatic transition between slides. Element animation adds movement and sounds to the objects within the slide. For example, if you're constructing a photo gallery as a slide show, you can choose which pictures enter the slide first, how they enter and add a sound as they enter.

Presentation: The presentation function of PowerPoint is largely designed to accommodate public speaking. PowerPoint comes with a built-in notes function; when printing out presentation slides, you can add presenter notes beside each slide as accompanying content. This is useful to clarify points in the slide without sacrificing the slide's readability.

Integration: PowerPoint is compatible with all other software in the Microsoft Office suite; you can export slides into Word documents or use Excel charts within your presentation. In addition to image and audio support, you can embed videos within a presentation for easy playback without exiting the program. You can also export presentation files to an online interface for multi-use remote editing and presentation practice.

माइक्रोसॉफ्ट पॉवरपॉइंट प्रोग्राम अकादमी क्षेत्र में प्रभावी ढंग से उपयोग किये जाने वाले सॉफ्टवेयर कार्यक्रमों में से एक है। शिक्षा का यह उपाय कम्प्यूटर से प्रोजेक्ट स्क्रीन पर परियोजना की जानकारी देता है। पॉवरपॉइंट की अपनी अंतर्निहित विशेषताओं के कारण, इसे व्यावसायिक सॉफ्टवेयर उपकरण के रूप में विकसित किया गया है, और इसे शोधकार्य और शिक्षा में अपनाया गया है। प्रिजेंटेशन को विजुअल मोड, डायनेमिक और आकर्षक तरीके से बनाने के लिए, पॉवरपॉइंट प्रिजेंटेशन उपयोग में एक आसान सॉफ्टवेयर एप्लीकेशन है। मुख्य बिन्दुओं को हाइलाइट करने के लिए और असाइनमेंट की जानकारी दिखाने के लिए, पॉवरपॉइंट की विशेषताएँ व्याख्यान के लिए सहायक होती हैं। इसके अतिरिक्त, यह प्रस्तुति में कुछ अतिरिक्त सुविधाओं जैसे क्लिपआर्ट और कार्टून को सक्षम करके दर्शकों में रुचि लाता है। पुराने अध्ययनों के साहित्यों की समीक्षा में, कई शोधकर्ताओं ने पॉवरपॉइंट के प्रभाव और पॉवरपॉइंट के लिए छात्रों के प्रदर्शन पर पॉवरपॉइंट के प्रभावों को विश्लेषित किया गया है। इसका विश्लेषण अध्ययन की पद्धति और अनुभवजन्य परिणामों द्वारा किया गया है।

पॉवरपॉइंट प्रेजेंटेशन के कार्य

आपके कार्य को आसान करने के लिए पॉवरपॉइंट प्रिजेंटेशन के कई लाभ हैं। कुछ मुख्य लाभ निम्नांकित हैं—
डिजाइन—पॉवरपॉइंट का डिजाइन स्लाइडों का फॉरमेट और आकृति को रुचि के अनुसार बनाने की सुविधा प्रदान करने वाला लक्षण है। विशेष रूप से पॉवरपॉइंट आपके चयन हेतु पहले से ही विषयों से युक्त सैट के साथ प्रकट होता है। ये सादे रंग परिवर्तनों से फ्रंट टेक्ट के साथ पूर्ण फॉरमेट लेआउट में बदल जाते हैं। विषयवस्तुएँ सम्पूर्ण प्रिजेंटेशन या एक मात्र स्लाइड के माध्यम से व्यवहार में लाई जा सकती है। पेज सेटअप का प्रयोग डिस्प्ले साइज के लिए प्रिजेंटेशन को अनुकूल बनाने के लिए आपको अनुमति प्रदान करता है; उदाहरण के लिए कम्प्यूटर स्क्रीन के मुकाबले प्रोजेक्टर पर डिस्प्ले करते समय आपको बड़ा स्क्रीन रेशियो प्रयोग में लाना चाहिए।

अनुप्राणन—पॉवरपॉइंट एनीमेशन स्लाइड पारगमन और तत्त्व अनुप्राणन (एनीमेशन) के बीच विभाजित किया गया है। स्लाइड शो के दौरान जब स्लाइडों को स्विच किया जाता है तो स्लाइड पारगमन का प्रयोग एक प्रकार के प्रभाव को बढ़ाता है। आप समय और पारगमन प्रभाव को उसी तरह से सम्पादित कर सकते हैं जैसे स्लाइडों के मध्य स्वतः पारगमन या ऑन क्लिक का चयन। तत्त्व पारगमन स्लाइड के अन्दर उपस्थित पदार्थों को गति और आवाज प्रदान करता है। उदाहरण के लिए यदि आप स्लाइड शो की तर्ज पर फोटो गैलरी बना रहे हैं तो आप स्लाइड में आने वाली प्रथम तस्वीरों का चयन कर सकते हैं। वे कैसे प्रवेश करती हैं और जैसे ही वे प्रवेश करती हैं तो उनमें आवाज कैसे जोड़ी जाती है का भी चयन करना है।

प्रस्तुतीकरण—पॉवरपॉइंट के प्रस्तुतीकरण का कार्य जनता की आवाज को धारण करने के लिए बड़े स्तर पर डिजाइन करना है। पॉवरपॉइंट बने हुए नोट्स के कार्यों में प्रयुक्त होता है, जब प्रिजेंटेशन स्लाइडें प्रिंट होकर आती हैं। आप कंटेन्ट, के साथ लगी हुई प्रत्येक स्लाइड के साथ प्रजेन्टर नोटों को भी जोड़ सकते हैं। यह स्लाइड की पठनीयता को असमर्थ करते हुए स्लाइड के बिन्दुओं को स्पष्ट करने में उपयोगी है।

एकीकरण—पॉवरपॉइंट माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस सूट में अन्य सभी दूसरे सॉफ्टवेयर के साथ अनुकूलित है। आप वर्ड डॉक्यूमेंटों में स्लाइडों को भेज सकते हैं या अपने प्रजेन्टेशन में एक्सल चार्ट का प्रयोग करते हैं। इमेज और ऑडियो सपोर्ट के अतिरिक्त बिना कार्यक्रम की उपस्थिति, आसान प्लेबैक के लिए प्रिजेंटेशन में विडियो को सन्निहित कर सकते हैं। आप प्रिजेंटेशन फाइलों को बहु-उपयोगी सुदूर सम्पादन और प्रस्तुतीकरण अभ्यास के लिए ऑनलाइन इन्टरफेस को भेज सकते हैं।

Q.2. What is Resume? How is it prepared using MS Word?

रिज्यूम क्या है? MS Word से यह कैसे तैयार किया जाता है?

Ans. A resume, often referred to as a CV (Curriculum Vitae), is a summary of a person's background and experience. Including work experience, education, and even volunteer work, and its most common use is to send to potential employers when searching for a new career opportunity. In fact, though taking on a much different form than that of what you'd expect a resume to look like today. Leonardo Da Vinci even did this himself, and he is often given credit as the first person to create a resume.

Of course, the resume has undergone quite the transformation since Da Vincis 1482 version drastically so during the age of word processors and digital typesetting in 1970's 40 years after resumes became an institution.

We should be thankful for these developments because now we can skip the pen and ink and jump straight into microsoft word.

Using a Microsoft Word Resume Templates : Microsoft word offers a bunch of resume templates. Some are beautiful; some are not. Decide which style fits you best.

Open word as soon as you do, you'll be greeted with several different templates to choose from, ranging from a simple blank document, cover letters, resumes, or even seasonal event flyers. Click the 'Resumes and cover letters' like under the search box to see only types of templates.

(i) New

(ii) Search for online templates

(iii) Suggested Search Business cards flyers Education Resumes and Cover Letter

(iv) Letter Holiday Featured Personal

Now, you'll see all the different resume styles Word has to offer. There are a lot of different styles and colour schemes to choose one, so pick what feels right. If you scroll down the list a bit, you'll also see some plain resume templates designed.

एक रिज्यूम जिसे अक्सर सीवी (पाठ्यचर्या जीवन) के रूप में संदर्भित किया जाता है, एक व्यक्ति की पृष्ठभूमि और अनुभव का सारांश है, जिसमें कार्य अनुभव, शिक्षा और यहाँ तक कि स्वयंसेवी कार्य भी शामिल हैं, और इसका सबसे आम उपयोग सम्भावित नियोक्ताओं को खोजते समय भेजना है। यह करियर का नवीनतम मौका है। वास्तव में, यद्यपि आप जिस रिज्यूम से आज के रिज्यूम की अपेक्षा करते हैं, उससे बहुत अलग रूप लेते हुए, लियोनार्डो दा विंची ने खुद भी ऐसा किया था, और उन्हें अक्सर फिर से शुरू करने वाले पहले व्यक्ति के रूप में श्रेय दिया जाता है।

दा विंची 1482 संस्करण के बाद से रिज्यूम में काफी बदलाव आया है, 1970 के दशक में वर्ड प्रोसेसर और डिजिटल टाइपसेटिंग के युग के दौरान रिज्यूम के संस्थान बनने के 40 साल के बाद आज के लिए फास्ट फॉरवर्ड न केवल आपके पास अपना मानक .doc या .pdf रिज्यूम है, बल्कि आप लोगों को YouTube पर विडियो रिज्यूम अपलोड करते हुए और

खुद को कम्पनी को बेचने के लिए लिंकडइन जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग करते हुए देखते हैं। हमें इन विकासों के लिए अहसान मानना चाहिए क्योंकि अब हम पेन और स्याही को छोड़कर सीधे माइक्रोसॉफ्ट वर्ड में बोल सकते हैं।

माइक्रोसॉफ्ट वर्ड रिज्यूम टेम्पलेट का इस्तेमाल करना—माइक्रोसॉफ्ट वर्ड रिज्यूम टेम्पलेट का एक गुच्छा प्रदान करता है। कुछ खूबसूरत हैं व कुछ नहीं है। यह आप तय करेंगे कि कौन-सी शैली आपको सबसे अच्छी लगती है। आगे बढ़ो और Word खोलो। जैसे ही आप ऐसा करते हैं, आपका चयन हेतु अनेक टेम्पलेट्स के साथ स्वागत किया जाएगा, जिसमें एक सामान्य रिक्त दस्तावेज, कवर लेटर, रिज्यूम, या मौसमी इवेंट फ्लायर्स भी शामिल हैं। केवल उसी प्रकार के टेम्पलेट देखने के लिए खोज बॉक्स के नीचे रिज्यूम और कवर लेटर' लिंक पर क्लिक करें।

(i) New

(ii) Search for online templates

(iii) Suggested Search Business cards Flyers Education Resume and Cover Letter

(iv) Letter Holiday Featured Personal

जब आप वर्ड द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली विभिन्न रिज्यूम शैलियाँ देखेंगे। किसी एक को चुनने के लिए कई अलग-अलग शैलियाँ और रंग योजनाएँ हैं, इसलिए जो सही लगे उसे चुनें। यदि आप सूची को थोड़ा नीचे स्क्रॉल करते हैं तो आपको विभिन्न उद्देश्यों के लिए डिजाइन किए गए कुछ फ़िर से शुरू होने वाले टेम्पलेट भी दिखाई देंगे। जैसे कि एक प्रवेश-स्तर, कालानुक्रमिक या विस्तारित सी वी शैली।

Q.3. What is online writing? Explain about digital writing and blogging.

ऑनलाइन लेखन क्या है? डिजिटल लेखन और ब्लॉगिंग की विवेचना कीजिए।

Ans. Online writing : It refers to any text created with a computer, smartphone, or similar digital device. It is also called digital writing. Online writing formats include texting, instant messaging, e-mailing, blogging, tweeting, and posting comments on social media sites such as facebook.

Digital Writing : Digital writing is not simply a matter of learning about and integrating new digital tools into a unchanged reporting of writing processes, practice, skills and habits of mind. Digital writing is about the dramatic changes in the ecology of writing and communication and indeed, what it means to write, to create and compose all share. All this is possible without stopping beyond the limits of what would be considered as the acceptable voice of the company. However, other styles may be required owing to the nature of your business or your relationship. On the letter, as with other forms of online writing, it is important to know your readers and their expectations before you begin writing a blog.

Blogging : Blogs are usually written by a person in their personal language. Hence, it gives you the ideal opportunity to present the human face and personality of your business. You can have conversational, spirited, charming, intimate casual. All these can happen without stopping at the threshold of what is perceived as the working voice of the company. However other styles may be required due to the nature of business and readers. Blogs are online journals that are updated frequently, sometimes even daily. An update is usually quite short, perhaps, just a few sentences and readers can often respond to an entry online. People who write blogs are commonly called bloggers. Blogger, tone and check, call themselves and their blogs are called the blogosphere. Blogs are a great way to keep everyone in a family, abreast of the latest family news. Without running up the phone bill you can simply read back over important updates to find out the latest news. In addition many blogs are being used to host photographs, and their chronological structure can be a great way to keep track of a baby's growth, a trip, or the process of planning a wedding.

Professional writers often look down on bloggers, because their informal online writing rarely benefits from a good editor. Blogs are known for their casual writing and unpredictable subject material, but the best blogs have proved that, regardless of punctuation and spelling. Even 'Novoice' writers can be entertaining enough to attract a board of audience.

Bloggers with an especially engaging subject, such as chronicling a trip around the world, have the advantage of inherently interesting material, but even mundane material can attract an audience if you have an engaging style and voice.

ऑनलाइन लेखन—यह किसी कम्प्यूटर, स्मार्टफोन, या इसी प्रकार के डिजिटल डिवाइस के साथ बनाए गए किसी भी पाठ को संदर्भित करता है। इसे डिजिटल राइटिंग कहा जाता है। ऑनलाइन लेखन प्रारूपों में फेसबुक जैसे सोशल मीडिया साइटों पर टेक्स्टिंग, इंस्टेंट मैसेजिंग, ईमेलिंग, ब्लॉगिंग, ट्वीट करना और टिप्पणी पोस्ट करना शामिल है।

डिजिटल लेखन—डिजिटल लेखन सिर्फ नए डिजिटल उपकरणों के बारे में सीखने और उन्हें लेखन प्रक्रियाओं, प्रथाओं, कौशल और मन की आदतों के एक अपरिवर्तित प्रदर्शनों की सूची में एकीकृत करने का मामला नहीं है। डिजिटल लेखन, लेखन और संचार की परिस्थितिकी में नाटकीय परिवर्तनों के बारे में है और वास्तव में लिखने का क्या अर्थ है—बनाने और लिखने और साझा करने के लिए।

ब्लॉगिंग—ब्लॉग सामान्यतः एक व्यक्ति द्वारा अपनी व्यक्तिगत भाषा में लिखे जाते हैं। इसलिए यह आपको अपने व्यवसाय के मानवीय चेहरे और व्यक्तित्व को प्रस्तुत करने का आदर्श अवसर प्रदान करता है। आप संवादी, उत्साही, आकर्षक, अंतरंग अनौपचारिक हो सकते हैं। ये सब कंपनी की स्वीकार्य आवाज के रूप में मानी जाने वाली सीमा पर रुके बिना सम्भव है। हालाँकि व्यवसाय और पाठकों की प्रकृति के कारण अन्य शैलियों की आवश्यकता हो सकती है। बाद में, ऑनलाइन लेखन के अन्य रूपों के साथ, ब्लॉग लिखना शुरू करने से पहले अपने पाठक और उनकी अपेक्षाओं को जानना जरूरी है। ब्लॉग ऑनलाइन पत्रिकाएँ हैं जिन्हें अक्सर अद्यतन किया जाता है, कभी-कभी दैनिक भी। एक अद्यतन, काफी छोटा होता है, शायद केवल कुछ वाक्य और पाठक अक्सर ऐसी एक प्रविष्टि का ऑनलाइन जवाब दे सकते हैं। ब्लॉग लिखने वाले लोगों को आमतौर पर ब्लॉगर कहा जाता है ब्लॉगर, गाल में स्वयं को जीभ और ब्लॉग को ब्लॉग जगत कहते हैं।

ब्लॉग एक परिवार में सभी नवीनतम पारिवारिक समाचारों से परिचित कराने का एक शानदार उपाय है। बिना फोन बिल को चलाए आप नवीनतम समाचारों का पता लगाने के लिए महत्वपूर्ण अपडेट को आसानी से पढ़ सकते हैं। इसके अलावा तस्वीरों को होस्ट करने के लिए कई ब्लॉग का उपयोग किया जा रहा है। कालानुक्रमिक संरचना, बालक का विकास, यात्रा या शादी की योजना बनाने की प्रक्रिया पर नजर रखने का एक शानदार तरीका हो सकता है।

पेशेवर लेखक अक्सर ब्लॉग को निम्नस्तरीय देखते हैं क्योंकि उनके अनौपचारिक ऑनलाइन लेखन को शायद ही कभी किसी अच्छे संपादक से लाभ मिलता है। ब्लॉग अपने आकस्मिक लेखन और अप्रत्याशित विषय सामग्री के लिए जाने जाते हैं। लेकिन सर्वश्रेष्ठ ब्लॉगों ने ये सिद्ध कर दिया है कि विराम चिन्ह और वर्तनी की परवाह किए बिना, ये लिखे जा सकते हैं, यहाँ तक कि नये लेखक भी व्यापक दर्शकों को आकर्षित कर सकते हैं।

विशेष रूप से आकर्षक विषय वाले ब्लॉग्स भी हैं। जैसे कि दुनिया भर की यात्रा का क्रॉनिकल करना। स्वाभाविक रूप से दिलचस्प सामग्री का लाभ है, लेकिन यहाँ तक कि अगर आपके पास एक आकर्षक शैली है और आवाज है तो सांसारिक सामग्री भी दर्शकों को लुभा सकती है।

Q.4. Write a note on effective E-mail writing.

प्रभावी ई-मेल लेखन पर एक लेख लिखिए।

Ans. E-mail is familiar to most students and workers. In business, e-mail has largely replaced print hard copy, letters for external (out side company), correspondence and in many cases it has taken the place of memos for internal (within the company) communication.

E-mail can be very useful for messages that have slightly more content than a text message, but it is still best used for fairly brief messages. Many businesses use automatic e-mail to

acknowledge communications from the public or to remind associates that periodic reports or payments are due you may also be assigned to "populate" a form e-mail in which standard paragraphs are used but you choose from a menu of sentences to make the wording suitable for a particular transaction.

E-mail may be informal in personal contexts, but business communication requires attention to details, awareness that your e-mail reflects you and your company and a professional tone so that it may be forwarded to any third party if needed. E-mail serves to exchange information within organizations. Although e-mail may have informal feel, remember that when used for business, it, needs to convey professionalism and respect. Never write or send anything that you wouldn't want to read in public or before company president.

Follow the following tips to craft an effective e-mail :

1. **Keep it very short** : No one has the time to read the 10 paragraph-e-mail, so don't send it. If you have 10 paragraphs or even four paragraph, then perhaps you are including unrelated content.
2. **Don't Muddle Content** : Stick to one content area e-mail. If you are sending a follow up e-mail to a colleague after a meeting, then it is unnecessary to add in something about a different client or information about the company picnic etc.
3. **Be Collegial** : Always open your e-mail with a pleasantry.
4. **Watch your tone** : The tone of an e-mail is difficult to assess, but more after than not, the reader will assign a tone, even when one does not intend, so be careful not to craft the e-mail with tone by watching the use of exclamation marks, using inflammatory words etc.
 - (i) Avoid too many exclamation Marks and no Emojis.
 - (ii) Avoid quotes that could be offensive to others.
 - (iii) Always proof-read your E-mails.

Sending out an e-mail with types, misspelled words, etc., makes you look bad. Take the extra minute to proofread the email.
5. **Never send an e-mail when Angry or Frustrated** : If you need to write the e-mail, do so in a word document where it is impossible to hit the send button by accident.
6. **Legal Ramifications** : Remember, your e-mail, your colleague's e-mail, even the vendor's e-mail is subject to warrant. It may be an illegal activity or a law suit be filed.

ई-मेल अधिकांश छात्रों और श्रमिकों से परिचित है। व्यापार में, ई-मेल ने बाहरी (कंपनी के बाहर) पत्राचार के लिए प्रिंट हार्ड कॉपी पत्रों को बड़े पैमाने पर बदल दिया है, और कई मामलों में, इसके अतिरिक्त (कंपनी के भीतर) संचार के लिए मेमो की जगह ले ली है।

ई-मेल उन संदेशों के लिए बहुत उपयोगी हो सकता है जिनमें टैक्स्ट संदेश की तुलना में थोड़ी अधिक सामग्री होती है, लेकिन यह अभी भी काफी छोटे संदेशों के लिए सबसे अच्छा उपयोग किया जाता है। कई व्यवसाय जनता से संचार को स्वीकार करने या सहयोगियों को यह दिखाने के लिए कि आवधिक रिपोर्ट या भुगतान देय हैं, स्वचालित ई-मेल का उपयोग करते हैं तुम्हें एक फॉर्म ई-मेल "पाप्युलेट" करने के लिए दिया जा सकता है जिनमें मानक पैराग्राफ का उपयोग किया जा सकता है लेकिन आप किसी विशेष लेन-देन के लिए शब्दों को उपयुक्त बनाने के लिए वाक्यों के मेन्यू को चुनते हैं।

व्यक्तिगत संदर्भों में ई-मेल अनौपचारिक हो सकते हैं, लेकिन व्यावसायिक संचार के लिए विस्तार, जागरूकता पर ध्यान देने की जरूरत है कि आपका ई-मेल आपको और आपकी कंपनी को दर्शाता है, और एक पेशेवर स्वर है जिसे जरूरत पड़ने पर इसे किसी तृतीय पक्ष को अग्रेषित किया जा सकता है। ई-मेल अक्सर संगठनों के भीतर सूचनाओं के आदान-प्रदान का कार्य करता है। हालाँकि ई-मेल में एक अनौपचारिक अनुभव हो सकता है, ध्यान रखें कि जब यह व्यापार के लिए उपयोग किया जाता है तो उसे व्यावसायिकता और सम्मान व्यक्त करने की जरूरत होती है। कभी भी ऐसा कुछ ना लिखें या ना भेजें, जिसे आप सार्वजनिक रूप से या अपनी कंपनी के अध्यक्ष के समक्ष पढ़ना नहीं चाहेंगे।

एक प्रभावी ई-मेल बनाने के लिए निम्नलिखित युक्तियों का इस्तेमाल करना चाहिए—

1. **इसे अति संक्षिप्त रखें**—किसी के पास 10 पैराग्राफ का ई-मेल पढ़ने का समय नहीं है। इसलिए उसे न भेजें। यदि आपके पास 10-पैराग्राफ या चार-पैराग्राफ हैं, तो आप सम्भवतः असंबंधित सामग्री को सम्मिलित कर रहे हैं।
2. **सामग्री को भ्रमित ना करें**—अगर आप किसी मीटिंग के बाद किसी सहकर्मी को फॉलोअप ई-मेल भेज रहे हैं, तो किसी अलग क्लाइंट के विषय में कुछ जोड़ना या कंपनी पिकनिक आदि के विषय में जानकारी जोड़ना जरूरी नहीं है।
3. **कॉलेजियल बनें**—अपना ई-मेल हमेशा सुखमयता के साथ खोलें अपना ई-मेल तैयार कर फिर वापस जाएँ और आशा करें कि हमारे पास एक अच्छी छुट्टी थी या एक अच्छा सप्ताहांत है। पतझड़ के मौसम का आनन्द लें।
4. **अपना स्वर देखें**—एक ई-मेल को देखना मुश्किल है। लेकिन अधिक बार नहीं, पाठक एक स्वर प्रदान करेगा। तब भी जब कोई विचार नहीं था, इसीलिए सतर्क रहें कि विस्मयाद्बोधक शब्दों का उपयोग करके, भड़काऊ शब्दों का उपयोग करके ई-मेल को टोन के साथ तैयार न करें।
 - (i) बहुत अधिक विस्मयाद्बोधक चिह्न और कोई इमेजी से बचें।
 - (ii) ऐसे उदाहरणों से बचें जो दूसरों के लिए हिंसक हो सकते हैं।
 - (iii) हमेशा अपने ई-मेल को प्रूफरीड करें—टाइप, गलत वर्तनी वाले शब्दों आदि के साथ एक ई-मेल भेजने से आप खराब दिखते हैं।
5. **निराशा के साथ कभी ई-मेल ना करें**—अगर आपको ई-मेल लिखने की जरूरत है तो इसे एक शब्द दस्तावेज में करें, जहाँ दुर्घटना से भेजे गए बटन को हिट करना संभव है।
6. **कानूनी प्रभाव**—याद रखें कि आपका ई-मेल, आपके सहकर्मी का ई-मेल यहाँ तक कि विक्रेता का ई-मेल भी एक वारन्ट के अधीन है। अगर कोई अवैध गतिविधि होती है तो मुकदमा दायर किया जाता है।

□

- | |
|--|
| <ul style="list-style-type: none"> ■ In the publication of this book, every care has been taken in providing a precise and errorless material, yet if any mistake has crept in, mechanically or technically, the Publisher, the Writer and the Printer shall not be responsible for the same. All disputes are subject to the court of Meerut Jurisdiction. ■ No portion of the text, title, design and mode of presentation, used in this book, be reproduced in any form. Violation of our warning leads to legal prosecution. ■ Suggestions for any improvement of this book are cordially invited and such suggestions may be incorporated in the next edition. For any type of suggestion or error you can also mail your ideas on info@vidyauniversitypress.com. 922 |
|--|

MODEL PAPER

English Prose and Writing Skills

B.A.-I (SEM-I)

[M.M. : 75

Note : Attempt all the sections as per instructions.

Section-A : Very Short Answer Type Questions

Instruction : Attempt all **FIVE** questions. Each question carries **3 Marks**. Very Short Answer is required, not exceeding 75 words. (3 × 5 = 15)

1. What is the difference between formal essay and impersonal essay?
2. Define the term 'analogy'.
3. What, according to Bacon, are the uses of studies?
4. What is content writing?
5. What is the significance of the title 'The Last Leaf'?

Section-B : Short Answer Type Questions

Instruction : Attempt any **TWO** questions out of the following 3 questions. Each question carries **7.5 Marks**. Short Answer is required not exceeding 200 words. (7.5 × 2 = 15)

6. You are the resident of Kailash Nagar, Ranchi, Jharkhand. Your colony has miserable state of drainage. Write a letter to the Municipal Commissioner, Ranchi to take urgent action to improve the situation before the monsoon.
7. "It is safer in the jungle than in the town" says Sunder Sing. Justify the statement in the context of the story 'The Tunnel'.
8. Explain the following lines with reference and context. Also add critical comments as required :

"Studies serve for delight, for ornament and for ability. Their chief use for Delight, is in privateness and retiring, for ornament, is in discourse; and for ability, is in the judgement and disposition of business."

Or "Children love to listen to stories about their elders, when they were children; to stretch their imagination to the conception of a traditional great-uncle, or grandame, whom they never saw."

Section-C : Long Answer Type Questions

Instruction : Attempt any **THREE** questions out of the following 5 questions. Each question carries **15 Marks**. Answer is required in detail, between 500-800 words. (15 × 3 = 45)

9. Write a note on the development of Indian writing in English.
 10. What are the elements of short story?
 11. "Priorities change when the child loses his parents." Discuss the theme of the story 'The Lost Child' in reference to the above statement.
 12. What does Swami Vivekanand say about Indian thought regarding the conquest of the world?
 13. Discuss the plot of the story 'The Lament'.
- Or** Discuss Joseph Addison as an essayist.